अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य

लेखक

दयाशंकर दुबे एम. ए., एल-एल. बी.,

अर्थशास्त्र अध्यापक, प्रयाग विश्वविद्यालय ।

और

भगवानदास केला

रचयिता, भारतीय अर्थशास्त्र, भारतीय शासन, आदि ।

प्रकाशक

व्यवस्थापक, भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग ।
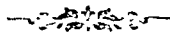
दूसरा संस्करण } सन् १९४६ ई० { मूल्य, [illegible] रुपये

प्रकाशक
भगवानदास केला
भारतीय ग्रन्थमाला,
दारागञ्ज, प्रयाग ।

मुद्रक
श्रीहरिवंश नारायण दुबे,
गङ्गा प्रेस, दारागञ्ज,
प्रयाग ।

निवेदन

—००:ॐ:००—

देश-काल के अनुसार हिन्दी भाषा का रूप और शैली बदलती रही है, और आगे भी बदलेगी। तथापि यह भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा है। लेकिन इस बात पर हमें केवल अभिमान कर लेना उचित नहीं है। हिंदी भाषा के राष्ट्र-भाषा मान लिये जाने से हिन्दी-भाषा-भाषियों और हिन्दी-प्रेमियों का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है।

हमें विचार करना चाहिए कि क्या भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा मानी जानेवाली हिन्दी में भारतीय राष्ट्र की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करने की सामग्री है ? क्या इस भाषा का ग्रन्थ-भण्डार इतना है कि साहित्य, गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, भूगोल, इतिहास आदि सब पाठ्यविषयों की ऊँची-से-ऊँची शिक्षा इस भाषा द्वारा दी जा सके ? क्या हमारा सब आवश्यक कार्य, विदेशी भाषा का आसरा लिये बिना, चल सकता है ? फिर, जबकि हिन्दी भाषा संसार की आबादी के छठे हिस्से की राष्ट्र-भाषा है तो हमारे पास संसार की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कितना साहित्य है ? और, यदि यह अभी दूर की बात समझी जाय, तो हमें यह तो सोचना ही चाहिए कि गुजराती, बङ्गला, मराठी आदि भारतवर्ष की प्रान्तीय भाषाओं को देने के लिए हमारे पास क्या है। क्या हमें अपने यहाँ के विविध प्रांतों की, एवं संसार के अन्य देशों की विभिन्न साहित्य-धाराओं का यथा-समय तथा यथेष्ट परिचय मिलने के समुचित साधन विद्य-मान हैं ?

हिन्दी साहित्य की कमी, त्रुटियों या दोषों को कैसे दूर किया जाय, इस सम्बन्ध में खूब विचार होने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में पूर्ण रूप से प्रकाश डालने के लिए यह आवश्यक है कि भिन्न-भिन्न विषयों में अनुराग रखनेवाले लेखक अपने-अपने विषय पर स्वतन्त्र लेख लिखकर व्योरेवार विचार प्रकट करें। बीस वर्ष हुए, सन् १९२५ ई० में भारतीय ग्रन्थमाला के अन्तर्गत भारतीय निबन्धमाला का आयोजन किया गया था, जिसका एक उद्देश्य यह था कि हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र, राजनीति, विज्ञान, इतिहास, काव्य, उपन्यास, कृषि, दर्शन आदि के साहित्य का अच्छी तरह परिचय दिया जाय। उस निबन्धमाला में इस तरह के सिर्फ दो ही निबन्ध प्रकाशित हुए—(१) अर्थशास्त्र सम्बन्धी, और (२) राजनीति सम्बन्धी। पहला लेख संशोधित करके सन् १९३१ में, 'गंगा' में प्रकाशित कराया गया। सन् १९३५ में आवश्यक सुधार करके, उसे राजनीति-साहित्य के लेख के साथ पुस्तक के रूप में छपाया गया। अब उस पुस्तक का नया संस्करण तैयार करके, पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जा रहा है। इस पुस्तक का क्षेत्र पहले जैसा ही है। अर्थशास्त्र और राजनीति से मिले हुए या सम्बन्धित विषयों—कृषि, भूगोल, इतिहास, कानून आदि—का भी परिचय देने का विचार हुआ था, पर वह हम न दे सके; उसे दूसरे योग्य लेखकों के लिए छोड़ दिया गया है।

हमने यह कोशिश की है कि अर्थशास्त्र और राजनीति की जितनी भी पुस्तकों की जानकारी दे सकें, देदेवें। कुछ पुस्तकों का पता हमें उस समय लगा, जब हमारी इस पुस्तक का बहुत सा हिस्सा छप चुका था। ऐसी पुस्तकों की चर्चा हमने परिशिष्ट में की है, और उसमें कोई क्रम नहीं रखा गया है। इनमें से कुछ पुस्तकें ऐसी भी हैं, जिनके केवल लेखक का ही नाम दिया गया है; मूल्य और प्रकाशक का पता आदि नहीं दिया जा सका। कुछ दूसरी पुस्तकों के परिचय में भी कुछ कमी रह गयी है। बात यह हुई कि कुछ पुस्तकें तो हमारे सामने ही

नहीं आयीं, और कुछ पुस्तकें इलाहाबाद से बाहर के जुदा-जुदा स्थानों की थी। उनका नोट लेने में पहले कुछ बातें छूट गयीं, और पीछे वे पुस्तकें नहीं मिलीं। इस तरह हम उनका जितना परिचय देना चाहते थे, न दे सके।

इस पुस्तक के इस संस्करण को तैयार करने में मित्रवर श्री० भोलेश्वर जी शुक्ल ने बहुत सहायता दी। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय, भारती भवन, तथा कई बड़े बड़े प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के यहां गये और वहां से कितनी ही पुस्तकों का परिचय लिख-कर लाये। इस रचना की सामग्री जुटाने में हमने साहित्य-संदेश, विश्ववाणी, सरस्वती, माधुरी, विशाल-भारत, सुधा आदि मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित सूचनाओं और समालोचनाओं का भी उपयोग किया है। आर्य भाषा पुस्तकालय (नागरी प्रचारणी सभा, काशी) के सूचीपत्र से, और 'हिन्दी पुस्तक साहित्य, १८६२-१९४२' (हिन्दुस्तानी, एकेडेमी, प्रयाग) से भी हमें सहायता मिली है।

दस वर्ष पहले प्रकाशित इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में ७३ ट्रेक्टों के उल्लेख के अतिरिक्त अर्थशास्त्र की १४१ और राजनीति की २११ पुस्तकों का परिचय दिया गया था। अब इस संस्करण में अर्थ-शास्त्र की २९१, राजनीति की ३२८, और दोनों विषयों की मिली-जुली १३५ पुस्तकों के विषय में लिखा गया है। इसके अलावा ३९ पुस्तकों की चर्चा परिशिष्ट में है। पुस्तकों की जो संख्या बढ़ी है, इसमें कुछ ऐसी भी हैं. जिनका परिचय पहले संस्करण में नहीं दिया गया था, तो भी पिछले दस वर्ष में, इन विषयों के साहित्य में खासी वृद्धि हुई है, यह निश्चित और स्पष्ट है।

कुछ सज्जन यह आक्षेप किया करते हैं कि हिन्दी में अर्थशास्त्र और राजनीति का साहित्य बहुत ही कम है। हम भी इस साहित्य की बहुत वृद्धि चाहते हैं, लेकिन यह मानना होगा कि यह

साहित्य इतना कम नहीं है, जितना अकसर समझा जाता है। हमारी यह रचना इस तरह के भ्रम को दूर करने में सहायक होगी।

विचार करने की एक बात यह है कि प्रायः पुस्तकालयों में अर्थशास्त्र और राजनीति की पुस्तकें बहुत कम मंगाई जाती हैं, यहाँ तक कि हमें कुछ पुस्तकालयों की पुस्तक-सूची में इन मदों की पुस्तकों का बिलकुल अभाव ही मिला है। यह बहुत अनुचित है। हम चाहते हैं कि पुस्तकालयों के सचालक इन विषयों की अधिकाधिक पुस्तकें मंगाया करें। उन्हें अच्छी पुस्तकों के चुनाव में इस रचना से बहुत सहायता मिल सकती है। आशा है, पाठक इससे यथेष्ठ लाभ उठावेंगे। वे यह विचार करेंगे कि उन्हें इन विषयों की कौन कौन-सी पुस्तक पढ़नी चाहिए। लेखकों को भी यह निश्चय करने में सहायता मिलेगी कि उन्हें इन विषयों के किस अंग पर लिखना है।

भूगोल, इतिहास, कहानी, उपन्यास, आदि दूसरे विषयों के अधिकारी विद्वानों से हमारा नम्र निवेदन है कि वे अपने विषय के साहित्य पर इसी तरह प्रकाश डालें और पाठकों तथा लेखकों के लिए विचार-सामग्री देने का अनुग्रह करें।

विनीत

विषय सूची

पहला भाग; अर्थशास्त्र साहित्य

दूसरा भाग; राजनीति साहित्य

तीसरा भाग; मिश्रित साहित्य

परिशिष्ट

कुल पुस्तकें :—२९१ + ३२८ + १३५ + ३९ = ७९३

हिन्दी में

अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य

पहला भाग

अर्थशास्त्र साहित्य

भारतवर्ष के उन प्राचीन शास्त्र और स्मृति बनानेवालों को बारबार नमस्कार है, जिन्होंने धर्म और अर्थ (तथा काम और मोक्ष) का सुन्दर समन्वय किया है, मेल बैठाया है। कुछ लोगों का मत है कि धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए धन सम्बन्धी बातों से दूर रहना चाहिए, और रुपया पैदा करते समय धर्म के विचार को छोड़ देना ज़रूरी है; संसार में सफल होने के लिए जैसे भी बने, धन कमाने में जुटे रहना चाहिए। लेकिन भारतीय आदर्श यह है कि जीवन-यात्रा के लिए धन कमाओ, और खूब कमाओ; हाँ धन कमाते समय धर्म का विचार बनाये रखो। जिन कामों से दूसरों के हित में, समाज की भलाई में बाधा हो, उनसे धन पैदा न किया जाय।

निदान बहुत प्राचीन काल से भारतवर्ष में धन पैदा करने की ओर काफी ध्यान दिया जाता रहा है। भारत भूमि अब से केवल एक-डेढ़ सदी पहले तक संसार भर में स्वर्ण-भण्डार, रत्नगर्भा, और सोने की चिड़िया समझी जाती रही है, तो अवश्य ही यहाँ

आर्थिक साहित्य बड़ी मात्रा में रहा होगा। इस कथन में कुछ सार नहीं है कि प्राचीन भारतवासी केवल आध्यात्मिक बातों में लगे रहते थे, लौकिक विषयों में उनकी कुछ गति न थी। यह स्मरण रहना चाहिए कि हमारे चार उपवेदों में एक अर्थवेद रहा है, और अठारह प्रधान विद्याओं में अर्थशास्त्र की गणना होती रही है; शुक्र-नीति, महाभारत, मनुस्मृति आदि में अर्थशास्त्र सम्बन्धी अनेक बातों की विशद चर्चा की गयी है। कौटलीय अर्थशास्त्र के अनुसंधान ने तो इस बात का जीता-जागता ठोस तथा अखण्डनीय प्रमाण उपस्थित कर दिया कि अब मे सवा दो हज़ार वर्ष पहले, अर्थनीति और दण्डनीति सम्बन्धी व्यवस्था और विचारों में भारत इतना बढ़ा हुआ था कि उसकी अनेक बातें आधुनिक काल के सभ्य और उन्नत कहे जाने वाले राष्ट्रों के लिए भी शिक्षाप्रद हैं।

अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य का प्रारम्भ—अर्थशास्त्र को स्वतन्त्र शास्त्र का स्थान आधुनिक काल में ही दिया गया है। प्राचीन काल में भारतवर्ष में अर्थशास्त्र सम्बन्धी विवेचन तो हुआ, पर उस समय के अर्थशास्त्रों में बहुत सा अंश ऐसा है, जो आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नहीं माना जाता। अर्थशास्त्र को स्वतन्त्र विषय मानकर इसका अलग साहित्य तैयार करने का कार्य पाश्चात्य देशों ने आरम्भ किया; यद्यपि वहाँ भी कुछ प्रारम्भिक लेखकों ने इसका अन्य शास्त्रों के साथ सम्मिश्रण किया है।

जो हो, पाश्चात्य देशों—विशेषतया इंगलैण्ड—के संसर्ग के कारण यहाँ अर्थशास्त्र का आधुनिक रूप में अध्ययन होने लगा। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंगरेज़ी शिक्षा के प्रचार की वृद्धि होने से यहाँ उच्च परीक्षाओं की पाठ-विधि में यह विषय भी सम्मिलित किया गया। देश के भिन्न-भिन्न विद्वानों ने इस विषय पर अपने महत्व-पूर्ण विचार प्रकट किये। परन्तु, उन्होंने प्रायः अंगरेज़ी में ही लिखा; इसलिए सर्वसाधारण हिन्दी जनता उनसे लाभ न उठा सकी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में यहाँ राष्ट्रीयता के भावों की वृद्धि होने से देशहितैषियों का ध्यान राष्ट्र-भाषा के साहित्य के विकास की ओर गया। फल-स्वरूप बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से इस विषय की हिन्दी की भी पुस्तकों के दर्शन होने लगे।

अर्थशास्त्र साहित्य के भाग—अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य का विचार करने के लिए यह आवश्यक है कि पहले इसके मुख्य-मुख्य भागों का उल्लेख कर दिया जाय। सुभीते के लिए हम निम्नलिखित भाग करते हैं:—

[१] सिद्धान्त।
[२] भारतीय अर्थशास्त्र।
[३] प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र।
[४] आर्थिक विचारों का इतिहास।
[५] आर्थिक इतिहास।
[६] मुद्रा और करेन्सी।
[७] बैंक।
[८] विदेशी विनिमय।
[९] स्टाक एक्सचेञ्ज।
[१०] व्यापार व्यवसाय।
[११] आर्थिक और व्यावसायिक भूगोल।
[१२] यातायात।
[१३] कम्पनियाँ।
[१४] उद्योग धंधे—
(क) वस्त्र सम्बन्धी उद्योग धंधे,
(ख) ग्राम्य उद्योग धन्धे,
(ग) अन्य उद्योग धंधे।
[१५] ग्राम्य अर्थशास्त्र।
[१६] सहकारिता।

[१७] आर्थिक योजना ।
[१८] व्यापार चक्र ।
[१९] बीमा ।
[२०] बहीखाता और जांच ।
[२१] राजस्व ।
[२२] म्यूनिसिपल अर्थशास्त्र और नगर निर्माण ।
[२३] गणितात्मक अर्थशास्त्र ।
[२४] अंकशास्त्र ।
[२५] मज़दूर समस्या ।
[२६] समाजवाद
[२७] छोटी पुस्तकें ।
[२८] अर्थशास्त्र सम्बन्धी मासिक पत्रिकाएँ आदि ।
[२९] अर्थशास्त्र सम्बन्धी कोश ।

सिद्धान्त—बीसवीं शताब्दी में अर्थशास्त्र के विषय की बहुत ति होगयी है। खेद है कि हिन्दी भाषा में सिद्धान्त सम्बन्धी वर्तमान पुस्तकों में प्रायः पुराने विचारों का ही समावेश है। अंगरेज़ी में 'मार्शल', 'पीगू', 'चेपमेन' और राबिन्स आदि विविध लेखकों के उच्च कोटि के बड़े-बड़े ग्रन्थ हैं। हिन्दी में उनके समान अभी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई। ऐसी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है, जो अंगरेज़ी के इस विषय की किसी पुस्तक से कम दर्जे की न हों।

अब हम यह बतलाते हैं, कि इस विषय में हमारा वर्तमान साहित्य क्या है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं:—इनमें से पहली तीन पुस्तकों की विशेषता यह है कि ये इस विषय की सब से पहली रचनाएँ हैं।

१—**जीविका परिपाटी**। अनुवादक—पंडित वंशीधर, बड़े आकार के ५३ पृष्ठ, मूल्य तीन आने; सन् १८५३। यह हिन्दी में

अर्थशास्त्र की सम्भवतः सबसे पहली पुस्तक है। सरकारी प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित है। विद्यार्थियों के उपयोग के लिए, 'पोलिटिकल इकानामी' के प्रारम्भिक सिद्धान्तों का परिचय देने वाली एक पुस्तक स्कूलों के इन्स्पेक्टर-जनरल ने प्रकाशित करायी थी, उसका यह अनुवाद है।

२—**बालोपयोगी अर्थशास्त्र**। ले०—श्री० ब्रजनन्दन सहाय। यह सन् १९०६ में नागरी प्रचारिणी सभा, आरा, द्वारा प्रकाशित छोटी सी पुस्तक है। इसमें आठ पाठ हैं, उनमें कुछ मोटी-मोटी बातों की चर्चा की गयी है। मूल्य =) है।

३—**अर्थशास्त्र प्रवेशिका**। ले०—पं० गणेशदत्त पाठक। यह सन् १९०७ ई० में इण्डियन प्रेस, प्रयाग, में छपी। इसकी कई आवृत्तियाँ हो चुकी हैं। संशोधित संस्करण की बड़ी आवश्यकता है। मूल्य ।=) है।

४—**पैसा**। ले०—पं० चन्द्रशेखर शर्मा। यह 'पाटलीपुत्र' कार्यालय, पटना, से प्रकाशित हुई। इसकी भाषा अच्छी मनोरञ्जक है। इसमें विशेषतया उत्पत्ति, वितरण और राज्य-कर पर ही संक्षेप में विचार किया गया है। विनिमय पर बहुत कम, और उपभोग पर तो प्राय कुछ भी नहीं है। मूल्य ।=), पृष्ठ संख्या ६१।

५—**सम्पत्तिशास्त्र**। ले०—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी। यह अपने विषय की पहली बड़ी पुस्तक है। सरल और सुबोध भी है। इसमें स्थान स्थान पर भारतीय उदाहरण दिये गये हैं। आवश्यक पारिभाषिक शब्दों के उपयोग में भी सुयोग्य लेखक ने, अच्छा परिश्रम किया है। यह पुस्तक कई वर्ष तक इस विषय के लेखकों के लिए बहुत लाभकारी रही है। पर, अब इसमें आधुनिक, नवीन विचारों का अभाव प्रतीत होता है। यह पुस्तक अब प्रायः अप्राप्य है। प्रकाशक (इंडियन प्रेस, प्रयाग) को इसका नया संशोधित संस्करण प्रकाशित करना चाहिए।

६—**अर्थशास्त्र**। अनु०—पं० गिरिधर शर्मा। यह श्रीमति फौसेट की अंगरेज़ी पुस्तक का, सरल उदाहरणों सहित अनुवाद है। अंगरेज़ी की पुस्तक विशेष प्रामाणिक नहीं मानी जाती, तथापि अनुवादक महाशय का परिश्रम सराहनीय है। मू० १।), पृष्ठ २४६।

७—**अर्थशास्त्र (प्रथम भाग)**। इसके लेखक श्री० राजेन्द्रकृष्ण कुमार जी इस विषय के शिक्षक रहे हैं; आपने इस रचना को बड़े परिश्रम तथा अनुभव से तैयार किया है। इसमें केवल उत्पत्ति और उपभोग का ही विवेचन है। बीस वर्ष बीत जाने पर भी इसका नया संस्करण या दूसरा भाग देखने में नहीं आया। मूल्य २॥), पृष्ठ ३१८।

८—**अर्थविज्ञान**। लेखक—श्री० मुक्तिनारायण शुक्ल। यह मोर-लैंड साहब की अंगरेज़ी की एक सरल सुबोध पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है, और साधारण तौर से प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए अच्छी उपयोगी है। पृष्ठ संख्या ४१४ है। मूल्य ३), सम्वत् १९८०। प्र०—आदर्श कार्यालय, मेस्टन रोड, कानपुर।

९—**नवीन सम्पत्तिशास्त्र**। अनु०-पं० सोमेश्वरदत्त शुक्ल। यह पुस्तक सुप्रसिद्ध और प्रभावशाली लेखक जान रस्किन के कुछ लेखों का अनुवाद है। यद्यपि आधुनिक अर्थशास्त्रियों के मत से रस्किन इस विषय के प्रामाणिक लेखक नहीं माने जाते, पुस्तक पठनीय और विचारणीय है। प्र०-अभ्युदय प्रेस, प्रयाग। मूल्य ।≈)

१०—**अर्थशास्त्र की रूप रेखा**। ले०—श्री० दयाशंकर दुबे एम० ए०। प्र०-साहित्य निकेतन, दारागंज, प्रयाग। डिमाई आठ पेजी आकार; पृष्ठ संख्या कुल मिलाकर पाँच सौ से अधिक। सजिल्द, मूल्य ३)। इसमें उत्पत्ति, उपभोग, विनिमय और वितरण के सिद्धान्तों का कहानियों या वार्तालाप के रूप में विवेचन है। भारतीय दृष्टिकोण से लिखी गयी है। धर्म और अर्थ का मेल बताया गया है। पुस्तक विशेषतया इंटरमीजियट क्लास के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी

है। पहला संस्करण सन् १६४० में प्रकाशित हुआ था, अब दूसरे संस्करण की योजना हो रही है।

११ **अर्थशास्त्र की रूपरेखा** लेखक—आर० एस० त्रिपाठी, प्र०—श्री पतिराम तिवारी (पता नहीं लिखा); पृष्ठ १२२, मूल्य १) अर्थशास्त्र का प्रारम्भिक परिचय।

१२—**अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त**। ले०—श्री० कृष्णकुमार शर्मा, एम० ए०, बी० काम०। प्र०—किशोर पबलिशिंग हाउस, कानपुर। पृष्ठ संख्या २३२+२२। सजिल्द। मूल्य सवा दो रुपये। लेखक सनातनधर्म कालिज, कानपुर, में अर्थशास्त्र और कामर्स के अध्यापक हैं। उन्होंने पुस्तक इंटर के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए लिखी है। इसमें भारतवर्ष की आर्थिक स्थिति का भी विवेचन है। उपयोगी अंक और तालिकाएँ दी गयी है। अन्त में पारिभाषिक शब्द भी दिये गये हैं। पुस्तक अपने ढङ्ग की खासी अच्छी है।

१३—**अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त**। ले०—श्री० भगवानदास अवस्थी एम० ए०; प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद। पृष्ठ ४३८; मूल्य, डेढ़ रुपया। इसमें अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्तों को अच्छी तरह समझाया गया है। इसे पढ़कर पाठकों को इस विषय की प्रमुख बातों की काफी जानकारी होजाती है। मूल्य भी बहुत कम है। प्रचार योग्य है।

१४—**अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक नियम**। ले०—श्री० प्रेमचन्द जी बी० ए०, डेराइस्माइलखां के बी० बी० कालिज के अर्थशास्त्र के अध्यापक। प्र०—आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई। सजिल्द। पृष्ठ २४१। मूल्य छपा नहीं। पुस्तक में आठ चित्र, हिन्दी उर्दू अंगरेजी के पारिभाषिक शब्द और हर एक अध्याय पर आवश्यक प्रश्न हैं। लेकिन प्रश्न अंग्रेजी में दिये गये हैं। एफ० ए० या इसके समान योग्यता वाली श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक

उपयोगी है। कुछ पारिभाषिक शब्दों के उपयोग में और अधिक सावधान रहने की आवश्यकता थी।

१५ **सम्पत्ति शास्त्र (प्रथम भाग)**। लेखक--डाक्टर प्राणनाथ, प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय; प्रकाशक--नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस; पृष्ठ १५६ (सजिल्द), मूल्य १॥)। पुस्तक काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में इंटरमीजिएट के पाठ्यक्रम में है। व्यय खण्ड, उत्पत्ति खण्ड तथा मूल्य-खण्ड इसके प्रमुख अंग हैं।

१६--**सरल अर्थशास्त्र**। ले०--सर्वश्री दयाशंकर दुबे एम० ए० और भगवानदास केला; प्र०--लाला रामनारायण लाल, प्रयाग। पृष्ठ २६+३०३, सजिल्द, मूल्य तीन रुपये। यह पुस्तक संयुक्तप्रान्त की इंटरमीजिएट परीक्षा के अर्थशास्त्र विषय के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है, उसके लिए स्वीकृत भी है। इसके अन्त में आवश्यक परिशिष्ट, शब्दानुक्रमणिका और रेखा-चित्र आदि है। इसका उर्दू अनुवाद भी होगया है।

१७--**प्रारम्भिक अर्थशास्त्र**। ले०--श्री० शंकरसहाय जी सकसेना एम० ए०; प्र०--श्री मेहरा एण्ड को०, आगरा। मूल्य तीन रुपये। यह पुस्तक संयुक्तप्रान्त की इन्टरमीजिएट परीक्षा के अर्थशास्त्र विषय के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है। लेखक अपने विषय के विद्वान और अनुभवी शिक्षक हैं, पुस्तक अच्छी और उपयोगी है।

१८--**अर्थशास्त्र**। लेखक और प्रकाशक—प्रो० बालकृष्ण एम० ए०, हरिद्वार। पृष्ठ ५३० और मूल्य डेढ़ रुपया। पशुपालन, कृषि, व्यापार, व्यवसाय, शिल्प, बैंक और कम्पनियों की प्रणालियों पर प्रकाश डालते हुए आधुनिक पद्धतियों से धन पैदा करने की रीतियाँ बतायी गयी हैं। पुस्तक खोज के साथ लिखी गयी है। नये संशोधित संस्करण का अवसर नहीं आया।

१९--**धन की उत्पत्ति**। ले०—सर्वश्री दयाशंकर दुबे एम० ए०, और भगवानदास केला। प्र०--लाला रामनारायण लाल,

प्रयाग। पृष्ठ संख्या २७१; सादी जिल्द; मूल्य १।)। इसमें धनोत्पत्ति के नियम, उत्पत्ति बढ़ाने के उपाय तथा उत्पत्ति सम्बन्धी आदर्श समझाये गये हैं। इस पुस्तक को लिखते समय ऐसी योजना थी कि अर्थशास्त्र के सभी भागों पर अलग-अलग ऐसी ही पुस्तकें लिखी जायँ, जिससे हिन्दी साहित्य के इस अङ्ग की यथा-सम्भव पूर्ति हो। प्रथम संस्करण; सन् १९३३।

२०—**अमीरी व गरीबी**। ले०—प्रो० सुधाकर; विक्रेता—इण्डियन प्रिंटिंग वर्क्स, चौक, लाहौर; पृष्ठ ६०, मूल्य ॥)। इसमें अर्थशास्त्र को सुगम बनाने का प्रयत्न करते हुए, खासकर बालकों के उपयोगार्थ, अमीरी और गरीबी के वास्तविक अर्थ की चर्चा की गयी है।

२१—**धन का उपयोग**। ले०—श्री० सेमुअल स्माइल्स; अनु०—बाबू वृन्दावनलाल वर्मा; प्रकाशक—कुँवर हनुमंतसिंह रघुवन्शी, राजपूत ओरियण्टल प्रेस, आगरा; पृष्ठ ३३, मूल्य ≡)। धन का उपयोग किस तरह किया जाना चाहिए, इसका संक्षिप्त विवेचन है।

२२—**व्यय**। ले०—पंडित श्यामबिहारी मिश्र और शुकदेव बिहारी मिश्र। प्र०—नीलकंठ द्वारका प्रसाद, लखनऊ। पृष्ठ ३८, मूल्य चार आने। इसमें पाठकों का ध्यान अपव्यय से बचने और सद्व्यय करने की ओर दिलाया गया है। हरेक बात उदाहरण देकर अच्छी तरह समझायी गयी है। पुस्तक के अन्त में स्वदेशी वस्तुओं को व्यवहार में लाने के लिए अपील की गयी है।

२३—**मितव्ययता**। लेखक—दयाचन्द्र जैन; प्रकाशक—हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, बम्बई; पृष्ठ १९९; मूल्य ॥।≡)। इसमें श्री० सेमुअल स्माइल्स की पुस्तक के आधार पर धन के सदुपयोग तथा दुरुपयोग का गृहस्थोपयोगी विवेचन किया गया है।

२४—**सम्पत्ति का उपभोग**। ले०—श्री० दयाशंकर जी दुबे एम० ए०, और मुरलीधर जोशी एम० ए०। उपभोग के विषय पर एक मात्र अच्छी स्वतन्त्र रचना है। इसमें उपयोगिता, माँग, रहन-सहन, बचत, अपव्यय, दानधर्म और दुरुपयोग आदि पर प्रकाश डाला गया है। तृष्णाओं से मुक्ति, सादा जीवन और उच्च विचार आदि पर भी एक अध्याय है। मूल्य १।), प्र०—अर्थशास्त्र ग्रन्थावली; दारागंज। सन् १६४१ में इसका दूसरा संस्करण छपा था।

२५—**अर्थशास्त्र** (अप्रकाशित)। परिडत जगतनारायण लाल जी, पटना, ने सिद्धांत विषय पर एक सविस्तर ग्रन्थ लिखा है। जब यह छप जायगा तो आशा की जाती है कि इससे एक बड़े और प्रामाणिक ग्रन्थ के अभाव की बहुत कुछ पूर्ति होजायगी।

भारतीय अर्थशास्त्र—इस विषय पर अभी तक निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं :—

१—**देश का धन**। ले०—श्री० राधामोहन गोकुलजी। यह भारतीय अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में सम्भवतः सबसे पहली पुस्तक है। आधुनिक दृष्टि से यह बहुत छोटी है। इसमें अंकों का प्रायः अभाव है। इसका दूसरा संस्करण होने का अवसर नहीं आया। मूल्य ॥), पृष्ठ ११२, सम्वत् १६६५।

२—**भारतीय सम्पत्ति शास्त्र, या देश की सच्ची बात**। ले०—श्री० प्राणनाथ विद्यालंकार। यह पुस्तक सन् १६२३ में छपी थी और उससे भी कई वर्ष पहले लिखी गयी थी, प्रकाशित होने के समय इस का आवश्यक संशोधन नहीं हुआ। इससे उसके अनेक स्थानों के अंश पुराने पड़ गये, तथा उन अंकों के आधार पर प्रकट किये हुए विचार भी ठीक न रहे। वैसे पुस्तक खासी अच्छी है। मूल्य ५), पृष्ठ ८७६, सजिल्द। प्रकाशक—प्रताप कार्यालय, कानपुर।

३—**भारतीय अर्थशास्त्र**। ले०—प्रो० अमरनाथ बाली, और मोहनलाल। इस पुस्तक में व्यापार का अंश बहुत संक्षिप्त है। उपभोग पर तो कुछ भी नहीं लिखा गया। उस पर भी लिखने की आवश्यकता थी। वैसे पुस्तक अच्छी और उपयोगी है। मूल्य २), पृष्ठ संख्या २७५। प्राप्ति-स्थान, विरजानन्द प्रेस, लाहौर। पहला संस्करण; सम्वत् १९८०।

४—**भारत की साम्पत्तिक अवस्था**। ले०—श्री राधाकृष्ण झा। इस पुस्तक में सैद्धान्तिक विवेचन न होने पर भी बहुत विचारणीय सामग्री है, हाँ कई स्थानों के अंक पुराने होगये हैं, और उन अंकों के आधार पर की गई आलोचना में भी संशोधन की आवश्यकता है। लेखक महाशय का स्वर्गवास होजाने से उनकी रचना को समयोपयोगी बनाने का उत्तरदायित्व विशेष रूप से इसके प्रकाशकों पर है। मूल्य ३॥), पृष्ठ ६३४। प्रकाशक, हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। पहला संस्करण, सम्वत् १९७७।

५—**भारतीय अर्थशास्त्र**। ले०-श्री भगवानदास केला। इसमें उत्पत्ति, उपभोग, मुद्रा और बैंक, विनिमय, और वितरण पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। महायुद्ध से होनेवाली आर्थिक समस्याओं पर भी विचार किया गया है। तीसरा संस्करण, सन् १९४२, मूल्य तीन रुपये; प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। चौथे संस्करण की तैयारी हो रही है।

६—**भारत में दुर्भिक्ष**। ले०-पं० गणेशदत्त शर्मा। मूल्य १॥), पृष्ठ २५२; सम्वत् १९७७। इस में इस देश की निर्धनता पर अच्छा विचार किया गया है। यहाँ के व्यापार, कृषि, पशु आदि की स्थिति के अतिरिक्त, लोगों की आर्थिक और सामाजिक दशा तथा विदेशी माल की आयात से होनेवाली हानि की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया गया है। मिलने का पता—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग।

७—बंगाल का अकाल। ले०–श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी; अनु०–श्री भगवतीप्रसाद चंदोला; प्र०—संचयिनी, कलकत्ता। पृष्ठ १२६, मूल्य तीन रुपये। इसमें बंगाल के सन् १९४३ के अकाल के दिनों में दिये हुए भाषणों और वक्तव्यों का हिन्दी रूपान्तर है। तत्कालीन बंगाल-सरकार और भारत-सरकार को इस अकाल के लिए दोषी सिद्ध किया गया है।

८—चालीस करोड हिन्दुस्तानियों के अन्न का सवाल। ले०–श्री बी० टी० रणदिवे, प्रकाशक—जन-प्रकाशन गृह, बम्बई; मूल्य ।) और पृष्ठ ३६। द्वितीय महायुद्ध के मध्य में देश में जो भीषण अन्न-संकट उत्पन्न हुआ, उसको भारत की मौजूदा नौकरशाही की अयोग्यता का परिणाम सिद्ध करते हुए, सरकारी प्रयत्नों के थोथेपन पर प्रकाश डाला गया है और अन्न की लड़ाई को राष्ट्रीय लड़ाई का ही एक अंग बताया गया है।

९—देश दर्शन। ले०–डा० शिवनन्दनसिंह। इस में भारतीय जन-संख्या के प्रश्न पर गम्भीर विवेचना पूर्ण विचार किया गया है, और यह कैसे रुक सकती है तथा सन्तान को किस प्रकार शारीरिक और मानसिक दृष्टि से अधिक योग्य बनाया जाना चाहिए, इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। स्थान स्थान पर अन्य देशों की स्थिति का परिचय, अंक, चित्र और कोष्टक आदि दिये गये है। सन् १९२२ ई० में प्रकाशित इसका तीसरा संस्करण हमारे सामने है। मूल्य २), पृष्ठ संख्या ३१९। प्र०—हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगांव, बम्बई।

१०—भारत का आर्थिक शोषण। ले०–डाक्टर पट्टाभिसीता-रामैया, अनु०—श्री घनश्याम विष्णु भाटे बी. काम.। प्रकाशक–मातृ-भाषा मंदिर, दारागंज, प्रयाग। मूल्य ।।।=), पृष्ठ संख्या १२०। मूल पुस्तक अंगरेजी में है। इसमें कुछ विषय ये हैं—नमक, कपड़ा, ओटावा समझौता, रेल, जहाज, कोयला, मुद्रा, विनिमय, सेना

आदि। पुस्तक बहुत महत्व की है। विचार-पूर्ण बातों से भरी है, पर अनुवाद अच्छा नहीं हुआ, छापे की अशुद्धियाँ भी बहुत है।

११—**हमारा हिन्दुस्तान**। ले०—श्री मीनू मसानी; अनु०—बी० पी० सिन्हा; प्र०—आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कलकत्ता। पृष्ठ १६७, चित्र १००। पुस्तक में बहुत रोचक, मनोरंजक और शिक्षाप्रद ढङ्ग से भारतवर्ष के बारे में खासकर आर्थिक जानकारी दी गयी है। जनसंख्या के प्रसंग में लेखक कहता है कि क्या इससे आपके हृदय में यह उमंग नहीं उठती कि हम भी दुनिया के मसलों को सुलझाने और उसे और भी अच्छा बनाने में पूरा हिस्सा लें। पुस्तक बहुत उपयोगी है। मूल्य १॥)।

प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र—भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त विदेशी लेखक और यात्री भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि प्राचीन काल में भारतवर्ष धन-धान्य से पूर्ण था, और यहाँ की जनता सुखमय जीवन व्यतीत करती थी। बड़े-बड़े विद्वानों की भी कमी न थी। ऐसी दशा में यह स्वाभाविक प्रतीत नहीं होता कि यहाँ अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य की रचना में उपेक्षा की गयी हो। परन्तु, हमारा बहुत सा पुस्तक-भण्डार नष्ट हो चुका है, और जो कुछ बचा है, उसे भी प्रकाश में लाने के लिए यथेष्ट प्रयत्न नहीं किया गया। इस समय केवल निम्नलिखित पुस्तकें पाठकों के सामने हैं:—

१-२—**कौटलीय अर्थशास्त्र**। इसके हिन्दी में अभी तक दो अनुवाद प्रकाशित हुए हैं—एक श्री० उदयवीर शास्त्री का, दूसरा श्री प्राणनाथ विद्यालंकार का। प्रायः पहला अनुवाद अधिक शुद्ध, स्पष्ट और उत्तम माना जाता है, यद्यपि इसमें भी कुछ स्थानों पर विद्वानों का मत-भेद है। कहीं कहीं तो मूल प्रति में ही भूलें मालूम होती हैं; जिनके संशोधन की आवश्यकता है। निस्सन्देह मूल प्रति का यथेष्ट सम्पादन न होने तथा लेखक के आशय को पूरी तरह न समझ सकने

से, अनुवाद में कुछ त्रुटियों का होजाना स्वाभाविक है। तथापि इस ग्रन्थ से उस समय की समाजनीति, अर्थनीति, एवं शासननीति आदि का परिचय मिलता है। इसमें सदाचार, सैनिक संगठन, रण-नीति, सैनिक इमारतें, गुप्तचर, धातु विद्या आदि अनेक ऐसे विषयों का भी समावेश है जो आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र के विषय ही नहीं हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के इतने विषयों पर एक बृहत् तथा पांडित्यपूर्ण ग्रन्थ की रचना करना कोई साधारण कार्य नहीं है। कौटिल्य की इस प्रसिद्ध रचना की प्रशंसा पाश्चात्य देशों के बड़े-बड़े विद्वानों तक ने की है।

श्री उदयवीर शास्त्री का किया हुआ अनुवाद मूल सहित, प्रथम संस्करण, सन् १९२५, पृष्ठ ६३०, सजिल्द, मूल्य दस रुपये। सन् १९२७ में प्रकाशित ३३७ पृष्ठों का पारीक्ष्य संस्करण; मूल्य ढाई रुपये। प्र०—मेहरचन्द लक्ष्मणदास, सैद मिट्ठा बाजार, लाहौर।

इस ग्रन्थ का दूसरा अनुवाद श्री० प्राणनाथ जी विद्यालंकार का किया हुआ है। पृष्ठ ४२८, सजिल्द; प्र०—श्री मोतीलाल बनारसीदास, सैद मिट्ठाबाजार, लाहौर। मूल्य लिखा नहीं। अनुवाद साधारण है।

३—**कौटिल्य के आर्थिक विचार**। ले०—श्री० जगनलाल गुप्त और भगवानदास केला। मूल्य ।।।=)। हम पहले कह आये हैं कि कौटलीय अर्थशास्त्र में आधुनिक दृष्टि से केवल अर्थशास्त्र का ही विवेचन नहीं है वरन् उसमें और भी कितने ही विषयों का समावेश है। आलोचनीय पुस्तक में उसके भिन्न-भिन्न स्थानों से मिलने वाली एक-एक आर्थिक विषय की सामग्री एकत्र करके सरल तथा सुबोध रूप में पाठकों के सामने रखी गयी है। विषय विवेचन उस क्रम से रखा गया है, जिससे कि आज कल अर्थशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों में रहता है, इससे आधुनिक विद्यार्थियों को इसे समझने में मूलग्रन्थ की सी कठिनाई नहीं होती। दूसरा संस्करण हो चुका है। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग।

४—बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र। यह अपेक्षाकृत एक छोटा सा ग्रन्थ है। इसका अनुवाद श्री० कन्नोमलजी एम. ए. ने किया है। अनुवादक महाशय ने अपनी भूमिका तथा टिप्पणियों आदि में कई विचारणीय प्रश्नों पर प्रकाश डाला है, तो भी कई स्थल पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं हैं, और अधिक विचार किये जाने की आवश्यकता है। प्र०—मोतीलाल बनारसीदास, सैद मिट्ठा बाजार, लाहौर। पृष्ठ ११४; मूल्य मालूम नहीं।

आर्थिक विचारों का इतिहास—भिन्न-भिन्न लेखकों के अर्थशास्त्रों के अतिरिक्त हमें विदेशों तथा भारतवर्ष के भिन्न भिन्न समय के आर्थिक विचारों के इतिहास के भी अध्ययन करने की बड़ी आवश्यकता है। भारतवर्ष के आर्थिक विचारों को हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं (१) पूर्व कालीन, (२) मध्य कालीन और (३) आधुनिक। पूर्व कालीन आर्थिक विचारों के इतिहास में कौटलीय अर्थशास्त्र तथा बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र से बड़ी सहायता मिल सकती है। इसी प्रकार वेद, शास्त्र, स्मृति और पुराणों का अध्ययन होना चाहिए। पिछले वर्षों में बाबू साधुचरण प्रसादजी ने चवालीस स्मृतियों को एकत्रित करने का महान कार्य सम्पादित किया। उनके इस परिश्रम से बहुत लाभ उठाया जा सकता है।

इस सम्बन्ध के इने गिने आधुनिक लेखकों और प्रकाशकों में श्रीमान् दामोदर सातवलेकर, औंध, (सतारा) प्रमुख हैं। आप वैदिक साहित्य के विशेष रूप से अध्ययन और अनुशीलन करने-वाले हैं, आपकी रचनाओं में प्राचीन संस्कृति के प्रेमियों के लिए पर्याप्त सामग्री रहती है। आपकी ये पुस्तकें जनता के सामने हैं:—(क) वेद में कृषि-विद्या, (ख) वेद में चर्खा, और (ग) वेद में लोहे के कारखाने। इनका मूल्य क्रमशः ॥), ।-), और ≥) है।

मध्यकालीन आर्थिक विचारों में विशेष रूप से शेरशाह, अकबर,

औरङ्गजेब और शिवाजी की आर्थिक नीति पर बहुत कुछ लिखे जाने की जरूरत है। खेद है कि अभी तक हिन्दी लेखकों का ध्यान इस ओर नहीं गया। इस विषय की एक भी अच्छी पुस्तक हमारे साहित्य-भंडार में नहीं है। इस विषय के सम्बन्ध में अंगरेज़ी और मराठी में कई उत्तमोत्तम पुस्तकें हैं। यदि हिन्दी लेखक स्वतंत्र खोज न भी करें तो उनके आधार पर ही वे अच्छी सामग्री का संकलन कर सकते हैं। आधुनिक काल के आर्थिक विचारों के सम्बन्ध में भी बहुत कम साहित्य है। स्व० दादाभाई नौरोज़ी, महादेव गोविन्द रानाडे, गोपालकृष्ण गोखले तथा वर्तमान भारतीय अर्थशास्त्रियों के आर्थिक विचार हिन्दी जनता के सम्मुख लाये जाने की बड़ी आवश्यकता है।

यह तो हुई, भारतीय लेखकों के सम्बन्ध की बात। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न समय के अन्य देशीय अर्थशास्त्रियों के विचारों के अनुशीलन की भी आवश्यकता है, क्योंकि आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र में विशेष उन्नति पाश्चात्य विद्वानों ने ही की है। उन के विचारों के इतिहास का अपना विशेष महत्व है। आशा है, हमारे विद्वान लेखक इस ओर यथेष्ट ध्यान देंगे।

आर्थिक इतिहास—आजकल इतिहास की सभी अच्छी पुस्तकों में देश की आर्थिक स्थिति का भी परिचय दिया जाता है। तथापि आर्थिक इतिहास की स्वतन्त्र पुस्तकें अभी बहुत कम हैं; हमारे सामने नीचे लिखी पुस्तकें आयी हैं—

१—**जब अंगरेज नहीं आये थे।** यह ब्रिटिश पार्लिमेंट की एक कमेटी की रिपोर्ट का अनुवाद है, और चिरस्मरणीय स्व० दादाभाई नौरोजी के सुप्रसिद्ध अंगरेज़ी ग्रन्थ 'भारत में निर्धनता और अब्रिटिश शासन' से ली गयी है। अनु०—श्री० शिवचरणलाल वर्मा। प्रकाशक है, सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली। इसमें बताया गया है कि अंगरेज़ों के इस देश में आगमन से, तथा भारतीय हितों के प्रति उनकी

निन्दनीय उदासीनता से, यहाँ की सम्पत्ति किस प्रकार लोप होगयी। पुस्तक अकाट्य प्रमाणों के आधार पर लिखी गयी है। मूल्य ।) पृष्ठ ७४+१८।

२—**ब्रिटिश भारत का आर्थिक इतिहास**। यह स्व० श्री रमेशचन्द्र दत्त की अंगरेज़ी पुस्तक का संक्षिप्त अनुवाद है। अनुवादक हैं, श्री केशवदेव सहारिया, और प्रकाशक है ज्ञान मण्डल कार्यालय, काशी। मूल्य १), पृष्ठ २१६। यह एक प्रामाणिक पुस्तक है, इस का विषय बहुत विचार और मनन करने योग्य है। इसके पढ़ने से भारतीय निर्धनता के कारणों को समझने और राजनैतिक असन्तोष का निवारण करने में बहुत सहायता मिल सकती है।

३—**ग़रीब भारत, या भारतवर्ष का आर्थिक इतिहास** (अप्रकाशित)। ले०—श्री० कृष्णचन्द्रजी बी० एस-सी०, वृन्दावन। पृष्ठ लगभग १२००। इसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन-काल से अब तक का विवेचन है। इसमें निम्नलिखित विषय हैं:—भारतीय दस्तकारी, व्यापार, टेरिफ, रेल-पथ, नहर, राजस्व, ऋण, भूमि कर, अफीम कर, आबकारी कर, नमक कर, करेन्सी और विनिमय, सैनिक व्यय, होमचार्ज, इंगलैंड और हिन्दुस्तान के पारस्परिक लेन देन का हिसाब, भारत में विदेशी पूँजी।

मुद्रा और करेन्सी—इस महत्वपूर्ण विषय पर केवल छः ही पुस्तकें देखने में आती हैं; पहली दो पुस्तकें नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वारा प्रकाशित हैं:—

१—**प्राचीन मुद्रा**। ले०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्राचीन मुद्राओं से किसी देश के लुप्त इतिहास की अनेक बातें जानने में बड़ी सहायता मिलती है। इसलिए जिस रचना में उनका आलोचनात्मक विवरण हो, उसका महत्व स्पष्ट है। हिन्दी की इस विषय की यह एकमात्र पुस्तक बंगला पुस्तक का अनुवाद है। इसमें भारतवर्ष के सब से

प्राचीन सिक्कों के अनुकरण पर बने हुए तथा पूर्वकालीन भिन्न भिन्न सम्राटों एवं स्थानों के सिक्कों का व्योरा देते हुए यह बताया गया है कि इन सिक्कों से किन-किन बातों पर प्रकाश पड़ता है। आवश्यकता है कि ऐसी पुस्तक का समय-समय पर नया संस्करण होता रहे, जिससे उसमें नयी से नयी खोज के परिणामों का यथेष्ट समावेश हो सके।

२—**मुद्रा शास्त्र**। ले०—डा० प्राणनाथ विद्यालंकार। इसमें बतलाया गया है कि मुद्रा का उद्देश्य क्या होता है, इसका प्रारम्भ में क्या स्वरूप था, फिर किस प्रकार क्रमशः इसका विकास हुआ। भिन्न-भिन्न धातुओं की मुद्रा की क्या उपयोगिता तथा क्या गुण दोष होते हैं। काग़ज़ी मुद्रा मे क्या और किस सीमा तक लाभ होता है। इस पुस्तक में यह भी विचार किया गया है कि मुद्रा के चलन के सम्बन्ध में किन-किन सिद्धांतों को ध्यान में रखना आवश्यक है; और भारतवर्ष की इस विषय में क्या स्थिति है।

३—**करेन्सी**। ले०-श्री गौरीशंकर शुक्ल; प्र०-सरस्वती ग्रन्थमाला कार्यालय, बेलनगंज, आगरा; पृष्ट १५१, मूल्य १।)। ग्रेपम के सिद्धान्तों के आधार पर भारतीय मुद्रा-प्रचलन का सरल भाषा में वर्णन किया गया है।

४—**रुपये की कहानी**। ले०—श्री० घनश्यामदास जी बिडला, और पारसनाथ सिंह। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। पृष्ठ संख्या तीन सौ से अधिक। मूल्य २।।)। इस का विषय है हुंडी और चलण। इस का प्रथम भाग ७५ पृष्ट का है। इसमें मीमांसा सम्बन्धी विचार है। यह श्री० बिडला जी ने लिखा है। दूसरा भाग ऐतिहासिक है, यह श्री० पारसनाथ सिंह जी का लिखा हुआ है। दोनों सज्जन अपने विषय के अधिकारी हैं, इस लिए पुस्तक के प्रामाणिक और उपयोगी होने में कोई सन्देह नहीं है। पुस्तक के अन्त में आवश्यक परिशिष्ट भी दे दिये गये हैं। जहाँ तक बन आया, भाषा सरल रखने की कोशिश की गयी है।

५—**सोने की माया।** लेखक—श्री० किशोरलाल घ० मशरूवाला; प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; छोटे आकार के ६१ पृष्ठ, मूल्य एक आना। इस में मुद्रा-प्रणाली का विरोध करते हुए इस बात का प्रतिपादन किया गया है कि जिस धन को अधिकांश प्रजा अपने श्रम से उत्पन्न कर सकती है, वही उस देश में आर्थिक व्यवहार का साधन बनना चाहिए।

६—**कर्जदार से साहूकार।** लेखक—श्री० घनश्यामदास बिड़ला प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; पृष्ठ २४ और मूल्य =)। स्टर्लिंग के रूप में भारत का जो धन लन्दन में जमा होता जा रहा है, उसके सम्बन्ध में इंग्लैण्ड से हमारी क्या माँग हो, यही पुस्तिका का विषय है।

बैंक—प्रत्येक देश की आर्थिक उन्नति में बैंकों का बड़ा भाग होता है। अतः यहां ऐसी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है, जिनमें इस विषय का विवेचन हो कि यहाँ बैंकों की स्थिति कैसी है, उन्नति और वृद्धि में क्या बाधाएँ हैं, उन बाधाओं को किस प्रकार दूर किया जासकता है, अन्य देशों में बैंकों के विस्तार के लिए क्या सरकारी और ग़ैर-सरकारी प्रयत्न किये जाते हैं, और उनके अनुभव से यहाँ क्या लाभ उठाया जाना चाहिए। यद्यपि अर्थशास्त्र की इस शाखा से मिलती हुई अन्य शाखाओं के साहित्य में थोड़ा-बहुत विचार इस विषय का भी होता है, तथापि इस विषय सम्बन्धी स्वतंत्र पुस्तकों की आवश्यकता रहती है :

१—**भारतीय बैंकिंग।** ले०—श्री० द्वारकालाल गुप्त, मैनेजर, कोटा स्टेट कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड। प्र०—रायसाहब रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद। मूल्य १।), पृष्ठ २६७+१५। इस में वैदिक काल से लेकर अब तक के प्राचीन तथा अर्वाचीन बैंकिंग धंधे का इतिहास है, और वर्तमान विविध बैंकिंग संस्थाओं के संगठन तथा कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। यह भी बताया गया है कि वे

संस्थाएं किस प्रकार भारतीय उद्योग धन्धों और कृषि आदि के लिए अधिक से अधिक उपयोगी हो सकती हैं। पुस्तक में आवश्यक अंक तथा कोष्ठक आदि दिये गये हैं; बहुत उपयोगी है।

२—**मेहरोत्रा बैंकिंग डायरेक्टरी**। ले० और प्र०—श्री० राधेश्याम मेहरोत्रा, श्याम भवन, फर्रुखाबाद। इसमें भारत के हरेक नगर के बैंकों का पूरा विवरण दिया गया है। जो लोग बैंकों द्वारा व्यापार करते हैं, या अपनी हुंडी बिल्टी बैंकों द्वारा मंगवाया या भेजा करते हैं, उनके लिए यह बहुत उपयोगी है।

विदेशी विनिमय—इस विषय की केवल दो पुस्तकें हमें मालूम हुई हैं—

१—**विलायत की हुँडी**। ले०—एच० ए० घोष; प्र०—पेट्रिक प्रेस, कलकत्ता; सन् १८९७ ई०। मूल्य एक रुपया। यह अपने विषय की सब से पहली पुस्तक है।

२—**विदेशी विनिमय**। ले०—श्री० दयाशंकर दुबे एम० ए०। इसमें यह बताया गया है कि अलग-अलग देशों में आपसी लेन-देन किस तरह होता है, विनिमय की दर पर किन बातों का प्रभाव पड़ता है और वह किन दशाओं में स्थिर रहती है। इस में भारतवर्ष की विनिमय सम्बन्धी स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। मूल्य १), पृष्ठ संख्या १६०। दूसरा संशोधित संस्करण सन् १९३४ में प्रकाशित हुआ। पृष्ठ संख्या १८४। पता—गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ।

स्टाक एक्सचेंज—इस विषय पर अभी तक केवल ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:—

१—**स्टाक एक्सचेञ्ज**। इसके रचयिता और प्रकाशक व्यापारिक साहित्य के अनुभवी लेखक श्री० गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक' हैं। औद्योगिक कारखानों के संचालनार्थ धन संग्रह करने के लिए स्टाक एक्सचेञ्ज सम्बन्धी संस्थाओं के सम्बन्ध में समुचित ज्ञान प्राप्त करना

अत्यन्त आवश्यक है, इसलिए ऐसी पुस्तक का बहुत प्रचार होना चाहिए। इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यापारियों के वास्ते बहुत उपयोगी सामग्री दीगयी है।

२--**स्टाक बाज़ार या सट्टा**। लेखक श्री० सियारामजी दुबे बी. ए., और प्रकाशक श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर; मूल्य ॥=) है। लेखक आर्थिक विषयों के अच्छे जानकार तथा उनमें रुचि रखने वाले थे। दुःख है आप का युवावस्था में ही देहान्त होगया, और १९२४ के बाद अब तक पुस्तक का नया संस्करण नहीं छपा।

व्यापार व्यवसाय—इस विषय की निम्नलिखित पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं :—

१--**व्यापार संगठन**। ले०-श्री० गौरीशंकर शुक्ल बी० काम०। इसमें व्यापार के तत्वों के अतिरिक्त कम्पनी का संगठन और संचालन, दुकानों का प्रबन्ध, विक्रय करना, और बीमे के सम्बन्ध में विचार किया गया है। आधुनिक पद्धति के बड़े पैमाने के व्यापार के लिए पुस्तक बहुत उपयोगी है। प्रथम संस्करण, सम्वत १९८१। पृष्ठ ५३०; मूल्य २॥)

२--**व्यापार दर्पण**। ले०--पं० छविनाथ पांडेय एल-एल० बी०। इस में अन्यान्य बातों के साथ-साथ यह भी बतलाया गया है कि भारतवर्ष में कौन-कौनसी वस्तु कहाँ किस परिमाण में मिलती है, और कौनसी वस्तुएँ कितने परिमाण में विदेशों को जाती हैं। भारतवर्ष की व्यापारिक मंडलियों, बन्दरगाहों तथा रेलों के सम्बन्ध में भी बहुतसी आवश्यक और उपयोगी बातें दीगयी हैं। मूल्य २), पृष्ठ ४६६; प्रकाशक, मारवाड़ी अग्रवाल महासभा, कलकत्ता।

३--**व्यापार शिक्षा**। ले०--पं० गिरिधर शर्मा। यह एक छोटी और सरल पुस्तक है। इस के कुछ विषय ये हैं, साख, विज्ञापन, साझे का व्यापार, बीमा, तेज़ी मन्दी का ज्ञान, व्यापारी ज्ञान के साधन,

व्यापार के सुभीते, पत्र-व्यवहार, प्रमाणिकता आदि। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, गिरगांव, बम्बई; पृष्ठ १०३, मूल्य ॥), पहला संस्करण, सन् १९१६।

४—**वाणिज्य या व्यवसाय प्रवेशिका**। ले०—श्री० शिवसहाय चतुर्वेदी। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मू० ॥।=); पृष्ठ १६८; सम्वत् १९८२। इसके कुछ विषय ये हैं:—वाणिज्य सुलभ गुण, प्रकृति और साधन, वैश्योचित शिक्षा, व्यवसाय का चुनाव, खरीद और बिक्री, कर्मचारी, पेटेन्ट औषधियां। व्यापार आरम्भ करनेवालों लिए पुस्तक अच्छी है।

५—**व्यापार तत्त्व, अर्थात् व्यापार शिक्षक**। ले० और प्र०—श्री० मेवालाल चौधरी, भरतपुर। इसमें व्यापार सम्बन्धी बहुत से विषयों पर छोटे छोटे लेखों में, प्रारम्भिक व्यापारियों के लिए अच्छी सामग्री दीगयी है। मूल्य ॥) आना।

६—**व्यापार समाचार**। ले०—श्री० शिवप्रताप हर्ष! प्र०—खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई। पृष्ठ ५२, सं० १९६८, मूल्य लिखा नहीं। इस में हुंडी तथा सर्राफ़ी सम्बन्धी आवश्यक बातों का संकलन है, और यह भी बताया गया है कि भारतवर्ष के भिन्न भिन्न स्थानों में विविध वस्तुओं के तोल माप क्या होते हैं, तथा उनके व्यापार में किन-किन बातों का विचार होता है।

७—**व्यापार रत्न संग्रह**। ले० और प्र०—श्री० मोतीलाल रवावला, गोराकुंड, इन्दौर। पृष्ठ ९१, मूल्य ॥), पहला संस्करण, सन् १९२५। पुस्तक में सट्टे का इतिहास, न्यूयार्क के काटन एक्सचेंज के कुछ नियम, फ़्यूचर का विवरण, विदेशी हुंडी, भारत के जुदा-जुदा हिस्सों में रुई की बोवनी और उपज का परिमाण, विदेशों के खरीदने का परिमाण, भारतवर्ष का तैयार होने वाले कपड़े का हिसाब आदि बताया गया है। पुस्तक व्यापारियों के बड़े काम की थी, पर अब तो अधिकांश बातें पुरानी पड़ गयी हैं।

८—व्यापार-संहिता (उसूले तिजारत)। ले० और प्र०—लाला नन्नूमल अग्रवाल, जनरल सेक्रेटरी, श्री व्यापार शिरोमणि आफिस, कटरा बाजार, शिकोहाबाद। प्रथम संस्करण, सन् १९४१, पृष्ठ २८४, मूल्य २)। पुस्तक में व्यापार सम्बन्धी लगभग अस्सी उपयोगी विषयों पर विचार किया गया है। व्यापार का एक वट-वृक्ष भी बनाया गया है; उसकी शाखाओं पर व्यापार के बाह्य और अन्तरङ्ग विषयों के नाम सूचित किये हैं। उसे देखने से व्यापार के विविध अंगों और सिद्धान्तों का मन पर अच्छा चित्र खिंच जाता है। कई स्थानों पर संस्कृत के वाक्यादि उद्धृत किये गये हैं। पुस्तक के अन्तिम सात पृष्ठ अशुद्धि पत्र और सम्मतियों के ही हैं।

९—व्यापार-प्रकाश। ले०—श्री० रमाकान्त त्रिपाठी; प्र०—सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा; सम्वत् १९८८; पृष्ठ १०४, मूल्य आठ आने। व्यापार सम्बन्धी प्रमुख विषयों का संक्षिप्त परिचय।

१०—स्वातंत्र्य-साधन या व्यापार के मूलमंत्र। लेखक—डा० कृष्णदत्त पाठक, प्र०—श्री यज्ञदत्त शर्मा, गोरखटीला, काशी; पृष्ठ ४१, मूल्य ॥)। व्यापार में सफलता के लिए आवश्यक कुछ मुख्य बातों पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। सन् १९२२ में प्रकाशित।

११—अग्रवाल व्यापार दर्पण (बिहार उड़ीसा)। सम्पादक व प्रकाशक—बी० पी० अग्रवाल, मोतिहारी; पृष्ठ २०६, मूल्य १) हिन्दी में यह संभवतः पहली ट्रेड-गाइड है, जिसमें बिहार के उद्योग धंधों और व्यापार की प्रमुख मण्डियों का परिचय है। सन् १९२२ का प्रकाशन है।

१२—व्यापार का बीमा। ले०—श्री० रामरत्न जी द्विवेदी; प्र०—कान्यकुब्ज स्वदेशी स्टोर, पृष्ठ १६८; मूल्य आठ आने। इस पुस्तक में दुकानदारी की विधि और दुकानदारों के कर्तव्य बताये गये हैं। अनुभव के आधार पर लिखी गयी है। उपयोगी है।

१३—**विज्ञापन विज्ञान और उसका उपयोग**। ले० और प्र०—पं० कन्हैयालाल शर्मा, कलकत्ता। इसमें विज्ञापन का मनोविज्ञान से सम्बन्ध, ग्राहकों का ध्यान आकृष्ट करना, विज्ञापन किस प्रकार के होने चाहिएँ, कैसे विज्ञापन कहाँ लगाने चाहिएँ, आदि बातों पर अच्छी तरह विचार किया गया है। पुस्तक सचित्र है। पदार्थों की बिक्री जल्दी और अच्छे भाव से तभी होसकती है, जब विज्ञापन में कुशलता दिखायी जाय। आजकल विज्ञापन देना भी एक सुन्दर कला है। अंगरेजी में इसके एक-एक अंग पर कई-कई पुस्तकें हैं। हिन्दी-भाषा-भाषी व्यापारियों को इस पुस्तक से लाभ उठाना चाहिए।

१४—**बिक्री बढ़ाने के उपाय (दो भाग)**। संकलनकर्ता और प्रकाशक—क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा; पृष्ठ, क्रमशः ११७ और १३० तथा मूल्य १) और ॥)। पाश्चात्य देशों के उद्योगपतियों तथा व्यापार-कुशल व्यक्तियों के अनुभूत लेखों का संग्रह है जिसमें व्यवसाय-पद्धतियां और बिक्री बढ़ाने के उपायों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक का पहला भाग संवत् १९८१ में, और दूसरा १९८५ में प्रकाशित हुआ था।

१५—**विक्रय कला**। ले०—श्री० गंगाप्रसाद भोतिका; हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता; पृष्ठ ४०, सजिल्द, मूल्य ॥)। अंग्रेजी पुस्तक के आधार पर संक्षेप में, माल बेचने की रीतियाँ बतायी गयी है।

१६—**सफल दुकानदारी**। ले०—कन्हैयालाल शर्मा बी० ए०, प्र०—हिन्दी प्रचार कार्यालय, २३-२७ चितरञ्जन एवन्यू नार्थ, कलकत्ता; पहला संस्करण, सन् १९३३। मूल्य एक रुपया। कई रङ्गीन चित्रों सहित। आधुनिक ढङ्ग पर दुकान चलाने और माल बेचने के नये तरीकों का अच्छा वर्णन किया गया है।

१७—**दूकानदारी**। ले०—श्री० नारायणप्रसाद। इस में दूकानदारी के मूल सिद्धान्त, हिसाब किताब, माल की खरीद, माल की

लागत और नफ़ा, नक़द या उधार आदि विषयों पर विचार किया गया है। पुस्तक, कई अंगरेज़ी ग्रन्थों की सहायता से परिश्रम-पूर्वक लिखी गयी है। सफल दूकानदार बनने के लिए इस से लाभ उठाया जासकता है। मूल्य ।।।); प्रकाशक; गान्धी हिन्दी पुस्तक भंडार, बम्बई २, सम्वत् १९७८।

१८—व्यापारी पत्र व्यवहार। ले०—श्री० कस्तूरमल बांठिया। इस पुस्तक में आनेवाले पत्र, जानेवाले पत्र, डाक के नियम, तार, व्यापारी कोड, रेल के नियम आदि पर भली भाँति विचार किया गया है। पिछले दिनों डाक, तार और रेल के नियमों में परिवर्तन होजाने से पुस्तक का इन विषयों वाला अंश पुराना पड़ गया है। पृष्ठ १८४; मूल्य १।=); प्र०—गांधी हिन्दी पुस्तक भंडार, बम्बई २.।

१९—व्यावहारिक पत्र बोध (पहिला भाग)। ले०—पं० लक्ष्मणदास चतुर्वेदी, मूल्य ।।=), पृष्ठ १०३। इसमें पत्रों के लिखने की रीतियाँ बतायी गयी हैं, तथा व्यापारिक पत्रों, प्रार्थनापत्रों, प्रशंसा-पत्रों और सरकारी पत्रों के तरह तरह के नमूने दिये गये हैं। भाषा सरल है। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता।

२०—भारत की उपज। ले०—श्री रमाशंकरसिंह जी 'मृदुल'। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। पृष्ठ १२५, कई चित्र; मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें धान, रुई, रेशम, रबड़, लोहा आदि जुदा-जुदा उपज और उसके व्यवसाय के बारे में अच्छी जानकारी दी हुई है। पुस्तक सम्वत् १९९० की छपी है; नये संस्करण की आवश्यकता है।

२१—तीसी। ले०—श्री० गौरीशंकर शुक्ल। यह अपने ढङ्ग की निराली पुस्तक है। इसमें तीसी अर्थात् अलसी की पैदावार, तेल, खली, और रेशा तैयार करने कातने आदि का सचित्र वर्णन है। बढ़िया कागज़ पर छपी है। अग्रवाल महासभा ने इसे प्रकाशित कर अन्य

१३—**विज्ञापन विज्ञान और उसका उपयोग**। ले० और प्र०—पं० कन्हैयालाल शर्मा, कलकत्ता। इसमें विज्ञापन का मनोविज्ञान से सम्बन्ध, ग्राहकों का ध्यान आकृष्ट करना, विज्ञापन किस प्रकार के होने चाहिएँ, कैसे विज्ञापन कहाँ लगाने चाहिएँ, आदि बातों पर अच्छी तरह विचार किया गया है। पुस्तक सचित्र है। पदार्थों की बिक्री जल्दी और अच्छे भाव से तभी होसकती है, जब विज्ञापन में कुशलता दिखायी जाय। आजकल विज्ञापन देना भी एक सुन्दर कला है। अंगरेजी में इसके एक-एक अंग पर कई-कई पुस्तकें हैं। हिन्दी-भाषा-भाषी व्यापारियों को इस पुस्तक से लाभ उठाना चाहिए।

१४—**बिक्री बढ़ाने के उपाय (दो भाग)**। संकलनकर्ता और प्रकाशक—क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा; पृष्ठ, क्रमशः ११७ और १३० तथा मूल्य १) और ॥)। पाश्चात्य देशों के उद्योगपतियों तथा व्यापार-कुशल व्यक्तियों के अनुभूत लेखों का संग्रह है जिसमें व्यवसाय-पद्धतियों और बिक्री बढ़ाने के उपायों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक का पहला भाग संवत् १९८१ में, और दूसरा १९८५ में प्रकाशित हुआ था।

१५—**विक्रय कला**। ले०—श्री० गंगाप्रसाद भोतिका; हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता; पृष्ठ ४०, सजिल्द, मूल्य ॥)। अंग्रेजी पुस्तक के आधार पर संक्षेप में, माल बेचने की रीतियाँ बतायी गयी है।

१६—**सफल दुकानदारी**। ले०—कन्हैयालाल शर्मा बी० ए०, प्र०-हिन्दी प्रचार कार्यालय, २६-२७ चितरञ्जन एवन्यू नार्थ, कलकत्ता; पहला संस्करण, सन् १९३३। मूल्य एक रुपया। कई रङ्गीन चित्रों सहित। आधुनिक ढङ्ग पर दुकान चलाने और माल बेचने के नये तरीकों का अच्छा वर्णन किया गया है।

१७—**दूकानदारी**। ले०—श्री० नारायणप्रसाद। इस में दूकानदारी के मूल सिद्धान्त, हिसाब किताब, माल की खरीद, माल की

लागत और नफ़ा, नक़द या उधार आदि विषयों पर विचार किया गया है। पुस्तक, कई अंगरेज़ी ग्रन्थों की सहायता से परिश्रम-पूर्वक लिखी गयी है। सफल दूकानदार बनने के लिए इस से लाभ उठाया जासकता है। मूल्य ।।।); प्रकाशक; गान्धी हिन्दी पुस्तक भंडार, बम्बई २, सम्वत् १९७८।

१८—व्यापारी पत्र व्यवहार। ले०—श्री० कस्तूरमल बांठिया। इस पुस्तक में आनेवाले पत्र, जानेवाले पत्र, डाक के नियम, तार, व्यापारी कोड, रेल के नियम आदि पर भली भाँति विचार किया गया है। पिछले दिनों डाक, तार और रेल के नियमों में परिवर्तन होजाने से पुस्तक का इन विषयों वाला अंश पुराना पड़ गया है। पृष्ठ १८४; मूल्य १।=); प्र०—गांधी हिन्दी पुस्तक भंडार, बम्बई २.।

१९—व्यावहारिक पत्र बोध (पहिला भाग)। ले०—पं० लक्ष्मणदास चतुर्वेदी, मूल्य ।।=), पृष्ठ १०३। इसमें पत्रों के लिखने की रीतियाँ बतायी गयी है, तथा व्यापारिक पत्रों, प्रार्थनापत्रों, प्रशंसा-पत्रों और सरकारी पत्रों के तरह तरह के नमूने दिये गये हैं। भाषा सरल है। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता।

२०—भारत की उपज। ले०—श्री रमाशंकरसिंह जी 'मृदुल'। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। पृष्ठ १२५, कई चित्र; मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें धान, रुई, रेशम, रबड़, लोहा आदि जुदा-जुदा उपज और उसके व्यवसाय के बारे में अच्छी जानकारी दी हुई है। पुस्तक सम्वत् १८९० की छपी है; नये संस्करण की आवश्यकता है।

२१—तीसी। ले०—श्री० गौरीशंकर शुक्ल। यह अपने ढङ्ग की निराली पुस्तक है। इसमें तीसी अर्थात् अलसी की पैदावार, तेल, खली, और रेशा तैयार करने कातने आदि का सचित्र वर्णन है। बढ़िया कागज़ पर छपी है। अग्रवाल महासभा ने इसे प्रकाशित कर अन्य

व्यापारिक संस्थाओं के सामने आर्थिक साहित्य की वृद्धि का अच्छा आदर्श रखा है।

२२—बारदाना व्यापार। इसके प्रकाशक, और शायद लेखक भी, श्री० गजानन्द रामचन्द्र इंग्रे, कलकत्ता हैं। मूल्य १०), पृष्ठ ५८२। इसमें बोरों और हेसियन के रोज़गारियों के जानने के योग्य सब आवश्यक बातें बतायी गयी हैं। लगभग ४०० पृष्ठ में कोष्ठक और तालिकाएँ ही हैं। अपने विषय की, अपने ढङ्ग की, एकमात्र और अच्छी पुस्तक है।

२३—बनारस के व्यवसायी। ले०—बाबू भगवतीप्रसाद सिंह, प्र०, ज्ञान मण्डल, काशी; सम्वत् १९७७, मूल्य ||=) पृष्ठ ८०। पुस्तक में बनारस के भिन्न-भिन्न काम करनेवाले या विविध वस्तुओं के बनानेवालों पर प्रकाश डाला गया है। सामग्री-संग्रह में अच्छा परिश्रम हुआ है। पुस्तक दूसरे व्यवसायी स्थानों के लिए नमूने का काम देनेवाली है।

२४—अमरीका का व्यवसाय और उसका विकास। ले०—श्री० जगन्नाथ खन्ना बी० एस-सी०। प्रेम महाविद्याविद्यालय, वृन्दावन, से प्रकाशित। मूल्य दस आने। यह इस विषय की सबसे प्रथम प्रकाशित पुस्तकों में से है। स्वयं लेखक ने अमरीका में कई वर्ष व्यवसाय सम्बन्धी अनुभव प्राप्त किया था। पुस्तक आंकड़ों से पूर्ण है, पर अब पुरानी पड़ गयी है।

२५—संसार के व्यवसाय का इतिहास। मूल लेखक—श्री० फ्रेडरिक लिस्ट; अनु०—श्री० हरिहरनाथ बी०ए०; प्र०—ज्ञानमण्डल, काशी। मूल्य ||=) पृष्ठ ७८+२१। बड़ा आकार। इसमें इटली, फ्रांस, जर्मनी, रूस, अमरीका, हालैंड आदि देशों के व्यवसाय का इतिहास देते हुए सूक्ष्म तत्वों का विचार किया है। यह सिद्ध किया गया है कि किसी भी देश के व्यवसाय की प्रारम्भिक अवस्था में स्वतंत्र

या मुक्तद्वार व्यापार हानिकर, और संरक्षित व्यापार लाभदायक होता है। यह बात भारतवर्ष के लिए विशेष रूप से विचारणीय है। पुस्तक प्रामाणिक है।

आर्थिक और व्यवसायिक भूगोल—इस सम्बन्ध में बहुत कम साहित्य है। हमें केवल दो ही पुस्तकों का ज्ञान है—

१—औद्योगिक और व्यापारिक भूगोल। ले०-श्री० प्रोफ़ेसर शंकरसहाय सकसेना, एम० ए०, विशारद, बरेली। प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग। मूल्य ५); पृष्ठ ५५२, बड़ा आकार। यह सात भागों में विभक्त है। पहिले भाग में औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल के सिद्धांत दिये गये हैं। इसमें मनुष्य पर भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव, भोज्य पदार्थ, औद्योगिक कच्चा माल, शक्ति के साधन, खनिज पदार्थ, पशु जगत, श्रमजीवी समुदाय, जनसंख्या, व्यापार मार्ग, तथा यातायात के साधनों का विचार है। शेष छः भागों में भारतवर्ष, एशिया, योरप, उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका, अफ़रीका और ओशीनिया के देशों में ऊपर लिखी बातों का सविस्तर विवरण है। पृथ्वी की पैदावार तथा खनिज पदार्थ सम्बन्धी मानचित्र भी दिये गये हैं। भारतवर्ष के विषय में स्वतन्त्र विचार किया गया है। पुस्तक में कुल ५७ परिच्छेद हैं।

२—भारत का आर्थिक भूगोल। ले०—सर्वश्री दयाशंकर दुबे एम० ए० और शंकरसहाय सकसेना एम० ए०। प्र०—रामनारायण लाल, इलाहाबाद। पृष्ठ २७०; मूल्य १॥); दूसरा संस्करण, सन् १९०४। लेखक अपने विषय के विद्वान, और अनुभवी शिक्षक है। पुस्तक संयुक्तप्रान्त और बिहार की हाई स्कूल परीक्षा के आर्थिक भूगोल के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है, और स्वीकृत है।

बहुत समय हुआ, श्री० जगनलाल जी गुप्त मुख्तयार, बुलन्दशहर, ने भूगोल पर एक बड़ी किताब लिखी था, उसमें आर्थिक और

व्यावसायिक भूगोल को अच्छी जगह मिली थी। कई वर्ष तक वह प्रकाशित न हुई, पीछे श्री० गुप्त जी का देहान्त हो जाने पर उसके छपने की रही-सही आशा भी न रही।

यातायात—मनुष्यों की यात्रा और माल भेजने के मुख्य साधन पशु, मोटर, रेल, नाव, जहाज और हवाई जहाज आदि हैं। हिन्दी लेखकों ने रेलों के सम्बन्ध में ही विचार किया है। इस विषय की तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:—

१—भारत में रेल पथ। ले०—श्री० रामनिवास पोद्दार, मथुरा। यह पुस्तक यथेष्ट परिश्रम से लिखी गयी है। लेखक ने अपने कथन की पुष्टि में स्थान-स्थान पर प्रमाण उद्धृत किये हैं। पुस्तक में बताया गया है कि भारत में रेलवे लाइन खोलने का वास्तविक उद्देश्य क्या था; रेलों से यहाँ जो थोड़ासा लाभ हुआ है तो उसके साथ प्रत्यक्ष तथा गौण हानि बहुत अधिक हुई; रेलें किस प्रकार भारतीय जनता के स्वास्थ्य तथा सम्पत्ति में बाधक हुई। पुस्तक राष्ट्रीय दृष्टि से लिखी गयी है, और देश-हितैषियों के लिए इसमें काफी सामग्री है। पृष्ठ संख्या ४२३ है। प्र०—आदर्श पुस्तकालय, चौक, आगरा। मूल्य ढाई रुपये, संवत् १९८१ वि०।

२—रेल से माल भेजने का क़ायदा। ले० और प्र०—श्री० रघुनाथ नृसिंह काले, वकील, उज्जैन। यह पुस्तक भी अपने ढङ्ग की बहुत उत्तम है। इसके विषय की जानकारी प्राप्त कर यात्री तथा सौदागर प्रतिदिन होनेवाली बहुत सी हानि से बच सकते हैं। पृष्ठ ४८५; मूल्य तीन रुपये।

३—रेलवे थर्ड क्लास। ले०—श्री० गणेशदत्त 'इन्द्र'; प्र०—गुप्त आदर्श, बनारस; पृष्ठ १००; सजिल्द, मूल्य आठ आने। भारतीय रेलों का इतिहास, आवश्यक आँकड़े, तथा मुसाफिरों के लिए ज्ञातव्य बातें दी गयी हैं।

कम्पनियाँ—बड़े पैमाने के व्यापार व्यवसाय चलाने के लिए साझेदारी की पद्धति से काम लेना और कम्पनियाँ स्थापित करना आवश्यक है। यहाँ कम्पनियों की संख्या तथा क्षेत्र क्रमशः बढ़ रहा है। तथापि अभी तक इस विषय का साहित्य बहुत कम है। यह भी एक कारण है कि हम इस दिशा में काफी आगे नहीं बढ़ रहे हैं। इस विषय की निम्नलिखित पुस्तकें हमारे सामने आयी हैंः—

१—कम्पनी व्यापार प्रवेशिका। ले०—श्री० कस्तूरमल बांठिया। इस पुस्तक के अवलोकन करने से कम्पनियों की स्थापना तथा उनके नियम आदि के सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त होता है। इससे कम्पनी सम्बन्धी कार्य में बहुत सुविधा तथा बचत होती है। प्रथम संस्करण, सन् १६२४। पृष्ठ ११६, मूल्य १); प्रकाशक—मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर।

२—लिमिटेड कम्पनियाँ। ले०—बाबू ईश्वरदास जालान। इस पुस्तक से कम्पनी-कानून के अनुसार, नई कम्पनियाँ खोलनेवालों को इस कार्य के लिए, तथा पूर्व स्थापित कम्पनियों को सुचारु रूप में चलाने के लिए, बहुत कुछ सहायता मिल सकती है। विवेचन-शैली अच्छी है। प्र०—राजस्थान एजन्सी, रामकुमार रक्षित लेन, कलकत्ता; पृष्ठ १६०, मूल्य ११); सं० १६८०।

उद्योग धन्धे—भिन्न भिन्न उद्योग धन्धों पर बहुत सा साहित्य तैयार किये जाने की आवश्यकता है। प्रधान उद्योग धन्धों में से प्रत्येक पर कम से कम एक तो अच्छी पुस्तक होनी ही चाहिए। खेद है कि बहुत से आदमी उद्योग धन्धों के नाम पर चाहे-जैसी पुस्तक छाप कर सर्वसाधारण के पैसे ऐंटने के अभिलाषी रहते हैं। कुछ समय से अखिल भारत ग्राम उद्योग संघ और चर्खा संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, खादी विद्यालय, आदि संस्थाएँ अच्छा साहित्य प्रकाशित करने लगी

हैं। कुछ दूसरे सज्जन भी जनता को अच्छा साहित्य दे रहे हैं। इस साहित्य का विचार करने की सुविधा के लिए हम उद्योग धन्धों के तीन भाग करते हैं—(क) वस्त्र सम्बन्धी, (ख) ग्रामीण और (ग) अन्य।

(क) वस्त्र सम्बन्धी उद्योग धंधे—उद्योग धंधों में कपड़े के उद्योग का खास स्थान है। इसमें सूत कातना, बुनना, सीना, धोना रङ्गना, छापना, आदि काम शामिल हैं। पहले हम इसी उद्योग सम्बन्धी साहित्य का परिचय देते हैं—

१—स्वदेशी रहस्य। ले० तथा प्र०—श्री० शिवनारायणसिंह, लहेरियासराय। मूल्य ॥); पृष्ठ ८७, सम्वत् १९८१। इसमें भारत के प्रचीन शिल्प की झलक दिखायी गयी है, तथा वर्तमान दशा में उसके उद्धार के उपायों पर विचार किया है।

२—स्वदेशी। अनु०—श्री० जगन्नाथ पांडेय; प्र०-भास्कर ग्रन्थ-कार्यालय, पियरीकलाँ, काशी। पृष्ठ ४८; मूल्य चार आने। स्वदेशी के व्रत से मनुष्य जाति के उत्थान पर प्रकाश डालनेवाले, श्री० काका कालेलकर तथा म० गांधी के लेखों का अनुवाद।

३—विदेशी कपड़े का मुकाबला कैसे किया जाय। ले०—श्री० मनमोहन पुरुषोत्तम गांधी। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। मूल्य दस आने, पृष्ठ १३३। कई आवश्यक तालिकाएँ और नक्शे भी हैं। लेखक व्यापार व्यवसाय के अच्छे अनुभवी हैं। इस में हाथ-बुनाई और हाथ-कताई के धन्धे का भविष्य अच्छा बताते हुए वे उपाय सुझाये गये हैं, जिनसे हाथ-बुनियों को आर्थिक तथा क़ानूनी सुविधाएँ और सहायता दी जानी चाहिए।

४—खद्दर का सम्पत्तिशास्त्र। अनु०—श्री० रामदास गौड़। यह श्री० ग्रेग की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद है। ग्रेग साहब का अमरीका की मिलों के कार्य से कई वर्ष घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, उन्होंने भारतवर्ष के खद्दर आन्दोलन का भी खूब अनुभव किया है। यहाँ

जितना विदेशी माल आता है, उसमें कपड़े का खास स्थान है। लेखक ने वैज्ञानिक दृष्टि से विषय का विवेचन किया है और अन्य विचारकों के विविध सन्देहों का भली भाँति निवारण भी किया है। पुस्तक प्रामाणिक है। अनुवाद भी अच्छा हुआ है। मूल्य ।।।≈), पृष्ठ संख्या ३२३। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; सन् १९२९ ई०।

५—खादी-मीमांसा। ले०—श्री० बालूभाई मेहता, प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। सजिल्द, पृष्ठ संख्या ३४३; मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें ऐतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर यह बताया गया है कि इस देश में चिरकाल से खादी का चलन रहा; अंगरेजों के समय में उनकी अनीति से यहाँ इसका ह्रास हुआ। वर्तमान परिस्थिति में चरखा और तकली ही इस देश का आर्थिक उद्धार कर सकते हैं। इस विषय में किये जानेवाले विविध आक्षेपों का बड़ी युक्ति से जवाब दिया गया है। स्थान-स्थान पर सुयोग्य और सुप्रसिद्ध विद्वानों के ग्रन्थों के उदाहरण देकर पुस्तक प्रामाणिक बनायी गयी है। पुस्तक बहुत परिश्रम से लिखी गयी है, और मनन करने योग्य है।

६—खादी का इतिहास। ले०—श्री० गणेशदत्त शर्मा, 'इन्द्र'; प्र०—जीतमल लूणिया, हिन्दी साहित्य मन्दिर, बनारस। पृष्ठ १२८, मूल्य दस आने। वैदिक काल से यहाँ कपड़ा बनाने का उद्योग कैसा प्रचलित था, अंगरेजों के आने के बाद इस उद्योग का ह्रास होने पर भारत किस प्रकार दरिद्र होने लगा, और देश की स्वाधीनता और समृद्धि के लिए खादी का कितना महत्व है, इन बातों का अच्छा विचार किया गया है।

७—खादी का महत्व। ले०—श्री० गुलजारीलाल नन्दा; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। छोटे आकार के ९६ पृष्ठ; मूल्य डेढ़ आना।

८—खादी और गादी की लड़ाई। ले०—आचार्य विनोबा;

प्र०--सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। छोटे आकार के १०६ पृष्ठ। खादी के व्यवहार और सिद्धान्तों के आर्थिक और नैतिक आधार का, लेखक की विशेष शैली में गभीर विवेचन।

९—खादी के कुछ पहलू। ले०--श्री० गुलजारीलाल नन्दा; प्र०—अ० भ० चरखा संघ अहमदाबाद। बड़े आकार के ४३ पृष्ठ; मूल्य छपा नहीं। इसमें छः अध्याय है—(१) खादी का महत्व, (२) यह संस्कृति का एक अग है, (३) खादी अर्थशास्त्र (४) इतिहास, संगठन और नीति, (५) खादी की निर्माण कला, (६) खादी का भविष्य। पुस्तक बहुत विचारपूर्ण है। यह अंगरेजी से अनुवादित है। नये सस्करण की ज़रूरत है।

१०—खद्दर शिक्षा। ले०—श्री० भगवतसिंह। इसमें खद्दर तैयार करने के विषय में बहुत सी महत्वपूर्ण बातें दी गयी हैं। पुस्तक उपयोगी है।

११—खद्दर की आत्म-कथा। ले०—श्री० बटुकदेव शर्मा, प्र०—स्वतंत्र पुस्तकालय, पटना। सं० १९७७ वि०। मूल्य आठ आने।

१२—रुई और उसका मिश्रण। लेखक—श्री० कस्तूरमल जी बांठिया। यह एक अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है। इसमें संसार के भिन्न भिन्न स्थानों में पैदा होनेवाली विविध प्रकार की रुई तथा उसकी खेती आदि के विषय में अच्छी जानकारी दी हुई है। इसमें रुई के मिश्रण पर व्यापारिक दृष्टि से विचार किया गया है। आवश्यक चित्र और कोष्टक भी दिये गये हैं पुस्तक अच्छी है। मूल्य डेढ़ रुपया।

१३—ओटना व धुनना। लेखक—श्री० सत्यन; प्रकाशक—हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा। पृष्ठ संख्या ६०, सचित्र, मूल्य छः आने। श्री० विनोबा जी ने इसकी प्रस्तावना में कहा है—"इस छोटी सी पुस्तक में ओटने व धुनने के विषय में उपयोगी जानकारी थोड़े में दी गयी है। यह कताई की क्रिया की पूर्व तैयारी है। अगर

कातनेवाले को स्वावलम्बी बनना है तो उसके लिए यह ज्ञान आवश्यक है।"

१४—मध्यम पिञ्जन। ले०—श्री० मथुरादास पुरुषोत्तम; प्र०—अखिल भारत चर्खा संघ, अहमदाबाद। पृष्ठ संख्या ८२; दस चित्र अलग, आकार डिमाई अठपेजी; मूल्य सिर्फ पाँच आना। प्रस्तावना अनुवादक की ओर से होने से मालूम होता है कि यह पुस्तक किसी का अनुवाद है। उसमें कहा गया है कि 'इस पुस्तक में छपी हुई अधिकांश बातें लेखक द्वारा स्वयं अनुभव की हुई है, और जो ऐसी नहीं है, वे पींजने की कला में रस लेनेवाले मित्रों के अभिप्राय के आधार पर लिखी गयी है।

१५—चर्खे की उपयोगिता। ले०—श्री० गिरजादत्त जी; प्र०—मातृभाषा मन्दिर, दारागञ्ज, प्रयाग, पृष्ठ ४८, मूल्य छः आने। भारत की आर्थिक दुर्दशा तथा बेकारी की समस्या को चर्खे की सहायता से हल करने के सुझाव बताये गये हैं।

१६—चर्खा शास्त्र (प्रथम भाग)। ले० और प्र०—श्री० मगनलाल खुशालचन्द गाँधी, सत्याग्रह आश्रम, साबरमती। अनु०—आश्रम का एक विद्यार्थी; मूल्य ।।।)। पुस्तक में कपास, कपास की खेती, रुई की परख, धनुआ, और चर्खा—सभी के विषय में महत्व-पूर्ण जानकारी है।

१७—तकली। ले०—श्री०कुन्दर बलवन्त दीवान, प्र०—हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा। पृष्ठ २८६, मूल्य एक रुपया। यह मराठी की 'वस्त्रपूर्णा' का रूपान्तर है। इसमें इन विषयों का विचार किया गया है—तकली की खूबियाँ; तकली का पूरा बयान; कपड़ा बुनने लायक रेशे और कपास; कपास की तैयारी; तकली पर कातने के तरीके; तकली के अभ्यासों का बयान; नम्बर, कस या मजबूती, एकसापन,

जानने लायक आंकड़े आदि। ६६ चित्र देकर विषय को अच्छी तरह समझाया गया है। भाषा आसान है।

१८—धनुष तकवा। प्रकाशक—श्री० केशवधर, संचालक, खादी विद्यालय, सेवागाँव, वर्धा। बड़े आकार के ३४ पृष्ठ, हाथ के कागज पर छपी, मूल्य छः आने। धनुष तकुवे के बारे में 'खादी जगत', 'महाराष्ट्र खादी पत्रिका' और 'हरिजन' आदि में जो लेख लिखे गये हैं, उनका संकलन इस छोटी सी पुस्तक में किया गया है। म० गाँधी ने लिखा है-"धनुष तकुवा थोड़े परिश्रम से और बहुत कम दामों में तैयार हो सकता है; उससे काफी सूत भी निकल सकता है। इसलिए खादी सेवकों से प्रार्थना है कि वे धनुष तकुवे का अभ्यास करें, उसे बनाना सीख लें, और उसका प्रचार करें।

१९—मूल उद्योग-कातना। ले०—श्री० विनोबा भावे। प्र०-हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा। पृष्ठ संख्या ७२, मूल्य छः आने। यह मराठी पुस्तक का अनुवाद है। वर्धा शिक्षा-प्रणाली को कार्य में परिणत करने के लिए योग्य शिक्षकों की आवश्यकता रहती है, खासकर उनकी जरूरत को पूरा करने के लिए यह पुस्तक प्रकाशित की गयी है। लेखक को अपने विषय का व्यावहारिक अनुभव है। पुस्तक में मतलब की ही बातें दी गयी हैं, और अच्छे ढङ्ग से।

२०—हाथ की कताई बुनाई। राष्ट्रीय महासभा के सहकारी कोषाध्यक्ष श्री० रेवाशंकर जगजीवन मेहता ने कताई के बारे में सबसे उत्तम लेख पर एक हजार रुपया इनाम देने की सूचना की थी। प्रतियोगिता में आये निबन्धों की जाँच करके निर्णायकों ने निश्चय किया कि श्री० एस. वी. पुन्ताम्बेकर और एन. एस. वरदाचारी में इनाम की रकम बाँट दी जाय और दोनों सज्जन अपने निबन्धों को मिलाकर एक लेख तैयार करें। उस सम्मिलित लेख का अनुवाद श्री० रामदास

गौड़ ने किया; परिणाम-स्वरूप यह पुस्तक प्रस्तुत हुई है। मूल्य ||=); पृष्ठ २७४।

२१—वस्त्र निर्माण शिक्षा। ले०—श्री० विश्वम्भरसहाय वकील, चतरा, हजारीबाग। इस पुस्तक में सूत को रील में या नरी में लपेटना, करघे में ताना बाँधकर कपड़ा बुनना आदि विविध क्रियाओं का वर्णन किया गया है। भाषा सरल है, परन्तु शुद्ध नहीं है। चित्र भी सब पुराने ढङ्ग से एक ही जगह इकट्ठे कर दिये गये हैं। थोड़ा और ध्यान देकर पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ायी जा सकती थी। पृष्ठ ६४, मूल्य लिखा नहीं।

२२—देशी करगह वा हैंडलूम। ले०—श्री० शिवप्रसाद। हमारे सामने इस पुस्तक की जो प्रति आयी, उस पर ऊपर का पृष्ठ न होने से हमें इसके प्रकाशक का नाम, और इसका मूल्य आदि मालूम न होसका। इसमें बड़े आकार के लगभग सौ सफे हैं। सूत के कपड़े का इतिहास, रुई की किस्में, सूत की कताई से लेकर देशी कपड़े की बुनाई तक का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। नक्शे और आकृतियाँ भी दी गयी हैं। बहुत पुराना प्रकाशन मालूम होता है।

२३—देशी करघा यानी हैंडलूम। ले० और प्र०—श्री० ठाकुर-प्रसाद खत्री। मूल्य ||), पृष्ठ १११। दूसरा संस्करण, सन् १९०९ का, हमने देखा है। यह अपने विषय की सबप्रथम पुस्तकों में से है। खूब विचार-पूर्वक लिखी गयी है। आवश्यक पुर्जों के चित्र भी हैं। बहुत उपयोगी है।

२४—बुनाई विज्ञान। ले०—श्री० विश्वम्भरदयाल पाठक, प्र०—साहित्य निकेतन, दारागंज, इलाहाबाद। प्रथम संस्करण, सन् १९४०। पृष्ठ दो सौ। सजिल्द, मूल्य १||); सचित्र। इसमें पाँच अध्याय हैं, जिनमें करघा पर काम करनेवालों से लेकर मिलों में बुनाई करनेवालों तक के लिए विविध उपयोगी बातें बतायी गयी हैं—बाबिन

में सूत भरना, ताना बनाना, माडी भरना, कपड़ा बुनने की मशीनों आदि के भेद, सूत का नम्बर निकालना, ताने बाने में कितना सूत लगेगा, तरह तरह की डिजाइन आदि। अंगरेजी के शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक किया गया है।

२५—तंतु कला। ले०—प्रो० लक्ष्मीचन्द। प्र०—विज्ञान हुनर-माला आफिस, बनारस सिटी। पृष्ठ १२७। मूल्य १) सन् १९३२। लेखक कई औद्योगिक तथा वैज्ञानिक पुस्तकों के रचयिता हैं। इस पुस्तक में सूत तथा नकली और असली रेशम एवं ऊन आदि के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी दी गयी है।

२६—शिल्पमाला। ले०—श्रीमती विद्याधरी जौहरी विशारद; प्र०—हिन्दी भवन, लाहौर। पृष्ठ २९१, चित्र १२१; मूल्य, तीन रुपये। इसके कुछ विषय ये हैं—बुनने की विधि भिन्न-भिन्न प्रकार की बुनाई, क्रोशिये की प्रारम्भिक विधि; बच्चों, पुरुषों और स्त्रियों के भाँति भाँति के कपड़े। पुस्तक बहुत अच्छी है।

२७—सूची शिल्प शिक्षक। ले० और प्र०—श्री० विपिन विहारीलाल बी० ए०, अलीगढ़। मूल्य ||)। इसमें दो महिलाओं के वार्तालाप के रूप में सूत और सलाई के काम की शिक्षा दी गयी है। भाषा सरल है। पुस्तक उपयोगी है। जहाँ तहाँ विषय को स्पष्ट करनेवाले चित्र हैं।

२८—सुई शिल्प शिक्षा। अनु०—श्री० रामनारायण जायसवाल। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। पृष्ठ १३३। मूल्य १)। इसमें कमीज़, जांघिया, बच्चों का वेस्ट बनाना, मोज़े बुनना, रफ़ू करना आदि विषयों का अच्छा विवेचन है।

२९—सीने की कला। ले० और प्र०—श्री० ठाकुरप्रसाद खत्री, बनारस। आप कई पुस्तकों के रचयिता तथा 'व्यापारी व कारीगरी' के सम्पादक हैं। इस पुस्तक में बताया गया है कि सीने के मशीनों में विविध पुर्ज़े कौन-कौनसे होते हैं, उन्हें काम में लाने में किन-किन

बातों की सावधानी करनी चाहिए; जिससे मशीन जल्दी न बिगड़े और काम होता रहे। पुस्तक में आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं।

३०—सुघड़ दर्जिन। ले० और प्र०—उपर्युक्त। मूल्य ॥) पृष्ठ ६८। इसमें बालिकाओं के लिए सीने पिरोने, काढ़ने, कपड़े काटने छाटने, आदि की रीतियों का वर्णन है। विषय को चित्रों द्वारा उचित रीति से समझाया गया है।

३१—दर्जी (सिलाई और कटाई शिक्षक)। अनुवादित पुस्तक है। अनुवादक हैं, पं० विश्वेश्वर शर्मा; और, प्रकाशक हैं, हिंदी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। पुस्तक अच्छी और उपयोगी है। इसमें पुरुषों एवं स्त्रियों के विविध वस्त्रों के विषय को चित्रों द्वारा स्पष्ट किया गया है। पृष्ठ १६०। बहुत से चित्र हैं; मूल्य २)।

३२—देशी रंगाई व छपाई। ले०—श्री० वंशीधर जी जैन, चर्खीदादरी (पंजाब); प्रकाशक—मगनलाल गांधी, नियामक, अ० भा० खादी समाचार विभाग, आश्रम, साबरमती। पृष्ठ संख्या १६+१८१; मूल्य छपा नहीं, पर प्रकाशक की भूमिका से मालूम होता है कि वह लागत मात्र रखा गया है।। लेखक अपने विषय के खूब अनुभवी है, इस पुस्तक में खासकर उन्हीं छाल और जड़ी बूटियों का वर्णन किया गया है। जो सब प्रान्तों में सहज ही मिल सकें। उनके भिन्न-भिन्न नाम, उनके अच्छे-बुरे की पहिचान, व काश्त के नियम आदि भी देने की कोशिश की गयी है। सूती रंगों के अलावा, ऊन के रङ्गने व सूती कपड़े के छापने का भी वर्णन किया गया है। सहायक पुस्तकों की सूची, और रङ्ग के काम आनेवाली वनस्पति व रसायनिक पदार्थों के भिन्न-भिन्न भाषाओं के नाम आदि देकर पुस्तक को अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाया गया है।

३३—धुलाई-रंगाई-विज्ञान। ले०—श्री० शिवचरणलाल पाठक; प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, गनपत रोड, लाहौर; पृष्ठ १६६; मूल्य,

एक रुपया। कपड़ों की धुलाई, रङ्गाई, और इसके लिए उपयोग में आनेवाले समान—साबुन, लील, रङ्ग आदि—बनाने की रीतियाँ सरल भाषा में लिखी गयी हैं।

३४—स्वदेशी रंग और रंगना। ले०—श्री० धीरजलाल शर्मा। प्र०—श्री० शिवप्रसाद शर्म्मा, अकबरपुर, डाक० सुरीर, ज़िला मथुरा। इसमें थोड़ी पूँजी से सूत को देशी रङ्गों से रङ्गने की युक्तियाँ दी गयी हैं। नील के विलायती वर्तमान प्रचलित ढङ्ग से रङ्गने का तरीका भी बताया गया है। कुछ विषय ये हैं:—प्राकृतिक रङ्ग, रङ्गने के औज़ार तथा आवश्यक शिक्षा, रङ्गना और रङ्गने के पश्चात् रङ्गों की पहिचान। साधारण काग़ज़ और छपाई की १२८ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १।।) है, जो बहुत अधिक है।

३५—देशी रंग। सम्पादक—रसायनाचार्य श्री प्रफुल्लचन्द्र राय। अनु०—पं० अम्बिकाप्रसाद त्रिपाठी। मूल्य २।।)। रंगे खद्दरों के नमूने भी दिये गये हैं। कुछ विषय ये हैं:—रङ्गों के उपादान, रङ्गने का सरंजाम, वजन और माप, रङ्गों की समता, साधारण नियम आदि। प्रत्येक विषय की यथावत परीक्षा कर के उपयोगी पद्धतियाँ ही दी गयी हैं।

३६—रंग की पुस्तक। ले० और प्र०—प्रो० लक्ष्मीचन्द्र, बनारस। मूल्य एक रुपया; पृष्ठ १५६। पुस्तक ज्ञान-गर्भित है। इसमें स्थान-स्थान पर अंगरेज़ी शब्दों का प्रयोग हुआ है, अतः आरम्भ में रासायनिक शब्दों की परिभाषा तथा वस्तुओं के हिन्दी और अंगरेज़ी नाम दे दिये गये हैं।

(ख) ग्राम-उद्योग धंधे—वस्त्र सम्बन्धी उद्योग धंधों के साहित्य का परिचय ऊपर दिया गया है, उसमें चर्खा, करघा आदि कई उद्योग धन्धे ऐसे हैं, जो गांवों में भी होते हैं। अब हम उन दूसरे

उद्योग धन्धों के साहित्य का विचार करते है, जो खासकर गाँवों में ही चलाये जाते हैं। ऐसे साहित्य की सामग्री देने का काम खासकर अखिल भारतीय ग्राम उद्योग संघ कर रहा है। उसने कई पुस्तकें भी प्रकाशित की है। संघ की स्थापना सन् १९३४ में, वर्धा (मध्य प्रान्त) में हुई थी। उसकी संरक्षकता में गुड़, चावल, कागज, तेल आदि कई ग्रामोद्योग या उनके प्रयोग चल रहे हैं। ग्राम-उद्योग-धन्धों के सम्बन्ध में हमारे सामने नीचे लिखी पुस्तकें हैं :-

१—स्वदेशी और ग्रामोद्योग। ले०—म० गांधी; प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी देहली। पृष्ठ १७१, मूल्य आठ आने। 'हरिजन सेवक' आदि में समय-समय पर स्वदेशी और ग्रामोद्योग के सम्बन्ध में लिखे गये गाँधी जी के लेखों और शका-समाधानों का संकलन। इस पुस्तक से इस विषय के आर्थिक और राजनैतिक पहलू की खासी जानकारी हो जाती हैं।

२—गृह शिल्प। ले०—श्री० गोपालनारायणसेन सिंह। यह पुस्तक छोटी होते हुए भी बड़े काम की है। इस में गृह-शिल्प की दृष्टि से ग्रामों के जीर्णोद्धार-प्रश्न पर अच्छा प्रकाश डाला गया हैं। इसमें कहाँ क्या हो रहा है, और कहाँ क्या बनता है, तथा बनना चाहिए, शीर्षक लेखों में विचार करने योग्य सामग्री है। पृष्ठ संख्या ६२+६ मूल्य ॥); प्र०—ज्ञानमंडल, काशी; सं० १९७८।

३—फलों की खेती और व्यवसाय। ले०—श्रीनारायण दुलीचन्द व्यास; प्र०—लीडर प्रेस, इलाहाबाद। पृष्ठ २३६; मूल्य १ =)। शिक्षित युवक अपनी आजीविका कमाने और आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए बागवानी और खेती का उपयोग किस तरह कर सकते हैं, यह इस पुस्तक में अच्छी तरह बताया गया है। इसमें फल पैदा करने और बेचने के तरीकों की खुलासा चर्चा की गयी है।

४—फल-संरक्षण। ले०—डाक्टर गोरखप्रसाद; प्र०—विज्ञान

परिषद, प्रयाग। छोटा आकार, मूल्य १), पृष्ठ १७५, सचित्र; कपड़े की जिल्द। फल-संरक्षण के ज्ञान से गृहस्थ अपने खाने के लिए रुचिकर और पौष्टिक पदार्थ सदा अपने पास तैयार रख सकता है; और थोड़ी पूँजी लगा कर अच्छा रोजगार कर सकता है। इस पुस्तक के कुछ अध्यायों का विषय यह है—कीटाणु विद्या; फलों को डिब्बों में बन्द करना, फलों का रस; अचार, चटनी, मुरब्बा; फल, तरकारी और वनस्पतियों को सुखाना। पुस्तक उपयोगी है, और अच्छे ढंग से लिखी गयी है।

८—चावल। प्र०—अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, वर्धा। मूल्य ।।।)। इसमें चावल के आहार तत्व का वैज्ञानिक विवेचन है। धान पीसने और चावल कूटने के साधन का वर्णन है, धान कुटाई के व्यवसाय का विचार किया गया है, और व्यावहारिक सूचनाएँ दी गयी हैं, जिनमें राज्य के इस विषय सम्बन्धी कर्तव्य भी बताये गये हैं। पुस्तक में आवश्यक चित्र, नक्शे, सहायक पुस्तकों की सूची आदि देकर इसे खूब उपयोगी बनाया गया है। पृष्ठ संख्या ६०।

६—तेलघानी। ले०-श्री झवेरभाई पटेल, निरीक्षक, घानी विभाग अ० भा० ग्राम० उ० संघ, वर्धा। इसमें नीचे लिखे विषयों का विवेचन है:—१, तेल की मिल बनाम घानी। २, प्रान्तीय घानियाँ। ३, घानी की रचना के सिद्धान्त। ४, घानी कैसे बनाना। ५, प्रतिष्ठापन और मरम्मत। ६, तेल पेराई। ७, सामान्य। अन्त में कई परिशिष्ट हैं। पुस्तक सचित्र होने से और भी उपयोगी हो गयी है। सन् १६४३ में इसका तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ है। पृष्ठ संख्या १३+६६+४२। मूल्य डेढ़ रुपया।

७—मधुमक्खी पालन। ले०—श्री० शान्ताराम भांरेश्वर व्यवस्थापक, मधुमक्खी विभाग, अ० भा० ग्रा० उ० संघ, वर्धा। लेखक अपने विषय के बहुत अनुभवी हैं, दूसरे उपयोगी साहित्य से भी

आवश्यक सहायता ली गयी है। नये सीखनेवालों के लिए सभी ज़रूरी बातें देने की कोशिश की गयी है। सन् १९४१ में इसका दूसरा संस्करण छपा है। पृष्ठ संख्या ६८, मूल्य आठ आने।

८—**मधुमक्खी-पालन**। ले०—श्री० दयाराम जुगडाण, भूतपूर्व आफिसर इनचार्ज, गवर्नमेंट एपियरी, ज्योलीकोट (नैनीताल)। प्र०—विज्ञान परिषद प्रयाग। छोटा आकार, सजिल्द, पृष्ठ चार सौ। मूल्य २॥), सचित्र। श्री० आर. एस. पंडित इस पुस्तक के प्राक्कथन में लिखते हैं, 'इस छोटी अत्यन्त सुन्दर पुस्तक में इस बात का प्रशंसनीय प्रयत्न किया गया है कि आधुनिक मधुमक्खी पालन सम्बन्धी अत्यन्त मनोरंजक और लाभदायक ज्ञान को जनता तक पहुँचाया जाय।'

९—**मधुमक्खी**। लेखक—श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा; प्र०—भीष्म एण्ड ब्रदर्स, पटकापुर, कानपुर। मूल्य बारह आने। मधुमक्खी-पालन और शहद तथा मोम का व्यापार एक प्रमुख ग्रामोद्योग बनाया जा सकता है। इस पुस्तक में पाश्चात्य देशों की पद्धति के अनुसार यह धन्धा करने के तरीके बताये गये हैं।

(ग) अन्य उद्योग धंधे—वस्त्र सम्बन्धी तथा ग्रामीण उद्योग धंधों के साहित्य का परिचय ऊपर दिया गया है। अन्य उद्योग धन्धों की संख्या अपरिमित है। रोजमर्रा काम में आनेवाली तरह-तरह की चीजों में से एक-एक को बनाना या तैयार करना एक-एक पुस्तक का विषय होसकता है—जैसे तेल, साबुन, वार्निश, स्याही, दंतमंजन, फोटोग्राफी, कागज, जिल्दसाजी, पालिश, सोने चांदी का काम, मिट्टी के वर्तन बनाना, इत्यादि। इन विषयों पर लिखने के लिए अनुभव और क्रियात्मक ज्ञान की बहुत जरूरत होती है। हमारे सामने नीचे लिखी पुस्तकें हैं—

१—**उद्योग धन्धा**। संकलनकर्ता—श्री० सूर्यबली सिंह; प्र०—काशी पुस्तक भंडार, बनारस; पृष्ठ १६२, मूल्य १॥)। भारतवर्ष की

ग्राम-समस्याओं तथा दुनिया के बड़े-बड़े राष्ट्रों के ग्राम-जीवन और औद्योगिक उन्नति के सम्बन्ध में कई योग्य विद्वानों के लेखों का संकलन। उद्योग-धन्धों की अपेक्षा इसमें सामाजिक समस्याओं और वैज्ञानिक बातों का विचार अधिक है। पुस्तक में विषयों का खास क्रम नहीं है, फिर भी इससे बहुत सी उपयोगी जानकारी होती है।

२—**तेल की पुस्तक**। ले० और प्र०—प्रो० लक्ष्मीचन्द जी; विज्ञान हुनरमाला आफिस, काशी। मूल्य १); पृष्ठ १५८। इसमें कई तरह के तेलों के बारे में बहुत सी उपयोगी बातें बतायी गयी है; मोम, चर्बी, मक्खन आदि का भी वर्णन है।

३—**सुगंधित तेल**। ले०—पं० प्रभुदयाल शर्मा वैद्य, इटावा। पुस्तक रचना का उद्देश्य स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार बताया गया है। ५६ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥) रखा गया है। अन्त में बहुत से दवाइयों के पृष्ठ जोड़ दिये गये हैं।

४—**साबुनसाजी**। लेखक—श्री० के. बी. जोशी, बी.एस-सी., सलाहकार रसायनशास्त्री, अ० भा० ग्रा० उ० संघ, वर्धा। लेखक के शब्दों में 'इसे लिखने का उद्देश्य घर में ही साबुन बनाने के साधनों और तरीकों का बयान करना है। जहाँ तक होसका है, वहाँ तक देशी चीजों के ही प्रयोग का ध्यान रखा गया है। साबुन बनाने के तरीके भी आसान बनाकर लिखे गये हैं और वैज्ञानिक बारीकियों से बचने का यत्न किया गया है।' पुस्तक में आवश्यक चित्र और नक्शे दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या ८३, मूल्य ॥।)। सन् १९४२ में इसका दूसरा संस्करण छपा है।

५—**साबुन बनाने की पुस्तक**। लेखक और प्रकाशक—प्रो० लक्ष्मीचन्द जी, काशी। मूल्य १) पृष्ठ १७३। इसमें भिन्न भिन्न प्रकार के साबुन बनाने की रीतियाँ बतायी गई हैं, अन्य देशों में उपयोग में आनेवाली विधि का भी वर्णन है।

६—साबुनसाजी शिक्षा। ले०—पं० नन्दलाल, प्र०—बाबू किशनलाल गोवर्द्धनदास, मथुरा। मूल्य ॥); पृष्ठ केवल ५६। यह पुस्तक हमारे सामने नहीं है।

७—हुनर संग्रह। संग्रहकर्त्ता—श्री० विश्रामसिंह तिवारी। प्रकाशक—अग्रवाल ट्रेडिंग कम्पनी, काशी। मूल्य ॥।), पृष्ठ १२७। सन् १९३३। इसमें साबुन, तेल, एसेंस. अर्क, स्याही, रोगन, दियासलाई शर्बत, आदि ऐसे व्यवसायों का वर्णन है, जो थोड़ी पूँजी से चलाये जा सकते हैं। कितनी ही चीजों के बनाने के नुसखे दिये गये है।

८—स्वतंत्र होने के सहज उपाय। ले० और प्र०—श्रीराधाकृष्ण एंड को०, कलकत्ता। मूल्य २); पृष्ठ २४०; सन् १९२४। इसमें स्वतन्त्र आजीविका के लिए सुगंधित तेल, साबुन लाइमज्यूस, इत्र, रोशनाई; वार्निश, पालिश, मंजन, खिजाब, सोने चांदी की कलई तथा बहुत सी औषधियों आदि बनाने की विधि बतायी गयी है।

९—व्यापार शिक्षा। ले०—श्री० रूपनारायण गुप्त। प्र०—श्री० कन्हैयालाल, पटना सिटी। पृष्ठ १४४; मूल्य बारह आने। इसमें विविध स्याही, गोंद, लेही, तेल, वार्निश साबुन, औषधियां और कुछ यंत्र बनाने की विधि दी गयी है।

१०—नवीन व्यापार शिक्षा। ले० और प्र०—श्री० पूरणमल अग्रवाल, गोहाटी। इस में सिंदूर, खिजाब, मिस्सी, मसाले, पाउडर, वार्निश, गुलकन्द आदि विविध वस्तुओं के बनाने के नुसखे संग्रह किये गये हैं। केवल ८० पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य १।) है, जो बहुत अधिक है।

११—लाभदायक व्यापार (दो भाग)। ले०—डा० शिवसहाय भार्गव; प्र०—आर० एस० भार्गव फार्मेसी, अनूपशहर; पृष्ठ सौ-सौ; मूल्य दस-दस आने। लेखक ने अपने अनुभव के आधार पर साबुन,

पालिश, क्रीम, पाउडर आदि बहुत सी चीजें बनाने तथा शीशे पर कलई करने की रीतियाँ सरल और साफ तौर पर बतायीं हैं।

१२—**गुप्त व्यापार शिक्षक**। ले—पं० रामचन्द्र वैद्य शास्त्री, अलीगढ़। मूल्य ।।); पृष्ठ ६४। तीसरी बार, सम्वत् १९६६। इस में छोटी बड़ी विविध वस्तुओं के नुसखे हैं, यथा केसर, कस्तूरी, हुलास, तमाखू, साबुन आदि।

हाथ के उद्योग धंधे। ले०—श्री० अबीरचन्द जैन; प्र०—महाकौशल पुस्तक भंडार, जबलपुर। पृष्ठ ४१, मूल्य चार आने। इसमें साबुन, स्याही, तेल, शर्बत, दवाइयों आदि बनाने, और कांच तथा धातुओं पर नक्काशी करने के तरीके बताये गये हैं।

१४—**उद्योग शिक्षा**। ले०—बाबू मुखत्यारसिंह वकील, मेरठ। प्र०—भास्कर प्रेस, मेरठ। पृष्ठ बड़े आकार के २००, मूल्य १), कागज रफ, छपाई मामूली। इसमें दूकानदारी और कारखाने चलाने के नियम, साबुन, लाख, सरेस, खांड़ तथा अन्य कितनी ही वस्तुएँ बनाने के नियम आदि का अच्छा वर्णन है। लेखक ने अपने विषयों का खूब प्रयोग तथा परीक्षा करके देखा है।

१५—**गुणों को पिटारो**। ले०—श्री० परमानन्द जी, काशी। प्र०—खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई। पृष्ठ १२०। मूल्य लिखा नहीं। इसमें अनेक प्रकार की धातुओं को फूँकने व सेवन करने तथा सिंदूर आदि के बनाने, साबुन, पारा, गंधक, शिंगरफ, आदि के बर्तन बनाने, तथा अन्य विविध औषधियों और क्रियाओं का वर्णन है।

१६—**खजाना रोजगार अर्थात् दौलत की खान**। संग्रहकर्ता—बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त, अलीगढ़। इसमें तेल, शाक, अर्क, मञ्जन, सिग्रेट आदि वस्तुएँ बनाने के छोटे-छोटे नुसखे लिखे हैं। पृष्ठ केवल ७२, फिर भी मूल्य एक रुपया है, जो बहुत अधिक है।

१७—**गर्ग टायलेट मेन्यूफेक्चर**। ले०—श्री० मातादीन गर्ग; प्र०—किशन प्राडक्ट्स, लखनऊ। पृष्ठ ८३; मूल्य, आठ आने। इसमें साबुन, सुगन्धित तेल स्याहियाँ, दन्तमञ्जन आदि रोजमर्रा के काम की चीजें बनाने के अंग्रेजी नुसखे दिये गये हैं।

१८—**उपयोगी नुसखे, तरकीबें, और हुनर**। सम्पादक—डा० गोरखप्रसाद और सत्यप्रकाश, भाग १। प्र०—विज्ञान परिषद, प्रयाग। प्रथम बार, सन् १९३९। मूल्य २)। गृहस्थ, व्यवसायी और उद्योग धन्धे वालों के लिए बहुत उपयोगी।

१९—**वार्निश और पेंट**। ले० और प्र०—प्रो० लक्ष्मीचन्द, काशी मूल्य १), पृष्ठ १६०। पुस्तक में लकड़ी, चमड़ा, जिल्द, जूता, कुर्सी, लोहे के समान, कागज, तसवीर, बाजा, पर्दा, दीवार आदि के वार्निश तथा पालिश बनाने तथा चढ़ाने के अनेक नुसखे दिये गये हैं। इससे पाठक बहुत सी फालतू पड़ी हुई चीजों का बहुमूल्य उपयोग कर सकते हैं।

२०—**रोशनाई बनाने की पुस्तक**। ले० और प्र०—उपर्युक्त। मूल्य ॥), पृष्ठ ५७। इसकी शैली, और विषय-विवेचन लेखक की अन्य पुस्तकों की भांति सरल और उपयोगी है।

२१—**आलोक चित्रण अथवा फ़ोटोग्राफी**। यह बाबू मन्मथनाथ चक्रवर्ती की पुस्तक का अनुवाद है; अनुवादक हैं, श्री० श्यामसुन्दरदास बी० ए० और नन्दलाल शर्मा। मैनेजर, फ्रेंड एण्ड कम्पनी, मथुरा, द्वारा प्रकाशित है। मू०।=); पृष्ठ बड़े आकार के ७१। दूसरा संस्करण, सन् १९०५ ई०। अच्छी पुस्तक है। आवश्यक यंत्रों का परिचय भी दिया गया है।

२२—**प्रेक्टिकल फोटोग्राफी अर्थात् अभ्यासात्मक आलोक चित्रण**। ले०—श्री० हरिगुलाम ठाकुर, प्र०—भारत प्रकाश यंत्रालय, गोरखपुर। पुस्तक को यथा सम्भव सरल बनाने का यत्न

किया गया है। सिद्धान्त कम हैं। 'डिवेलपिंग', 'टोनिंग', 'एनलार्जमेंट' आदि पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। स्थान-स्थान पर आवश्यक नुसखे भी दिये गये हैं।

२३—**फोटोग्राफी; सिद्धांत और प्रयोग**। ले०—श्री० गोरख-प्रसाद डी० एस-सी०; प्र०—इण्डियन प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ संख्या ७६०। लेखक ने विषय का अध्ययन ही नहीं, प्रयोग भी खूब किया है। अच्छा परिश्रम किया गया है। चीज़ भी अच्छी तैयार हुई है। चित्रादि भी यथेष्ट दिये गये हैं। पुस्तक के अन्त में अकारादि विषय-सूची के अतिरिक्त, उच्चारण सहित शब्दकोष भी दिया गया है। दूसरा संस्करण, सन् १६३६। मूल्य छः रुपये।

२४—**चित्र लेखन**। ले०—श्री० हलकूप्रसाद और दत्तात्रेय गणेश। प्र०—मिश्रबन्धु, जबलपुर। मूल्य १।), सन् १६३०। शिक्षकों तथा नार्मल स्कूलों के लिए मध्यप्रान्तीय शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत पाठ्य ग्रन्थ।। बहुत से आवश्यक चित्रों सहित, छपाई अच्छी, और लेखन-शैली उपयुक्त है।

२५—**कागज़ बनाना**। ले०—श्री० के. बी. जोशी। प्र०—अ० भा० ग्राम उद्योग संघ, मगनवाड़ी, वर्धा। मूल्य, डेढ रुपया। यह पुस्तक हमने देखी नहीं है। यह सम्भवतः इसी लेखक की "पेपर मेकिंग' नाम की अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है, जो बहुत अनुभव और परिश्रम से लिखी गयी है, और जिसमें बहुत से नक्शे और चित्र देकर विषय को खूब स्पष्ट किया गया है।

२६—**गत्ते का काम**। ले०—श्री० लक्ष्मीश्वर सिन्हा। प्र०—हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवागाँव, वर्धा। मूल्य एक रुपया। अपने विषय की अच्छी प्रामाणिक पुस्तक।

२७—**व्यापार शिक्षक (भाग १)**। संग्रहकर्त्ता—श्री गंगाशंकर पचौली, भरतपुर; मूल्य≶), पृष्ठ ३६। कागज के पट्ठों और रद्दी से

उपयोगी चीजें बनाने के तरीकों, तथा कागज के शिल्प सम्बन्धी अन्य कई ज्ञातव्य बातों का संग्रह है। इस विषय पर सर्वाङ्गपूर्ण पुस्तकें अभी तक कम ही प्रकाशित हो सकी हैं। यह अगस्त १६१० का प्रकाशन है।

२८—**प्रेस की कुंजी**। ले०—स्वामीदीन, प्र०—रघुनन्दनलाल, कासगंज। मूल्य ||), पृष्ठ २४, सम्वत् १६७२। लेखक और प्रकाशक दोनों अपने विषय के अनुभवी थे, पर पुस्तक छोटी तथा मंहगी है।

२६—**जिल्दसाजी**। ले०—श्री० सत्यजीवन वर्मा 'भारतीय,' एम० ए०। प्र०—विज्ञान परिषद, प्रयाग। सन् १६४१; पृष्ठ १७६, सचित्र, कपड़े की जिल्द, छोटा आकार, मूल्य डेढ रुपया। जिल्दसाजी के व्यवसाय से विशेष सम्बन्ध न रखते हुए भी, लेखक ने अपने अनुभव और इस विषय की प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर यह पुस्तक लिखने का साहस किया है। आपको यह बात बहुत खटकती है कि हिन्दी में अभी वैज्ञानिक तथा व्यावसायिक दृष्टि से लिखी उपयोगी कलाओं पर पुस्तकों की बड़ी कमी है। इस लिए आप तरह-तरह की उपयोगी पुस्तकें लिखने और लिखाने में लगे रहते हैं। यह पुस्तक अपने विषय की सब से पहली अच्छी रचना हैं।

३०—**लकड़ी पर पालिश**। ले०—सर्वश्री० डाक्टर गोरखप्रसाद और रामयत्न भटनागर एम० ए०, बी० एस-सी०। प्र०—विज्ञान परिषद, प्रयाग। सन् १६४०, पृष्ठ २१८, छोटा आकार, कपड़े की जिल्द। मूल्य डेढ रुपया। इसमें लकड़ी पर चमक लाने की विविध रीतियाँ बतायी गयी हैं। इसके अध्ययन से तथा क्रियात्मक प्रयोगों से आदमी इस विषय में बहुत होशियार हो सकता है।

३१—**सुवर्णकारी**। ले०—श्री० गंगाशंकर पचौली, प्र०—विज्ञान परिषद, प्रयाग। पृष्ठ ६१, छोटा आकार, मूल्य ।); इसके कुछ विषय ये हैं—सोने के भेद, सोना गलाना, बट्टा मिलाना और शुद्ध करना,

निखार, पत्तर चढ़ाना, पालिश अर्थात् जिला करना, सोने का पानी चढ़ाना, मीनाकारी।

३२—मिट्टी के बर्तन। ले०—श्री० फूलदेव सहाय वर्मा एम० एस-सी०। प्र०—विज्ञान परिषद, प्रयाग। सन्, १९३९ पृष्ठ १७३, छोटा आकार, कपड़े की जिल्द। मूल्य एक रुपया। यद्यपि भारतवर्ष में मिट्टी के सामान तैयार करने का काम बहुत पुराने समय से होता आरहा है, हिन्दी में इस विषय की यह सब से पहली पुस्तक मालूम होती है। इसमें मिट्टी, पत्थर, और पोरसीलेन का सामान तैयार करने की विधि बतायी गयी है। आवश्यक चित्र देकर विषय को स्पष्ट किया गया है।

३३—भारतीय चीनी मिट्टियाँ। ले०—श्री० मनोहरलाल मिश्र, एम० एस-सी०, सिरेमिक विभाग; काशी विश्वविद्यालय। प्र०—विज्ञान परिषद, प्रयाग। पृष्ठ तीन सौ। सजिल्द। मूल्य १॥); प्रथम संस्करण; सन् १९४१। अपने विषय की अच्छी खोज और जानकारी वाली पुस्तक है। अपने देश की मिट्टी को हम किस तरह सोने में बदल सकते है, यही इसका विषय है।

३४—नारियल के रेशे का उद्योग। प्र०—मारवाड़ी अग्रवाल महासभा, कलकत्ता। मूल्य ॥); पृष्ठ २४, कागज बढ़िया। इस पुस्तक में इस उद्योग में काम में आने वाली विविध कलों के चित्र तथा भिन्न-भिन्न आवश्यक अंक दिये गये है। पुस्तक उपयोगी है। सस्ते संस्करण की आवश्यकता थी।

३५—पाट, हैसियन और बोरे। ले०—प्रो० शिवनारायणलाल; प्र०—शंकर एंड को०, कलकत्ता। पुस्तक सरल और सुबोध है। आवश्यक अंक-सूची और कोष्टक देकर खूब उपयोगी बनाया गया है।

३६—हिन्दी मोटर गाइड। यह श्री० विनायक गंगाधर गोखले, मि० ऐञ्जिनियर और मोटर मिकेनिक, जमखंडी, की स्वानुभव से

मराठी में लिखी पुस्तक का अनुवाद है। भाषा सरल रखने का प्रयत्न किया गया है। विषय को सुबोध करने के लिए चित्र पर्याप्त मात्रा में दिये गये हैं। मूल्य १।), पृष्ठ २४९, सन् १९२३ ई०।

३७—**भारतीय कला कौशल**। ले०—श्री० डी. वी. वरवे बी० ए०, बिजनेस मेनेजर, यू० पी० गवर्मेंट आर्ट्स एंड क्राफ़्ट्स एम्पोरियम, लखनऊ। प्रकाशक भी शायद वही। मूल्य १), पृष्ठ ५०, कपड़े की जिल्द।

३८—**सुलभ वस्तु-शास्त्र अथवा आधुनिक भवन-निर्माण-प्रणाली**। मूल लेखक—श्री० रघुनाथ श्रीपाद देशपाण्डे,। भाषान्तर-कार—पं० कृष्ण रमाकान्त गोखले। प्र०—रघुनाथ श्रीपाद देशपाण्डे, इंजीनियर, पी० डब्ल्यू० डी०, संगमनेर, जि० अहमदनगर, पृष्ठ ४३६ (सजिल्द), और मूल्य तीन रुपये। मूल पुस्तक विद्वान लेखक ने मराठी में लिखी थी। मकान बनाने के लिए उपयुक्त स्थान का चुनाव, उसकी रूपरेखा और उसके विभिन्न हिस्सों के निर्माण के सम्बन्ध में विस्तृत और उपयोगी विवरण दिया गया है। इसके सिवा ठेका, अमानी आदि काम कराने की पद्धतियों और किफायत से मकान बनवाने के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाओं का समावेश भी कर दिया गया है। हिन्दी में इस विषय की यह एकमात्र उपयोगी पुस्तक है।

ग्राम्य अर्थशास्त्र—भारतवर्ष की नब्बे फीसदी जनता गांवों में रहती है। उनके उद्योग धन्धों के साहित्य का परिचय पहले दिया जा चुका है। गांव वालों का एक मुख्य धन्धा खेती है, और उसके सम्बन्ध में साहित्य भी हिन्दी में अच्छा प्रकाशित हुआ है। पर वह हमारे विषय से बाहर होने के कारण, हम यहां कृषि शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों का परिचय नहीं दे रहे हैं। हम यहां केवल कृषि-सुधार और गो-पालन सम्बन्धी पुस्तकों का ही विचार करते हैं।

१— **ग्रामीय अर्थशास्त्र** । ले०—प्रो० व्रजगोपाल भटनागर एम० ए०; प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग । पृष्ठ ३०२; कई चित्र और अंक सूची सहित । सजिल्द, दूसरा संस्करण, सन् १६४२; मूल्य ढाई रुपये । यह अपने विषय का सबसे पहला अच्छा क्रम-बद्ध ग्रन्थ है । भारतवर्ष के गावों और कृषि के बारे में विस्तार पूर्वक विचार किया गया है ।

२—**ग्राम्य अर्थशास्त्र** । ले०—सर्वश्री० दयाशंकर दुबे एम० ए०, और शंकरसहाय सकसेना एम० ए० । प्र०—नेशनल प्रेस, इलाहाबाद । प्रथम संस्करण, सन् १६४०, पृष्ठ संख्या ३२४, मूल्य सवा रुपया । । पुस्तक संयुक्तप्रान्त के हाई स्कूल और इंटरमीजियट बोर्ड की हाई स्कूल परीक्षा के ग्राम्य अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम के अनुसार लिखी गयी है । इसमें अर्थशास्त्र की मुख्य बातों के विवेचन के अलावा ग्रामीण समस्याओं और सहकारिता पर भी प्रकाश डाला गया है । हाल में इस का दूसरा संस्करण हो गया है ।

३— **ग्रामीण अर्थशास्त्र और सहकारिता** । ले०—श्री अमर-नारायण अग्रवाल; प्र०—रामदयाल अगरवाल, इलाहाबाद । ३८७ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) । पुस्तक हाई स्कूल पाठ्य-क्रम के अनुसार लिखी गयी है ।

४—**ग्राम संजीवन** । ले०—श्री भारतन कुमारप्पा; प्रा०—अ० भा० ग्राम उद्योग संघ, वर्धा । मूल्य दो आने । इसमें संघ के सम्बन्ध में आवश्यक बातें बतला कर ग्रामोद्योग तथा ग्राम-रचना का विचार किया गया है ।

५— **गांवों की समस्याएँ** । ले०—श्री० शंकरसहाय सकसेना एम० ए० और प्रेमनारायण जी माथुर एम० ए० । प्र०—हिन्दी साहित्य सम्मेलन; प्रयाग । पृष्ठ संख्या २१६, मूल्य १) । दोनों लेखक अपने विषय के जानकार और अनुभवी हैं । पुस्तक में आगे

लिखे विषयों पर विचार किया गया है—गाँवों की ओर, गाँवों की वर्तमान दशा और अंगरेजी साम्राज्यवाद, कृषि, पशुपालन, ग्रामीण ऋण, ग्रामीण उद्योग धन्धे, जमीन का बन्दोबस्त, स्वास्थ्य, सफाई, शिक्षा आदि।

६—ग्राम-सुधार। ले०—श्री० गंगाप्रसाद जी पांडेय एल० जी० (सुपरिटेन्डेन्ट, कृषि-विभाग, यू० पी०) और रमेशचन्द्र पांडेय एम० ए०, कृषि कार्यालय, जौनपुर। पृष्ट १६३, मूल्य १)। श्री० गंगाप्रसाद पांडेय ने कई वर्ष सरकारी कृषि विभाग द्वारा ग्रामसुधार सम्बन्धी अच्छा कार्य किया है। आपने भूमिका में लिखा है कि सरकार जमींदार ग्रामीण, और जनता के सहयोग होने से ही ग्राम-सुधार हो सकता है। इस पुस्तक में विशेष ध्यान सुधारक के उत्तम चरित्र और उसकी निष्कपट सेवाओं पर दिया गया है।

७—ग्राम-सुधार। ले०—श्री० अश्विनीकुमार शुक्ल बी० ए०, एल-एल० बी०; मेम्बर, महेन्द्रराज सभा, उदयपुर। प्र०—गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ। पृष्ठ ३३+६२; मूल्य दस आने। इसमें ५ प्रकरण हैं—प्राचीन काल में गांव की दशा, वर्तमान काल में सुधार, पशुओं की उन्नति, आर्थिक स्थिति पर विचार, कम्यूनिकेशन तथा मारकेटिंग। पुस्तक विचारपूर्ण हैं, और कई ग्रन्थों के आधार पर लिखी गयी है। लेकिन इसमें लेखक की २५ पृष्ठ की प्रस्तावना अंगरेजी में होना बहुत खटकता है। पुस्तक में अंगरेजी, उर्दू, और संस्कृत के कठिन शब्दों का उपयोग होने से कहीं-कहीं भाषा कुछ अजीब हो गयी है।

८—ग्राम-सुधार। ले०—पं० गणेशदत्त शर्मा गौड़, 'इन्द्र', विद्यावाचस्पति। प्र०—श्री० म० भा० हि० सा० समिति, इन्दौर। पृष्ठ २४३, मूल्य १)। इसमें ग्राम-शिक्षा, उद्योग धन्धे, पशु पालन, नशेबाजी, खाद आदि ग्राम सम्बन्धी विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला

गया है। वर्तमान त्रुटियों के सुधार की योजना भी बतायी गयी है। सन् १६३३ में छपी है।

९—**ग्राम-सुधार; दो भाग**। ले०—एक ग्राम-सुधारक। इसमें भारतीय ग्राम्य जनता के विषय में कृषि, गोपालन, मुकदमेबाजी, स्वास्थ्य आदि कई आवश्यक और उपयोगी लेखों का संग्रह है। पुस्तक लगभग बीस वर्ष पुरानी हैं; छपाई साधारण हैं, सम्पादन ठीक नहीं हुआ। प्र०—छात्र सहोदर कार्यालय, जबलपुर; मूल्य दस आने और बारह आने।

१०—**ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार**। लेखक—श्री० व्योहार राजेन्द्रसिंह एम० एल० ए०। प्र०—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। पृष्ठ संख्या २७८; मूल्य १।)। लेखक ग्राम-सुधार विषय के अनुभवी और जानकार हैं। पुस्तक के सम्पादक श्री दयाशंकर जी दुबे के शब्दों में, इस पुस्तक में उन बातों पर बहुत अच्छे ढङ्ग से सरल भाषा में विचार किया गया है, जिनसे पाठक यह समझलें कि ग्रामवासियों को किन-किन असुविधाओं का सामना करना पड़ता है, और ये असुविधाएँ किस तरह आसानी से दूर की जा सकती हैं। पुस्तक के कुछ अध्यायों के अन्त में सहायक साहित्य की विस्तृत सूची दी गयी है।

११—**हमारे गावों की कहानी (पहला खंड)**। ले०—स्व० रामदास जी गौड़; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। पृष्ठ १६८, मूल्य आठ आने। इसमें भारतीय गाँवों के प्राचीन इतिहास, और उनकी अब तक की स्थिति का विचार करके यह बताया गया है कि किस तरह उनका शोषण किया गया है। आखिरी अध्याय में यहाँ की खेती की अन्य देशों की खेती से तुलना की गयी है।

१२—**ग्राम सेवा**। म० गांधी के लेखों का संग्रह। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। छोटे आकार के ७६ पृष्ठ; मूल्य एक आना।

१३—ग्राम-चिंतन। ले०—कर्नल मालोजीराव नृसिंहराव शितोले, प्र०—विद्यामन्दिर, मुरार, गवालियर। पृष्ठ ११२, मूल्य डेढ़ रुपया। लेखक गवालियर राज्य के, पोहरी जागीर के, अनुभवी जागीरदार हैं। इस पुस्तक में उनके ग्राम-सुधार सम्बन्धी व्याख्यानों का संकलन किया गया है। ग्रामों में काम करनेवालों के लिए उपयोगी है।

१४—गावों की ओर। ले०—श्री० जगदीश नारायण; प्र०—युगान्तर प्रकाशन समिति, बाँकीपुर। पृष्ठ २०८; मूल्य, सवा रुपया। इसमें गाववालों की दुर्दशा की चर्चा की गयी हैं, और उन्हें उपदेश दिया गया है कि वे अपनी खेती और स्वास्थ्य का सुधार करें, तथा अपने अवकाश के समय ऐसा धंधा करें, जिससे उनकी आमदनी बढ़े।

१५—ग्राम्य संगठन। ले०—श्री० शिवलाल शर्मा, प्र०—ग्रामीण ग्रन्थमाला, बगदा (आगरा)। मूल्य ॥), पृष्ठ १२४। सं० १९८५। इसके कुछ विषय ये हैं:—न्याय विभाग, सरकारी अदालतें पंचायत और सामाजिक कुरीतियां, शूद्र और हिन्दू समाज, सफाई और शिक्षा प्रचार, आदि।

१६—हमारे गावों का सुधार और संगठन। ले०—श्री० रामदास गौड़; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। पृष्ठ १३+३३४; मूल्य सिर्फ एक रुपया। लेखक के शब्दों में, 'गाँव पहले कैसे थे, आज कैसे हैं, कैसे होने चाहिएँ और उन्हें वैसा बनाने के लिए क्या-क्या करना चाहिए, इन्हीं बातों पर विचार करना इस पोथी का उद्देश्य है।' श्री० गौड़ जी सुप्रसिद्ध विद्वान थे, उनकी यह रचना बहुत सुन्दर और उपयोगी है। पुस्तक के अन्त में सहायक साहित्य की सूची भी दी गयी है।

१७—गांव की बात। ले०—श्री० भगवानदास केला, प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। दूसरा संस्करण, सन् १९४५।

मूल्य आठ आने। इसमें आठ लेख हैं—ग्रामजीवन से शिक्षा, गाँव की याद; ग्राम-चिन्ता, यह कैसा ग्राम-सुधार, गाँव का अध्यापक, ग्रामोपयोगी साहित्य; ग्राम-सेवा, और हमारा आदर्श गाँव।

१८—हमारे गांव और किसान। ले०—चौधरी मुखत्यारसिंह; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली; पृष्ठ १८२; मूल्य, आठ आने। इसमें अनुभवी लेखक ने भारत के गाँव और किसानों की असली हालत और खेती के तरीकों आदि के सुधारने के उपाय बताये हैं। महामना श्री० मालवीय जी ने इसकी भूमिका लिखी है।

१९—किसान सुख साधन। ले०—श्री० देवनारायण द्विवेदी; प्र०—काशी पुस्तक भंडार, बनारस; मूल्य, एक रुपया। इसमें उत्तम खाद, अच्छे बैल, बीज, खेती के औजार तथा तरीके और ग्राम-संगठन आदि पर खुलासा विचार किया गया है। पहले अध्याय में में किसानों से सम्बन्ध रखनेवाली सरकारी अर्थनीति और राजनीति का वर्णन है।

२०—हमारे किसानों का सवाल। ले०—डा० जैनुल आब्दीन अहमद; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। छोटा आकार, १०८ पृष्ठ, मूल्य दो आने। किसानों के सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी और आंकड़े।

२१—भारत में कृषि-सुधार। ले०-श्री० दयाशंकर दुबे। इसमें हिसाब लगाकर यह बताया गया है कि वर्तमान दशा में भारत के अधिकांश आदमियों को प्रति दिन दो समय भर पेट भोजन नहीं मिलता। उनकी दशा सुधारने के लिए सरकार को कृषकों से मिलकर किन किन उपायों को काम में लगाना चाहिए, इस विषय पर भी विचार किया गया है। सम्वत १९९७ में इस पुस्तक का दूसरा संस्करण हुआ। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, ज्ञानवापी, काशी। मूल्य, सवा दो रुपये।

२२—कृषि-सुधार का मार्ग। ले० और प्र०—श्री० बैजनाथ प्रसाद यादव, ग्राम ज्ञान अध्यापक गौरा; रायबरेली। पृष्ठ १३२, मूल्य बारह आने। इसमें भूमि-सुधार, पशु-सुधार, किसानों की ऋण समस्या; लगान, सिंचाई; शिक्षा, किसानोपयोगी उद्योग धंधे, आदि विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। लेखक अपने विषय के अनुभवी और ज्ञानवान हैं। पुस्तक सन् १९३९ में छपी है।

२३—लोक जीवन। ले०—श्री काका कालेलकर, प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। पृष्ठ १९०, मूल्य आठ आने। धर्म के मूल तत्वों तथा ग्राम-समस्याओं का विवेचन। कुछ विषय ये हैं—ग्राम व्यवस्था, सत्ता का स्वरूप, पंचायत, कर्जा; मुकदमेबाजी, गरीबी, ग्रामों के पुनर्जीवन का सवाल।

२४—भारत के देहात। ले०—श्री० कृष्णकुमार शुक्ल; प्र०—राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, कानपुर। पृष्ठ १४२, मूल्य १)। भारत के देहातों की स्थिति सुधारने के उपायों का विचार, और योरप के गावों के बारे में आवश्यक जानकारी।

२५—ग्राम संस्था। ले०—श्री० शंकरराव जोशी। इसमें पाश्चात्य और प्राच्य ग्राम-संस्थाओं के विषय में ऐतिहासिक तथा अन्य आवश्यक बातें बतला कर भारतीय ग्राम-रचना के विषय में विचार किया गया है और भारतवर्ष की ग्राम-संस्थाओं के पुनरुद्धार पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। मूल्य १), पृष्ठ संख्या १७३। प्र०—मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर।

२६—ग्राम-पंचायत प्रदीपिका। ले०—श्री दुर्गाशंकरजी मेहता; प्र०—साहित्य-भूषण गुलाबशंकर पंड्या, मनोरञ्जन प्रेस, सिवनी। मूल्य आठ आने। इसमें ग्राम पंचायत और उसके पंचों का महत्व तथा उनके कर्तव्य आदि का वर्णन है।

२७—ग्राम पंचायत। ले०—श्री० विनायक गणेश वझे। प्र०—ग्रन्थमाला कार्यालय, बांकीपुर। सन् १९३९ ई०। मूल्य दस आने।

२८—गोधन। ले०—श्री गिरीशचन्द्र चक्रवर्ती, प्र०—श्री० वाणीनाथ चक्रवर्ती, किशोरगंज, मैमनसिंह। बड़े आकार के ४२४ पृष्ठ; सजिल्द, मूल्य ४)। गोवंश का मानव समाज के साथ विभिन्न कालों में क्या सम्बन्ध रहा, गौ की नस्लें, पाश्चात्य देशों में गायों की स्थिति, उनके पोषण, चिकित्सा आदि गाय से संबंधित प्रत्येक विषय का खुलासा विचार। सन् १६२१ का प्रकाशन है; नवीन, संशोधित संस्करण की आवश्यकता है।

२९—गोरक्षा कल्पतरु। मूल गुजराती लेखक—वालजी गोविन्दजी देसाई; प्रकाशक—गो सेवा संघ, साबरमती; पृष्ठ १४४, मूल्य ।=)। भारत में ग्रामों की स्थिति, गोपालन का आर्थिक पहलू, और गोवध रोकने तथा गोवंश की उन्नति के उपायों का प्रमाण तथा आँकड़ों के साथ दिग्दर्शन।

३०—गोपालन। लेखक का नाम नहीं। प्र०—इंडियन प्रेस लिमिटेड। पृष्ठ १३२। मूल्य १।।।)।

३१—किसानों की कामधेनु (किसानों को सुखी और माला-माल बनाने के कुछ उपाय)। ले०—श्री गंगाप्रसाद अग्निहोत्री। प्र०—गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ। पृष्ठ ५७; मूल्य ।=)

३२—भारत की नागरिक जनता और गोपालन। ले०—श्री० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री। प्र०—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ। पृष्ठ ४५; मूल्य =)

३३—गो पालन। ले०—श्री० भगवानदास वर्मा, रिटायर्ड मेनेजर, मिलिटरी डेरी फार्म्स, भगवानदास स्ट्रीट, लाहौर छावनी। पृष्ठ साढ़े तीन सौ; मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें अनुभवी लेखक ने बहुत विस्तारपूर्ण सामग्री दी है, जैसे दूध, मलाई, मक्खन, घी आदि की बनावट में रासायनिक पदार्थों का मेल, उनकी जांच-पड़ताल की नयी रीतियां; पशुओं को अधिक दुधारू बनाने की रीति, पशुओं की जांच,

उनका इलाज, दूध और उसका व्यापार, धार्मिक गोशालाओं से यथोचित लाभ उठाने की विधि, गोचारण भूमि को किस तरह उपयोगी बनाया जा सकता है; इत्यादि।

३४—विश्वधाय। ले०—श्री० भगवानदास वर्मा। प्र०—साहित्य सदन, अबोहर (पंजाब)। प्रथम संस्करण, सन् १६३४, पृष्ठ ६४, सचित्र, मूल्य चार आने। लेखक को अपने विषय का क्रियात्मक अनुभव है और उसने इस विषय के खासकर आधुनिक ढंग के पाश्चात्य साहित्य का भी खूब अध्ययन किया है। पुस्तक बहुत उपयोगी और सस्ती है। कहीं कहीं शब्द अंगरेजी के और अंक रोमन लिपि में दिये गये हैं; इसमें सुधार होने की आवश्यकता है।

सहकारिता—कुछ समय से किसानों की आर्थिक दशा सुधारने के उद्देश्य से जगह जगह सहकारी (को-आपरेटिव) बैंक बढ़ रहे हैं। इस विषय के कुछ मासिक पत्र निकल रहे हैं। कुछ लेखकों ने अर्थशास्त्र में, और कुछ ने शासनपद्धति सम्बन्धी पुस्तकों में, इस विषय पर भी लिखा है। तो भी अभी यह साहित्य बहुत कम है।

१—भारतीय सहकारिता आन्दोलन। ले०—श्री० शंकर सहाय जी सक्सेना एम० ए०, बी० काम०। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला दारागंज, प्रयाग। दूसरा संस्करण, सन् १६४४। पृष्ठ संख्या तीन सौ। मूल्य पौने तीन रुपये। इसके कुछ विषय ये है—सहकारिता का सिद्धान्त, भिन्न भिन्न प्रकार की समितियां, भारतवर्ष में श्रीगणेश, सहकारिता क़ानून, ग्रामीण ऋण की समस्या, ग्रामीण और नागरिक साख समितियाँ, सेन्ट्रल बैंक, प्रान्तीय बैंक, भूमिबन्धक बैंक; दूध, चकबन्दी, स्वास्थ्य, कृषि, सिंचाई, शिक्षा, ग्राम सुधार, और गृह निर्माण समितियां; संयुक्त सहकारी मज़दूर तथा कृषि समितियां; क्रय-विक्रय समितियां, उत्पादक समितियां आदि। आन्दोलन की प्रगति, त्रुटियों तथा सफलता पर भी विचार किया गया है, साथ में इस बात का भी दिग्दर्शन

कराया गया है कि विदेशों में सहकारी समितियां किस प्रकार कार्य कर रही हैं। यह पुस्तक बहुत सी संस्थाओं में पाठ्य पुस्तक है।

२—संयुक्तप्रान्त में सहकारी सभाएँ। अनु०—श्री०शिवचरण लाल। सुपरिएटेएडेएट गवर्नमेंएट प्रेस, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित। विक्रयार्थ नहीं। सरकारी को-आपरेटिव सोसाइटीज़ की ओर से संयुक्त-प्रांत में सहकारी सभाओं के संगठन की पद्धति का स्पष्टीकरण करने के लिए यह पुस्तक प्रकाशित की गयी है। १६२६ में प्रकाशित, छठा संस्करण हमारे सामने है।

३—सहयोग और ग्राम सुधार। प्र०—मोहकमा अंजुमन इमदाद बाहमी, सूबा मुमालिक मुतहद्दा आगरा व अवध। बड़ा आकार। पृष्ठ ५७; मुफ़; विक्री के लिए नहीं। प्रस्तावना में कहा गया है कि इस किताब में यहाँ के देहात की मौजूदा हालत, उसकी ज़रूरतों और उनके दूर करने की तदबीरों पर सादी ज़बान में रोशनी डालने की कोशिश की गयी है। पुस्तक अच्छी है, पर भाषा सादी न होकर कहीं कहीं बहुत ही मुश्किल है; जराअती, मकरूजियात, इम्दाद बाहमी आदि शब्दों को इस्तेमाल किया गया है।

४—सुखी जीवन। ले०—श्री० देवीसहाय श्रीवास्तव एम० ए०, एल-एल० बी०, शिक्षक ग्राम-सुधार शिक्षा केन्द, कानपुर। प्रकाशक—रामप्रसाद सिन्हा, पटकापुर, कानपुर, पृष्ठ संख्या लगभग पौने तीन सौ, सजिल्द, मूल्य १॥) । यह सहकारिता विषय की अच्छी सरल और उपयोगी पुस्तक है। इसमें थोड़ा सा इतिहास दूसरे देशों की तरक्की का, फिर भारतवर्ष में इस आन्दोलन की तरक्की का बता कर देहात में सहकारी सभाओं का संगठन विस्तृत रूप से दिया गया है। यह भी बताया गया है कि सहयोग से किन किन कामों में कामयाबी हुई और हो सकती है, और राष्ट्रीय जीवन में इसका क्या स्थान है। पुस्तक प्रचार के योग्य है।

आर्थिक योजना—सन् १६१४-१८ के महायुद्ध के वाद रूस ने स्वतंत्र होकर आर्थिक योजनाएँ बना कर देशवासियों की आर्थिक दशा सुधारने में आशातीत सफलता प्राप्त करली, तब अन्य देशों का भी ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित हुआ, और इस सम्बन्ध में अच्छा साहित्य प्रकाशित होने लगा। अब भारतवासी भी इस ओर ध्यान देने लगे हैं, लेकिन यहाँ अधिकतर साहित्य अंगरेजी में ही प्रकाशित हुआ हैं। हिन्दी में सिर्फ नीचे लिखी पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं :—

१—**रूस का पंचवर्षीय आयोजन**। अनु०—ठाकुर राजा-वहादुरसिंह; प्र०—साहित्य मंडल, देहली। मूल्य ४॥)। यह अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद हैं; रूस का संक्षिप्त परिचय भी जोड़ दिया गया है, जिससे पाठक रूसी प्रजा के मनोभावों, विचारों के परिवर्तन, आदर्शवाद, विशेषतया साम्यवादी कल्पनाओं को अच्छी तरह समझ सकें। रूस ने संसार को अपने पंचवर्षीय आयोजन से चकित कर दिया था, वहुत से देश उस का उपहास करते थे, किसी को उस कार्य के पूरा होने का विश्वास न था। अनेक शक्तियों ने उसमें भरसक बाधा डाली। पर रूस ने उसे पूरा किया, और उसके वाद दूसरी और तीसरी योजनाएँ पूरी की। पुस्तक विचारपूर्ण है, तथ्यांकों से भरी है, सामुहिक औद्योगिक साहस का जीता-जागता प्रमाण है।

२—**भारत की आर्थिक उन्नति की योजना** (दो भाग)। ले०—श्री० पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, जे० आर० डी० टाटा, और घनश्यामदास जी विडला आदि। प्र०—ज्ञान मंडल, काशी। पृष्ट ७०+३४; मूल्य, सवा रुपया। सन् १६४४ में भारत के प्रमुख उद्योगपतियों ने इस देश की आर्थिक उन्नति की पन्द्रह वर्ष की योजना अंगरेजी में, दो भागों में प्रकाशित की। यह पुस्तक उसी योजना का हिन्दी अनुवाद है। यह हिन्दी में अपने विषय की प्रथम पुस्तक है।

३—उद्योगपतियों की आर्थिक योजना। ले०—श्री० अमरनारायण अग्रवाल एम० ए। प्र०—साहित्य भवन, प्रयाग। पृष्ठ ५७; मूल्य चौदह आने; इसमें उपर्युक्त (टाटा-विड़ला) योजना की आलोचना है।

४—गांधी आर्थिक योजना। वर्धा के श्री० श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल ने अंगरेजी में 'दि गांधियन प्लेन' नाम की एक पुस्तक लिखी है। इसमें बताया गया है कि म० गांधी के सिद्धान्तों के अनुसार भारतवर्ष की आर्थिक उन्नति किस प्रकार हो सकती है। इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित होने की सूचना मिली है।

व्यापार चक्र—अनुभव तथा अनुमान द्वारा यह मालूम हुआ है कि संसार के व्यापार में तेज़ी-मन्दी एक निर्धारित क्रम से होती है। पहले व्यापार और उद्योग धन्धों की क्रमशः वृद्धि होती है, उनकी खूब धूम मच जाती है। चरम सीमा पर पहुँचने के बाद, उनमें धीरे धीरे ह्रास होने लगता है, यहाँ तक कि कभी कभी बहुत से व्यापारों के एक साथ डूबने या दिवाला निकल जाने की भी नौबत आजाती है। ये बातें एक चक्र के रूप में हुआ करती हैं। अमरीका और इंगलैंड में इसका हिसाब लगाना भी एक विज्ञान होगया है। वहाँ इस विषय की अनेक पुस्तकों का प्रचार है। हिन्दी में ऐसी एक भी पुस्तक नहीं। यहाँ, अधिकांश सज्जन यह भी नहीं जानते कि इस विषय की भी कोई विद्या है। अंगरेज़ी के विद्वानों में से जो महाशय हिन्दी में रचना कर सकें, उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

बीमा—व्यापार व्यवसाय में तरह तरह की जोखम हुआ करती हैं। न मालूम, कब किस कारखाने में आग लग जाय, या कोई जहाज़ डूब जाय; ऐसी दशा में आर्थिक सहायता पाने के लिए बीमा करने की विधि निकाली गयी है। अब तो बीमे का एक बड़ा रोज़गार हो गया है। अनेक शहरों में तरह तरह की बीमा-कम्पनियां होती हैं। हिन्दी में इस विषय की स्वतंत्र पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है।

१—बीमा। ले०—ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत बी० ए०, प्र०—प्रेम प्रकाश मुद्रणालय, जयपुर। पृष्ठ ५०० से अधिक। मूल्य, साधारण संस्करण, ढाई रुपये; राज संस्करण, चार रुपये। इस पुस्तक से, बीमा करनेवालों तथा बीमा करानेवालों को आवश्यक बातों का ज्ञान हो जाता है; इसके कुछ विषय ये है—बीमे का इतिहास और भारत में प्रचार, जीवन-बीमे के सिद्धान्त और प्रकार, अन्य प्रकार के बीमे, बीमा व्यवसाय की आधुनिक स्थिति, बीमा कम्पनी पसन्द करने में किस किस बात का ध्यान रखना चाहिए। हमारे सामने संवत १९९३ का संस्करण है, उसके अंक अब पुराने पड़ गये हैं; वैसे, पुस्तक बहुत उपयोगी है।

२—बीमा-संदेश। लेखक तथा प्रकाशक—श्री मणिभाई गोपाल जी देसाई; ३९२ ए, विट्ठलभाई पटेल रोड, बम्बई ४; पृष्ठ ७०, मूल्य छः आने। गुजराती पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसमें बीमा-व्यवसाय के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए विशेषतया बीमा-एजेंटों के लिए अनेक ज्ञातव्य बातों का संकलन किया गया है।

बहीखाता और हिसाब की जाँच—व्यापारिक शिक्षा के लिए बहीखाते और हिसाब की जांच का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु हमारे यहाँ अब से कुछ समय पहिले तक इस ज्ञान को प्राप्त करने का एकमात्र साधन दूकानों की बहियों की नक़ल करना समझा जाता था। अब अंगरेजी ढङ्ग से बहीखाते की शिक्षा के लिए बहुत से स्कूलों में व्यवस्था है। हिन्दी में इस विषय की आगे लिखी पुस्तकें ही हमारे देखने में आयी हैं :—

१—नामा लेखा और मुनीबी। लेखक—श्री० कस्तूरमल जी बांठिया बी० काम०; प्र०—बांठिया एन्ड कम्पनी लिमिटेड, कचहरी रोड, अजमेर। बड़ा आकार, रेशमी जिल्द, पृष्ठ ६७१, मूल्य छः रुपये। यह गुमाश्ता मुनीम, और व्यापारी के काम आने

वाली हर प्रकार के जमाखर्च की पद्धतियों को समझाने वाली सब से अच्छी पुस्तक है। लेखक अपने विषय के खूब अनुभवी हैं, और उन्होंने बड़े परिश्रम से हिन्दी भाषा को यह बहुमूल्य भेंट की है। पुस्तक के पहले खंड में मूल सिद्धान्त समझाये गये हैं, दूसरे खंड में भिन्न-भिन्न व्यापारों का हिसाब है; कुल मिलाकर पैंतीस अध्याय हैं। अन्त में सहायक पुस्तकों की सूची और अनुक्रमणिका है। प्रथम संस्करण, सन् १९३५।

२—हिन्दी बहीखाता। लेखक—श्री० कस्तूरमल बांठिया। इस पुस्तक में इस विषय की सैद्धांतिक विवेचना की गयी है। भिन्न-भिन्न प्रकार की वहियों, बैंक तथा चैक, हुँडी चिट्ठी का लेखा, विदेशी हुँडी, आदि पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अन्तिम भाग में तोल माप तथा विदेशी सिक्कों का विषय लिया गया है, जिससे भिन्न-भिन्न स्थानों में होनेवाले व्यापार की 'पड़तल' लगाने में सुविधा हो।

३—हिन्दी बुक कीपिंग। ले०—श्री० चतुरसेन जैन। यह एक अंगरेज़ी पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। इस में अंगरेज़ी ढङ्ग के ही बहीखाते को समझाया गया है। यदि अगला संस्करण अच्छी तरह सम्पादित होकर निकले तो ठीक हो।

४—बहीखाता लेखन पद्धति। ले० और प्र०—श्री० अम्बा-प्रसाद तिवारी, वकील, दौलतगंज, उज्जैन। पृष्ठ संख्या १२+८४+४। मूल्य बारह आने छपा, उसे काटकर आठ आने किया हुआ है। इस पुस्तक में ५ भाग हैं—(१) विषय प्रवेश, (२) सिंगल एन्ट्री अर्थात् सूड़ और मामूली बहीखाते का वर्णन, (३) डबल एन्ट्री या साहूकारी जमाखर्च, (४) अन्य खातों और साहूकारी वहियों का वर्णन, (५) कम्पनी का हिसाब। पुस्तक छोटी होने पर भी बहुत उपयोगी है, विषय समझाने के लिए नक्शे और कोष्टक काफी दिये गये हैं।

५—हिन्दी महाजनी का नया बहीखाता (दो भाग)। ले०—श्री० देवीप्रसाद 'प्रियतम'; प्र०—प्रियतम पुस्तक भंडार एंड को, पिलानी। प्रथम भाग का मूल्य ॥=); पृष्ठ ६४। यह हिसाब किताब, महाजनी पत्रव्यवहार और मारवाड़ी लिपि का कामचलाऊ ज्ञान कराने वाली उपयोगी पुस्तक है। दूसरे भाग का मूल्य २॥); पृष्ठ ४८४। इससे महाजनी और व्यापार सम्बन्धी अच्छी जानकारी होती है। यह मिडल और हाई स्कूलों के लिए पाठ्य ग्रन्थ भी है।

६—बहीखाता प्रवेशिका। ले० और प्र०—श्री० जीवराखनलाल, पेंशनर, डिप्टी इन्सपेक्टर-आफ-स्कूल्स, कटनी। बड़े आकार के ११६ पृष्ठ. मूल्य आठ आने। इससे महाजनी पद्धति से खाताबही, रोकड़ आदि लिखने का ज्ञान होता है। यह खासकर मिडल और प्राइमरी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी है।

७—सरल बहीखाता। पृष्ठ ३५; मूल्य तीन आने। यह उपर्युक्त पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण है, और सम्मेलन की मुनीमी परीक्षा देने वालों की सुविधा के लिए तैयारं किया गया है।

८—बहीखाता। लेखक का नाम नहीं। प्र०—इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग। पृष्ठ ५०+८; मूल्य सात आने। इसमें हिंदुस्तानी ढङ्ग से हिसाब किताब रखने के सरल नियम, खासकर विद्यार्थियों की जरूरत पूरी करने के लिए बताये गये हैं।

९—हिन्दी बहीखाता। ले०—श्री० कस्तूरमल जी बांठिया; प्र०—हरिदास एंड कम्पनी। पृष्ठ ४५४, मूल्य ३।)। हिसाब आदि की देशी प्रणाली के साथ विदेशी मुद्रा और माप पद्धति का परिचय है। अभ्यास के लिये प्रश्न भी दिये गये हैं। अपने विषय की प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है।

१०—सरल बहीखाता। ले०—पंडित अयोध्याप्रसाद शर्मा, विशारद, डिप्टी इन्सपेक्टर, शिक्षा विभाग, बीकानेर। प्र०—महेन्द्र

ब्रदर्स, बीकानेर। पृष्ठ ४६। मूल्य चार आने। प्रथम संस्करण, सन् १९२६। विविध नियमों को उदाहरण देकर समझाया गया है। अभ्यास के लिए प्रश्न भी हैं।

११—बही पथप्रदर्शक। ले०—श्री० बनवारीराम; प्र०—रामस्वरूप लाल, बुकसेलर, चौक, आजमगढ़। मूल्य ।-)। मिडल तथा नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी है।

१२—हिन्दी मुनीबी शिक्षक। ले०—श्री० महावीरप्रसाद गुप्त, मुनीम; प्र०—महादेवप्रसाद गुप्त; मुंगरा बादशाहपुर (जौनपुर)। पृष्ठ ३१६, मूल्य दो रुपये। इसके तीन भाग हैं। देशी हिसाब-किताब और उससे सम्बन्धित अन्य अच्छी जानकारी दी गयी है।

१३—व्यापारगणित और बहीखाता। ले०—ज्योतिर्विद पं० चन्द्रशेखर त्रिपाठी, विशारद। प्र०—भार्गव पुस्तकालय, बनारस। पृष्ठ संख्या ४०३+२०। प्रथम संस्करण, सन् १९३९। मूल्य १।) है। आरम्भ में कई सज्जनों के प्राक्कथन और सम्मतियाँ आदि हैं। पुस्तक में चार अध्याय हैं—(१) व्यवहार गणित की शिक्षाएँ, (२) व्यवहार गणित के गुरु, (३) बहीखाता शिक्षा, (४) विविध विषय। सात परिशिष्ट और बहुत से कोष्टक हैं। पुस्तक उपयोगी और सस्ती है।

१४—बहीखाता लेखन कला, या व्यावसायिक जमाखर्च। ले० और प्र०—पंडित गङ्गादत्त शर्मा, पिंजारवाड़ी नं० ४५; धार। पृष्ठ संख्या २४७, मूल्य २)। इसमें बहीखाते का अंगरेजी बुक कीपिंग, सिंगल एंड डबल एंट्री से मेलकर के, उदाहरणों सहित बतलाया है। लेखक ने यह भी सिद्ध किया है कि डबल एंट्री पद्धति भारतवर्ष की अपनी निकाली हुई है, किसी अन्य देश से मांगी हुई नहीं है। पुस्तक के आरम्भ में तीन अधिकारी विद्वानों की इस पुस्तक के विषय में प्रशंसापूर्ण सम्मतियाँ दी गयी हैं; उनके बाद इन्दौर के डिप्टी प्राइम मिनिस्टर सरदार मा० वि० किबे एम० ए० की प्रस्तावना है। पुस्तक विद्यार्थियों तथा व्यवसाइयों के बड़े काम की है।

१५—बहीखाता अर्थात् साहूकारी हिसाब। ले०—श्री० लाडलीप्रसाद; विक्रेता—रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स, आगरा। बड़े आकार के ४० पृष्ठ; मूल्य साढ़े तीन आने। संयुक्तप्रान्त की पाठशालाओं के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है।

१६— मुनीमात का आदर्श शिक्षक। ले०—श्री० गिरधरलाल शर्मा; प्र०—हितैषी पुस्तकालय, खोरी; (गुडगाँवा)। पृष्ठ १२४, मूल्य आठ आने। देशी वहीखाते की पद्धति का परिचय दिया गया है।

१७—कृषि-लेखा। ले० और प्र०—रायसाहब तेजशंकर कोचक; चौपटिया, लखनऊ; पृष्ठ १५४, मूल्य बारह आने। इसमें बताया गया है कि खेती सम्बन्धी आय-व्यय का हिसाब, आधुनिक बुक-कीपिंग के आधार पर, बहीखाते की पुरानी पद्धति से मेल रखने की कोशिश करते हुए किस प्रकार रखा जा सकता है।

१८—सरकारी जमाखर्च। ले० और प्र०—पंडित गङ्गादत्त शर्मा, धार। पृष्ठ ११०, मूल्य डेढ़ रुपया। इस पुस्तक में सरकारी नियमों के अनुसार हिसाब बनाने तथा जाँचने की रीति सरल भाषा में समझायी गयी है। इसके कुछ विषय आगे लिखे हुए हैं—बजट बनाना, उसके अनुकूल बर्तना, खजाने से लेन-देन, मासिक हिसाब, कैश एक्सट्रेक्ट, सफर खर्च, भत्ता, पेन्शन आदि। पुस्तक उपयोगी है; अपने विषय की अकेली ही है। सार्वजनिक संस्थाएँ कानून द्वारा बाध्य है कि नियमों के अनुसार ही खर्च करें, समय समय पर अपने हिसाब की जांच कराएँ और परीक्षक के बताये दोषों को दूर करें। इस प्रकार हिसाब की जांच के सम्बन्ध में व्यापारियों को आवश्यक नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है।

राजस्व—राजस्व वह धुरी है, जिस पर शासन-चक्र घूमता है। सरकार की फौज, पुलिस, अदालतें आदि सब प्रजा द्वारा प्राप्त पैसे

के बल से चलती हैं, और आर्थिक स्वतन्त्रता राजनैतिक स्वतन्त्रता का एक बड़ा महत्वपूर्ण भाग है। इन बातों से राजस्व की, तथा राजस्व सम्बन्धी साहित्य की, उपयोगिता और महत्व स्पष्ट है। हिन्दी में इस विषय की केवल निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं :—

१—राजस्व। ले०—श्री० भगवानदास केला। प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग। पृष्ठ १५२; मूल्य एक रुपया। इसमें राष्ट्रीय आय-व्यय के सिद्धान्तों पर विचार किया गया है, जैसे नागरिकों से कर क्यों, किस मात्रा में, और किस रीति से लिये जाते हैं; जो सरकारी आय होती है, वह किन किन कार्यों में खर्च की जाती है; जनता द्वारा इस विषय में कहाँ तक और किस प्रकार नियंत्रण रहता है। उदाहरण भारत के ही दिये गये हैं। पहला संस्करण, सन् १६३७।

२—सरल राजस्व। इसके लेखक श्री दयाशंकर जी दुबे हैं; और यह एक तरह उनकी 'अर्थशास्त्र की रूप रेखा' की पूरक है। सादी जिल्द। पृष्ठ संख्या १५२। मूल्य १)। मिलने का पता—साहित्य-निकेतन, दारागंज; प्रयाग। प्रथम संस्करण; सन् १६४१। कहानी और वार्तालाप के रूप में राजस्व की आवश्यक बातें समझायी गयी हैं।

३—राष्ट्रीय आय व्यय शास्त्र। ले०—श्री० प्राणनाथ विद्यालंकार। ज्ञान मंडल कार्यालय, काशी, ने इस अच्छी पुस्तक को छपाकर प्रशंसनीय कार्य किया है। अच्छा होता यदि लेखक महाशय अपने विषय को कुछ और सरल तथा स्पष्ट करके इसे पाठकों के लिए अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न करते। मूल्य ३), पृष्ठ संख्या ५२६+१०।

४—भारतीय राजस्व। ले०—श्री० भगवानदास केला। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, इलाहाबाद। दूसरा संस्करण, सन् १६३६; पृष्ठ २००, मूल्य, चौदह आने। इसमें राजस्व के सिद्धान्तों का कुछ

विचार करते हुए भारत-सरकार, प्रान्तीय सरकारों और स्थानीय संस्थाओं के आय-व्यय की जुदा जुदा मदों की आलोचना की गयी है। आवश्यक सुधार सुझाये गये हैं और आर्थिक स्वराज्य की आवश्यकता दिखायी गयी है। तीसरा संस्करण छपाने की तैयारी की गयी थी, पर अब १९४६-४७ का, शान्ति के समय का, बजट मिलने तक उसे रोक दिया गया है।

५—**भारत का सरकारी ऋण**। प्र०—काशी विद्यापीठ, बनारस। दो भाग, मूल्य ।।।)+।=), पृष्ठ बड़े आकार के ८८+३८। पुस्तक कांग्रेस कार्य समिति की इस विषय की रिपोर्ट का संक्षिप्त अनुवाद है; बहुत विचार और गवेषणा पूर्वक लिखी गयी है। विषय भी महत्व का है, सैकड़ों करोड़ रुपये का प्रश्न है।

६—**हिन्दुस्तान लूटा गया—कब! क्यों? कैसे?**। ले०—श्री० चन्द्रसेन; प्र०—चन्द्र पुस्तकालय, चूना मंडी, नयी देहली। पृष्ट २५६; सजिल्द, मूल्य २।।)। शराब और दूसरी नशीली चीजों की हानियों को दिखाते हुए, बताया गया है कि इनके प्रचार द्वारा किस प्रकार भारत का आर्थिक ह्रास हुआ, और शराबबंदी द्वारा किस प्रकार उसे समृद्धिशाली बनाया जा सकता है।

७—**हिन्दुस्तान की कर संस्थिति**। ले०—श्री० सियाराम दुवे। प्र०—मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। सन् १९२४। पृष्ठ १०७, मूल्य ।।=)। मूल अंगरेज़ी पुस्तक १९१० में लिखी गयी थी, और केवल ब्रिटिश भारत के विषय में थी। अनुवादक महाशय ने इस में दो परिशिष्ट और बढ़ा दिये हैं, पहिले का शीर्षक है, रियासतों में टेक्स के नियम। दूसरे परिशिष्ट में वे परिवर्तन बताये गये हैं, जो १९१४-१८ के योरपीय महायुद्ध के कारण हुए हैं। पुस्तक में भाषा आदि के कई दोष थे; अब तो पुरानी भी हो गयी है।

म्युनिसिपल अर्थशास्त्र और नगर-निर्माण—भारतवर्ष

में म्युनिसिपैलिटियों का क्षेत्र तथा नगर-निर्माण का कार्य क्रमशः बढ़ता जारहा है। नगरों की उन्नति तथा उनके आय व्यय सम्बन्धी सिद्धान्तों के विवेचन वाली पुस्तकें अंगरेजी में अनेक हैं। हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का अभाव बहुत खटकता है; लेखकों को एवं प्रकाशकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

गणितात्मक अर्थशास्त्र—अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों को मालूम करने तथा उन पर विचार करने की जो विविध पद्धतियाँ हैं, उनमें गणित का भी बहुत उपयोग किया जाता है, यहां तक कि इस प्रकार अर्थशास्त्र का एक स्वतन्त्र ही भाग बन गया है, जिसे गणितात्मक अर्थशास्त्र कहते हैं। अंगरेज़ी में इस विषय की बहुतसी पुस्तकें हैं। भारतवर्ष में अभी केवल मैसूर और प्रयाग के विश्वविद्यालयों ने ही इसे अपने पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। हिन्दी में इस विषय के साहित्य की पूर्ति का प्रयत्न होना चाहिए।

अंक शास्त्र—इस शास्त्र के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अंकों का ठीक उपयोग किस प्रकार किया जासकता है। इससे न केवल अर्थशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान में वृद्धि होती है, वरन् अन्य कई शास्त्रों तथा विज्ञानों के विवेचन में भी बड़ी सहायता मिलती है। इस विषय की ये पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं—

१—ब्यावर की भीपण मृत्यु-संख्या; कारण और उपाय। ले०—व्यास तनसुख वैद्य; ब्यावर। पृष्ठ १४+१०+१७५+३८। मूल्य १)। आरम्भ में श्री हरविलास जी शारदा की एक विचारपूर्ण भूमिका है, परन्तु वह है अंगरेज़ी में। श्री वैद्य जी ने अपने कथन का समर्थन सरकारी रिपोर्टों से लिये हुए अंकों से अच्छी तरह किया है; अन्त में जन्म-मृत्यु सम्बन्धी विवरण आदि के ३५ नक्शे दिये हैं। ये नक्शे अंगरेज़ी में ही दिये गये हैं। अच्छा होता, पुस्तक का यह अंश भी हिन्दी में ही होता। यह पुस्तक सन् १६२६ की है। मालूम

नहीं, उसके बाद फिर भी कभी इसके छपने का नम्बर आया था नहीं। जरूरत है कि सभी नगरों या जिलों के सम्बन्ध में ऐसा साहित्य समय-समय पर प्रकाशित होता रहे। इसमें जन्म-मृत्यु के अंकों का अच्छा अध्ययन है, और यह अपने ढङ्ग की निराली पुस्तक है।

२—रिपोर्ट मर्दुमशुमारी, राज मारवाड़ बाबत सन् १९९१ ई०, भाग १, २, ३। प्र०—श्री दरबार राज मारवाड़, १८९२ ई०। भारतवर्ष में हर दसवें वर्ष मनुष्य-गणना होती है, पर वह अंगरेजी में प्रकाशित होती है। यदि हर एक बड़ा प्रान्त और देशी राज्य अपने-अपने क्षेत्र की रिपोर्ट हिन्दी में प्रकाशित कर दिया करे तो जन-साधारण को उससे बहुत उपयोगी जानकारी हो सकती है। राज मारवाड़ की यह रिपोर्ट हमारे देखने में नहीं आयी। उसने इसे छपाकर प्रशंसनीय और अनुकरणीय कार्य किया है। मालूम नहीं, इसके बाद भी वह ऐसी रिपोर्ट प्रकाशित करता रहा है या नहीं।

३—अंक शास्त्र। ले०—श्री०दयाशंकर जी दुबे एम०ए० प्रयाग। श्री दुबे जी ने अंगरेजो में 'एलीमेन्टरी स्टेटिस्टक्स' नाम की पुस्तक लिखी है, जो कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम मे सम्मिलित है। उसी के आधार पर यह हिन्दी की पुस्तक तैयार की गयी है। अभी छपी नहीं है।

मज़दूर समस्या—आजकल संसार में मज़दूरों की समस्या अत्यन्त कठिन हो रही है; मुख्य व्यवसाय-केन्द्रों में कहीं कहीं तो लाखों मज़दूरों को एकही स्थान में काम करना पड़ता है। इस प्रकार उनके रहन सहन, स्वाथ्य तथा शिक्षा आदि के सम्बन्ध में अनेक समस्याएं उपस्थित होती हैं। नागरिक जनता में मज़दूरों की संख्या का अच्छा अनुपात होने से, वे समस्याएं बहुत व्यापक रूप धारण कर लेती है। उन पर विचार करने के लिए अन्य उन्नत भाषाओं में कई मासिक पत्र तथा रिपोर्ट निकलती हैं; अनेक पुस्तकें भी छपती हैं। हिन्दी-

प्रेमियों को हिन्दी के इस विषय के साहित्य की कमी को दूर करना चाहिए। हमारे सामने इस विषय की ये पुस्तकें हैं:—

१—मालिक और मजदूर अथवा शिल्प विधान। ले०—श्री० गौरीशंकर शुक्ल, 'पथिक'। प्र०—कलकत्ता पुस्तक-भंडार, कलकत्ता। पृष्ठ १०२, मूल्य ।=)। इसमें मज़दूरों की अवस्था, स्त्री श्रमजीवियों की समस्या, भारतवर्ष के कारखाने के क़ानून, मज़दूरी, कारखानों की अवस्था, मजदूरों के रहने के स्थान, मजदूरों की शारीरिक अवस्था मज़दूरों का संगठन, हड़ताल आदि विषयों पर सरल सुबोध भाषा में अच्छा विचार किया है।

२—एक धर्मयुद्ध। ले०—श्री० महादेव देसाई; प्र०—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; पृष्ठ १२७, मूल्य आठ आने। सन् १९१८ में अहमदाबाद के मिल-मालिकों तथा मज़दूरों में जो लड़ाई हुई थी, उसमें सम्मानपूर्ण समझौते के लिए खुद म० गांधी ने कोशिश और उपवास किया था। उसका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

३—श्रमोपजीवी समवाय। ले०—श्री० राधामोहन गोकल जी; प्र०—कर्मचारी मंडल, कलकत्ता। पृष्ठ १८, मूल्य ढाई आने। ट्रेड यूनियन के संगठन का परिचय।

४—भारतीय तन्तु मिल मजदूर। ले०—कामरेड रमन्ना शास्त्री। प्र०—सोशलिस्ट लिटरेचर पब्लिशिंग कम्पनी, आगरा। पृष्ठ १२४; मूल्य, आठ आने। इस पुस्तक में भारत की आदिम कालीन तंतु विद्या (कताई-बुनाई) की खोज करके मज़दूर आन्दोलन की सन् १९२४ तक की प्रगति का इतिहास बताया गया है। विदेशी व्यवसाय का भारतीय व्यवसाय पर प्रभाव, मज़दूरों की हड़तालें; उनका संगठन, लेबर यूनियन, मज़दूरों से सम्बन्धित कानून, मुनाफा, अतिरिक्त श्रम, पूँजीवादी व्यवस्था, और यहाँ के मज़दूरों की हालत, आदि बातों के सम्यक् विवरण से यह पुस्तक भारतीय मजदूर आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास है।

५—मई दिवस का इतिहास। ले० और प्र०—उपर्युक्त। मूल्य चार आने। संसार के मजदूर आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास।

समाजवाद—आधुनिक युग में श्रमजीवियों की शक्ति क्रमशः बढ़ती जा रही है। वे धनिक वर्ग तथा शासकों पर कहीं प्रत्यक्ष और कहीं अप्रत्यक्ष विजय प्राप्त करते जा रहे हैं। इससे धनोत्पादन और धन वितरण पद्धति में पहले की अपेक्षा बड़ा अन्तर उपस्थित होता जा रहा है। समाज का ढांचा ही बदल रहा है। हिन्दी में इस विषय का साहित्य धीरे-धीरे बढ़ रहा है—

१—**समाजवाद**। ले०—श्री० सम्पूर्णानन्द। संशोधित और परिवर्द्धित तीसरा संस्करण; मूल्य दो रुपये। मिलने का पता—काशी विद्यापीठ पुस्तक भंडार, बनारस छावनी। इसमें समाजवाद पर वैज्ञानिक ढङ्ग से लिखा गया है। धर्म, सम्पत्ति, वर्ग-संघर्ष, साम्राज्यशाही, पूंजीवाद पर समाजवादी दृष्टिकोण से विचार किया गया है। पुस्तक बहुत उत्तम और प्रामाणिक मानी जाती है। इस पर, हिन्दी साहित्य सम्मेलन से १२००) का 'मंगलाप्रसाद' और ५००) 'मुरारका' पारितोषिक मिल चुका है।

२—**समाजवाद की रूपरेखा**। ले०—श्री० अमरनारायण अग्रवाल; प्र०—किताब महल, प्रयाग; मूल्य १॥) पृष्ठ ३४५। इसमें समाजवाद के विकास का सिंहावलोकन करते हुए उसके सिद्धान्त तथा प्रमुख अंगों पर अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के छठे भाग—'वर्तमान और भविष्य'—में 'संसार की अन्य राजनैतिक विचार-धाराओं का विश्लेषण और तुलनात्मक विवेचन है। अंतिम भाग में भारत की स्थिति तथा यहाँ की समाजवादी विचारधाराओं का अध्ययन है।

३—**भारतीय समाजवाद की रूपरेखा**। ले०—श्री० स्वामी सत्यदेव परिव्राजक। मूल्य तीन आने। मिलने का पताः—नागरी

प्रचारणी सभा, काशी। इसमें पश्चिमी समाजवाद के दोष दिखलाकर आर्य संस्कृति के मूल स्तम्भ भारतीय समाजवाद पर लिखा गया है।

४—समाजवाद : पूंजीवाद। ले०—श्री० शोभालाल गुप्त; प्र०—नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर। पृष्ठ संख्या २००, मूल्य २) दूसरा संस्करण, सन् १९४५। यह सुप्रसिद्ध लेखक बर्नार्डशा की पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। इसके पहले खंड से समाजवाद का, और दूसरे खंड से पूँजीवाद का ज्ञान होता है। तीसरा खंड है—बदलें कैसे ? इसमें आगे लिखे विषयों का विचार किया गया है—उत्पत्ति के साधनों का राष्ट्रीयकरण; क्रान्ति बनाम वैध पद्धति; कितना समय लगेगा ? रूसी साम्यवाद; फैसिस्टवाद। विषय को स्पष्ट करने के लिए स्थान स्थान पर उदाहरण दिये गये हैं।

५—आर्थिक संगठन (समाजवाद या पूंजीवाद)। ले० और प्र०—श्री० ठाकुरप्रसाद सकसेना, चमिनिगञ्ज, लखनऊ। बड़े आकार के १५८ पृष्ठ, मूल्य बारह आने। इसमें लेखक ने पूंजीवाद के दोष दिखाते हुए यह बताया है कि संसार की मौजूदा स्थिति में समाज का संगठन समाजवादी सिद्धान्तों के अनुसार अच्छी तरह हो सकता है।

६—द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अर्थात् समाजवाद की फिलासफी। ले०—श्री० हीरालाल पालित दर्शनशास्त्री; प्र०—केशरी कार्यालय, २९ कचहरी रोड, गया। पृष्ठ संख्या २०+२३८; मूल्य १।)। कार्ल मार्क्स ने विश्व और समाज को बदलने के लिए जो क्रान्तिकारी कार्य-प्रणाली बतायी है, उसी का इस पुस्तक में विवेचन है। लेखक ने मार्क्सवाद पर दार्शनिक दृष्टि से भी विचार किया है। हिन्दी में अपने ढङ्ग की यह सम्भवतः अकेली ही पुस्तक है। पुस्तक की भाषा कुछ कठिन है।

७—मार्क्स का दर्शन। ले०—श्री० भूपेन्द्रनाथ सन्याल। प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ १३५, मूल्य, दो रुपये। अपने विषय की बहुत अच्छी पुस्तक है। इसमें मार्क्स के दर्शन की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि का ब्योरेवार परिचय दिया गया है। इससे मार्क्स की विचारधारा को समझने में बहुत सुविधा हो जाती है। पुस्तक के अन्त में पारिभाषिक शब्दों की सूची देने से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।

८—मार्क्सवाद। ले०—श्री० यशपाल; प्र०—विप्लव कार्यालय लखनऊ। पृष्ठ संख्या २५६, सजिल्द, मूल्य १॥); इसमें कार्लमार्क्स द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक समाजशास्त्र के सिद्धान्तों की ऐतिहासिक व्याख्या की गयी है। समाज की वर्तमान अव्यवस्था को दूर करने का दावा करनेवाले अन्य वादों—नाजीवाद, फैसिस्टवाद, प्रजातंत्री समाजवाद, कम्यूनिज्म, गांधीवाद, प्रजातंत्रवाद, अराजवाद—का भी परिचय दिया गया है, और उनकी समाजवाद से तुलना की गयी है। पुस्तक का उद्देश्य 'गहरे विचार और अध्ययन की प्रवृत्ति पैदा करना है।' लेखन-शैली अच्छी है, और विषय को स्पष्ट करनेवाली है।

९—लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त। ले०—रूस का अधिनायक स्टेलिन। मूल्य, सवा रुपया। प्र०—जन-प्रकाशन गृह, राजभवन, सैंडहर्स्ट रोड, बम्बई ४। इससे वर्तमान संसार और उसकी गतिविधि पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण से विचार करने में सहायता मिलती है।

१०—श्रेणी, दल और क्रान्ति। ले०—सौम्येन्द्रनाथ टाकुर, अनु०—हीरालाल प्रसाद; प्र०—गणवाणी पब्लिशिंग हाउस, चित्तरञ्जन एवेन्यू, कलकत्ता। किसान, मजदूर, जागीरदार, कारखानेदार आदि समाज की विभिन्न श्रेणियों के सम्बन्ध में विवेचनात्मक विचार प्रकट किये गये हैं और कम्यूनिज्म का परिचय दिया गया है।

११—परिवार, व्यक्ति, सम्पत्ति और राजसत्ता की उत्पत्ति। ले०—सुप्रसिद्ध श्री० फ्रेडरिक एंगेल्स। प्र०—जन प्रकाशन गृह,

राजभवन, सैंडर्स्टरोड, बम्बई ४। मूल्य एक रुपया। जंगल और बर्बर युग से सभ्य युग तथा उसके वर्ग विरोधों की उत्पत्ति तक गम्भीर और विचारपूर्ण विवेचन।

१२—**समाज का विकास**। मूल लेखक—लियान्तिएव, प्र०—जन प्रकाशन-गृह, सेन्डर्स्ट रोड, बम्बई ४; पृष्ठ ३०, मूल्य ≈)। मूल लेखक की पुस्तक 'मार्क्सवादी अर्थशास्त्र' के एक अध्याय का अनुवाद है, जिसमें मानव समाज के विकास-क्रम और पूँजीवाद की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है।

१३—**रोटी का सवाल**। प्रिंस क्राप्टकिन की अँगरेज़ी पुस्तक के, भारतीय दृष्टि से, आवश्यक भागों का अनुवाद। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली। पृष्ठ २७३। मूल्य १)। प्रिंस क्राप्टकिन ने साम्यवाद का खूब चिन्तन और मनन किया है। उनकी लेखनी में ओज है, विचारों में प्रौढ़ता है। वह साम्यवाद—सब के सुख—को प्रत्यक्ष आते हुए देखते हैं, और उसके स्वागत की तैयारी के लिए सब से अनुरोध करते हैं। हिन्दी अनुवादक हैं, श्री० गोपीकृष्ण विजयवर्गीय। अनुवाद अच्छा है।

१४—**साम्यवाद**। ले०—श्री० रामचन्द्र वर्मा। इस पुस्तक में भिन्न भिन्न देशों के विविध प्रकार के साम्यवादों की उत्पत्ति और विकास के इतिहास के साथ साथ यह भी बतलाया गया है कि समानाधिकार, राज्य की कार्य योजना, व्यक्ति-स्वातन्त्र्य, कुटुम्ब, धर्म, साहित्य, सेना, और पर-राष्ट्रनीति के विषय में साम्यवादियों के क्या सिद्धान्त हैं। पुस्तक के अन्त में बोल्शेविज्म तथा भारतीय परिस्थिति पर विचार किया गया है। पुस्तक का विषय यथा-सम्भव सरल और स्पष्ट किया गया है। बहुत अच्छी रचना है। मूल्य २॥), पृष्ठ ४६२, सं० १९७३।

१५—**साम्य तत्त्व**। अनु०—श्री चन्द्रिकाप्रसाद वाथम। यह स्व० बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की बंगला पुस्तक का अनुवाद है।

बंकिम बाबू की भाषा के विषय में कुछ कहना व्यर्थ है। आपने कठिन विषय को भी अपनी मनोरञ्जक भाषा द्वारा सरल और रोचक बना दिया है। मूल्य दस आने; प्र०—सरस्वती साहित्य मंदिर, लखनऊ। पुस्तक छोटी होने पर भी बहुत उपयोगी है।

१६—**वैज्ञानिक साम्यवाद**। अनु० और प्र०—श्री रामचन्द्र वर्मा, काशी। यह अंगरेज़ी के एक अच्छे विचारपूर्ण निबन्ध का अनुवाद है। इसमें साम्यवाद की सिद्धांत-रूप से विवेचना की गयी है। इसके कुछ विषय ये हैं:—क्रान्ति का काम, पूँजीदारी का प्रश्न, शिल्पीय साम्यवाद। मूल्य ≥)

१७—**रूसी साम्यवाद**। ले०—श्री० गौरीशंकर मिश्र; प्र०—भारतवासी प्रेस, प्रयाग। मूल्य चार आने। इसमें रूसी साम्यवाद का जन्म, उसका रूप, उसकी पोल आदि का वर्णन है, जो अधिकतर एकांगी है।

१८—**साम्यवाद के सिद्धान्त**। ले०—श्री० सत्यभक्त, प्र०—तरुण भारत-ग्रन्थावली, गांधीनगर, कानपुर; मूल्य ||), पृष्ठ ७८; सं० १९९१। यह पुस्तक अमरीकन लेखक मार्क फिशर की पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। इसमें पूँजीवाद तथा साम्यवाद के गुण-दोषों का परिचय देते हुए यह मत प्रकट किया गया है कि आधुनिक उत्पादक प्रणाली के अधिक अनुकूल होने के कारण, साम्यवाद मानव-समाज के लिए विशेषरूप से हितकर है।

१९—**साम्यवाद क्या है?**। मूल लेखक श्री० फिलीप एकवौडन, अनुवादक—श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र; प्र०—नवजीवन पुस्तक-कार्यालय, १६४ हरिसन रोड, कलकत्ता; मूल्य ≥); पृष्ठ २५, सन् १९३३। समाजवाद का प्रारम्भिक परिचय दिया गया है।

२०—**साम्यवाद ही क्यों?**। ले०—श्री० राहुल सांकृत्यायन मूल्य ||); पृष्ठ ९४। छपाई आदि आकर्षक। इसमें पूँजीवाद की

भयंकरता, साम्यवाद का जन्म, और साम्यवाद में सामाजिक, आर्थिक आदि विविध प्रश्नों के हल, आदि पर अच्छा और स्वतंत्र विचार किया गया है। भाषा सरल, और भाव स्पष्ट हैं।

२१—**साम्यवाद का संदेश**। ले०—श्री० सत्यभक्त; प्र०—पंडित काशीनाथ वाजपेयी, प्रयाग। पृष्ठ १०५; मूल्य आठ आने। पुस्तक का आधा भाग सुप्रसिद्ध योरपियन विद्वान प्रिंस क्राप्टकिन का 'नवयुवकों से दो बातें' शीर्षक निबन्ध है। पुस्तक के शेष भाग में समाजवाद और बोलशेविज्म का अर्थ स्पष्ट किया गया है। भाषा सरल और सुबोध है।

२२—**साम्यवाद का बिगुल**। प्र०—काशी पुस्तक भंडार, बनारस। पृष्ठ १३५, मूल्य एक रुपया। इसमें सर्वश्री सम्पूर्णानन्द, नरेन्द्रदेव, श्रीप्रकाश और जयप्रकाश नारायण आदि समाजवादी नेताओं के लेखों का संग्रह है। अन्य वादों से तुलना करके साम्यवाद का महत्व दिखाया गया है। कुछ लेखों के शीर्षक हैं—स्वाधीनता-संग्राम और समाजवादी, पूँजीवाद के ह्रास का युग, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक स्पर्द्धा, रामराज्य और समाजवादी।

२३—**साम्यवाद की चिंगारी**। प्रो० हेरल्ड लस्की की 'कम्युनिज्म' पुस्तक का अनुवाद। अनु०—जितेन्द्रमणि शर्मा; प्र०—साहित्य मंडल, दिल्ली। सजिल्द, पृष्ठ २३४, मूल्य तीन रुपये। इसमें कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों का विश्लेषण करके उनपर विचार किया गया है।

२४—**बोल्शेविज़्म**। ले०—श्री० विनायक सीताराम सरवटे। इस में रूस का आधुनिक इतिहास देकर यह बतलाया गया है कि बोल्शेविज्म की उत्पत्ति कैसे हुई, इसका मुख्य सिद्धान्त क्या है, रूस की राज्य-व्यवस्था और समाज-व्यवस्था कैसी है। अन्त में बोल्शेविक कार्यक्रम और औद्योगिक व्यवस्था पर विचार करके इस प्रश्न पर भी प्रकाश डाला गया है कि क्या बोल्शेविज्म भारत में आवेगा। उपोद्घात

श्री० डाक्टर भगवानदासजी, काशी, का लिखा हुआ है। पृष्ठ १८५, मूल्य १।=); सन् १९२१।

२५—कम्यूनिज्म क्या है। ले०—श्री० राधामोहन गोकुल। मिलने का पता—सतयुग आश्रम, बहादुरगंज, इलाहाबाद। इसमें यह बताया गया है कि कम्यूनिस्ट विचारों का, जीवन के प्रत्येक अंग और समाज की हर एक संस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके कुछ विषय ये हैं:—शासन तृष्णा, असि नीति, धन, राष्ट्रीयता, सेना, न्याय, शिक्षा, धर्म, और कृषि।

२६—फासिज्म। ले०—श्री०रघुनाथसिंह; प्र०—काशी पुस्तक भण्डार, चौक, बनारस; पृष्ठ १२६, मूल्य १)। इसमें फासिज्म सम्बन्धी साहित्य के आधार पर उसका सैद्धान्तिक प्रतिपादन किया गया है।

२७—फैसिज्म की आत्मा। ले०—टी० एन० कुचुन्नी विमल; प्रकाशक—साहित्य-सेवक-संघ; छपरा; पृष्ठ ५५, मूल्य।=)। फैसिज्म के जन्म, विकास और सिद्धान्तों पर प्रकाश डालने वाली पुस्तिका।

२८—निरतिवाद। ले०—श्री० दरबारीलाल सत्यभक्त; प्र०—सत्यसंदेश कार्यालय, वर्धा, मूल्य।=), बड़े आकार के ६० पृष्ठ। किसी भी सामाजिक सिद्धान्तों की 'अति' का त्याग कर भारतीय स्थिति के अनुकूल, बीच के व्यावहारिक मार्ग का 'निरतिवाद' के नाम से विवेचन किया गया है। लेखक के कथनानुसार यह समाजवाद की आत्मा का भारतीय अवतार है। पुस्तक में इक्कीस संदेश, प्रश्नोत्तर के रूप में दिये गये हैं।

२९—गांधीवाद : समाजवाद। सम्पादक—काका कालेलकर; प्रस्तावना-लेखक—बाबू राजेन्द्रप्रसाद। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। मूल्य, बारह आने। इसमें सर्वश्री किशोरलाल मशरूवाला, सम्पूर्णानन्द, डा० पट्टाभिसीतारामैया, एम० एन० राय, हरिभाऊ उपाध्याय आदि विद्वानों के १५ लेख हैं। अन्तिम लेख

उपसंहार, सम्पादक जी की ओर से है। उनका कथन है कि आज हमें दोनों विचारधाराओं के समन्वय की आशा नहीं कर सकते, आज तो हम दोनों के बीच एक समझौते की अपेक्षा करते हैं।

३०—महात्मा गांधी का समाजवाद। डा० बी० पट्टाभिसीतारामैया; अनु०—श्री० जगपत चतुर्वेदी; प्र०—मातृभाषा मन्दिर, दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ २०८, मूल्य पौने दो रुपये। इसमें बताया गया है कि भारत के लिए विदेशों की समाजवादी विचारधारा के बजाय म० गांधी की सुझायी हुई प्रणाली ही विशेष उपयोगी है। म० गांधी के दृष्टिकोण को अच्छी तरह समझाया गया है।

३१—गांधी बनाम साम्यवाद। ले०—श्री० सदानन्द भारती, मेहता एंड ब्रादर्स, सूत टोला, बनारस। सं० १९९१। मूल्य एक रुपया बारह आने।

३२—गांधीयुग का अन्त। ले०—श्री० देवीदयाल दुबे। प्र०—अग्रगामी साहित्य मंडल, इटावा। सन् १९४०, मूल्य एक रुपया।

३३—सौ वर्ष आगे भारत। ले०—श्री० चन्दीप्रसाद बी० ए०; प्र०—साम्यवादी साहित्य प्रचारक मंडल, नयागंज, कानपुर। पृष्ठ १५८, मूल्य एक रुपया। समाजवादी शासनकाल में विज्ञान, कला, अर्थ, आचार तथा विभिन्न व्यापार सम्बन्धी कार्य किस प्रकार होंगे, ये सब बातें बतलायी गयी हैं। शैली अच्छी नहीं। विषयों का क्रम और उसका निरूपण भी कुछ बेसिलसिले-सा मालूम होता है।

३४—समाजवाद, क्रान्ति और कांग्रेस। सम्पादक—आचार्य नरेन्द्रदेव; प्र०—युक्तप्रान्तीय कांग्रेस समाजवादी पार्टी, लखनऊ। मूल्य छः आने। इसमें कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के दृष्टिकोण से समाजवाद, क्रान्ति, श्रेणी-संघर्ष, संयुक्त मोर्चा, कांग्रेस, भारतीय स्वराज्य का रूप और हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन आदि कितनी ही

समस्याओं पर विचार किया गया है। इसके कुछ लेख पुराने पड़ गये हैं, तो भी इसमें अच्छी विचार-सामग्री है।

३५— **बाइसवीं सदी**। ले०—श्री राहुल सांकृतायन। प्र०—किताबमहल, इलाहाबाद। पृष्ठ ११६, मूल्य सवा रुपया। लेखक ने रूस आदि के आर्थिक विचारों की प्रगति का विचार करके, विशेष रूप से भारत की भावी दशा का अनुमान किया है; कल्पना तथा वर्णन-शैली रोचक हैं। सार्वभौम एकता, विश्व की शान्ति, या आर्थिक समस्याओं का अन्त होकर साम्यावस्था का आगमन किसे अच्छा न लगेगा!

३६— **गांव के गरीबों से**। ले०—लेनिन; अनु० राहुल सांकृतायन; प्र०—जन-प्रकाशन गृह, सेंढर्स्ट रोड, बम्बई ४। पृष्ठ ६०, मूल्य, दस आने। यह सन् १९०३ में लिखी गयी पुस्तक का अनुवाद है, जिसमें ज़ारशाही द्वारा दलित रूसी किसानों को कम्यूनिस्टों के ध्येय समझाये गये हैं।

३७—**भागो नहीं, दुनिया को बदलो**। ले०—श्री० राहुल सांकृतायन; प्र०—किताबमहल, इलाहाबाद। पृष्ठ ३३६, सजिल्द; मूल्य चार रुपये। इसमें गाँव वालों के लिए बातचीत के रूप में, उनकी स्वाभाविक भाषा में, समाजशास्त्र और राजनीति जैसे कठिन विषयों को आसान बनाने की कोशिश की गयी है। अन्त में इस नर्क बनी हुई दुनिया में निराश न होकर, उसे साम्यवादी ढङ्ग से बदलने का संदेश दिया गया है।

३८— **इन्कलाब जिन्दाबाद**। ले०—श्री० सत्यनारायण शर्मा; प्र०—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, हरिसन रोड, कलकत्ता; पृष्ठ १६२, सजिल्द, मूल्य २)। सोलह लेखों में यह समझाया गया है कि क्रांति के द्वारा समाजवाद की स्थापना करके ही दुनिया में अमन चैन कायम की जा सकती है।

अर्थशास्त्र सम्बन्धी कोश—अर्थशास्त्र सम्बन्धी विविध प्रकार के साहित्य की रचना के लिए परिभाषिक शब्दों के कोष की बड़ी ज़रूरत होती है। इस समय केवल निम्नलिखित पुस्तकें हमारे सामने हैं:—

१—**व्यापारिक कोष**। ले०—पं० व्रजवल्लभ मिश्र, अलीगढ़; पृष्ठ ३४३, मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें पाँच अध्याय हैं:—(क) व्यापारिक साधारण शब्द और वाक्य-खंड, (ख) व्यापार धन्धों की शब्दावली, (ग) शिल्प और औद्योगिक शब्दावली, (घ) वाणिज्य द्रव्य और सौदागरी माल की शब्दावली, (च) व्यापारिक शब्दों के संक्षेप। यह कोष बड़े परिश्रम से तैयार किया गया मालूम होता है; फिर भी सन् १६२८ से इसका नया संस्करण नहीं हुआ। अब यह पुस्तक नहीं मिलती।

२—**अर्थशास्त्र शब्दावली**। सम्पादक—सर्वश्री० दयाशंकर दुबे, गदाधरप्रसाद अम्बष्ट, और भगवानदास केला। पहले यह निश्चय किया गया था कि अर्थशास्त्र का कोष बृहद् रूप में तैयार किया जाय। पहले भाग में अंगरेज़ी के शब्द, उनकी अंगरेज़ी की परिभाषा, हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी और उर्दू के पर्यायवाची शब्द, दिये जायँ। दूसरे भाग में हिन्दी के अर्थशास्त्र सम्बन्धी शब्द हों, उनके आगे हिन्दी परिभाषा और फिर अंगरेज़ी पर्यायवाची शब्द रहें। इसी लक्ष्य से बहुत कुछ कार्य किया गया। लेकिन बहुत खर्च का काम होने से इसके छपाने की व्यवस्था न हो पायी। आखिर, सन् १६३२ में भारतीय ग्रन्थमाला ने अर्थशास्त्र के अंगरेज़ी के परिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द मात्र के रूप में इसे प्रकाशित किया। इसका सन् १६४१ में संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ; पृष्ठ २००, मूल्य १)।

छोटी पुस्तक माला—समय समय पर कुछ छोटी

छोटी पुस्तिकाएं भी निकलती रहती हैं। ये या तो किसी बड़ी पुस्तक का कोई भाग होती हैं, या किसी मासिक आदि पत्र में प्रकाशित लेख या लेखमाला का पुस्तकाकार संग्रह होती हैं, अथवा लेखक की स्वतन्त्र छोटी रचना होती हैं। इनका विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। केवल एक प्रयत्न का जिक्र करना है। सन् १९१८ ई० में श्री० प्रोफेसर बालकृष्णपति भीमपुरे एम० ए०, ग्वालियर, ने हिन्दी में अर्थ-शास्त्र की दुअन्नी पुस्तक माला का कार्य आरम्भ किया था। इसके चार ट्रैक्ट देखने में आये हैं :—(क) उत्पादकों का बटोतरा, (ख) रुपया पैसा धन, (ग) सहकारिता, और (घ) प्रपण अर्थात् विनिमय। इधर बहुत वर्षों से यह काम स्थगित मालूम होता है।

अर्थशास्त्र सम्बन्धी मासिक पत्रिकाएँ आदि—समय-समय पर अर्थशास्त्र सम्बन्धी ऐसे प्रश्न उपस्थित होते हैं, जिन पर नियमित रूप से विचार होने के लिए अनुकूल स्थान उन्हीं पत्र पत्रिकाओं में मिल सकता है, जो एकमात्र अथवा प्रधानतया अर्थशास्त्र सम्बन्धी हों। यों तो कभी कभी अन्य साधारण पत्रों में भी इस विषय के कुछ लेख निकलते रहते हैं, परन्तु उनसे पाठकों को अर्थशास्त्र का यथेष्ट ज्ञान नहीं होता। कुछ विशेष रूप से अर्थशास्त्र विषय के लेख रखनेवाले, हिन्दी के दो मासिक पत्र हमारे देखने में आये :—(१) समाज, और (२) स्वार्थ। 'समाज' के तो हमें पूरे एक वर्ष भी दर्शन न हुए। ज्ञान मण्डल, काशी, का 'स्वार्थ' भी ग्राहकों की कमी के कारण, बन्द हो गया। फिर किसी ने इस अभाव की पूर्ति का खास प्रयत्न न किया। क्या हिन्दी-प्रेमी संसार अर्थशास्त्र सम्बन्धी एक भी मासिक पत्र नहीं चला सकता ?

हम वर्तमान दशा में उन पत्र पत्रिकाओं के बहुत कृतज्ञ हैं, जो कभी कभी अपने विशेष अंक आदि निकाल कर एकमात्र अथवा अधिकांश में आर्थिक विषयों पर अच्छा प्रकाश डालने का प्रयत्न करते

रहते हैं। उदाहरण के लिए 'भूगोल' (इलाहाबाद) ने आसाम, स्पेन, चीन, ईरान, टर्की, अफगानिस्तान और संयुक्तप्रान्त आदि के सम्बन्ध में विशेषांक निकाल कर इन स्थानों सम्बन्धी आर्थिक बातों का भी विचार किया है। इस कार्यालय से 'देश दर्शन' नाम की एक माला छः वर्ष से प्रकाशित हो रही है इसमें हर मास एक देश के बारे में यथा सम्भव अच्छी जानकारी दी जाती है।

शिक्षा-संस्थाओं में अर्थशास्त्र—साधारण तौर से प्रकाशक अर्थशास्त्र आदि की अच्छी पुस्तकें बहुत कम प्रकाशित करते हैं। इसका कारण स्पष्ट है; इन पुस्तकों की मांग कम है। अभी यह विषय संयुक्तप्रांत, पंजाब आदि के गुरुकुल, तथा राष्ट्रीय विद्यापीठों, और संयुक्तप्रान्त के इंटर कालिजों में ही हिन्दी माध्यम द्वारा पढ़ाया जाता है। विद्यार्थी इंटर कालिजों में ही अधिक होते हैं, उनमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी ऐच्छिक रूप से है, और उनमें से बहुतसों में यह विषय अंगरेज़ी में पढ़ाया जाता है। आवश्यकता है कि इस प्रांत में इंटर में शिक्षा का माध्यम अनिवार्य रूप से हिन्दी कर दिया जाय।

कुछ सज्जन इस विषय को ऊँची क्लासों में पढ़ाये जाने के बारे में यह आपत्ति किया करते है कि इस विषय की काफी पुस्तकें नहीं मिलतीं। इस सम्बन्ध में शिक्षाधिकारियों को चाहिए कि शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखने का निश्चय करके वे प्रत्येक श्रेणी के लिए पाठ्य-क्रम प्रकाशित करदें। फिर, विद्वान लेखक यथेष्ट साहित्य तैयार करने में अवश्य लग जांयगे, और साल दो साल में पाठ्य-क्रम के अनुसार पुस्तकें तैयार हो जायँगी। तब प्रकाशक भी उनके प्रकाशन में न हिचकेंगे। उन्हें अपने माल की खपत का, और कुछ मुनाफे का भरोसा रहेगा, तो वे कुछ जोखम भी उठा लेंगे। इस प्रकार पुस्तकों के अभाव की शिकायत शीघ्र ही दूर हो जायगी। प्रत्यक्ष प्रमाण सामने है। जब से इंटर में शिक्षा का माध्यम, ऐच्छिक रूप से ही सही,

हिन्दी हो गया; तब से अर्थशास्त्र पर कई सुन्दर पुस्तकें निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रकाशित हो चुकी हैं। इससे साफ जाहिर है कि यदि विश्वविद्यालयों के अधिकारी बी० ए० और एम० ए० की शिक्षा का माध्यम हिन्दी करदें तो इन क्लासों के लिए भी आवश्यक पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होने लगेंगी; और पुस्तकों की कमी के कारण काम नहीं रुकेगा।

उपसंहार—देश की आर्थिक उन्नति कोरी भावुकता या इधर-उधर की बातों से नहीं हो सकती। जनता के सामने तथ्य बातें और अंक उपस्थित करके उन्हें प्रामाणिक ज्ञान कराना चाहिए, जिससे सुशिक्षित और समझदार राष्ट्र-सेवकों की संख्या बढ़ती जाय। ज्ञान-शून्य आदमी की सेवा से रोगी को कभी कभी लाभ की जगह हानि की सम्भावना होती है। यह बात देश के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। आशा है, हमारे साहित्य-नेता इस सचाई को ध्यान में रखते हुए, तन मन धन से अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य की रचना, प्रकाशन और प्रचार का समुचित प्रयत्न करेंगे।

दूसरा भाग

राजनीति-साहित्य

कहावत प्रसिद्ध है कि राजनीति राष्ट्रों का जीवन है। यदि किसी बिखरे हुए जन-समुदाय को सुसंगठित राष्ट्र बनना है, अथवा किसी राष्ट्र को अपना 'राष्ट्र' पद बनाये रखना है तो उसके लिए राजनीति और राजनैतिक साहित्य का अध्ययन बहुत ही जरूरी है। राजनैतिक साहित्य की उपेक्षा करनेवाला देश अपने उत्थान की आशा नहीं कर सकता। अपने देश की उन्नति चाहनेवाले हरेक आदमी को चाहिए कि वह राजनैतिक ज्ञान प्राप्त करे, और दूसरों में इसका प्रचार करे। पराधीन देशों में इस बात की और भी अधिक आवश्यकता है। ऐसा करने से उन्हें आजादी हासिल करने में अच्छी मदद मिलेगी।

हमारी प्राचीन संस्कृति संस्कृत साहित्य में प्रगट हुई है। संस्कृत के महाकाव्यों—रामायण और महाभारत आदि—के आधार पर हिन्दी में अनेक रचनाएं तैयार हुई हैं। और, महाभारत का शान्ति-पर्व तो राजनैतिक विचार, उपदेश और आदर्शों का सुन्दर भण्डार है; उनकी व्याख्या और स्पष्टीकरण में अनेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। इसी तरह वेद, पुराण, स्मृति आदि में भी बहुत राजनैतिक ज्ञान भरा है; हाँ, वह दूसरे ज्ञान के साथ मिला हुआ है। वेदों के राजनैतिक आदर्श, राज्यपद्धति, राष्ट्र-निर्माण सम्बन्धी विचारोंवाली कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई तथा हो रही हैं; पुराणों के आधार पर भी कितने ही उपन्यास, नाटक, कथा, कहानी और जीवनचरित्रों आदि की रचना होती जा रही है। विदुर नीति, चाणक्य नीति, शुक्र नीति, भर्तृ नीति शतक, किरातार्जुनीय; पंचतन्त्र, मुद्रा राक्षस आदि के

कई-कई अनुवाद हो चुके हैं। कौटलीय अर्थशास्त्र के बारे में पहले भाग में लिखा जा चुका है, इसके आधार पर जो राजनैतिक साहित्य हिन्दी में तैयार हुआ है, उसकी चर्चा आगे की जायगी।

हमारा शुरू का हिन्दी साहित्य पद्य में है, और उसमें राजनैतिक विचारों का खासा समावेश है। चन्द्रबरदाई हिन्दी के आदि महाकवि कहे जाते हैं, और इन्होंने अपने पृथ्वीराज रासो में उस समय के इतिहास के साथ राजा और मन्त्रियों के कार्य, सैन्य-सञ्चालन, व्यूह रचना; आदि बातों पर अच्छी रोशनी डाली है। इनके बाद बहुत से सुकवियों ने समय समय पर अपनी प्रभावशाली वाणी से समाज को राजनैतिक ज्ञान देने की कोशिश की है। मध्यकाल में यद्यपि अधिकता भक्ति-प्रधान रचनाओं की रही है; राजनैतिक विषयों की चर्चा का भी लोप नहीं हुआ। उदाहरण के लिए रामचरितमानस (रामायण) में भक्ति-भाव के साथ-साथ राजनैतिक विचार भी दिये गये हैं।

महाकवि भूषण ने पाठकों में स्वाभिमान, वीरता और देश-प्रेम के भाव भरने का अच्छा प्रयत्न किया है। इनके शिवराज-भूषण, शिवाबावनी तथा छत्रसाल-दशक ग्रन्थों ने गिरी हुई हिन्दू जाति में नवजीवन का सञ्चार किया है। महाकवि केशवदास जी ने रामचन्द्रिका में श्रीरामचन्द्रजी सम्बन्धी राजनैतिक घटनाओं को भक्ति के आवरण से हटाकर विशुद्ध रूप में दर्शाया है। विभीषण ने विरोधी पक्ष से मिलकर अपने वंश को नुकसान पहुँचाया, इसकी इन्होंने स्पष्ट निन्दा की है; श्रीराम-भक्तों की तरह विभीषण की प्रशंसा नहीं की। इनकी इस रचना का वह भाग बहुत ही मनन करने योग्य है, जिस में श्रीरामचन्द्रजी को अपने पुत्रों और भतीजों को राजनीति का उपदेश देने की बात है। कविवर गिरधरदास, कबीर और रहीम आदि के सरल और सुबोध राजनैतिक कथन तो अनेक हिन्दी-प्रेमियों को जबानी याद हैं।

ये बातें सिर्फ मिसाल के तौर पर कही गयी हैं। सब कवियों की सब राजनैतिक रचनाओं की चर्चा करना यहां न सम्भव है; और न आवश्यक ही है। हमें केवल यही कहना है कि हमारे प्राचीन तथा मध्य काल के कवियों ने भी राजनीति की ओर ध्यान दिया है। इस समय तो राजनैतिक जागृति अधिकाधिक होने से कवि महोदय उसकी उपेक्षा कर ही नहीं सकते। पर राजनैतिक साहित्य अब विशेषरूप से गद्य में ही लिखा जाता है।

राजनैतिक साहित्य के भाग। हिन्दी के वर्तमान राजनैतिक साहित्य का परिचय देने के लिए हम पहले इसके कुछ भाग कर लेते हैं। ये भाग सिर्फ कामचलाऊ हैं--

[१] सिद्धान्त।
(२] नागरिक शास्त्र।
[३] प्राचीन राजनैतिक विचार—
 (क) भारतीय,
 (ख) अन्य देशीय।
[४] राष्ट्रीय समस्याएँ।
[५] शासनपद्धति—
 (क) भारतीय,
 (ख) अन्य देशीय।
[६] शासन-इतिहास।
[७] दंड विधान।
[८] राजनैतिक आन्दोलन---
 (क) भारतीय,
 (ख) अन्य देशीय।
[९] राजनैतिक संस्थाएँ—
 (क) राष्ट्रीय,
 (ख) अन्तर्राष्ट्रीय।

[१०] अन्तर्राष्ट्रीय विधान
[११] साम्राज्य और साम्राज्यवाद
[१२] प्रवासी भारतवासी ।
[१३] युद्ध ।
[१४] राजनैतिक संधियाँ ।
[१५] विश्व-शान्ति ।
[१६] राजनैतिक शब्द कोश ।
[१७] छोटी पुस्तक मालाएँ ।
[१८] पत्र-पत्रिकाएँ ।

सिद्धान्त —हिन्दी में प्राचीन राजनैतिक सिद्धान्त सम्बन्धी साहित्य बहुत कम है; आधुनिक सिद्धान्तों पर कुछ अच्छे ग्रन्थ सामने आ रहे हैं —

१—राजनीति विज्ञान। ले०—श्री०सुखसम्पतिराय भंडारी; प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मूल्य १।=), पृष्ठ २१५, संवत १६८०। पुस्तक बहुत उपयोगी है। मोटी-मोटी बहुतसी बातों पर अच्छा विचार किया गया है।

२—राजनीति शास्त्र। ले०—श्री०प्राणनाथ विद्यालंकार; प्र०—ज्ञान मण्डल, काशी। सम्वत् १६७६। पृष्ठ ४२३, मूल्य २।=), इसके कुछ विषय ये हैं:—राष्ट्रीय स्वरूप का विचार, राष्ट्र विषयक सिद्धांत और उनका इतिहास, प्रभुत्व शक्ति, अन्तर्जातीय नियम; शक्ति संविभाग, नियामक विभाग, शासक विभाग; निर्णायक विभाग, निर्वाचन, स्थानीय राज्य। पुस्तक उच्च श्रेणियों के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

३—राजनीति के मूल सिद्धान्त। ले०—श्री चन्द्रीप्रसाद; सरस्वती पुस्तक-भण्डार; आर्यनगर; लखनऊ; पृष्ठ २०३, मूल्य १।)। आजकल की दुनिया में जो राजनैतिक सिद्धान्त विशेष रूप

से प्रचलित हैं उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। लेखक ने अंगरेजी के प्रामाणिक ग्रन्थों को आधार माना है।

४—राजनीति प्रवेशिका। यह एक अंगरेज़ी पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। लेखक का नाम नहीं है, प्रकाशक है अभ्युदय प्रेस, प्रयाग; सन् १९१७। पृष्ठ ८६; मूल्य ।≥)। इसमें राजनैतिक आदर्श क्या है, तथा स्वाधीनता, व्यवस्था, समानता, अन्तर्राष्ट्रीय एकता, प्रभुता, स्वत्व, राष्ट्रीयता, साम्राज्य, व्यक्तिवाद और समष्टिवाद के आदर्श पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण रखते हुए प्रकाश डाला गया है।

५—राजनीति प्रवेशिका। ले०—प्रोफेसर हेरल्ड लस्की; अनु०—गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, प्रकाशक—सस्ता साहित्य मंडल; नयी दिल्ली। पृष्ठ संख्या लगभग डेढ़ सौ, मूल्य डेढ़ रुपया। श्री० लस्की राजनीति के एक माने हुए विद्वान हैं, उनकी यह पुस्तक ऐसी सरल नहीं है, जितनी ऐसे नाम की छोटी सी पुस्तक होनी चाहिए। वैसे, विद्वान और प्रौढ़ पाठकों के लिए इसकी उपयोगिता में संदेह नहीं। पुस्तक में इन विषयों का विचार है—(१) राज्य-संस्था का स्वरूप, (२) वृहत् समाज में राज्य-संस्था का स्थान, (३) राज्य-संस्था का संगठन, (४) राज्य-संस्था और अन्तर्राष्ट्रीय समाज।

६—आधुनिक राजनीति का क ख ग। ले०—सर्वश्री ज्योतिभूषण, लक्ष्मीकान्त झा, और रघुनाथसिंह। प्र०—रचना निकेतन, काशी। पृष्ठ ११७, मूल्य ॥=)। इसमें व्यष्टिवाद, समाजवाद, समष्टिवाद, संघवाद, गिल्ड सोशलिज्म, कम्यूनिज्म, अराजकतावाद आदि का संक्षिप्त परिचय है। अपने ढङ्ग की अच्छी चीज़ है।

७—राज्य विज्ञान। ले०—श्री गोपाल दामोदर तामस्कर; प्र०—इण्डियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य २)। यह पुस्तक हमने देखी नहीं है।

८—राज्य सम्बन्धी सिद्धान्त। ले०—पं० मातासेवक पाठक; प्र०—भारतीय पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। सम्वत् १९७७। पृष्ठ

२०३। मूल्य १॥)। इसमें राज्य की उत्पत्ति और विशेषताओं, सार्वभौम राज्य, राष्ट्र और जनता, राज्य और दण्ड, राज्य और व्यक्ति, शासन, न्याय, सेना, पुलिस, राज्यों के प्रकार, आदि का वर्णन है। भाषा सरल है। स्थान स्थान पर भारतीय राजनैतिक विचारों का उल्लेख है।

९—**राजसत्ता**। यह श्री०हरिनारायण आपटे की मराठी पुस्तक का अनुवाद है। अनुवादक हैं, श्री० हीरालाल जालोरी। प्र०—राजस्थान साहित्य माला कार्यालय, कोटा। पृष्ठ ६५। मूल्य ॥); सं० १६७८। इसमें एक सत्ता, अनेक सत्ता, मन्त्रिमण्डल, प्रतिनिधि मण्डल, स्थानीय राज्य, सेना, व्यवस्था, न्याय, सम्पत्ति आदि पर प्रकाश डाला गया है। स्थान स्थान पर सरल सुबोध उदाहरण हैं। भाषा रोचक है।

१०—**स्वाधीनता**। जान स्टुआर्ट मिल की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। दूसरी आवृत्ति; सन् १६२१। पृष्ठ २२५। मूल्य ३)। श्री० द्विवेदीजी ने अनुवाद की भाषा यथा-सम्भव सरल रखी है। विचार और विवेचन की स्वाधीनता, व्यक्ति पर समाज के अधिकार की सीमा और प्रयोग, शीर्षक परिच्छेदों में विषय पर भली भाँति प्रकाश डाला गया है। पुस्तक उच्च कोटि की है।

११—**स्वाधीनता के सिद्धान्त**। आयर्लैंड के अमर शहीद मेकस्विनी की पुस्तक का कुछ संक्षिप्त अनुवाद। अनु०—श्री० हेमचन्द्र जोशी बी.ए.। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली। पृष्ठ १७८। मूल्य ॥)। इसके कुछ विषय निम्नलिखित हैं—स्वाधीनता का मूल, शक्ति रहस्य, दृढ़ भक्ति, साम्राज्यवाद, सशस्त्र प्रतिरोध, कानून का सच्चा अर्थ। पुस्तक की उपयोगिता के लिए मूल लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

इस पुस्तक का अनुवाद हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता, से भी प्रकाशित हुआ है। उसका मूल्य १) है।

१२—पराधीनता। किसी भी पौधे, जीव, या प्राणी के विकास में पराधीनता बाधक होती है; सब को स्वाधीनता की आवश्यकता होती है। इसका वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। मूल्य ।-); प्र०—मज़दूर आश्रम, इलाहाबाद।

१३—प्रतिनिधि शासन। जान स्टुअर्ट मिल की अंगरेज़ी की प्रामाणिक पुस्तक का अनुवाद। मूल्य २); प्र०—उपन्यास विहार कार्यालय, काशी। इस में प्रतिनिधि-शासन के गुण दोषों का अच्छा विवेचन है। अन्तिम अध्याय है, स्वतन्त्र राज्य द्वारा अधीनस्थ राज्य का शासन होने के विषय में। इसमें भारतवर्ष के विषय में भी अच्छी बातें कही गयी हैं। प्रथम संस्करण; सन् १९२८।

मिल की पुस्तक का अनुवाद आर्य पुस्तक भंडार, गुरुकुल कांगड़ी, से भी हुआ है; उसका नाम है—'प्रतिनिधि राज्य।'

१४—प्रजातन्त्र। मूल लेखक श्री० मोडक; अनु०—श्री० लक्ष्मण नारायण गर्दे। प्र०—ग्रन्थमाला कार्यालय बांकीपुर, पृष्ठ २४४; मूल्य डेढ़ रुपया। पुस्तक दो भागों में है; पहले भाग में प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों, व्यवस्थापक सभाओं, मन्त्रिमण्डल, राजनैतिक दलों, नेताओं, लोकमत, और स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं के सम्बन्ध में अच्छा विचार किया गया है। दूसरे भाग में प्रजातन्त्र के आदर्शों, सिद्धान्तों और संस्थाओं पर आलोचनात्मक विचार है।

१५—प्रजातन्त्र की ओर। ले०—श्री० गोरखनाथ चौबे एम. ए.; प्र०—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ १२०, मूल्य पौने दो रुपये। पुस्तक में यह बताया गया है कि राजा और प्रजा के बीच का मनोमालिन्य मिटकर किस तरह दोनों की शक्तियाँ राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो सकती है। कुछ अध्याय ये हैं—राजसत्ता का वितरण, प्रजातन्त्र के मूल तत्व, प्रजातन्त्रवाद की कठिनाइयाँ।

१६—व्यक्ति और राज। लें०—श्री० सम्पूर्णानन्द; प्र०—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, काशी; पृष्ठ १०५, मूल्य सवा रुपया। इसमें राज क्या है, उसका उद्देश्य क्या है, व्यक्ति का राज में स्थान क्या है, आदि का विवेचन आध्यात्मिक आधार देकर किया गया है। कुछ अध्यायों के शीर्षक हैं—अध्यात्मवाद, द्वन्द्वात्मक प्रधानवाद; फासिस्टवाद और नात्सीवाद, अफलातून का मत, राज और आत्मज्ञान।

१७—क़ानून भंग। ले० और प्र०—श्री० मातादीन शुक्ल, छात्र सहोदर कार्यालय, जबलपुर। सन् १६२१। मूल्य ॥); पृष्ठ ११६। इसमें बताया गया है कि क़ानून का आधार क्या होता है और किस दशा में वह दूषित तथा अमान्य हो जाता है। भिन्न भिन्न देशों की ऐतिहासिक घटनाओं एवं प्राकृतिक नियमों का उदाहरण देकर विषय को स्पष्ट किया गया है। सामाजिक और धार्मिक क़ानूनों के विषय में भी विचार किया गया है।

१८—उपयोगितावाद। मूल अंगरेज़ी लेखक—जानस्टुअर्ट मिल; अनु०—श्री० उमरावसिंह 'कारुणिक'; प्र०—ज्ञानप्रकाश मन्दिर, माछरा, मेरठ। पृष्ठ १३६, मूल्य सवा रुपया। शुरू में मूल लेखक तथा उनकी पुस्तकों का परिचय है। पीछे पांच प्रकरणों में अधिक-से-अधिक आदमियों को अधिक-से-अधिक आनन्द देनेवाले कार्य, अर्थात् सार्वजनिक सुख के सिद्धान्त का प्रतिपादन करके अन्त में न्याय की आवश्यकता सिद्ध की गयी है।

नागरिक शास्त्र—यह विषय स्कूलों और कालिजों में पढ़ाया जाने लगा है, खासकर इसलिए इसका साहित्य बढ़ रहा है। पाठ्य पुस्तकों के अलावा दूसरी पुस्तकों की बड़ी जरूरत है।

१—नागरिक शास्त्र। ले०—श्री० भगवानदास केला, प्र०—श्री० मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। मूल्य १॥), पृष्ठ

३३२+१० । सन् १९३२ । इसके विषय-प्रवेश में नागरिक शास्त्र तथा नागरिता सम्बन्धी आवश्यक बातों का विवेचन है । दूसरे खंड में नागरिकों के चौदह अधिकारों पर प्रकाश डालते हुए उनकी प्राप्ति तथा सदुपयोग का विचार किया गया है । तीसरे खंड में नागरिकों के कर्तव्यों और आदर्शों का विचार है । अन्त में दो परिशिष्ट हैं, कर्तव्या-कर्तव्य विचार, और कर्तव्य सम्बन्धी भारतीय विचार । पुस्तक में भारतीय दृष्टिकोण रखा गया है । दूसरा संस्करण छप रहा है ।

२—नागरिक शास्त्र । ले०—डाक्टर बेनीप्रसाद एम० ए०, अनु०—श्री शंकरदयालु श्रीवास्तव एम० ए०; प्र०—इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग । पृष्ठ संख्या २७३+१५; सजिल्द; मूल्य दो रुपये । पुस्तक अंगरेजी की 'ए० बी० सी० आफ सीविक्स' का अनुवाद है । अनुवादक भी इस विषय के अच्छे विद्वान हैं, इसलिए अनुवाद बहुत अच्छा हुआ है । पुस्तक में समाज और व्यक्ति, कर्तव्य और अधिकार नागरिकता, शिक्षा, कुटुम्ब, समुदाय, पड़ोस, लोकमत, और नागरिक जीवन पर अच्छे विचारपूर्ण निबन्ध हैं । अपने विषय की रचनाओं में इसका अच्छा स्थान है । पुस्तक के अन्त में पारिभाषिक शब्द दिये गये हैं ।

३—सरल नागरिक शास्त्र । ले०—श्री० भगवानदास केला; प्र०—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग । पृष्ठ संख्या ६६४; कपड़े की जिल्द, मूल्य ३) । पुस्तक के दो भाग है—(१) नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त, (२) भारतीय नागरिकता । पुस्तक खासतौर से संयुक्तप्रान्त की इंटरमीजिएट परीक्षा के नागरिक शास्त्र के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गयी है । इस एक ही पुस्तक में पूरे विषय की सब आवश्यक बातें आ गयी हैं । पुस्तक में कुल मिलाकर तैतालीस अध्याय हैं । साधारण पाठकों के लिए भी उपयोगी है । मूल्य भी कम रखा गया है ।

४—नागरिक शास्त्र की विवेचना । ले०—श्री० गोरखनाथ जी

चौबे एम॰ ए॰; प्र०—लाला रामनारायणलाल, इलाहाबाद। पृष्ठ चार सौ; मूल्य तीन रुपये। लेखक अपने विषय के विद्वान हैं, और हिन्दी में इस विषय का साहित्य तैयार करने के बहुत अभिलाषी हैं। पुस्तक खासकर इंटर के विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी है। इससे नागरिकता, अधिकार और कर्तव्य, मताधिकार, राष्ट्रीयता आदि विषयों की अच्छी जानकारी होती है। इसका दूसरा संस्करण हो गया है।

५—नागरिक नीति। मूल मराठी लेखक श्रीकृष्ण वेंकटेश पुणताम्बेकर एम० ए०; अनु०—श्री० रामचन्द्र वर्मा। प्र०—नन्दकिशोर एंड ब्रादर्स, बनारस। पृष्ठ संख्या ८+३०३। सजिल्द; मूल्य २)। लेखक हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी, में इतिहास, राज्यशास्त्र, और नागरिक शास्त्र के अध्यापक हैं। आपकी योग्यता और विद्वत्ता इस पुस्तक से भी अच्छी तरह सूचित होती है। आपके विचारों में गम्भीरता और प्रौढ़ता है। आपने पूर्वीय और पश्चिमी, पुराने और नये आदर्शों का समन्वय किया है। पुस्तक का पाँचवाँ प्रकरण 'मानवी जीवन के उच्च ध्येय और अङ्ग' विशेष रूप से विचार और मनन करने योग्य है।

६—नागरिक शास्त्र। ले०-श्री० कन्हैयालाल वर्मा; प्र०—नन्दकिशोर एंड ब्रादर्स, बनारस। पृष्ठ २३१, मूल्य एक रुपया। हाईस्कूल और इंटरमीजिएट बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार, नागरिकता के सिद्धान्त और भारतीय शासनपद्धति का अच्छा परिचय दिया गया है।

७—नागरिक शास्त्र (भाग १)। ले०— श्री सिद्ध नारायण तिवारी; प्र०—मास्टर बलदेव प्रसाद, सागर, सन् १९३८, मूल्य १)। यह पुस्तक हमने देखी नहीं है।

८—एलीमेंटरी सीविक्स (नागरिक ज्ञान)। ले०—श्री भगवानदास केला; प्रकाशक—रामनारायण लाल, प्रयाग, पृष्ठ संख्या

लगभग दो सौ; मूल्य एक रुपया। यह हाईस्कूल के विद्यार्थियों के उपयोग के लिए है। इसके कुछ अध्याय सिद्धान्त सम्बन्धी हैं, कुछ आर्थिक और कुछ भारतीय शासन पद्धति सम्बन्धी हैं। शासनपद्धति के अध्यायों में खासकर संयुक्तप्रान्त के उदाहरण दिये गये हैं। सन् १६३८ में इसका पहला संस्करण हुआ, पीछे दूसरा संस्करण भी हो चुका है।

इससे मिलते हुए विषय की एक और पुस्तक है—नागरिक ज्ञान। उसके लेखक, और प्रकाशक वही है, जो ऊपर दी हुई पुस्तक के हैं। उसके शासनपद्धति वाले अध्यायों में उदाहरण खासकर मध्यप्रान्त के दिये गये हैं। उसका भी दूसरा संस्करण हो चुका है।

६—नागरिक शास्त्र की साधारण बातें। ले०—श्री अनन्त बापू जी मांडे और भगवतीप्रसाद जी वाजपेयी। प्रकाशक—लाला रामनारायण लाल, इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या ८७, मूल्य चार आने। यह ग्रामवासी गृहस्थों के लिए लिखी गयी है, टाइप बड़ा है; लेखन शैली कहानी और वार्तालाप की है। भाषा सरल है। यह भी दृष्टिकोण रखा गया है कि एक पढ़ा-लिखा, सुलझे विचारों और उन्नत भावों वाला ज़मींदार का लड़का, अगर चाहे तो अपने गाँव का सुधार किस तरह कर सकता है।

१०—नागरिक जीवन। ले०—श्री० कृष्णानन्द जी गुप्त; प्र०—सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या २१३; मूल्य एक रुपया। पुस्तक के शुरू के कई अध्याय प्रश्नोत्तर और वार्तालाप के ढङ्ग से लिखे गये हैं, जिससे शैली लोकप्रिय और सरल रहे। इसके कुछ अध्यायों के विषय ये हैं—नागरिक और उसके अधिकार, समाज का विकास, सहयोग की आवश्यकता; स्वयंसेवक, पड़ोसी धर्म, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति, देश की राजनैतिक प्रगति, स्थानीय स्वराज्य क्या है? पुस्तक बहुत उपयोगी है, विशेषतया विद्यार्थियों के लिए।

११—नागरिक जीवन। ले०—श्री० जे. सी. तालुकदार;

प्र०—गयाप्रसाद एंड संस, आगरा। पृष्ठ १२२, मूल्य बारह आने। हाईस्कूलों की क्लासों के लिए स्वीकृत पाठ्य पुस्तक है।

१२—नागरिक शिक्षा। ले०—श्री० भगवानदास केला; प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। चौथा संस्करण सन् १९४३। पृष्ठ १२६+८। मूल्य ॥≋), इसमें साधारण नागरिकों के जानने योग्य सेना, पुलिस, जेल, अदालत, डाक, तार, रेल, मोटर, कृषि, व्यापार, सहकारिता, स्वास्थ-रक्षा, नागरिकों के कर्तव्य, नागरिकता की व्यवहारिक शिक्षा आदि विषयों पर छोटे छोटे सरल सुबोध लेख दिये गये हैं। डाक, तार, बैंक आदि के आवश्यक नियम भी हैं। अन्त में दो परिशिष्ट है—(१) मेरा प्यारा गाँव। (२) नागरिकता की कसौटी।

१३—भारतीय नागरिक और उनकी उन्नति के उपाय। ले०—श्री० भगवानदास केला, प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग, मू० ॥), पृष्ठ ११०+८। इसमें नागरिकों के सामान्य अधिकार और कर्तव्य बतलाकर इस बात का विचार किया गया है कि भिन्न भिन्न नागरिक श्रेणियां या समूह किस प्रकार देश के लिए अधिक-से-अधिक उपयोगी हो सकते हैं। पहला संस्करण समाप्त हो गया, दूसरा छपने वाला है।

१४—भारतीय नागरिकता। ले०—डा० बेनीप्रसाद; प्र०—इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद; पृष्ठ २०० (सजिल्द); मूल्य ।।।)। नागरिक शास्त्र का साधारण ज्ञान करानेवाली, एक अधिकारी विद्वान द्वारा लिखी गयी, पुस्तक। हाईस्कूल के विद्यार्थियों के भी काम की है।

१५—आदर्श नागरिकता (अर्थात् स्वराज्य-साधन)। ले०—श्री वृजबिहारी ओझा; प्र०—भार्गव पुस्तकालय, बनारस; पृष्ठ १२०; मूल्य ॥)। पुस्तक नागरिकता का प्रारंभिक ज्ञान कराने के लिए राष्ट्रीय दृष्टिकोण से लिखी गयी है।

१६—नागरिक शास्त्र प्रवेशिका। ले०—श्री गोरखनाथ चौबे, एम.ए.। प्र०—किताबमहल, इलाहाबाद; पृष्ठ २१२ (सजिल्द), मूल्य १।)। यह पुस्तक विद्यार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, नागरिक शास्त्र और भारतीय शासन-पद्धति—इन दो भागों में लिखी गयी है।

१७—नागरिक सिद्धान्त कौमुदी। ले०—श्री० गोरखनाथ चौबे एम० ए०। प्र०—लाला रामनारायण लाल, प्रयाग। पृष्ठ १३०; मूल्य बारह आने। श्री० चौबे जी ने नागरिक शास्त्र सम्बन्धी कई पुस्तकें लिखी हैं। आपकी यह पुस्तक हाईस्कूलों की परीक्षा के लिए, नये पाठ्यक्रम के अनुसार है।

१८—हाईस्कूल सीविक्स। ले०—श्री० राजेन्द्रकुमार श्रीवास्तव एम० ए०। प्र०—लक्ष्मीनारायण अग्रवाल बुकसेलर, आगरा। पृष्ठ २१८; मूल्य साढ़े पन्द्रह आने। विषय नाम से स्पष्ट है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए प्रश्न भी दिये गये हैं।

१९—नागरिक सिद्धान्त। ले०—श्री० कमरुल हसन जाफरी बी० ए०, बी० टी०। प्र०—हिफजुर रहमान अनसारी, शीशमहल, अमरोहा। पृष्ठ १६८, मूल्य बारह आने। पुस्तक हाई स्कूल की कक्षाओं के लिए है। प्रश्न अंगरेजी में दिये गये हैं।

२०—सरल नागरिक शास्त्र। ले०—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी; प्र०—प्राविंशल बुक डिपो, इलाहाबाद। पृष्ठ १०४; मूल्य बारह आने। यह पुस्तक भी हाई स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए है।

२१—राज्य प्रबन्ध शिक्षा। श्री० सर टी० माधवराव की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—पं० रामचन्द्र शुक्ल; प्र०—इण्डियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य ॥।), पृष्ठ १६५। यह महाराजा साहब श्री सयाजीराव, बड़ौदा, की नाबालिग़ी के समय, उनकी शिक्षा के हेतु लिखी गयी थी। राजाओं तथा राजकुमारों के लिए बहुत

उपयोगी है। इसमें, प्रजा में सुख समृद्धि बढ़ाने वाले विविध अनुभव अंकित हैं।

२२—राज शिक्षा। ले० और प्र०—पण्डित ब्रजवल्लभ मिश्र, अलीगढ़। पृष्ठ १३३, मूल्य लिखा नहीं। इसका प्रथम भाग छपा; वह भी पूरा नहीं। इसमें राजकुमारों के जीवन सम्बन्धी बातों का वर्णन करने के पश्चात् राज्य के सिद्धान्त, पुलिस और सेना, न्याय सेना, वेतन, और ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध आदि का विचार किया गया है।

२३—बाल राजनीति। ले०—राजकुमार मानसिंह। प्र०—राजकीय पुस्तक प्रकाशन विभाग, राज बनेडा। सं० १९८७। पृष्ठ ८४; छोटा आकार। बिना मूल्य। इसमें राजनीति के सिद्धान्तों की चर्चा बहुत थोड़े में है। यह राजकुमारों के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तक है। मालूम हुआ है कि लेखक ने इसका संशोधन और परिवर्द्धन कर लिया है। अब तक उपर्युक्त प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित अन्य एक भी पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी, क्या वह इसका संशोधित संस्करण छपायेगा ?

२४—राजा और प्रजा। श्री० रविन्द्रनाथ टैगोर के निबन्धों का संग्रह। अनु०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। मू० १), दूसरा संस्करण १९७९. पृष्ठ २००। निबन्ध पुराने होजाने पर भी नये हैं, उनके भावों में स्थायित्व है पुस्तक विचारणीय और मननीय है। कुछ निबन्धों के शीर्षक हैं:—अंगरेज़ और भारतवासी, राजनीति के दो रुख, साम्राज्यवाद, बहुराजकता. राजभक्ति, आदि।

२५—मनुष्य के अधिकार। ले०—श्री० स्वामी सत्यदेव; प्र०—श्री० रामप्रसाद गर्ग, आगरा। मूल्य।≥), चौथा संस्करण; सं० १९७८, पृष्ठ ८६। इस में मुख्य मुख्य अधिकारों के सम्बन्ध में, गम्भीर सिद्धान्तों

में न जाकर, रोचक शैली से, और मनोरञ्जक भाषा में लिखा गया है।

२६—हमारे अधिकार और कर्तव्य । ले०—श्री० कृष्णचन्द्र विद्यालंकार; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या १६०; मूल्य आठ आने। इसमें मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अधिकारों और कर्तव्यों का विवेचन है। विषय को रोचक, सरल और मनोरंजक बनाने के लिए सारी पुस्तक को पत्रमाला का रूप दे दिया गया है। अंगरेजी या संस्कृत के मूल वाक्य नीचे फुट-नोट में देना बेहतर होता। पुस्तक अच्छी है, और सस्ती भी।

२७—प्रजा के अधिकार। अनुवादक—श्री० 'प्रजावादी'। प्र०—हिन्दी साहित्य कार्यालय, कलकत्ता। पृष्ठ १४२, मूल्य आठ आने। यह श्री एस० सत्यमूर्ति के अंगरेजी लेखों का अनुवाद है; व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, शस्त्र की और सेना में भर्ती होने की स्वतंत्रता, और सरकारी नौकरी पाने की स्वतंत्रता आदि नौ निबन्ध हैं।

२८—हमारा कर्त्तव्य। ले०—श्री सुभाषचन्द्र बोस; प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, काशी; पृष्ठ १११, सजिल्द, मूल्य १)। विभिन्न सभाओं में, अध्यक्षपद से सुभाष बाबू ने जो व्याख्यान सन् २६ तक दिये थे, उन्हीं में से पाँच का संग्रह इस पुस्तक में है। युवकों में राजनैतिक चैतन्य और स्फूर्ति लाने वाले विचार हैं।

२९—सेवाधर्म—सेवामार्ग। ले०—श्री०श्रीकृष्णदत्त पालीवाल; प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; पृष्ठ २००; मूल्य १)। सेवकों की शिक्षा, गाँवों और ग्रामीणों की सेवा, अपने नगर की सेवा, संस्थाओं की सेवा आदि अध्यायों में सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं तथा लोक सेवा की ओर प्रवृत्ति रखनेवाले प्रत्येक नागरिक का मार्ग प्रदर्शन करनेवाली बातें बतायी गयी हैं।

३०—देशभक्त मेज़िनी के लेख। पिछली सदी में इटली के अलग-अलग टुकड़ों को मिलाने और स्वतंत्र करने में मेजिनी ने खास भाग लिया। उसके विचारों में उदारता गम्भीरता और विश्वबन्धुत्व था। इस पुस्तक में उसके मनुष्य के कर्तव्य, स्वार्थ और सिद्धान्त, तथा आशा और विश्वास शीर्षक निबन्धों का संग्रह है। पुस्तक मनन करने योग्य है। अनु०—श्री० छबिनाथ पांडेय, प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मूल्य २), पृष्ठ २२४।

मेज़िनी का 'मनुष्य के कर्तव्य' निबन्ध अलग भी पुस्तकाकार छपा है। उसका खूब प्रचार हुआ है।

३१—भावी नागरिकों से। ले०—श्री० भगवानदास केला, प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग,। पृष्ठ १४४; मूल्य सवा रुपया। इस पुस्तक में बीस विषय हैं। उनमें नागरिक, विद्यार्थी, अध्यापक, प्रोफेसर, डाक्टर, वकील; धर्म-प्रचारक, लेखक, प्रकाशक, सरकारी नौकर, सैनिक, अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, कलाकार और राजनीतिज्ञ आदि बनने की इच्छा रखने वालों को उनके भावी कर्तव्य बताये गये हैं; खासकर नैतिक पहलू पर बहुत जोर दिया गया है, जिसके अभाव से, आज दिन मानव समाज तरह तरह के कष्ट भोग रहा है। अन्तिम निबन्ध में लेखक ने 'भावी संसार' के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये हैं।

३२—नागरिक कहानियाँ। ले०—श्री० सत्येन्द्र एम० ए०, प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ १५९, मूल्य दस आने। इसमें कहानियों द्वारा निर्वाचन, मताधिकार, ग्राम-सुधार, अस्पृश्यता-निवारण, साक्षरता-प्रचार, और कर्तव्य पालन आदि नागरिक विषयों को समझाया गया है, तथा नागरिक जीवन सम्बन्धी कुछ सिद्धान्तों पर भी प्रकाश डाला गया है।

३३—इतना तो जानो। मराठी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—

पं० रामनरेश त्रिपाठी। प्र०—सस्ती साहित्य पुस्तक माला, कानपुर। सम्वत् १६७६, मूल्य ।-), पृष्ठ १३१। असहयोग, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वराज्य, पंचायत, स्वदेशी, हिन्दू मुस्लिम एकता आदि पर सरल भाषा के लेख हैं। पुस्तकान्त में श्री० देसाईजी का 'हिन्दुस्थान कैसे बरबाद हुआ' लेख है।

३४—भारत के समाज और इतिहास पर स्फुट विचार। ले०—बाबू श्रीप्रकाश, प्र०—ज्ञानमण्डल, काशी; पृष्ठ १७६, मूल्य ॥:)। भारतीय राजनीति और नागरिक-कर्तव्य-ज्ञान सम्बन्धी लेखों का संकलन है। देश की सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं पर महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये गये हैं।

३५—संघर्ष या सहयोग। मूल लेखक—प्रिंस क्रोपाटकिन, अनुवादक—शोभालाल गुप्त। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; पृष्ठ २०१; मूल्य १॥)। लेखक ने इस बात को प्रमाणित किया है कि संघर्ष को ही व्यक्ति तथा समाज के विकास का साधन मानना ग़लत है; मानव समाज का विकास सहयोग के आधार पर हुआ है, क्योंकि संघर्ष की सफलता के लिए भी सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

३६—जातीयता। तपस्वी अरविंद घोष के लेखों का अनुवाद। अनु०—श्री० शिवदयालजी। प्र०—विश्व साहित्य भंडार, मेरठ पृष्ठ ६४; मूल्य ।-), प्रथम संस्करण; सन १६२४। इसमें जातीय उत्थान, स्वाधीनता का मार्ग, देश और जातीयता, प्राच्य और पाश्चात्य, आदि शीर्षकों में विविध विषयों पर स्वतन्त्र विचार हैं।

३७—भारतीय नवयुवकों को राष्ट्रीय सन्देश। संग्रहकर्ता—श्री रघुनाथप्रसाद। प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य ॥।); पृष्ठ ११६। देशी विदेशी विविध विद्वानों के शिक्षाप्रद संदेश हैं। एक लेख राष्ट्रनिर्माण के सम्बन्ध में भी है।

३८—राष्ट्र धर्म। ले०—श्री० सत्यदेव विद्यालंकार। प्र०—राष्ट्र-धर्म ग्रन्थमाला, कलकत्ता। पृष्ठ १२६, मूल्य आठ आने। सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति की कितनी आवश्यकता है, और उसके न होने से भारतीय नर नारियों का कितना अहित हो रहा है, यह इस पुस्तक को पढ़ने से आसानी से समझ में आ जाता है। इसमें सामाजवाद के सिद्धान्तों के प्रचार की आवश्यकता दर्शायी गयी है।

३९—सर्वोदय। मूल लेखक—रस्किन; प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; छोटे आकार के ७५ पृष्ठ; मूल्य ~)। अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में रस्किन के विचारों का महात्मा गांधी द्वारा किया गया भावानुवाद है, जिसमें बताया गया है, कि भिन्न-भिन्न व्यवसायों में मनुष्य को किस तरह का व्यवहार करना उचित है।

प्राचीन राजनैतिक विचार; (क) भारतीय—

प्राचीन राजनैतिक विचार सम्बन्धी साहित्य के दो भाग हैं—(क) भारतीय, और (ख) अन्य देशीय। भारतीय राजनैतिक विचार सम्बन्धी पुस्तकों में नीचे लिखी हमारे सामने आयी हैं—

१—हिन्दुओं की राज कल्पना। ले०—पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी। प्र०—भारतमित्र कार्यालय, कलकत्ता। पृष्ठ ८८, मूल्य अज्ञात। यह वेद, रामायण, महाभारत और मनुस्मृति के आधार पर लिखी गयी है। इसके कुछ विषय ये हैं:—राष्ट्र की उत्पत्ति, विराजकता, राज्य की उत्पत्ति; राजा का सम्बन्ध, अनियन्त्रित राज्य, देशभक्ति आदि।

२—हिन्दू राज्यशास्त्र। ले०—श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी; प्र०—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। आकार डिमाई अटपेजी; पृष्ठ संख्या ३३७; मूल्य साढ़े तीन रुपये। इसमें विषय प्रवेश के अतिरिक्त तीन परिशिष्ट हैं। प्रथम भाग में विद्याओं और कलाओं के विवेचन के सिवा सप्तांग राज्य का साधारण वर्णन है। दूसरे और तीसरे भाग में राज्य के अंगों के विस्तृत वर्णन के साथ ही कई नवीन विषयों की

पं० रामनरेश त्रिपाठी। प्र०—सस्ती साहित्य पुस्तक माला, कानपुर। सम्वत् १९७९, मूल्य ।~), पृष्ठ १३१। असहयोग, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वराज्य, पंचायत, स्वदेशी, हिन्दू मुस्लिम एकता आदि पर सरल भाषा के लेख हैं। पुस्तकान्त में श्री० देसाईजी का 'हिन्दुस्थान कैसे बरबाद हुआ' लेख है।

३४—भारत के समाज और इतिहास पर स्फुट विचार। ले०—बाबू श्रीप्रकाश, प्र०—ज्ञानमण्डल, काशी; पृष्ठ १७९, मूल्य ॥:)। भारतीय राजनीति और नागरिक-कर्तव्य-ज्ञान सम्बन्धी लेखों का संकलन है। देश की सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं पर महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये गये हैं।

३५—संघर्ष या सहयोग। मूल लेखक—प्रिंस क्रोपाटकिन, अनुवादक—शोभालाल गुप्त। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; पृष्ठ २०१; मूल्य १॥)। लेखक ने इस बात को प्रमाणित किया है कि संघर्ष को ही व्यक्ति तथा समाज के विकास का साधन मानना गलत है; मानव समाज का विकास सहयोग के आधार पर हुआ है, क्योंकि संघर्ष की सफलता के लिए भी सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

३६—जातीयता। तपस्वी अरविंद घोष के लेखों का अनुवाद। अनु०—श्री० शिवदयालजी। प्र०—विश्व साहित्य भंडार, मेरठ पृष्ठ ६४; मूल्य ।~), प्रथम संस्करण; सन १९२४। इसमें जातीय उत्थान, स्वाधीनता का मार्ग, देश और जातीयता, प्राच्य और पाश्चात्य, आदि शीर्षकों में विविध विषयों पर स्वतन्त्र विचार हैं।

३७—भारतीय नवयुवकों को राष्ट्रीय सन्देश। संग्रहकर्त्ता—श्री रघुनाथप्रसाद। प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य ॥|); पृष्ठ ११६। देशी विदेशी विविध विद्वानों के शिक्षाप्रद संदेश हैं। एक लेख राष्ट्रनिर्माण के सम्बन्ध में भी है।

३८—राष्ट्र धर्म । ले०—श्री० सत्यदेव विद्यालंकार । प्र०—राष्ट्र-धर्म ग्रन्थमाला, कलकत्ता । पृष्ठ १२६, मूल्य आठ आने । सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति की कितनी आवश्यकता है, और उसके न होने से भारतीय नर नारियों का कितना अहित हो रहा है, यह इस पुस्तक को पढ़ने से आसानी से समझ में आ जाता है। इसमें सामाजवाद के सिद्धान्तों के प्रचार की आवश्यकता दर्शायी गयी है।

३९—सर्वोदय । मूल लेखक—रस्किन; प्र०-सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; छोटे आकार के ७५ पृष्ठ; मूल्य ~)। अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में रस्किन के विचारों का महात्मा गांधी द्वारा किया गया भावानुवाद है, जिसमें बताया गया है, कि भिन्न-भिन्न व्यव-सायों में मनुष्य को किस तरह का व्यवहार करना उचित है।

प्राचीन राजनैतिक विचार; (क) भारतीय—

प्राचीन राजनैतिक विचार सम्बन्धी साहित्य के दो भाग है—(क) भारतीय, और (ख) अन्य देशीय। भारतीय राजनैतिक विचार सम्बन्धी पुस्तकों में नीचे लिखी हमारे सामने आयी हैं—

१—हिन्दुओं की राज कल्पना । ले०—पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी। प्र० —भारतमित्र कार्यालय, कलकत्ता । पृष्ठ ८८, मूल्य अज्ञात । यह वेद, रामायण, महाभारत और मनुस्मृति के आधार पर लिखी गयी है। इसके कुछ विषय ये हैं:—राष्ट्र की उत्पत्ति, विराजकता, राज्य की उत्पत्ति; राजा का सम्बन्ध, अनियन्त्रित राज्य, देशभक्ति आदि।

२—हिन्दू राज्यशास्त्र । ले०—श्री अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी; प्र०—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। आकार डिमाई अठपेजी; पृष्ठ संख्या ३३७; मूल्य साढ़े तीन रुपये। इसमें विषय प्रवेश के अतिरिक्त तीन परिशिष्ट हैं। प्रथम भाग में विद्याओं और कलाओं के विवेचन के सिवा सप्तांग राज्य का साधारण वर्णन है। दूसरे और तीसरे भाग में राज्य के अंगों के विस्तृत वर्णन के साथ ही कई नवीन विषयों की

चर्चा की गयी है। पुस्तक कौटलीय अर्थशास्त्र आदि अनेक ग्रन्थों के आधार पर बड़े परिश्रम से लिखी गयी है। हाँ, इसमें नौ पृष्ठ का शुद्धिपत्र होना बहुत खटकता है।

३—हिन्दू राजतंत्र (दो भाग)। श्री० काशीप्रसाद जायसवाल की अङ्गरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—श्री० रामचन्द्र वर्मा, प्र०—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। हिन्दुओं की प्राचीन राज्य-प्रणाली कैसी थी, इस विषय की यह बहुत प्रामाणिक पुस्तक है। लेखक ने यह जानने के लिए विशेष रूप से अध्ययन किया कि यदि प्राचीन भारतवासियों ने वैध शासन सम्बन्धी कोई उन्नति की थी, तो उनमें प्रचलित पद्धति कब, कहाँ, और कैसी रही। पहला भाग; सजिल्द, मूल्य, साढ़े तीन रुपये। संवत १९८४।

दूसरा भाग, सवत् १९९९; पृष्ठ ४२२, सजिल्द, मूल्य सवा दो रुपये। इसके कुछ प्रकरण ये हैं—हिन्दू एकराजतंत्र, वैदिक राजा और उसका चुनाव, जानपद और पौर के राजनैतिक कार्य, मंत्रिपरिषद, धर्म और न्याय की व्यवस्था, साम्राज्य-प्रणालियाँ।

४—स्वराज्य की महिमा। ले० और प्र०—श्री० दामोदर सातवलेकर, औंध। इसमें निम्नलिखित निबन्ध हैं:—स्वराज्य की महिमा, मातृभूमि की उपासना, प्रजापति की दुहिता (राष्ट्र सभा), सच्चे राजा के लक्षण, दास भाव को दूर कीजिये, आत्मज्ञान का परिणाम, राजा प्रजा और उनके भेद। मूल्य ||); पृष्ठ १०८। वैदिक उद्धरणों से पूर्ण है।

५—हमारी स्वतन्त्रता कैसी हो। मूल लेखक—श्री० योगीवर अरविन्द घोष। अनु०—देवनारायण द्विवेदी। मूल्य १), पृष्ठ केवल ११४। प्र०—एस. बी. सिंह एण्ड को०, काशी। इस में भारत की राष्ट्र-नीति का परिचय देकर बताया गया है कि पूर्व काल में यहाँ जो राजतन्त्र था, वह वास्तव में एक प्रकार से प्रजातन्त्र ही था। विषय गवेषणापूर्ण और विचारणीय है।

६—वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली। ले० और प्र०—प्रो० बालकृष्ण एम० ए०, गुरुकुल, कांगड़ी। मूल्य ||), पृष्ठ १५६; सन् १६१४। इसमें आर्यों की उन्नति तथा अवनति के कारण, तथा उनकी राज्य-कल्पना के गुण दोषों का विवेचन है। पाश्चात्य सिद्धान्तों पर विचार करते हुए, वेदोक्त राज्यपद्धति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है।

७—प्राचीन भारत में स्वराज्य। ले०—श्री० धर्मदत्त जी विद्यालंकार; गुरुकुल कांगड़ी, मूल्य १||), पृष्ठ २००, सन् १६२०। इसमें दृढ़ प्रमाणों के आधार पर बताया गया है कि प्राचीन भारत में राजसत्ता प्रजा के अधीन थी, तथा प्रतिनिधिसत्ताक एवं परिमित राजसत्ताक शासनपद्धति प्रचलित थी, शासन में राजा का स्वार्थ गौण था, उसका अधिकार सभा समितियों द्वारा नियंत्रित था।

८—स्वामी दयानन्द का वैदिक स्वराज्य। ले० तथा प्र०—श्री० चन्द्रमणि विद्यालंकार, साहित्य-रत्न, जालंधर। पृष्ठ ७५, मूल्य ||)। इसमें श्री० स्वामीजी के स्वराज्य सम्बन्धी संदेशों का विषयवार संग्रह है, जो उनके विविध ग्रन्थों से लिये गये हैं।

६—वैदिक राज्य-पद्धति। प्र०—स्वध्याय, मण्डल, औंध। मूल्य।-)। इसमें बताया गया है कि वेदों के अनुसार राज्य-विस्तार तथा राज्य-शासन की दृष्टि से राज्यों के कितने भेद है, और उनके क्या लक्षण होते हैं।

१०—प्राचीन भारत में स्वराज्य। ले०—पंडित धर्मदत्त जी विद्यालंकार। प्र०—साहित्य परिषद, गुरुकुल कांगड़ी। पृष्ठ, दो सौ; मूल्य डेढ़ रुपया। इस पुस्तक में यह सिद्ध किया गया है कि प्राचीन भारत में राजा का अधिकार नियन्त्रित होता था, और प्रजासत्ताक राज्य भी जहाँ तहाँ पाये जाते थे। प्राचीन काल में स्थानीय स्वराज्य का होना भी सिद्ध किया गया है।

११—विदुर नीति। मूल सहित। अनु०—श्री० प्रेमशरण जी प्रणीत। प्र०—प्रेम पुस्तकालय, आगरा। पृष्ठ १३०; मूल्य बारह आने। महाभारत के उद्योग पर्व का जो अंश विदुर नीति के नाम से प्रसिद्ध है, उसका यह हिन्दी अनुवाद है।

१२—नीतिशतक। अनु०—हरिदास वैद्य; प्र०—हरिदास कंपनी, मथुरा। इसमें संस्कृत के सुप्रसिद्ध लेखक भर्तृहरि का परिचय और उसके नीतिशतक का मूल संस्कृत के साथ हिन्दी गद्य और पद्य दोनों में अनुवाद है। इसके अलावा अंगरेजी अनुवाद भी है। संस्कृत पद्यों से संबंध रखनेवाले ३३ मनोहर चित्र और अनुवादक की अपनी अनुभूत तथा लोकप्रसिद्ध कहानियां भी दी गयी है। पृष्ठ ५०० से अधिक। मूल्य ८||); साधारण संस्करण ४||)।

१३—रामायण में राजनीति। ले०—श्री० शालिगराम शास्त्री; प्र०—मृत्युञ्जय औषधालय, लखनऊ। पृष्ठ ३२१, मूल्य एक रुपया। वाल्मीकीय रामायण में वर्णन की हुई महत्वपूर्ण घटनाओं पर राजनैतिक दृष्टि से विचार किया गया है। राम की नीति, बालि-वध, लंका की चढ़ाई आदि सात लेख हैं।

१४—रामराज्य (प्रथम भाग)। ले० और प्र०—श्री० मुरारीलाल अग्रवाल, दिनदारपुरा, मुरादाबाद। पृष्ठ १३६, मूल्य बारह आने। इसमें श्रीरामचन्द्र जी के समय की सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

१५—कौटिल्य की राज्य शासन व्यवस्था। ले०—श्री० गोपाल दामोदर तामस्कर। प्र०—इण्डियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य १||)। इसकी रचना कौटलीय अर्थशास्त्र के आधार पर की गयी है, उसका उल्लेख पहले हो चुका है। इसमें कुछ विषय ये हैं:—राजा अमात्य और मन्त्री, जनपद, कर्मचारी, न्याय शासन व्यवस्था; राज्य का आय-व्यय, कौटिल्य का षाड्गुण्य, कौटिल्य की कुटिल नीति और राज्य का स्वरूप।

१६—कौटिल्य की शासनपद्धति। ले०—श्री० भगवानदास केला, दारागंज, प्रयाग, । इसमें आचार्य कौटिल्य के ग्रन्थ में बतायी हुई शासनपद्धति का सरल वर्णन इस ढङ्ग से किया गया है कि आधुनिक पाठक उसे अच्छी तरह समझ सकें। प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। मूल्य १।=) है।

१७—अकबर की राज्यव्यवस्था। ले०—शेषमणि त्रिपाठी बी.ए. साहित्यरत्न। सं० १९७९। हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित, रत्नपरीक्षा का स्वीकृत ग्रन्थ। मूल्य ॥), पृष्ठ २८७। प्रारम्भिक भाग में पठान शासन पद्धति और अंत में अकबर के पीछे की मुग़ल शासन-पद्धति तथा उसका वर्तमान शासनपद्धति से सम्बन्ध और उससे तुलना-सूचक विचार दिये जाने से इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

प्राचीन राजनैतिक विचार; (ख) अन्यदेशीय— हिन्दी में भारतवर्ष को छोड़कर अन्य देशों के प्राचीन राजनैतिक विचार सम्बन्धी साहित्य बहुत ही कम है—

१—अफलातून की सामाजिक व्यवस्था। ले०—श्री० गोपाल दामोदर तामस्कर; प्र०—काशी विद्यापीठ, काशी। पृष्ठ २१४, मूल्य १।=)। इसमें सुप्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अफलातून की तीन पुस्तकों के आधार पर उसके आदर्श समाज, समाज के लिए निरंकुश राजसत्ता की आवश्यकता, शासन-व्यवस्था और नियम विधान मीमांसा आदि विचारों का विवेचन किया गया है। आरम्भ में अफलातून की जीवनी, और अन्त में परिशिष्ट आदि भी हैं।

२—योरप के राजकीय आदर्शों का विकास। ले०—श्री० गोपाल दामोदर तामस्कर। प्र०—मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। प्रथम संस्करण, सन् १९२४। मूल्य २), पृष्ठ ३६४। पुस्तक अंगरेज़ी ग्रन्थ के आधार पर होते हुए भी सरल है। इसमें स्वतंत्रता; शिष्टि और स्वराज्य, समता, एकता, राष्ट्रवाद; साम्राज्यवाद, व्यक्ति स्वातंत्र्यवाद,

समाज सत्तावाद, लोकतन्त्र, राष्ट्र-संघ आदि का विवेचन है। छापे की कुछ अशुद्धियां होते हुए भी पुस्तक बहुत उपयोगी और विचारणीय है।

राष्ट्रीय समस्याएँ—भारतीय राष्ट्र को स्वाधीन और स्वावलम्बी बनकर संसार में यथेष्ठ स्थान पाना है और मनुष्य जाति के उत्थान में भाग लेना है। ऐसी दशा में यहाँ की तरह तरह की समस्याओं पर अच्छी तरह विचार होना बहुत ज़रूरी है। हमारे सामने इस विषय की ये पुस्तकें हैं—

१—**हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ**। ले०—श्री०भगवानदास केला; प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। सातवाँ संस्करण, सन् १९४५, मूल्य एक रुपया। इस पुस्तक का पहला संस्करण १९१९ में, और दूसरा १९२३ में 'भारतीय राष्ट्र-निर्माण' नाम से हुआ था। तीसरे संस्करण से नाम बदला गया, और विषय भी। अब इसमें दो परिशिष्टों के अलावा, कुछ विषय ये हैं—भारत में राष्ट्रीयता, संगठन, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रीय भावों का प्रचार, राष्ट्रीय झंडा और गीत; राष्ट्र-भाषा और लिपि, राष्ट्रीय शिक्षा और साहित्य; राजनैतिक एकता, और स्वाधीनता। सन् १९४३ और १९४५ में इसके दो-दो संस्करण हुए हैं।

२—**भारतीय राष्ट्र**। ले०—श्री० देवीप्रसाद द्विवेदी; प्र०—राष्ट्रीय पुस्तक भंडार; कानपुर। सं० १९७५। पृष्ठ ११४; मूल्य सवा रुपया। भारत के एक राष्ट्र होने के प्रमाण, भारतीय राष्ट्रीयता का विवरण, वर्तमान शासनप्रणाली की त्रुटियाँ, स्वराज्य की आवश्यकता आदि विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। भाषा और विचार प्रभावशाली हैं।

३—**हिन्दुस्तान की समस्याएँ**। ले०—श्री० जवाहरलाल नेहरू; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली; पृष्ठ २१६, मूल्य एक रुपया।

देश की खासकर राजनैतिक समस्याओं के सम्बन्ध में समय-समय पर लिखे हुए श्री नेहरूजी के महत्वपूर्ण लेखों का संग्रह।

४—कुछ समस्याएँ। ले०—श्री० जवाहरलाल नेहरू; प्र०—युगान्तर प्रकाशन समिति, पटना। पृष्ठ १४५, सजिल्द, मूल्य सवा रुपया। भारत की साम्प्रदायिक, साहित्यिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं सम्बन्धी लेखों का संग्रह। इस पुस्तक का विषय 'हिन्दुस्तान की समस्याएँ' से बहुत कुछ भिन्न है।

५—राष्ट्रीय माँग। ले०—श्री भगवतीप्रसाद पांडे; प्र०—लीडर प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ २४४, मूल्य सवा रुपया। नेहरू कमेटी ने औपनिवेशिक स्वराज्य के जिस विधान की रचना की थी, और जिसका सर्वदल सम्मेलन ने संशोधन किया था, उस संशोधित विधान के आधार पर यह पुस्तक लिखी गयी है। नेहरू कमेटी की नियुक्ति और सर्वदल सम्मेलन आदि का भी उल्लेख है।

६—राष्ट्र-वाणी। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली; मूल्य दस आने। इसमें दूसरी गोलमेज सभा में दिये हुए म० गांधी के भाषणों का संग्रह है। इसमें भारत की माँग स्पष्ट रूप से बतायी गयी है।

७—दिमागी गुलामी। ले०—श्री राहुल सांकृत्यायन; प्र०—रामनाथ त्रिवेदी, हिन्दी कुटिया, पटना; पृष्ठ ६५ मूल्य ।।।)। भारत की विभिन्न राजनैतिक समस्याओं सम्बन्धी लेखों का संग्रह।

८—हिन्दुस्थान का राष्ट्रीय झण्डा। ले०—महात्मा गांधी; प्र०—हिन्दी साहित्य मन्दिर, आगरा; पृष्ठ १४४, मूल्य १)। भारत का राष्ट्रीय झण्डा कैसा हो, तथा राष्ट्रीय आन्दोलन सम्बन्धी दूसरे विषयों पर गांधी जी ने सन् १९२१ के लगभग जो लेख लिखे थे उनका संग्रह है।

९—बन्देमातरम् का रहस्य। ले० और प्र०—सैयद कासिमअली

'मीर,' साहित्यालंकार, नरसिंहपुर। यह पुस्तक साम्प्रदायिकता बढ़ानेवाली है, और राष्ट्रीय गान के विरुद्ध मुसलमानों को भड़काने के लिए लिखी गयी है।

१०—स्वामी रामतीर्थ का राष्ट्रीय सन्देश। इसमें सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों, कुसंस्कारों तथा अन्ध विश्वासों को छोड़ने और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करने की ज़ोरदार अपील की गयी है। यज्ञ तथा सन्तानोत्पत्ति आदि के विषय में स्वामी राम ने प्रचलित विचारों के विरुद्ध निर्भीक आलोचना की है। पुस्तक मनन करने योग्य है। पृष्ठ १२०। मूल्य बारह आने। अनु० और प्र०—श्री० नारायणप्रसाद जी अरोड़ा, पटकापुर, कानपुर।

११—संतान-संख्या का सीमा बन्धन। ले०—श्री० सन्तराम बी. ए.; प्र०—सरस्वती आश्रम, लाहौर। मूल्य साढ़े तीन रुपये। इस पुस्तक का उद्देश्य है—माता पिता जितनी सन्तान का पालन पोषण और शिक्षण यथोचित रूप से कर सकते हैं, और जितने बच्चों के उत्पन्न करने से उनका स्वास्थ्य नहीं बिगड़ता, उससे अधिक सन्तान पैदा करने से उन्हें परामर्श द्वारा रोकना; और, ऐसी वैज्ञानिक विधियाँ बतलाना, जिनकी सहायता से वे सन्तान-संख्या को अपने वश में रख सकें।

१२—हिन्दी राष्ट्र या सूबा हिन्दुस्थान। ले०—श्री धीरेन्द्र वर्मा; प्र० लीडर प्रेस, प्रयाग; मूल्य १), पृष्ठ ८५। भारतवर्ष में विविध प्रान्तों की सीमा निर्धारण तथा कुछ नवीन प्रान्तों के निर्माण के प्रश्न पर विचार हो रहा है। इस पुस्तक में यह बताया गया है कि भारत एक राष्ट्र नहीं है, वरन् कई राष्ट्रों का संघ है, और इसके मध्य में समस्त हिन्दी भाषा भाषी लोगों का देश एक राष्ट्र माना जा सकता है। लेखक का मत है कि इस दस करोड़ जनता के सूबे का नाम हिन्दुस्थान हो, और इसे विविध प्रयत्नों से मजबूत बनाया जाना चाहिए।

१३—राष्ट्रीय शिक्षा का इतिहास। ले०—श्री कन्हैयालाल; प्र०—काशी विद्यापीठ काशी; पृष्ठ लगभग तीन सौ; मूल्य दो रुपये। इसमें भारत के सतरह राष्ट्रीय शिक्षालयों का इतिहास तथा कार्यक्रम दिया गया है। पुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा की समस्या पर अच्छा प्रकाश डालती है।

१४—स्वराज्य और शिक्षा। ले०—रायबहादुर पंडित लज्जाशंकर झा एम० ए०। प्र०—भारती भंडार, काशी। पृष्ठ २४८; मूल्य डेढ़ रुपया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषों के साथ उसके गुणों पर भी प्रकाश डाला गया है। नागरिक के रूप में हमारे क्या कर्तव्य होने चाहिएँ, प्रजातंत्र प्रणाली की क्या आवश्यकता है, शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या है, राष्ट्रीय शिक्षा का क्या महत्व है, आदि विषयों पर विचार किया गया है।

१५—भाषा का प्रश्न। ले०—पं० चन्द्रबली पांडेय एम० ए०, प्र०—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। मूल्य बारह आने। इसमें राष्ट्रभाषा हिन्दी, उर्दू, और हिन्दुस्तानी का ऐतिहासिक और गुण-स्वरूपानुसार वर्णन किया गया है।

१६—हिन्दी बनाम उर्दू। ले०—पं० वेंकटेश नारायण तिवारी; प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। जो लोग यह कहते हैं कि भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा उर्दू है, उनके कथन का उत्तर देते हुए अंकों द्वारा हिन्दी और उर्दू की परिस्थिति बतायी गयी है।

१७—उर्दू का रहस्य। ले०—श्री० चन्द्रबलि पांडेय एम० ए०; प्र०—नागरीप्रचारणी सभा, काशी। मूल्य बारह आने। इसमें उर्दू के स्वरूप का मार्मिक विवेचन है। बहुत सी ऐतिहासिक बातों का भी विचार किया गया है।

१८—हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी। ले०—श्री० पंडित पद्मसिंह शर्मा; प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग। मूल्य सवा रुपया।

सुप्रसिद्ध विद्वान लेखक के भाषा सम्बन्धी विचार जानने योग्य है।

१९—भारत की वर्ण-व्यवस्था और स्वराज्य। ले० और प्र०—श्री० देवीदत्त जी 'टेम्प्रेंस प्रीचर'। मूल्य ।=), पृष्ठ ८०। पुस्तक का उद्देश्य यह है कि पाठक मत मतांतर, जाति पांति, और छुआछूत को मिटाकर देश और जाति को स्वाधीन करने में वीरों की भांति अग्रसर हों।

२०—भारतवर्ष में जाति-भेद। ले०—श्री० आचार्य क्षिति-मोहन सेन शास्त्री; प्र०—अभिनव भारतीय ग्रन्थमाला, हेरीसन रोड, कलकत्ता। पृष्ठ ३०४, मूल्य दो रुपये। इसमें वैदिक युग से लेकर अब तक के जाति-भेद की अवस्था तथा व्यवस्था का वर्णन है। यह भी दिखाया गया है कि भारत से बाहर कहीं भी जाति-भेद नहीं है। पुस्तक विचारणीय है।

२१—हिन्दू राष्ट्र का नव निर्माण। ले०—आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्र०—हिन्दी साहित्य मण्डल, दिल्ली। मूल्य २), पृष्ठ ३०२। लेखक ने भारतीय राष्ट्र को हिन्दू राष्ट्र का नाम दिया है। उनका मत है कि नव राष्ट्र-निर्माण में सबसे बड़ी बाधक हिन्दू जाति है, अन्य जातियाँ बहुत कुछ बढ़ी हुई हैं—यदि हिन्दू जाति उनके बराबर पहुँच जायगी तो अन्य जातियाँ खुशी से मिल जायँगी। इसके कुछ परिच्छेद ये हैं—ब्राह्मणत्व का नाश, जात-पांत तोड़ डालो, धर्म-पाखण्ड का नाश, अछूतपन का नाश, स्त्रियों को निर्भय करो, कुरीतियां और रूढ़ियों को नष्ट कर दो, तथा भाषा भाव और भेष।

२२—बहिष्कृत भारत। ले०—श्री० चम्पालाल जौहरी, प्र०—प्रताप पुस्तक माला, कानपुर। पृष्ठ ४०; मूल्य चार आने। अस्पृश्य जातियों के उत्थान की ओर देशवासियों का अधिक ध्यान आकर्षित करना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है।

२३—हिन्दू हित की हत्या। ले०—श्री० परिपूर्णानन्द जी वर्मा; प्र०—धर्म ग्रन्थमाला कार्यालय, ब्रह्मनाल, काशी। पृष्ठ ९५; मूल्य चार आने। इसमें हरिजनों के चुनाव के सम्बन्ध में ब्रिटिश प्रधान मंत्री ने जो निर्णय दिया था, उसकी आलोचना की गयी है। हरिजनों के चुनाव के सम्बन्ध में अच्छा विचार किया गया है।

२४—भारत का दलित समाज। ले०—श्री० रामनारायण यादवेन्दु बी० ए०। प्र०—'चांद' कार्यालय, प्रयाग। पृष्ठ १५८, मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें दलितों की समस्या के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है; धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया गया है।

२५—हमारे हरिजन। ले०—श्री दयाशंकर दुबे; प्र०—सरस्वती सदन, दारागंज, प्रयाग। सन् १९३४; मूल्य चार आने। सन् १९३१ की मनुष्यगणना के आधार पर भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों में रहनेवाले हरिजनों की आर्थिक और सामाजिक दशा का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

२६—दलितों की समस्या। ले०—दीवान गोकुलचन्द। प्र०—धर्मग्रन्थमाला कार्यालय, काशी। पृष्ठ ५८, मूल्य आठ आने। लेखक का मत है कि दलितों की संख्या यहाँ इतनी अधिक नहीं है, जितनी प्रायः दिखायी जाती है; और जो है भी, वह समाज में तेजी से घुली मिली जा रही है।

२७—अछूत समस्या। ले०—म० गांधी, अनु०—श्री० परिपूर्णानन्द वर्मा; प्र०—गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ। पृष्ठ १६६, मूल्य बारह आने। महात्मा गांधी के अछूतों सम्बन्धी अंगरेजी में लिखे लेखों का अनुवाद। विषय बहुत उपयोगी और विचारणीय है।

२८—महात्मा जी का महाव्रत। ले०—श्री व्यवहार राजेन्द्र सिंह। प्र०—महाकौशल हरिजन सेवक संघ, जबलपुर, पृष्ठ १७५।

साम्प्रदायिक निर्णय को बदलने और हरिजनों को उचित अधिकार दिलाने के सम्बन्ध में महात्मा गांधी के सन् १९३२ और १९३३ के दो उपवासों और उससे पहले और पीछे की घटनाओं का वर्णन। परिशिष्ट मे हरिजन सेवक संघ का परिचय भी दिया गया है।

२९—हिन्दुओ! सावधान। ले० और प्र०—पंडित रामचन्द्र द्विवेदी, देवघर। पृष्ठ १०४; मूल्य छः आने। दिल्ली के ख्वाजा हसन निजामी साहब ने 'दाइए इसलाम' नाम की एक पुस्तक लिखी थी, उसमें हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की युक्तियाँ बतायी गयी थीं। इस पुस्तक में उन युक्तियों का उत्तर दिया गया है।

३०—हिन्दू-मुस्लिम समस्या। ले०—डाक्टर बेनीप्रसाद; प्र०—साहित्य भवन, लिमिटेड, प्रयाग; पृष्ठ २१६, मूल्य २)। भारत की प्रमुख समस्या—हिन्दू मुस्लिम का भेद भाव—पर इस पुस्तक में ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोणों से विचार करते हुए उसे हल करने के उपाय बताये गये हैं।

३१—हिन्दू-मुसलिम प्रश्न। ले०—लाला लाजपतराय। प्र०—इंडियन नेशनल प्रेस, मछुआ बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता। सम्वत् १९८२। मूल्य आठ आने। हिन्दू मुसलिम प्रश्न पर लाला जी के विचारों का खास महत्व है।

३२—आजादी के रोड़े। ले०—श्री० राममनोहर सिंह। प्र०—अभिनव भारत ग्रन्थमाला; कलकत्ता; पृष्ठ १७१; मूल्य डेढ़ रुपया। पुस्तक में लेखक ने भारत की आजादी के सबसे जबर्दस्त रोड़े हिन्दू-मुसलिम अनेकता पर समयोचित प्रकाश डाला है। अल्पसंख्यकों के मतभेद पर निष्पक्ष विचार किया गया है।

३३—हिन्दुस्तान बनाम पाकिस्तान। ले०—श्री० रुद्रनारायण अग्रवाल। प्र०—लाजपतराय पबलिशिंग कम्पनी, कलकत्ता। पृष्ठ १५७, मूल्य बारह आने। हिन्दी में, पाकिस्तान सम्बन्धी यह सम्भवतः पहली

पुस्तक है; इसमें इस विषय की कई विचारणीय बातें हैं। यह सिद्ध किया गया है कि भारतवर्ष अखंड है, और अखंड रहेगा।

३४—हिन्दू-मुसलिम समस्या और पाकिस्तान। ले०—श्री० रघुवीरशरण दिवाकर; प्र०—मानव साहित्य सदन, वर्धा। पृष्ठ १०६, मूल्य एक रुपया। लेखक का कथन है कि पाकिस्तान की आवाज एक धोखे की टट्टी है; इसका ध्येय केवल यह है कि भोले भाले लोगों का ध्यान उनके जीवन-मरण के प्रश्नों से हटाकर आपस की तू-तू-मैं-मैं में डाल दिया जाय।

३५—पाकिस्तान। ले०—डाक्टर बेनीप्रसाद; प्र०—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ||=), पृष्ठ ७४। इसमें पाकिस्तान से सम्बन्ध रखनेवाले, भारतीय राजनीति के कई प्रश्नों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। इसके प्रकरण हैं—रूपरेखा का विकास, कानून और शासन, रक्षा तथा वैदेशिक सम्बन्ध, संघ प्रणाली, अल्पसंख्यक समुदायों की स्थिति, विधान और अधिकार। अंत में निष्पक्ष रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यदि भारत की राष्ट्रीय एकता कायम रहे तो अब भी वह नवीन संसार के विकास में अपना समुचित भाग ले सकता है।

३६—पाकिस्तान और क्षत्री। ले० और प्र०—राजा युवराज दत्तसिंह, लखीमपुर। सं० १९९७। मूल्य बारह आने। यह पुस्तक हमने देखी नहीं।

३७—हिन्दू-मुसलिम इत्तहाद की कहानी। ले०—श्री० स्वामी श्रद्धानन्द जी। प्र०—तेज प्रेस, देहली। पृष्ठ ४४। मूल्य दो आने। इसमें स्वामी जी ने हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी झगड़ों का संक्षिप्त इतिहास बताया है।

३८—देशभक्ति की पुकार। लाला लाजपतराय के विचारों का संग्रह। अनु०—श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा बी० ए०, कानपुर। पृष्ठ

२०२, मूल्य एक रुपया। कुछ लेख ये हैं--मुक्ति का मार्ग (अमरीका से म० गांधी के नाम भेजे हुए पत्र), देशभक्ति, जीवन का उद्देश्य, स्वदेशी आन्दोलन, हिन्दू राष्ट्रीयता का अध्ययन, पंजाब की दुर्दशा का मूल कारण, भारतीय नेताओं का कर्तव्य, कौमी सरगरमी की रूह। इन लेखों के ऊंचे भावों के सम्बन्ध में मूल लेखक का नाम ही काफी है।

३९—**विनोबा और उनके विचार**। सम्पादक—श्री० वियोगी हरि; प्रकाशक—सस्ता साहित्य-मण्डल, नयी दिल्ली; पृष्ठ २०४, मूल्य ॥)। इसमें 'प्रथम सत्याग्रही विनोबा' शीर्षक से महात्मा जी लिखित परिचय और राष्ट्रीय समस्याओं पर विनोबा के गंभीर विचारपूर्ण लेखों का संग्रह है।

४०—**विचार-विनिमय**। ले० और प्र०—शचीन्द्रनाथ सान्याल, नयागांव, लखनऊ। पृष्ठ १८६, मूल्य एक रुपया। लेखक सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी हैं; पुस्तक में उनके राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं सम्बन्धी विचार दिये गये हैं।

४१—**क्रान्तियुग की चिनगारियाँ**। संकलनकर्त्ता—सूर्यबली-सिंह; प्र०—हिन्दी पुस्तकालय, बनारस; पृष्ठ १६१, मूल्य १।)। राष्ट्रीय प्रश्नों के सम्बन्ध में गांधी जी, पं० जवाहरलाल, डा० भगवान-दास, श्री सम्पूर्णानन्द, पंडित सुन्दरलाल आदि विद्वानों के २८ लेखों का संग्रह है।

४२—**भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की रूप रेखा**। ले०—श्री रामनाथ 'सुमन'। प्र०—साधना-सदन, प्रयाग; पृष्ठ २४, मूल्य ≶)। भारतीय जनता के मन में राष्ट्रीय स्वाभिमान की जागृति की संक्षिप्त चर्चा।

शासनपद्धति ; (क) भारतीय—अपने देश की शासनप्रणाली के दोष दूर करने, और उसमें आवश्यक सुधार करने के लिए नागरिकों

को स्वदेश तथा विदेशों की शासनपद्धति का अच्छा ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। भारतवर्ष की शासनपद्धति के साहित्य पर विचार करने से ये बातें सामने आती हैं—यह साहित्य बहुत कम है, बहुत सी पुस्तकों के नये संस्करण नहीं हुए, और समय-समय पर शासन सम्बन्धी कुछ बड़े बड़े परिवर्तन होते रहने से पुरानी पुस्तकें उपयोगी नहीं रहीं। देशी राज्यों की शासनपद्धति पर साहित्य और भी कम है।

भारतवर्ष की राजप्रणाली सम्बन्धी साहित्य पहले पहल सन् १६१५ में सामने आया। इस वर्ष करीब-करीब एक साथ तीन पुस्तकें प्रकाशित हुईं:—(१) भारत शासन पद्धति, (२) भारतीय शासन पद्धति और (३) भारतीय शासन।

१—**भारत शासनपद्धति**। ले०—श्री० राधाकृष्ण झा। प्र०—खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर। पुस्तक बहुत योग्यता पूर्वक लिखी गयी है। विद्वान लेखक का स्वर्गवास हो गया। इस पुस्तक की विशेषता यह थी कि उसमें भारत की आधुनिक शासनपद्धति का वर्णन करने से पूर्व हिन्दुओं, मुसलमानों तथा मराठों की शासनपद्धति का अच्छा परिचय दिया गया। बहुत वर्ष हुए इसका दूसरा संस्करण हुआ; पर अब तो और नवीन, संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण की आवश्यकता है।

२—**भारतीय शासनपद्धति** (दो भाग)। ले०—श्री० अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी। मूल्य एक रुपया दो आने, पृष्ठ २२५। इसके वयोवृद्ध लेखक, पुस्तक की यथेष्ट मांग न होने से, हतोत्साह हो गये, और उन्होंने जैसे तैसे इसकी दूसरी आवृत्ति तो छपाई; फिर इस ओर से विमुख ही हो रहे। पुस्तक अच्छी थी, शासन सम्बन्धी कुछ विषयों पर विस्तृत रूप से लिखा गया था।

३—**भारतीय शासन**। ले०—श्री० भगवानदास केला। इसका समय-समय पर आवश्यकतानुसार संशोधन होता रहा है। अब इसका

नवाँ संस्करण सर्वसाधारण के सामने है। यह सन् १९४४ में प्रकाशित हुआ। पृष्ठ २५२; मूल्य डेढ़ रुपया। इसके उन्नीस परिच्छेदों में भारतीय शासन के सब आवश्यक विषयों का संक्षेप में विचार किया गया है। परिशिष्ट में संघ शासन के बारे में लिखा गया है। जहाँ तहाँ राष्ट्रीय दृष्टि से आलोचना भी है। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग।

४—भारतीय शासन। ले०—श्री० कन्हैयालाल वर्मा; प्र०—नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस; पृष्ठ ३५० सजिल्द, मूल्य ४)। भारत के पहले शासन विधानों पर प्रकाश डालते हुए १९३५ के शासन-विधान का आलोचनात्मक अध्ययन, स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं के वर्तमान संगठन और उनके सुधार के सुझाव मुख्य विषय हैं।

५—भारतीय शासन परिचय। ले०—पंडित नन्दकिशोर पांडेय एम० ए०, अध्यापक, आर्य विद्यालय कलकत्ता। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, २०३ हरिसन रोड, कलकत्ता। पृष्ठ २४३; मूल्य १।)। पुस्तक कलकत्ता विश्वविद्यालय के मेट्रिक के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है। आरम्भ में लेखक की प्रस्तावना अँगरेजी में है, प्रत्येक अध्याय के अन्त में कुछ प्रश्न दिये गये हैं, वे भी अँगरेजी में है। कहीं-कहीं पाठ्य विषय के बीच में भी ऐसे अंगरेजी शब्द दे दिये गये हैं, जिनका हिन्दी रूपान्तर नहीं है, और न देवनागरी अक्षरों में ही लिखे गये हैं। हमारे सामने पुस्तक का पहला संस्करण है, जो सन् १९४१ में छपा है।

६—भारतवर्ष की शासनपद्धति। ले०—श्री० दयाचन्द गोयलीय बी. ए.। प्र०—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। यह १९१६ में छपी थी। तब से देश में शासन विधान सम्बन्धी भारी परिवर्तन होगये, पर इस पुस्तक का नया संस्करण नहीं हुआ। मूल्य ॥); पृष्ठ १२२। प्रकाशन-समय के अनुसार खासी अच्छी है।

७—**भारतीय शासन व्यवस्था**। ले०—श्रीकान्त ठाकुर; विद्यालंकार; प्र०—पुस्तक मन्दिर, १७६ हरिसन रोड, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या ३५६, मूल्य अजिल्द १॥); सजिल्द १॥।)। पुस्तक वर्णनात्मक है, और वर्णन खुलासा किया गया है—बंगाल, बिहार, और संयुक्त-प्रान्त के उदाहरण विशेष रूप से दिये गये हैं। तीसरा अध्याय 'शासन सुधार का विकास' बहुत जानकारी से भरा हुआ है। संघ-शासन सम्बन्धी बातें भी दी गयी हैं; पर वे यदि पुस्तक के अन्त में अलग से दी जातीं तो अच्छा होता। पुस्तक उपयोगी है, और सस्ती भी। सन् १६४० में छपी है।

८—**नवीन भारतीय शासन विधान**। ले०—श्री० रामनारायण यादवेन्दु बी० ए०, एल-एल० बी। प्र०—नवयुग साहित्य निकेतन, आगरा। मूल्य २), पृष्ठ २७०। प्रथम संस्करण; सन् १६३८। पुस्तक के दो भाग हैं—प्रान्तीय स्वराज्य और संघ-शासन। संघ-शासन अमल में न आने से इसका व्यावहारिक महत्व कम रह गया। वर्तमान केन्द्रीय शासन को, पुस्तक में बहुत ही कम स्थान मिला है। पहला अध्याय 'शासन विषय के सिद्धान्त' बहुत अच्छा और उपयोगी है, और लेखक की अध्ययन-शीलता सूचित करता है।

६—**आधुनिक भारतीय शासन**। ले०—श्री० गोरखनाथ चौबे, एम० ए०। प्र०—लाला रामनारायण लाल प्रयाग। दूसरा संस्करण, पृष्ठ पौनेचार सौ, सजिल्द, मूल्य साढ़े चार रुपये। इसमें सन् १६३५ के शासन विधान के अनुसार जो शासनपद्धति भारतवर्ष में प्रचलित है, उसका विस्तार पूर्वक वर्णन है, कुछ बातें आलोचना पूर्ण भी हैं। अपने विषय की अच्छी पुस्तक है; और मेहनत से लिखी गयी है। शुरू में 'राजनैतिक भारत' का नक्शा दिया गया है; वह कई वर्ष पहले की स्थिति का है, पुस्तक के नाम के 'आधुनिक' शब्द से मेल नहीं खाता।

१०—**शासन-व्यवस्था की प्रारम्भिक पुस्तक**। ले०—श्री०

लाड़िलीप्रसाद सकसेना बी० ए० । मूल्य ।||), पृष्ठ ६२ । यह संयुक्त-प्रांत के नार्मल और ट्रेनिङ्ग स्कूलों के लिए लिखी गयी है । इसमें शासनपद्धति संक्षेप में बताथी जाकर, शिक्षा, स्वास्थ, कृषि और सहकारिता आदि की चर्चा है । नया संस्करण देखने में नहीं आया ।

११—**नवीन राज्य शासन** । ले०—श्री० रामचन्द्रजी संघी एम० ए० । प्र०—नर्वदा बुकडिपो, जबलपुर । तीन भाग; पृष्ठ ५६; ८३ और १३४ । मू० ।), ।–) और ।|); सन् १६२८—२६ । तीनों भागों में अभ्यासार्थ प्रश्न हैं । मध्यप्रान्त के मिडल स्कूलों के लिए स्वीकृत हैं । तीसरे भाग का 'विषय प्रवेश' इतिहास पाठकों के लिए अच्छा उपयोगी है ।

१२—**सरल भारतीय शासन** । ले०—श्री० भगवानदास केला; प्र०—लाला रामनारायण लाल, प्रयाग । चौथा संस्करण । सन् १६४४ । पृष्ट १०६; मूल्य ।||), यह लेखक की भारतीय शासन का छोटा संस्करण है, और साधारण योग्यता वाले प्रारम्भिक पाठकों को लक्ष्य में रख कर लिखी गयी है । समय-समय पर इसका नया संस्करण होते रहने से इसकी उपयोगिता बनी हुई है ।

१३—**सरल राज्य शासन** । ले० और प्र०—श्री० पण्डित नर्मदाप्रसाद मिश्र, जबलपुर । तीन भाग । सन् १६२६-२७ । मूल्य ।–), ।=) और ।|=); पृष्ट क्रमशः ७२, ६८, और १३४ । यह मध्यप्रांत की छटी, सातवीं और आठवीं क्लास के लिए स्वीकृत हैं । प्रथम दो भागों में विद्यार्थियों के अभ्यासार्थ आवश्यक प्रश्न भी हैं ।

१४—**भारतीय राज्य शासन** । ले०—श्री० भगवानदास केला; प्र०—लाला रामनरायण लाल, प्रयाग । तीसरा संस्करण, सन् १६४५, पृष्ट १५२ मूल्य एक रुपया । इसमें सेना, पुलिस, न्याय, जेल, खेती, सहकारिता, उद्योग धन्धों और व्यापार आदि पर भी प्रकाश डाला

गया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण रखा गया है; पहले दो परिच्छेद कम्पनी का शासन और पार्लिमेंट का शासन बिलकुल ऐतिहासिक ही हैं।। तीसरे संस्करण में अब तक के सुधारों का परिचय दे दिया गया है, और भाषा भी आसान की गयी है।

१५—हिन्दुस्तानी सुधार-गोरखधन्धा। ले०—श्री० गौरीशंकर मिश्र; प्र०—भारतवासी प्रेस, दारागंज, प्रयाग; मूल्य ।); पृष्ठ ५६। भारत में अंगरेजी शासन के कुपरिणाम और सन् १६३५ के विधान की बुराइयों पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।।

१६—भारतीय राजनीति और शासनपद्धति। ले०—श्री० कन्हैयालाल वर्मा; प्र०—एजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, बनारस। बड़े आकार के लगभग ५०० पृष्ठ; सजिल्द; मूल्य ३।।)। पहला संस्करण; सन् १६३६। इसमें भारत के पिछले पचास वर्षों के राष्ट्रीय आंदोलनों और शासन-सुधार का विस्तृत विवरण दिया गया है। सन् १६३५ के शासन विधान का परिचय देने के बाद अंतिम परिच्छेद में 'भारतीय लोकमत और शासन-सुधार' की चर्चा की गयी है।।

१७—भारत का नया शासन-विधान (प्रान्तीय स्वराज्य)। ले०—श्री० हरिश्चन्द्र गोयल, प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; मूल्य ।।।); पृष्ठ २२२। सन् १६३५ के विधान का जो अंश अप्रैल, १६३७ से भारत के प्रान्तों में लागू हुआ था, उसी पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार किया गया है। अंग्रेजों के शासनारम्भ से अब तक के विधानों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

१८—प्रान्तीय स्वराज्य की हकीकत। ले०—श्री० मुकुटधारी सिंह; प्र०—नवशक्ति प्रकाशन मन्दिर पटना; पृष्ठ ७२; अजिल्द; मूल्य ।=)। सन् १६३५ के शासन विधान के प्रान्तों सम्बन्धी अंश का, कांग्रेसी दृष्टिकोण से थोथापन दिखाया गया है।

१९—राष्ट्रीय पंचायत। सम्पादक—श्री० यशपाल बी० ए०,

एल-एल० बी०। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली। पृष्ठ ५५। मूल्य चार आने। इसमें राष्ट्रीय पंचायत या विधान सभा के उद्देश्य और विधान आदि के अलावा यह बताया गया है कि इससे देश की वैधानिक समस्या किस प्रकार सुलभ सकती है। यह म० गांधी, प० जवाहरलाल नेहरू आदि के लेखों का संग्रह है और बहुत उपयोगी है।

२०—औपनिवेशिक स्वराज्य या विधान परिषद्। ले०—श्री० रामनारायण यादवेन्दु; प्र०—नवयुग साहित्य निकेतन, राजामंडी, आगरा। पृष्ठ ७६, मूल्य दस आने। इसमें लेखक ने औपनिवेशिक स्वराज्य का स्वरूप बताया है और कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि औपनिवेशिक स्वराज्य वाले देशों के राजनैतिक अधिकारों का वर्णन किया है। पूर्ण स्वाधीनता ही भारत का लक्ष्य क्यों हो सकता है, आदि बातों पर भी प्रकाश डाला गया है।

२१—भारतीय शासन सुधार। सम्पादक—श्री० मातासेवक पाठक। मूल्य ॥); प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। सन् १९१८। इसमें तत्कालीन शासनपद्धति तथा उसके सुधार के लिए विविध योजनाएँ दी गयी हैं, साथ में सम्पादकीय वक्तव्य भी है।

२२—भारतवर्ष के लिए स्वराज्य। मूल अंगरेजी पुस्तक के लेखक श्री० श्रीनिवास शास्त्री हैं। प्र०—भारत सेवक समिति, प्रयाग। मूल्य ।=); सन् १९१७। पुस्तक तथ्यांकों और प्रामाणिक उदाहरणों से पूर्ण है। लेखक भारतवर्ष के लिए ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य के समर्थक हैं।

२३—स्वराज्य या सरकारी मसविदा (दो भाग)। सम्पादक—श्री० श्रीप्रकाश बी० ए०; प्र०—ज्ञान मण्डल, काशी। पृष्ठ ५८७, स० १९७५। सन् १९१९ के सुधारों का आधार यह मसविदा था। इसे तत्कालीन भारत-मंत्री श्री० मांटेग्यू और वायसराय चेम्सफोर्ड ने

मिल कर लिखा था। पहले भाग में खास सरकारी मसविदा है, और दूसरे में भारत की भूत और वर्तमान परिस्थिति की सरकारी आलोचना। भाषा सरल है, अन्त में शब्द-कोष भी दिया गया है। प्रचारार्थ इसका मूल्य आधा अर्थात् ॥।) कर दिया गया है। अब इसका केवल ऐतिहासिक मूल्य रह गया है।

२४—हिन्द स्वराज्य। महात्मा गान्धी ने मूल पुस्तक गुजराती में लिखी थी। आपके शब्दों में, इसमें बैर के बदले प्रेम की शिक्षा, उद्दण्डता को हटा कर स्वार्थ-त्याग को स्थान दिया गया है। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। पृष्ठ ६४, मूल्य।-)। इसकी कई आवृत्तियां हो चुकी हैं। इसमें महात्माजी के मशीनों और आधुनिक सभ्यता सम्बन्धी विचारों का भी समावेश है। पुस्तक वार्तालाप के रूप में है।

२५—गांधी सिद्धांत। सम्पादक और प्रकाशक—श्री० लक्ष्मण नारायण गर्दे, कलकत्ता, सं० १९७७। मूल्य १।); पृष्ठ १२४+२७। यह महात्माजी की 'हिंन्द स्वराज्य' गुजराती पुस्तक का अनुवाद है (देखो 'हिन्द स्वराज्य')। अन्त में कुछ उपयोगी बातें परिशिष्ट रूप में दी गयी हैं!

२६—नेहरू कमेटी की रिपोर्ट। अनु०—शिवकुमार शास्त्री, प्र०—विजय प्रेस, प्रयाग। सन् १९२९ ई०। मूल्य दो रुपये। सन् १९२८ ई० में कांग्रेस की ओर से सब दलों को निमंत्रित करके शासन-योजना बनाने के लिए पंडित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में जो कमेटी नियुक्त हुई थी, उसकी यह रिपोर्ट है। इसमें बहुत सी जानने योग्य बातें हैं।

२७—गोलमेज सभा। ले०—श्री० चतुर्सेन जी शास्त्री; प्र०—गङ्गा पुस्तकमाला, लखनऊ। सं० १९८८। मूल्य १॥), पृष्ठ २४२। सन् १९३०। अंगरेज़ों और हिन्दुस्तानियों की उस पहली गोलमेज़ सभा

का वृत्तान्त, जो शासन विधान बनाने के सम्बन्ध में हुई थी। गांधी-इरविन सन्धि की शर्तें भी दी गयी हैं; भारतवर्ष की अवस्था, राजनैतिक अशान्ति, लाहौर कांग्रेस, म० गांधी की चेतावनी भी है।

२८—**गोलमेज कान्फ्रेन्स**। ले०—श्री० निरंजन शर्मा 'अजित'; प्र०—श्रीवेंक्टेश्वर प्रेस; बम्बई। पृष्ठ, एक सौ। भारतीय शासन विधान के सम्बन्ध में लंदन में जो गोलमेज सभा हुई थी; उसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इससे देश की तत्कालीन राजनैतिक स्थिति का ज्ञान होता है।

२९—**म्युनिसिपल शासन**। ले० और प्र०—श्री० अम्बाप्रसाद तिवारी, एडवोकेट, उज्जैन। डिमाई अठपेजी आकार; पृष्ठ ११६, सन् १९४१; मूल्य एक रुपया। श्री० तिवारी जी ने (इनका अब स्वर्गवास हो गया) इस पुस्तक की रचना करके बहुत उपयोगी कार्य किया है। पुस्तक बहुत परिश्रम और अध्ययन करके लिखी गयी है। भाषा उर्दू मिश्रित है। म्युनिसिपेलटियों के संगठन, अधिकार कर्तव्य और म्युनिसिपल कानून आदि की विस्तृत चर्चा है। म्युनिसपेलटियों के मेम्बरों के लिए तो इन विषयों का ज्ञान अनिवार्य ही है। मिलने का पता श्री० हरसिद्धि प्रिंटिंग प्रेस, नयी सड़क, उज्जैन।

३०—**देशी राज्य शासन**। ले०—श्री० भगवानदास केला; प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। सन् १९४२। पृष्ठ १६+५६०। सजिल्द, मूल्य ३॥); देशी राज्यों की शासनपद्धति के सम्बन्ध में यह खास पुस्तक है। इसके दो भाग हैं। पहले भाग के बीस अध्यायों में 'अंगरेजों के आने से पूर्व' से 'देशी राज्य और संघ शासन' तक के बारे में लिखा गया है। दूसरे भाग के छप्पन अध्यायों में नमूने के तौर से लगभग सत्तर रियासतों की शासनपद्धति और राजनैतिक जागृति आदि का विचार किया गया है। ये रियासतें भारतवर्ष के सभी भागों की, और सभी प्रकार की हैं। पुस्तक के अन्त में दो परिशिष्ट हैं; एक में 'देशी राज्यों की जनसंख्या और उनमें शिक्षा प्रचार' की एक

तालिका है; दूसरे में देशी राज्यों के बारे में एक बहुत उपयोगी प्रश्नावली है।

३१—**जयपुर राज्य का शासन विधान**। ले०—श्री० शंकरलाल शर्मा बी० ए०; प्र०—साहित्य भवन, लक्ष्मणगढ़, जयपुर। पृष्ठ ११०, सजिल्द, मूल्य ३)। जयपुर की राज्य व्यवस्था जानने के लिए इसमें काफी सामग्री बतायी जाती है। पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी।

३२—**निर्वाचन पद्धति**। ले०—प्रो० दयाशंकर दुबे एम० ए०, और भगवानदास केला। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। चौथा संस्करण; पृष्ठ ८२, मूल्य ।।।), सन् १९४४। सन् १९२६ में पहला संस्करण 'निर्वाचन नियम' नाम से हुआ था। सन् १९३८ से नाम निर्वाचन पद्धति किया गया, और समय समय पर बदलने वाले नियमों की जगह, सिद्धान्त का विशेष विचार किया गया।

शासनपद्धति; (ख) अन्य देशीय—शासन सम्बन्धी विषयों से अनुराग रखनेवालों के लिए अपने ही देश की शासन पद्धति का विचार करना काफी नहीं होता। उन्हें अन्य देशों की शासन पद्धति का भी विचार करना होता है। कहाँ कौनसी बात अधिक सुविधाजनक या लाभकारी है, और उसका स्वदेश में कहाँ तक उपयोग किया जा सकता है, यह ज्ञान बड़े महत्व का है। हिन्दी भाषा में अभी इस विषय का साहित्य बहुत कम है। इसके अलावा बहुत सी पुस्तकें पुरानी हो जाती है, उनकी उपयोगिता बहुत कम रह जाती है। आवश्यकता है कि इस परिवर्तनशील समय में इन पुस्तकों का नया संस्करण जल्दी-जल्दी होता रहे। जो हो, हमें हिन्दी में इस विषय की नीचे लिखी पुस्तकें ही होने की बात मालूम है—

१—**दुनिया की शासनप्रणाली और आज का योरपीय युद्ध; दो भाग**। ले०—श्री० रामचन्द्र वर्मा; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल,

नई दिल्ली, मूल्य ||।) प्रति भाग। यह अंगरेजी लेखक जी० डी० एच० कोल की 'माडर्न पालिटिक्स' के एक भाग का अनुवाद है। पहले भाग में ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका तथा जर्मनी की, और दूसरे भाग में रूस टर्की, जापान और भारत की शासनपद्धति का विवेचन है। श्री० कोल का दृष्टिकोण उदार है। हाँ, अब बहुत से देशों की परिस्थिति बदल गयी है, और पुस्तक के नये संस्करण की आवश्यकता है।

२—शासनपद्धति। ले०—श्री० प्राणनाथ विद्यालंकार; प्र०—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। मूल्य १।); इसमें बहुत से देशों की शासनपद्धति संक्षेप में दी हुई है। पुस्तक पुरानी है; नये संस्करण, की आवश्यकता है।

३—संसार शासन। सम्पादक—श्री रामनारायण मिश्र; प्र०—'भूगोल' कार्यालय, इलाहाबाद; पृष्ठ २५६, (सजिल्द) मूल्य २)। इसमें दुनिया के प्रायः सभी प्रमुख देशों की शासनपद्धति का परिचय है। अंतिम अध्याय में, 'संसार-शासन सार' शीर्षक देकर आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, इथियोपिया, कनाडा आदि उन देशों का संक्षेप में परिचय दे दिया गया है, जिनकी चर्चा पुस्तक में स्वतन्त्र रूप से नहीं की गयी है। युद्ध के कारण अनेक देशों का नक्शा बदल गया है; इसलिए, यद्यपि हमारे सामने इस पुस्तक का, सन् १९४४ में प्रकाशित दूसरा संस्करण है, इसमें संशोधन तथा परिवर्तन की काफी गुन्जाइश है।

४—योरप की सरकारें। ले०—श्री० चन्द्रभाल जौहरी; प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग। पृष्ठ २७६, मूल्य ३)। इंगलैंड, फ्रांस, इटली, जर्मनी, स्विटजरलैंड और रूस की सरकारों का हाल विशेष विस्तार से दिया गया है। पुस्तक रोचक ढङ्ग से लिखी गयी है। इससे इन देशों की, वर्तमान महायुद्ध से पहले की, शासनपद्धतियों का अच्छा ज्ञान होता है।

५—स्वराज्य। ले०—प्रो० बालकृष्ण एम० ए०। प्र०—के. सी.

भल्ला, प्रयाग। सन् १९१७। पृष्ठ २९५। मूल्य १।)। इसमें संसार के स्वराज्य-भोगी राज्यों—इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी संयुक्त राज्य अमरीका, और स्विटजरलैंड—की शासनपद्धति का अच्छा विचारपूर्ण विवेचन है। कुछ सिद्धांत का भी समावेश है, भाषा भी अच्छी है। पर अब पुस्तक पुरानी पड़ गयी है।

६—ब्रिटिश साम्राज्य शासन। ले०—प्रो० दयाशंकर दुबे एम० ए०, और भगवानदास केला। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज; प्रयाग। तीसरा संस्करण, सन् १९४५। पृष्ठ डेढ़ सौ। मूल्य सवा रुपया। इस के पहले भाग में कुछ ऐतिहासिक परिचय के साथ ग्रेट-ब्रिटन तथा उत्तरी आयलैंड की शासनपद्धति बतायी गयी है। दूसरे खंड में आयरिश फ्री स्टेट, स्वाधीन उपनिवेशों और उपनिवेश विभाग के अधीन भू-भागों, के शासन का वर्णन है।

७—इंगलैंडीय शासन। ले० और प्र०—श्री० गंगाप्रसाद वर्मा। मूल्य आठ आने। पुस्तक हमारे सामने नहीं है। कई वर्ष हुए, देखी थी, ऐसा याद पड़ता है।

८—पार्लिमेंट। ले०—श्री० सुपार्श्वदास गुप्त बी० ए०। प्र०—राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा, झालरापाटन। मूल्य ॥।=), पृष्ठ २५६। सन् १९१७। यह अंगरेजी पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। आवश्यक परिशिष्ट, इतिहास सम्बन्धी 'फुटनोट' तथा पेरेग्राफों के शीर्षक आदि हिन्दी भाषान्तर की विशेषताएँ हैं। अपने विषय की बहुत अच्छी पुस्तक है, और परिश्रम से लिखी गयी है।

९—इंगलैंड के सांगठनिक क़ानून। ले०—श्री० सुपार्श्वदास गुप्त बी० ए०। प्र०—कुमार एण्ड सन्स, आरा। सम्वत् १९८१। पृष्ठ १५७, मूल्य १॥)। इसके कुछ विषय ये हैं :—क़ानून की प्रभुता, शारीरिक स्वाधीनता, वाक्-स्वतन्त्रता, सार्वजनिक सम्मेलन का अधिकार, अशान्ति दमन क़ानून, रूढ़ियों की शक्ति का प्रादुर्भाव, आदि।

इसके अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि इंगलैंड के क़ानून कितने स्वाभाविक, और नागरिक स्वतन्त्रता के रक्षक हैं।

१०—**जापानी राज्य व्यवस्था**। ले०—श्री० गदाधर सिंह, प्र०— प्रकाश पुस्तकालय, अजमेर। मूल्य चार आने। बहुत पुरानी पुस्तक है। अब जापान बदल गया और बदल रहा है।

११—**अमरीकन संयुक्त राज्य की शासनप्रणाली**। ले०—श्री० देवीप्रसाद गुप्त; प्र०—राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर, जबलपुर। सम्वत् १६७८। मूल्य १|||-); हमें यह पुस्तक देखे बहुत समय होगया, इस समय हमारे सामने नहीं है।

१२—**रूस का पंचायती राज्य**। ले०—श्री० प्राणनाथ विद्यालंकार। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। सम्वत् १६८०। मूल्य बारह आने। पुस्तक हमने देखी नहीं है।

१३—**जर्मनी की राज्य व्यवस्था**। ले०—श्री० मातासेवक पाठक। प्र०—विश्वमित्र कार्यालय; कलकत्ता। मूल्य आठ आने। सन् १६१८। यह पुस्तक छपने के समय अच्छी उपयोगी थी; अब तो इसमें बतायी हुई शासनपद्धति केवल इतिहास की चीज़ रह गयी है। नयी ही पुस्तक चाहिए।

शासन-इतिहास—किसी देश का शासन-इतिहास जानना बहुत मनोरंजक, शिक्षाप्रद और उपयोगी होता है। इससे हमें मालूम होता है कि शासनपद्धति सम्बन्धी कौनसी व्यवस्था कब और किस दशा में ऐसी होगयी कि उस में परिवर्तन की आवश्यकता हुई और फिर उसका स्वरूप कैसा हुआ। यद्यपि शासनपद्धति की कुछ पुस्तकों में प्रसंगानुसार ऐसा वर्णन किया जाता है, इस विषय की स्वतंत्र पुस्तकों की बहुत आवश्यकता है। हमारे सामने ऐसी एक ही पुस्तक है—

भारतीय राजनीति के अस्सी वर्ष। ले०—श्री० सी.वाई.चिन्तामणि। अनु०—श्री० केशवदेव शर्मा। प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी,

प्रयाग; पृष्ठ २२४; मूल्य एक रुपया। यह लेखक के चार व्याख्यानों का हिन्दी रूपान्तर है; इससे सन् १८५७ से १९३५ तक की भारतीय राजनीति का अच्छा ज्ञान होता है।

दण्ड विधान—हिन्दी में इस विषय का सिद्धान्त सम्बन्धी साहित्य अभी बहुत कम है। भारतवर्ष के बहुत से बड़े-बड़े नेता जेल और कालापानी आदि का अनुभव कर चुके हैं, और अभी तक करते आ रहे हैं। उनमें से किसी-किसी ने ही अपने अनुभव लिखे हैं। न्यायाधीशों और जेल आदि के अधिकारियों में से किसी ने दंड के प्रश्न पर अपने व्यापक विचार नहीं लिखे। आवश्यकता है कि इस विषय पर खूब साहित्य तैयार हो, जिससे उचित लोकमत तैयार होकर यहाँ की दंड प्रणाली में यथेष्ट सुधार हो।

१—**अपराध चिकित्सा**। ले०—श्री० भगवानदास केला। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ ३२०, मूल्य डेढ़ रुपया, सन् १९३९। इसके पहले खंड में जेल, कालापानी, फांसी आदि वर्तमान अपराध चिकित्सा की आलोचना करते हुए इसकी असफलता बतायी गयी है। दूसरे खण्ड में अपराधों की उत्पत्ति के भिन्न भिन्न कारणों का विचार किया है। तीसरे खंड में अपराध-निवारण के लिए घर का कार्य, शिक्षा का प्रभाव, तथा समाज और राज्य का कर्तव्य दर्शाया गया है। अन्तिम खंड में वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति है।

२—**अपराध और दण्ड**। ले०—सर्वश्री परमेश्वरीलाल गुप्त और धूम विहारीलाल सकसेना। प्र०—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, काशी। पृष्ठ १२२+५। मूल्य एक रुपया काट कर डेढ़ रुपया किया गया। सन् १९४३। पुस्तक में अपराध, अपराधी और दण्ड के विषय में बहुत जानकारी भरी हुई है। पाठक के मन में इन विषयों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है। पुस्तक छोटी होते हुए भी उपयोगी है। इसके लेखकों का मत है कि अपराधी जातियों के उन्मूलन के लिए

सन्तान उत्पन्न करने योग्य समस्त स्त्री पुरुषों की जनन-शक्ति नष्ट कर दी जाय। यह विषय बहुत विवाद-ग्रस्त है। इसके लेखकों का कथन है कि 'हिन्दी क्या किसी भारतीय भाषा में सम्भवतः इस विषय की एक भी पुस्तक नहीं है। आश्चर्य है कि इन लेखकों को दूसरी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की बात तो दूर रही; हिन्दी की भी, सन् १९३९ की प्रकाशित पुस्तक का पता न लगा।

३—दण्ड शास्त्र। ले०—श्री० प्रकाशनारायण सकसेना; प्र०—यू० पी० डिस्चार्ज्ड प्रिजिनर्स एड सोसायटी, कौंसिल हाउस, लखनऊ; मूल्य १।), पृष्ठ २७८। सजा की भावना और उसके तरीकों का विकास, जेलों का इतिहास और वर्णन तथा जेलों के नियमादि पर प्रकाश डाला गया है। कैदी के साथ होने वाले व्यवहार तथा उनके सुधार के सम्बन्ध में जो प्रयत्न हुए हैं, उनकी भी चर्चा हैं।

४—न्याय का संघर्ष। ले०—श्री० यशपाल और प्रकाशपाल; प्र०—विप्लव कार्यालय, लखनऊ; मूल्य ।।।), पृष्ठ १४४। इस पुस्तक में हमारी परिस्थितियों के लिए अनुपयुक्त और जर्जर न्याय की धारणा का विश्लेषण किया गया है। अपनी खास शैली में लेखकों ने अनेक बातों पर गांधी जी की नीति पर भी अपनी आजाद राय जाहिर की है।

५—प्राण-दण्ड। सम्पादक—श्री० चतुरसेन शास्त्री; प्र०—हिन्दी साहित्य मण्डल, दिल्ली; मूल्य १।।), पृष्ठ १६०, सजिल्द। 'चाँद' के फाँसी-अंक के लिए आयी हुई कुछ अप्रकाशित सामग्री का संकलन है। कई लेखकों ने प्राण-दंड का अनौचित्य लेखों तथा कहानियों द्वारा सिद्ध किया है।

६—कालेपानी की कारावास कहानी। ले०—श्री० भाई परमानन्द एम. ए.। प्र०—लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी, लाहौर। दूसरी बार, सं० १९७९। पृष्ठ २३८। मूल्य १।।) इसमें हवालात,

ज़िला-जेल, सेंट्रल जेल, और कालेपानी के जीवन के सम्बन्ध में एक भुक्तभोगी का करुण जनक अनुभव अंकित है। जातीय उत्थान, स्वाधीनता का मार्ग, देश और जातीयता, प्राच्य और पाश्चात्य, आदि कुछ अन्य विषयों पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है।

७—अन्दमान की गूँज। इसमें श्री० बीर सावरकर जी के कालेपानी से भेजे हुए, उनके भाई के नाम के पत्र हैं। नजरबन्द कैदी, प्रान्तीयता, वैयक्तिक मत, महायुद्ध का कालेपानी पर प्रभाव, मातृऋण, शासन सुधार, सेना आदि का विचार है। अनुवादक हैं, श्री० सिद्धनाथ माधव लौंढे बी. ए.। प्र०—प्रणवीर कार्यालय, नागपुर; पृष्ठ १०८, मूल्य ||=)।

८—भारतीय जेल। ले०—श्री० महताबसिंह वर्मा। प्र०—देशभक्त कार्यालय, मैनपुरी। मूल्य ||), पृष्ठ १०२, सं० १९७९। लेखक जेल-जीवन के अनुभवी हैं। पुस्तक में जेल-नियम, जेल-भोजन, जेल-दंड, जेल अधिष्ठाता; सेंट्रल जेल के विभाग, आदि सभी मुख्य विषयों पर प्रकाश डाला गया है। आवश्यक चित्र या फार्म आदि के नमूने भी दिये गये हैं।

९—मेरे जेल के अनुभव। प्र०—प्रताप प्रेस, कानपुर। मूल्य |=)। इसमें महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका में तीन वार की जेल-यात्रा के अनुभव हैं। महात्मा जी का जीवन हर दशा में शिक्षाप्रद होता है। यह पुस्तक विशेषतया सत्याग्रहियों के विचार करने योग्य है।

१०—जेल में चार मास। ले०—श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे, सम्पादक 'भारतमित्र', सम्वत् १९७९, मूल्य |=)। इस पुस्तक से अन्य साधारण बातों के अलावा बंगाल के जेलों की परिस्थिति का अच्छा ज्ञान होता है। लेखक ने अपने देश-प्रेमी कैदी साथियों का भी परिचय दिया है।

११—कारावास की रामकहानी; १९२१-२२। ले०—पं० नरदेव शास्त्री। प्र०—भारतीय प्रेस, देहरादून। पृष्ठ २००। भाषा खूब मनोरञ्जक है। जेल की बहुत सी बातों की उपयोगी जानकारी है। लेखक ने अपने जेल के अनभवों का वर्णन किया है। जेल-प्रणाली पर भी विचार किया गया है, और उसमें सुधारों की आवश्यकता बतायी गयी है।

१२—हमारी कारावास कहानी। ले०—श्री भवानीदयाल जी। प्र०—सरस्वतीसदन, इन्दौर। सन् १९१८। मूल्य ॥), पृष्ठ ८६। लेखक १९१२ में दक्षिण अफ्रीका गये, और उन्होंने १९१३ के सत्याग्रह में भाग लिया। इसी प्रसंग में आपने जेलवास किया। उसका पुस्तक में रोचक वर्णन है।

१३—जेल-कहानी। ले०—लाला खुशहालचन्द खुर्सन्द; प्र०—मिलाप पुस्तकालय, लाहौर। पृष्ठ १७२; मूल्य एक रुपया। इसमें हैदराबाद-सत्याग्रह की घटनाओं का वर्णन है। इससे हैदराबाद के जेलवासियों के जीवन का परिचय मिलता है।

१४—कारागार। लेखिका—श्रीमती उर्मिला देवी शास्त्री; प्र०—रावी फाइन आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स, लाहौर। पृष्ठ १४७, मूल्य बारह आने। जेल-जीवन के अनुभवों के आधार पर, इसमें आधुनिक जेलों की वास्तविक परिस्थिति का जीता-जागता चित्र खींचा गया है।

१५—नारक-छाया। ले०—त्यागी रियासती। प्र०—प्रदीप कार्यालय, मुरादाबाद। पृष्ठ १२६; मूल्य बारह आने। इसमें एक पत्रकार ने अपने जेल-जीवन का परिचय देते हुए राजपूताने की एक प्रमुख रियासत की जेलों की दुर्दशा और वहाँ होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया है। इसके अलावा इसमें लेखक के जेल जीवन के अहिन्सा और सत्य के वे प्रयोग भी हैं, जिनसे जेल-जीवन में कुछ सुधार हुआ।

राजनैतिक आन्दोलन; (क) भारतीय—राजनैतिक आन्दोलन सम्बन्धी साहित्य का राजनीति-साहित्य में एक विशेष स्थान होता है। भारतवासी सदा स्वतन्त्रता-प्रेमी रहे हैं, और जब कभी उन्हें किसी शत्रु ने अपने अधीन करने का प्रयत्न किया है, उन्होंने उसके विरोध का भरसक आन्दोलन किया है। दसवीं ग्यारहवीं सदी तक तो हिन्दू ज्यादातर स्वतन्त्र ही रहे। पीछे मुसलमानों के शासन-काल में भी उन्होंने कभी सामूहिक रूप से पराधीनता स्वीकार नहीं की, कभी देश के एक हिस्से में उनकी बेचैनी दिखायी दी, कभी दूसरे हिस्से में। आखिर में मुसलमान यहाँ के ही निवासी हो गये। जो हो; राजपूत, सिक्ख और मराठों की वीरता और त्याग से इतिहास भरा हुआ है, तथापि उनके राजनैतिक आन्दोलन का साहित्य हिन्दी में बहुत कम है। हाँ, अंगरेजों के शासनकाल में जो आन्दोलन हुआ, उसके सम्बन्ध में कुछ अच्छा साहित्य है, तथा तैयार हो रहा है।

भारतीय राष्ट्र-सभा अर्थात् कांग्रेस का जन्म सन् १८८५ ई० में हुआ। तब से देश में राजनैतिक विषयों की चर्चा बढ़ने लगी। परन्तु आरम्भ के तीस वर्ष उसका अधिकांश कार्य अंगरेजी भाषा में होने से, हिन्दी के राजनैतिक साहित्य की उस से विशेष प्रगति न हुई! सन् १९१३ ई० से इसमें धीरे-धीरे सुधार हुआ, कांग्रेस कुछ थोड़े से अंगरेजी जाननेवालों की सभा न रह कर, सर्वसाधारण जनता के सम्पर्क में आने, तथा हिन्दी में काम करने लगी। ज्यों ज्यों राष्ट्रीय आन्दोलन बढ़ा, राष्ट्र-भाषा हिन्दी के राजनैतिक साहित्य को प्रोत्साहन मिलना स्वाभाविक था!

१—सन् १८५७ के गदर का इतिहास (दो भाग)। ले०—श्री० शिवनारायण द्विवेदी। मूल्य ३।।)+४।।), पृष्ठ १३३२, सं० १९७९। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। सन् १८५७ ई० की महान घटना ने अपने बाद का भारतीय इतिहास एक खास सांचे में ढाल दिया; इसके सम्बन्ध में लोगों में नाना प्रकार की झूठी-सच्ची बातें

या किम्बदन्तियां प्रचलित हैं। इस पुस्तक में बहुत संयम से साफ-साफ बताया गया है कि इस घटना के कारण क्या थे, और इसमें क्या क्या बातें हुईं। पुस्तक कई प्रमाणिक ग्रन्थों के आधार पर लिखी गयी है।

२—ग़दर का इतिहास। ले०—श्री० पद्मराज जैन। प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। मूल्य १), पृष्ठ २६३। सन् १६२३। इसके आरम्भ में, भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना और विस्तार पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है।

३—सिपाही विद्रोह। ले०—पं० ईश्वरी प्रसाद शर्म्मा। प्र०—राष्ट्रीय ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, कलकत्ता। सं० १६७६। मूल्य ४); पृष्ठ ५२५। सचित्र है, कई प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन-शैली रोचक है। पुस्तकांत में, सिंहावलोकन बहुत विचारपूर्ण है।

४—सन् ५७ का ग़दर। इसमें भारतीय असफल स्वातन्त्र्य-युद्ध की उत्पत्ति और उसके दमन का अच्छा वर्णन है। पृष्ठ ३२६, मूल्य १॥)। पुस्तक हमारे सामने नहीं है।

५—क्रान्ति युग के संस्मरण। ले०—श्री० मन्मथनाथ गुप्त; प्र०—साहित्य सेवक कार्यालय, काशी। पृष्ठ २१५; मूल्य, सवा रुपया। क्रान्तिकारी रङ्गमंच के एक प्रमुख नेता की लेखनी से निकली हुई यह पुस्तक अपने विषय की एक प्रामाणिक रचना है। इसमें भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास है। इससे पता चलता है कि सारे भारत का क्रान्तिकारी आन्दोलन एक सूत्र में ग्रथित तथा एक ही उद्देश्य से चलाया गया था।

६—भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास। ले०—आचार्य नरेन्द्रदेव। प्र०—नवयुग प्रकाशन मन्दिर, बनारस छावनी। मूल्य ॥), पृष्ठ ८६। यह श्री० कन्हैयालालजी की पुस्तक 'कांग्रेस के प्रस्ताव; १८८५-१६३१' की भूमिका है। इसमें भारतीय राष्ट्रीय जीवन के विकास का शृंखलाबद्ध सुन्दर वृत्तान्त है।

७—राष्ट्रीय आन्दोलन। ले०—श्री प्रभूदयाल मीतल; प्र०—राष्ट्र भाषा पुस्तक भण्डार, मथुरा। पृष्ठ ३१६। मूल्य १॥), सं० १९७९। पहला संस्करण आन्दोलन के, सन् १९२२ ई० तक के क्रम-बद्ध इतिहास की दृष्टि से उपयोगी है। नया संस्करण देखने में नहीं आया।

८—नवयुवको! स्वाधीन बनो!। संकलयिता और प्र०—श्री० जीतमल लूणिया, हिन्दी साहित्य मन्दिर, आगरा। मूल्य ॥), पृष्ठ ८०। भिन्न-भिन्न नेताओं के जोशीले लेखों या भाषणों का अच्छा संग्रह है। आरम्भ में सुप्रसिद्ध आयरिश वीर मेक्स्निी का परिचय और उपदेश है।

९—माडरेटों की पोल। ले०—श्री चांदकरण शारदा बी० ए०, एल-एल० बी०। प्र०—महेश पुस्तकालय, अजमेर। पृष्ठ ९६, मूल्य चार आने। इसमें उन प्रश्नों का उत्तर दिया है, जो माडरेट लोग साधारण आदमियों से जेल-यात्रा द्वारा स्वराज्य, तथा असहयोग के सम्बन्ध में किया करते हैं।

१०—यंग इण्डिया। अनु०—श्री० छविनाथ पांडेय, बी० ए०। प्र०—हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता। तीन भाग, पृष्ठ ४४०+७८९+९५४। मूल्य १)+१॥)+२)। प्रथम भाग में महात्मा गांधी का संक्षिप्त जीवनचरित्र और 'यंग इंडिया' साप्ताहिक पत्र के इतिहास के अतिरिक्त डेढ़ सौ पृष्ठ की भूमिका है, जिसमें भारतवर्ष और कम्पनी के सम्बन्ध का तथा यहाँ के असहयोग आन्दोलन का इतिहास है। पुस्तक में, जिस दिन से महात्मा जी ने 'यङ्ग इण्डिया' का भार अपने हाथ में लिया, तब से लेकर उनकी जेल-यात्रा तक के लेखों का विषयवार संग्रह है। पुस्तक का सस्तापन 'सुलभ साहित्य सीरीज़' के नाम को सार्थक करनेवाला है।

यह पुस्तक 'क्रांतिकारी विचार' आदि दूसरे नामों से भी बाज़ार में आयी है। यह ठीक नहीं। इससे पाठकों को धोखा होता है।

११—देहरादून और गढ़वाल के राजनैतिक आन्दोलन का इतिहास; १९१८–३१। सम्पादक—श्री० नरदेव शास्त्री, मूल्य ।=), पृष्ठ १२८। पुस्तक में संक्षेप में भारत में ब्रिटिश राज्य के इतिहास का भी परिचय है। एक तालिका में जिला देहरादून से कांग्रेस आन्दोलन में जेल-यात्रा करनेवालों की व्योरेवार नामावली है।

१२—तिलक के स्वराज्य पर बीस व्याख्यान। अनु०—श्री० राधामोहन गोकुल जी। प्र०—ग्रन्थ प्रकाशक समिति, बनारस। सं० १९७४; मूल्य, सवा रुपया।

१३—लो० तिलक की जमानत। अनु०—श्री० ब्रजनन्दनप्रसाद मिश्र, पीलीभीत। मूल्य १।); पृष्ठ १९०+१३६। इसमें ये विषय है—राजद्रोह का कानून, जमानत का मुकदमा बैरिस्टरों की वहसें, हाईकोर्ट काफैसला, स्वराज्य के व्याख्यान, सम्वादपत्रों की राय और लोकमान्य की जीवनी। पुस्तक सन् १९१६ की होने पर भी ऐतिहासिक एवं राजनैतिक महत्व की है। अनुवादक की भूमिका विचारपूर्ण है।

११—स्वदेशी आन्दोलन और बायकाट। मूल लेखक—बाल गंगाधर तिलक; अनु०—श्री० माधवराव सप्रे; प्र०—डो० वासुदेवराव लिमये, सीतावर्डी, नागपुर; बड़े आकार में ६८ पृष्ठ। मूल्य ढाई आने। स्वदेशी आन्दोलन के आरम्भ में उसकी नीति स्पष्ट करने के लिए, मराठी 'केसरी' में प्रकाशित लेखमाला का भावानुवाद।

१५—स्वतन्त्रता की ओर। ले०—श्री० हरिभाऊ उपाध्याय, प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; पृष्ठ ३६०, सजिल्द, मूल्य १॥)। इस पुस्तक में स्वतंत्रता को जीवन का लक्ष्य बताते हुए, उसे प्राप्त करने के साधनों की चर्चा की गयी है। संस्था-संचालन, आन्दोलन और नेता, तथा भारत स्वतंत्रता की ओर, आदि अध्यायों में राष्ट्रीय कार्य करनेवालों के लिए महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला गया है।

१६—लाला लाजपतराय के लेख और व्याख्यान। अनु०—श्री० नन्दकुमारदेव शर्मा; प्र०—हिन्दी पुस्तक भवन कलकत्ता। मूल्य डेढ़ रुपया। लाला जी के विचारों की उपयोगिता सब जानते हैं।

१७—स्वराज्य की मांग। सर्वश्री सी० आर० दास, बिपिनचन्द्र-पाल, लो० तिलक, भूलाभाई देसाई, और श्रीमती एनीबिसेन्ट आदि के, सन् १९१८ में दिये हुए व्याख्यान। अनु० और प्र०—श्रीराम बेरी, एस० आर० बेरी एंड को०, कलकत्ता। पृष्ठ १८१, सचित्र; मूल्य १॥)। इससे उस समय की स्थिति और राष्ट्रीय विचार-धारा का परिचय मिलता है।

१८—भारतीय संग्राम। ले०—श्री भाई परमानन्द एम० ए०, प्र०—आकाशवाणी पुस्तकालय, लाहौर। पृष्ठ १८८, मूल्य ।॥)। इसमें भारतीय इतिहास की मध्य तथा आधुनिक काल की घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए, वर्तमान स्वराज्य आन्दोलन पर विचार किया गया है। कांग्रेस, और विशेषतया हिन्दू-मुसलिम एकता के सम्बन्ध में श्री० भाईजी का अपना विशेष दृष्टिकोण है।

१९—हम स्वराज्य क्यों चाहते हैं। श्री० नृसिंह चिन्तामणि केलकर की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्र०—देव आदर्स, काशी। सन् १९१८। मूल्य १), पृष्ठ २११। इसमें भारत की प्राचीन सभ्यता, अंगरेजी शासन में भारत, पार्लिमेंटरी शासन की विफलता, और भारत में सरकारी असफलता का विवेचन है। पुस्तक अच्छे प्रमाणों के आधार पर लिखी गयी है।

२०—स्वराज्य की धूम। इसमें राय बैकुँठनाथ, राजा साहब महमूदाबाद, श्री० जिन्ना, सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी, विपिनचन्द्र पाल, लो० तिलक, म० गान्धी आदि विविध नेताओं के भिन्न-भिन्न अवसरों पर दिये गये भाषण संकलित हैं। प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। मूल्य ॥), पृष्ठ ११२।

२१—स्वराज्य की योग्यता। मूल अंगरेज़ी लेखक—श्री० रामानंद चेटर्जी। अनु०—श्री० नंदकिशोर द्विवेदी; मिलने का पता—साहित्य-भवन प्रयाग। मूल्य १।), पृष्ठ २१८। सन् १६१७। इसमें प्रमाण और युक्तियों से, उन मिथ्या और स्वार्थ-पूर्ण आक्षेपों का खंडन किया गया है, जो भारतीय स्वराज्य के विरुद्ध किये जाते हैं।

२२—स्वराज्य सोपान। ले०—पं० भगवतप्रसाद शुक्ल; प्र०—सुलभ ग्रंथ प्रचारक मंडल, कलकत्ता। मू० १), छोटा आकार, पृष्ठ १३६। इसमें प्राचीन भारत की एक हलकी झलक, इस समय की हालत का चित्र, और जनता के कर्तव्य की सरल विधि (विदेशी बहिष्कार) बतायी गयी है।

२३—स्वराज्य और हमारी योग्यता। अनुवादक, संग्रहकर्ता और प्र०—श्री०—खूबचन्द मालवीय, गुरुकुल कांगड़ी। मूल्य ।) "माडर्न रिव्यु' के आधार पर मराठी में लिखित पुस्तक का अनुवाद है।

२४—रोलेट एक्ट। ले०—श्री मातासेवक पाठक; प्र०—भारत पुस्तक भंडार, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता। मूल्य ढाई रुपये।

२५—दुखी भारत या भारत वार्ता। ले०—पंडित दीनानाथ कालिया; प्र०—नवजीवन पुस्तकालय लोहारी दरवाजा, लाहौर। पृष्ठ १२०; मूल्य बारह आने। इसमें पंजाब हत्याकांड की कुछ घटनाओं का, डाक्टर किचलू आदि के जेल-जीवन का, और कालेपाने की कहानी का विशद वर्णन है।

२६—जलियांवाला बाग या डायरशाही। ले०—दो 'न्याय प्रेमी', प्र०—तिलक ग्रन्थ माला, मथुरा। पृष्ठ ६०, मूल्य ॥)। पुस्तक असहयोग के भावों की प्रेरक है।

२७—पंजाब वार्ता या पंजाब हत्याकांड। ले०—डाक्टर सत्यपाल बी० ए०; प्र०—श्री० राजपाल, सरस्वती आश्रम, लाहौर। इसमें अमृतसर के जलियांवाला बाग की भीषण दुर्घटना सम्बन्धी छोटी छोटी प्रभावोत्पादक कहानियां हैं। मूल्य १)।

राजक्रांति वहां की सामाजिक अवस्था, एवं विदेशियों पर बड़ा प्रभाव डालनेवाली थी।

१५—चीन की आवाज। मूल पुस्तक अंगरेजी में है। उसका गुजराती अनुवाद हुआ। हिन्दी भाषान्तरकार श्री वैजनाथ महोदय बी० ए० हैं। मूल लेखक से यह सहन न हुआ कि उसके देश की सरकार द्वारा चीन के प्रति अन्याय और अत्याचार हो; उसने अपने देशबन्धुओं के चेताने के लिए यह प्रभावोत्पादक पुस्तक इस ढङ्ग से लिखी है मानो चीन के एक नागरिक ने अंगरेजों को पत्र भेजे हैं। मूल्य ।~), पृष्ठ १३३।

१६—चीन का स्वाधीनता-युद्ध। ले०—श्री० श्रीकृष्णचन्द्र विद्यालंकार; प्र०—विजय पुस्तक भंडार; अर्जुन प्रेस, देहली। पृष्ठ २१२; मूल्य, डेढ़ रुपया। इसमें लेखक ने सन् १७६२ से १६३७ तक की चीन की राजनैतिक परिस्थिति पर विचार किया है, चीनवासियों के प्रयत्नों का, उनके उत्साह और साहस का, सुन्दर चित्र खींचा गया है।

१७—जापान की राजनैतिक प्रगति। अनु०—पं० लक्ष्मण-नारायण गर्दे। प्र०—ज्ञानमण्डल, काशी। पृष्ठ ४१०। मूल्य ३।=); सं० १६७८। जापान की सं० १६२४ से १६६६ तक की प्रगति का विवेचन है। जापान के इतिहास का तिथिवार घटना-क्रम भी दिया गया है। जहाँ तहाँ प्रसंगानुसार सिद्धान्तों का भी अच्छा विवेचन है। बहुत उपयोगी है।

१८—दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह; दो भाग। ले०—महात्मा गांधी, प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। मूल्य १।~)। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह संग्राम आठवर्ष चला, वहीं 'सत्याग्रह' शब्द का आविष्कार और प्रयोग हुआ। महात्माजी उसके संचालक थे; अतः स्वभावतः इसके लिखने के आप सर्वश्रेष्ठ अधिकारी थे। पुस्तक के आरम्भ में यह भी बतादिया गया है कि भारतवर्ष में आन्दोलन

१०—विनाश या इलाज। (योरप में सत्य और अहिन्सा के कुछ प्रयोग)। लेखिका—कुमारी म्यूरियल लेस्टर; अनु०-श्री रामनाथ 'सुमन'; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नई देहली। पृष्ठ १६२, मूल्य बारह आने। इसमें योरप के राष्ट्रों की युद्ध-लिप्सा, और वहाँ के शान्तिवादियों के अहिन्सात्मक शांति-प्रयत्नों का वर्णन है।

११—एशिया की क्रांति। ले०—श्री० सत्यनारायण पी-एच. डी.। प्र—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी देहली। मूल्य १॥)। पृष्ठ ४४४। लेखक ने योरप की यात्रा की है, और समाजशास्त्र आदि का खूब अध्ययन किया है। वह एशिया के, और उसके साथ संसार के, उज्ज्वल भविष्य की दृढ़ आशा करता है। पुस्तक में रूस, चीन, जापान, भारत, फारिस आदि की जागृति का विवेचन है।

१२—एशिया का जागरण। ले०—श्री० लक्ष्मणनारायण गर्दे; प्र०—हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता। मूल्य १), पृष्ठ २७२; सम्वत् १९८१। इसमें चीन, जापान, और भारतवर्ष की राजनैतिक भावनाओं तथा कार्यों का वर्णन है। एशिया के विविध देशों की सांस्कृतिक एकता को लक्ष्य में रखकर यह रचना की गयी है। बहुत विचारपूर्ण है।

१३—एशिया में प्रभात। मूल लेखक—फ्रांसीसी दार्शनिक श्री० पाल रिचर्ड। अनु०—ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत। प्र०—गंगा पुस्तक माला, लखनऊ। मूल्य ॥)। एशिया की एकता और भविष्य, जापान का संदेश, प्रजातंत्र, भावी मनुष्य जातीय समानता संघ आदि विषयों पर सुन्दर विचार प्रकट किये गये हैं।

१४—चीन की राज्य-क्रांति। ले०—श्री० सम्पूर्णानन्द जी, प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर, मूल्य १॥), पृष्ठ लगभग २००। पुस्तक में चीन का प्राचीन इतिहास देते हुए बताया गया है कि वहाँ राजसत्ता का अन्त होकर, किस प्रकार प्रजातंत्र की स्थापना हुई। यह

५—संसार व्यापी असहयोग। अंगरेजी पुस्तक का भावानुवाद। अनु०—श्री० शंकरराव जोशी। मूल्य ।।-), पृष्ठ ६८। प्र०—हिन्दी राष्ट्रीय ग्रन्थमाला, खंडवा। इसमें इस बात का अच्छा विवेचन है कि भारतवर्ष के बाहर, कोरिया, हङ्गरी, आयर्लैंड आदि देशों में असहयोग कैसे चला, और उसे कहाँ तक सफलता मिली।

६—संसार की समाज क्रांति और हिन्दुस्तान। मूल लेखक—डा० गजानन श्रीपत खैर; प्र०—काशी विद्यापीठ, बनारस; पृष्ठ २८५; मूल्य १।।)। संसार के अनेक प्रगतिशील देशों की यात्रा करके लेखक ने वहाँ की सामाजिक स्थिति तथा नवीन और प्राचीन संस्कृति का अध्ययन किया, और उसका आलोचनात्मक विवरण लिखा। पुस्तक जानने योग्य बातों से भरी है। विविध देशों की हलचलों और राजनीति के समझने में सहायक है।

७—पराधीनों की विजय-माला। ले०—मुन्शी नवजादिकलाल श्रीवास्तव। प्र०—नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस, चुनार। मूल्य २।।), पृष्ठ ४८८, सन् १६३४। इसमें संसार के भिन्न-भिन्न छत्तीस पराधीन देशों के स्वतन्त्रता-प्राप्ति सम्बन्धी किये गये प्रयत्नों का संक्षिप्त परन्तु रोचक और शिक्षाप्रद वर्णन है। पुस्तक अपने ढङ्ग की बहुत उत्तम है!

८—स्वाधीनता के संग्राम। ले०—श्री रामाशीष सिंह, प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। सं० १९९३; मूल्य सवा रुपया।

९—प्रेसीडेंट विलसन और संसार की स्वाधीनता। ले०—श्री० सुखसम्पत्तिराय भण्डारी। प्र०—मध्यभारत पुस्तक एजन्सी इन्दौर, मूल्य ।।), पृष्ठ ८८। गत योरपीय महाभारत के समय अमरीका के राष्ट्रपति विलसन का नाम संसार के कोने कोने में फैल गया था। आपके विचारों में स्वाधीनता और समानता आदि के उच्च भाव हैं। पुस्तक में आपके परिचय के अतिरिक्त, आपके सात महत्वपूर्ण भाषण हैं।

राजनैतिक आन्दोलन; (ख) अन्यदेशीय—जब किसी देश की जनता स्वराज्य-प्राप्ति के आन्दोलन में लगी हो, उस समय उसके लिए अन्य देशों के आन्दोलन सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन और मनन अनिवार्य ही हो जाता है। इससे उसे बहुत शिक्षा मिलती है, और वह उससे बड़ा लाभ उठा सकती है। इस विषय का नीचे लिखा साहित्य हमारे सामने आया है—

१—**संसार की क्रांतियाँ**। ले०—श्री० सुखसम्पतिराय भंडारी; प्र०—राष्ट्रीय साहित्य भण्डार, अजमेर। पृष्ठ २३८, मूल्य १।ॾ), सन् १६२३ ई०। संसार का स्वातंत्र्य नाश, पीतांग का स्वातंत्र्य नाश, चीन की राज्य क्रान्ति, कोरिया का स्वातन्त्र्य युद्ध, मिस्र में नयी जाग्रति अमरीका की राज्य क्रान्ति, श्याम की स्वाधीनता का नाश, और भारत में क्रान्ति का वर्णन है। भाषा सजीव है।

२—**विश्व की भीषण क्रांतियाँ**। सम्पादक—श्री० वीरेन्द्र विद्यार्थी प्र०—एस. एल. विन्दु। मूल्य १), पृष्ठ केवल १२०। आरम्भ में 'शान्ति और क्रान्ति' पर कुछ विचार करके विशेषतया भारत सम्बन्धी विषय ही लिया है; रूस और चीन के सम्बन्ध में बहुत थोड़ा विचार हुआ है।

३—**संसार की क्रान्ति कथा**। ले०—श्री० जगदीशचन्द्र हिमकर प्र०—जाग्रति प्रिंटिंग वर्क्स, सलकिया, हवड़ा। पृष्ठ २१६, मूल्य दो रुपये। इसमें इक्कीस देशों की क्रान्तियों का इतिहास सरल तथा रोचक ढङ्ग से दिया गया है।

४—**असहयोग का इतिहास**। मूल लेखक—ए० फेनर ब्रॉकवे; अनु०—रामचन्द्र वर्मा; प्र०—मनमोहन पुस्तकालय, काशी। पृष्ठ १०३, मूल्य ।||)। हंगरी, मिस्र, कोरिया; आयर्लैंड आदि देशों ने किस प्रकार अपनी स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए असहयोग का मार्ग अपनाया इसका अच्छा विवरण है।

४५—अकालियों का आदर्श सत्याग्रह और उनकी विजय। ले०—बाबू सम्पूर्णानन्द जी बी. एस-सी.। प्र०—हिन्दी साहित्य मन्दिर, बनारस। मूल्य आठ आना। पुस्तक शिक्षाप्रद है। आरम्भ में सिक्खों के पूर्व इतिहास का संक्षिप्त परिचय होने से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।

४६—अकाली दर्शन। प्र०—प्रताप पुस्तकालय, कानपुर। पृष्ठ १००; मूल्य ।।।)। पुस्तक में वीर अकालियों के सत्याग्रह संग्राम का सचित्र तथा शिक्षाप्रद वर्णन है।

४७—विजयी बारडोली। ले०—श्री० वैजनाथ महोदय। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली। मूल्य २)। बारडोली में किसानों की जो अद्भुत विजय हुई, वह हमारे स्वाधीनता-संग्राम की चिर-स्मरणीय और शिक्षाप्रद घटना है। पुस्तक प्रामाणिक है, और सचित्र भी। विषय विवेचन में स्पष्टता और निर्भीकता है, पर अत्युक्ति नहीं। आरम्भ में, इस संग्राम के संचालक सरदार वल्लभ भाई का परिचय भी है। पृष्ठ कुल मिलाकर पांच सौ से अधिक हैं।

४८—युद्ध-यात्रा में प्रवचन। प्र०—शुद्ध खादी भंडार, हेरिसन रोड, कलकत्ता। छोटे आकार के सौ पृष्ठ, मूल्य डेढ़ आना। साबरमती से दांडी तक की सत्याग्रह-यात्रा मे महात्मा गांधी के दिये हुए व्याख्यानों का संग्रह।

४९—ब्रिटिश सरकार और भारत का समझौता। ले०—श्री० केशवकुमार ठाकुर। प्र०—हिन्दी पब्लिशर्स एण्ड को०, प्रयाग। मूल्य ।।~), पृष्ठ १४६। कुछ प्रारम्भिक बातों के वर्णन के पश्चात् सन् १९३० की राजनैतिक घटनाओं, तथा कांग्रेस और सरकार के समझौते का वर्णन और उसकी आलोचना है।

५०—रचनात्मक कार्य-क्रम। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; बड़े आकार के २२ पृष्ठ, मूल्य =)। गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी लेखों का संग्रह।

३९—सत्याग्रह : क्यों, और कब, कैसे ? प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। बड़े आकार के ५५ पृष्ठ, मूल्य तीन आने। महात्मा गांधी के सत्याग्रह सम्बन्धी विचार। परिशिष्ट में श्री० जवाहरलाल जी नेहरू और महादेव देसाई के दो-दो लेख।

४०—अहिन्सा-विवेचन। ले०—श्री० किशोरलाल मश्रूवाला; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। पृष्ठ ११८, मूल्य आठ आने। छः लेख हैं; अहिन्सा के विविध पहलुओं पर अच्छा विचार किया गया है।

४१—गांधी की आंधी। ले०—श्री० चतुरसेन शास्त्री। प्र०—संजीवनी इन्स्टीट्यूट, दिल्ली। मूल्य १।), पृष्ठ १३२। महात्मा गांधी विशेषतया सन् १९१९ ई० से भारतीय आन्दोलन के प्रधान सूत्रधार हैं। इस पुस्तक में उनकी नीति, कार्य-क्रम, तथा फलाफल की आलोचना की गयी है। लेखक का कुछ अंशों में अपना जुदा दृष्टिकोण है, और उसे चलती हुई जोशीली भाषा में जाहिर किया है।

४२—चम्पारण में म० गांधी। ले०—देश-रत्न श्री० राजेन्द्रप्रसाद जी। प्र०—श्री अनुग्रहनारायण सिंह जी, मुरादपुर, पटना। पृष्ठ ३९४; मूल्य २)। नील के खेती करनेवाले गोरों के अत्याचारों से जनता को बचाने का जो प्रयत्न महात्मा गांधी ने किया था, उसका शिक्षाप्रद वर्णन है।

४३—चम्पारन की जांच। सन् १९१३ में चम्पारन के किसानों की करुण पुकार सुनकर म० गांधी वहाँ गये। एक जांच कमेटी नियुक्त हुई और अन्त में किसानों का उद्धार हुआ। पुस्तक में जांच कमेटी की रिपोर्ट दी गयी है। विचारणीय है।

४४—सविनय अवज्ञा जांच कमेटी की रिपोर्ट। इसमें असहयोग आन्दोलन का जन्म, उसका तीव्र गति से प्रसार, सरकार का दमन, कौंसिलों में भाग लेने न लेने के सम्बन्ध में विचार, आदि पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

प्र०—गान्धी हिन्दी पुस्तक भण्डार, बम्बई। मूल्य १॥।), पृष्ठ २३३। इसके प्रथम खण्ड में सत्याग्रह का स्वरूप, प्रकार, प्रयोग तथा विविध भेदों पर विचार किया गया है। दूसरे खण्ड में अगरेज़ी शासनपद्धति के दोष, प्रजा की दुर्दशा, असहयोग-सिद्धि के उपाय, आदि का विवेचन है। शैली रोचक और प्रभावशाली है।

३४—**सत्याग्रह की मीमांसा**। प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। पृष्ठ ९२। इसमें, छोटी सी परन्तु विचारपूर्ण भूमिका के बाद, सत्याग्रह सम्बन्धी महात्मा गांधी तथा अन्य नेताओं के लेख और भाषणों का संकलन है।

३५—**गांधीजी का बयान या सत्याग्रह मीमांसा**। अनु०—श्री० कृष्णलाल वर्मा; प्र०—ग्रन्थ भण्डार, माटुँगा, बम्बई। आरम्भ में सत्याग्रह के प्रारम्भ सम्बन्धी महात्माजी का एक लेख है। पश्चात् सर्व श्री० हन्टर, रेंकिन, और सेतलवाड आदि से, महात्मा गान्धी का पंजाब हत्याकांड सम्बन्धी प्रश्नोत्तर है।

३६—**गांधी गीता**। ले०—पं० नरोत्तम व्यास। प्र०—श्री० रामलाल वर्मा, कलकत्ता। मूल्य २), पृष्ठ २२६, सं० १९७९। आरम्भ में महात्माजी के कुछ उपदेशों का संग्रह है, फिर अवतारवाद पर विचार करके १८ अध्यायों में महात्माजी की एक युवक से वार्तालाप के रूप में, उनके विचारों तथा सिद्धांतों का सरल सुबोध वर्णन किया गया है।

३७—**असहयोग दर्शन**। महात्मा गांधी के कुछ लेखों और व्याख्यानों का संग्रह। अनु०—श्री० हरिभाऊ उपाध्याय; प्र०— हिन्दी साहित्य मन्दिर, इन्दौर। पृष्ठ १५०; मूल्य १।), सन् १९२१।

३८—**असहयोग**। लेखिका—श्रीमती प्रियम्वदा देवी; प्र०—भारतीय भंडार, अलीगढ़; मूल्य ॥=)। इस में असहयोग की आवश्यकता, उपयोगिता, स्वरूप, और कार्यक्रम आदि सम्बन्धी साधारण लेख हैं।

२८—पञ्जाब रहस्य। पं० कृष्णकान्तजी मालवीय के शब्दों में यह ६ अप्रेल १९१९ ई० से अगस्त १९१९ तक का भारतीय ब्रिटिश शासन का इतिहास है; ब्रिटिश दमननीति, ओडायरशाही, और भारत में अ-ब्रिटिश शासन का यह स्मारक स्तम्भ है। प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग; ले०—श्री० कपिलदेव मालवीय। मूल्य बारह आने।

२९—पंजाब की वेदना। इस पुस्तक में लाला लाजपतराय ने पञ्जाब पर किये गये अत्याचारों, और स्त्रियों बूढ़ों और बच्चों के साथ किये गये अमानुषिक व्यवहार का मर्मभेदी वर्णन किया है।

३०—पञ्जाब का भीषण हत्याकाण्ड। इसका दूसरा नाम है, कांग्रेस कमीशन तथा हंटर कमेटी की रिपोर्ट का अनुवाद। अनु०—पं० चन्द्रशेखर पाठक; प्र०—निहालचन्द वर्मा, कलकत्ता। मूल्य १॥।), पृष्ठ ५३६। हंटर कमेटी की रिपोर्ट बहुमत, और अल्पमत दो भागों में है। पुस्तक सचित्र है।

३१—मालवीय जी और पंजाब। प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग; पृष्ठ १७१, मूल्य एक रुपया। महामना मालवीय जी ने १८ सितम्बर १९१९ को केन्द्रीय व्यवस्थापक सभा में व्याख्यान देकर जलयांवाला बाग के हत्याकांड की निष्पक्ष जांच की मांग की थी, और उस कांड से सम्बन्ध रखनेवाले अफसरों के बचाव के लिए पेश किये गये सरकारी बिल का घोर विरोध किया था। वह सुप्रसिद्ध व्याख्यान ही इस पुस्तक का विषय है।

३२—हम असहयोग क्यों करें। सम्पादक—श्री० रामरख सिंह सहगल; चाँद कार्यालय, प्रयाग। दूसरा संस्करण, सन् १९२२। मूल्य ॥), पृष्ठ ९१। इसमें असहयोग के भिन्न-भिन्न कारण, आवश्यक तथ्यों सहित बतलाकर पंजाब हत्याकांड आदि सम्बन्धी कुछ लेख तथा पत्रों का संकलन किया गया है।

३३—सत्याग्रह और असहयोग। ले०—पं० चतुरसेन शास्त्री।

कहाँ कहाँ इस रूप में हुआ। यह पुस्तक सत्याग्रह के सिद्धान्त का विकास जानने के लिए बहुत उपयोगी है।

१९—मिस्र की स्वाधीनता। ले०—श्री सम्पूर्णानन्द बी०एस-सी०। प्र०—सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मण्डल, कलकत्ता। मूल्य ३); पृष्ठ २१८। मिश्र का प्राचीन इतिहास देने के बाद, स्वाधीनता-प्राप्ति के आन्दोलन, और बाधाओं का वर्णन किया गया है। पुस्तक शिक्षाप्रद है।

२०—मिस्र की आज़ादी की जंग। ले० और प्र०—श्री० मानजीतसिंह राठौर बी० ए०; देहरादून। मूल्य ।); पृष्ठ ३६, बड़ा आकार। पुस्तक छोटी है, पर अच्छे ढङ्ग से लिखी हुई तथा उपयोगी है। हाँ, यह सन् १९२२ की छपी है। नये संस्करण की आवश्यकता है।

२१—फ्रांस की राज्य-क्रांति। मराठी पुस्तक का अनुवाद; अनु०—बाबू प्यारेलाल गुप्त। सं० १९७८, द्वितीय संस्करण। मूल्य १=), पृष्ठ २२८। प्र०—तरुण भारत ग्रन्थावली, कानपुर। पुस्तक में जहाँ तहाँ राजनैतिक कार्यकर्ताओं और नेताओं के कथनोपकथन या वार्तालाप के महत्वपूर्ण अंशों का समावेश होने से विषय बहुत रोचक हो गया है।

२२—आयर्लैंड में होमरूल। ले०—श्री० सुरेन्द्रनारायण तिवारी। प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ १३०, मूल्य ॥=)। इसमें आयर्लैंड ने किस प्रकार, किन कठिनाइयों को सहकर स्वाधीनता प्राप्त की, इसका भारतवासियों के लिए शिक्षाप्रद वर्णन है।

२३—स्वतंत्रता के प्रेमी या सिनफ़िनर। ले०—पं० पारसनाथ त्रिपाठी। प्र०—भारतीय पुस्तक एजन्सी; कलकत्ता। मू० ।); पृष्ठ ४०। इसमें आयर्लैंड की स्वाधीनता का संक्षिप्त परिचय है।

२४—आयर्लैंड का स्वातन्त्र्य युद्ध। यह सुप्रसिद्ध आयरिश क्रान्तिकारी श्री० डेलब्रीन की आत्म-कथा का भावानुवाद है। अनु०—

श्री० बलवन्त। प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर। मूल्य ।=), पृष्ठ ६६। आयरिश वीरों के त्यागमय जीवन का यह आकर्षक वर्णन बहुत शिक्षाप्रद और उत्साह-वद्‌र्धक है।

२५—आयर्लैंड की राज्य-क्रान्ति अथवा शिनफिन रहस्य। प्र०—राष्ट्रीय ग्रन्थमाला, इलाहाबाद। लेखक का नाम नहीं। मूल्य ।-)। पुस्तक छोटी होने पर भी उपयोगी है। इसमें आयरिश देशभक्तों के स्वतंत्रता-आंदोलन का संक्षिप्त इतिहास है।

२६—इटली की स्वाधीनता। ले०—श्री० नंदकुमारदेव शर्म्मा। मूल्य ।।); पृष्ठ १०६। प्र०—तरुण भारत ग्रन्थावली, कानपुर। मेज़िनी, गेरीबाल्डी, काबूर जैसे सुप्रसिद्‌ध देशभक्तों के नेतृत्व में इटली निवासियों ने किस प्रकार अनेक कष्ट सहते हुए अपनी मातृभूमि को स्वाधीन किया, इसका वर्णन है।

२७—नरमेध। ले०—श्री० चन्द्रभाल जौहरी। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल; नयी दिल्ली। मूल्य १।), पृष्ठ ४७६। इसमें हालैंड-निवासियों के, स्वाधीनता की रक्षा में किये हुए आत्म बलिदान का चित्र है। यह अंगरेज़ी की एक सुप्रसिद्‌ध पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। श्री० जौहरी जी ने भाषा को वैसा ही सजीव रखने का प्रयत्न किया है। पुस्तक स्वातन्त्र्य-युद्‌ध के लिए सञ्जीवनी शक्ति प्रदान करनेवाली है।

२८—सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी का इतिहास। प्र०—जनप्रकाशन गृह, राजभवन, सैण्डर्स्ट रोड, बम्बई ४; मूल्य ५); पृष्ट ४५२, सजिल्द। इसमें सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट (बोल्शेविक) पार्टी की गतिविधि और उसके विकास-क्रम का अच्छा विवरण दियागया है।

२९—रूस की राज्य-क्रान्ति। इसमें रूस के कायापलट का वर्णन है। निरंकुश शासकों के अत्याचारों से कैसे छुटकारा मिलता है, यह इसमें अच्छी तरह बताया गया है। कई चित्र हैं। प्र०—प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर। मूल्य २।।)

३०—रूस में युगान्तर। ले०—श्री विश्वम्भरनाथ जिज्जा, प्र०—एस० आर० वेरी एण्ड को० कलकत्ता। मूल्य २), पृष्ठ २६६। इसमें सन् १८६७ से लेकर रूस की आधुनिक महान् क्रांति तक का मनोरञ्जक वर्णन है। राजनीति के विविध दाव-पेंच, उथल-पुथल और ऊंच-नीच का परिचय है।

३१—बोल्शेविक लाल क्रान्ति। ले०—श्री०रमाशंकर अवस्थी, कानपुर। पृष्ठ लगभग ३००। इसमें कई पुस्तकों के आधार पर रूस की राज्य-क्रान्ति का विवेचन किया गया है, अन्त में बोलशेविक समाज संगठन, और श्रमजीवियों के व्यवहार पर प्रकाश डाला गया है।

३२—रूसी क्रान्ति का इतिहास। मूल लेखक—श्री० पेज आर्नट। प्र०—जन प्रकाशन गृह, राजभवन, सैंडर्स्ट, रोड, बम्बई ४। मूल्य सवा रुपया। इसमें सन् १६०५, और फरवरी तथा अक्तूबर १६१७ की तीन रूसी क्रान्तियों का इतिहास, रूसी जनता के जागरण, संगठन, और सफल संग्राम का अच्छा वर्णन है। लेखक इंगलैंड के मजदूर और समाजवादी आन्दोलन के अनुभवी नेता हैं, और उनकी लेखनी में जोर है।

३२—अमरीका की स्वाधीनता का इतिहास। ले०—श्री० देवकीनन्दन 'विभव'। प्र०—उमाशंकर मेहता; काशी। संवत् १६८७। पृष्ठ २४०, मूल्य २)। पुस्तक कई अंगरेजी पुस्तकों के आधार पर लिखी गयी है। वर्तमान भारतीय समस्या तत्कालीन अमरीका की समस्या से बहुत कुछ मिलती हुई होने के कारण, पुस्तक भारतीय आन्दोलकों के लिए बहुत उपयोगी है। रक्तपात का अंश छोड़कर शेष सभी भाग शिक्षाप्रद हैं।

३३—अमरीका की स्वाधीनता। एक अंगरेजी पुस्तक का संक्षित अनुवाद। अनु०—श्री० प्रयागप्रसाद तिवारी। प्र०—राष्ट्र भाषा पुस्तक भंडार। पृष्ठ ६०, सं० १६८०। मूल्य ॥)।

३४—अमरीका कैसे स्वाधीन हुआ? प्र०—हिन्दी साहित्य कार्यालय, कलकत्ता। छोटा आकार, पृष्ठ १५८, सं० १९८०। मूल्य ।।)। भारतीय स्वाधीनता-प्रेमी शिक्षा लें, इस उद्देश्य से लिखी गयी है। असहयोग और बहिष्कार की नीति, तथा महिलाओं का योगदान विशेष विचारणीय हैं।

राजनैतिक संस्थाएँ; (क) राष्ट्रीय—बहुत से पराधीन देशों में गैर-सरकारी राष्ट्रीय संस्थाएँ जागृति और उत्थान का कार्य करती रहती हैं, जैसे भारतवर्ष में कांग्रेस आदि करती है। स्वाधीन देशों में तो ये संस्थाएँ गैर-सरकारी के अतिरिक्त सरकारी भी होती हैं। ऐसी संस्थाओं के सम्बन्ध में हिन्दी में साहित्य बहुत कम है।

१—राजनैतिक भारत। ले०—सर्वश्री० हनुमानप्रसाद गोयल बी० ए०, एल-एल० बी०, कामरेड मन्मथनाथ गुप्त, और दामोदरस्वरूप गुप्त। प्र०—विश्वविद्यालय परीक्षा बुकडिपो, पानदरीबा, इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या ३६८, मूल्य अजिल्द २।), सजिल्द २।।); मार्च १९४०। इससे विविध राजनैतिक दलों का अच्छा परिचय मिल जाता है। इसमें छोटी बड़ी ४५ पार्टियों की चर्चा है, इनमें से इंडियन नेशनल कांग्रेस का ही वर्णन २१५ पृष्ठ में है। प्रत्येक संस्था का इतिहास लिखते समय प्रगतिशील राष्ट्रीय दृष्टिकोण से काम लिया गया है। बहुत सुन्दर प्रयत्न है। पुस्तक में ३४ चित्र भी हैं। हमारी समझ से इसका नाम 'भारत के राजनैतिक दल' रखना अच्छा होता है। दूसरे संस्करण की तैयारी हो रही है।

२—कांग्रेस का इतिहास (सन् १८८५-१९३५ तक)। ले०—डा० बी० सीतारामय्या। हिन्दी सम्पादक, हरिभाऊ उपाध्याय। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली। आकार बड़ा, पृष्ठ संख्या १२+६३५; मूल्य २।।)। कांग्रेस का इतिहास असल में उस लड़ाई का

इतिहास है, जो हिन्दुस्तान ने अपनी आजादी के लिए लड़ी है। मूल पुस्तक अंगरेजी में लिखी जाकर उसका हिन्दी अनुवाद किया गया हैं। पुस्तक कांग्रेस के एक सुयोग्य अधिकारी द्वारा लिखी गयी, और श्री० राजेन्द्र बाबू ने जब कि वे राष्ट्रपति थे, इसे छपने से पहले देख लिया। इसलिए यह इस विषय की दूसरी सब पुस्तकों से अधिक प्रामाणिक है।

इस पुस्तक का दूसरा भाग लिखा जा चुका हैं, इसमें सन् १९३५ से १६४५ तक की घटनाओं का वर्णन है। पृष्ठ संख्या, लगभग १२००। यह भाग जल्दी छपने वाला है।

सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली, से "कांग्रेस का इतिहास (१६३५-३६)" पुस्तक छपी है। इसके लेखक श्री० कृष्णाचन्द्र गुप्त हैं। मूल्य।=)।

३—कांग्रेस का इतिहास। प्र०—काशी पुस्तक भंडार बनारस, मूल्य एक रुपया। सर्वश्री सम्पूर्णानन्द, आचार्य नरेन्द्रदेव, श्रीप्रकाश आदि विद्वानों के कांगेस की पचास वर्ष की प्रगति सम्बन्धी लेखों का संग्रह। सन् १६४०। इससे कांगेस द्वारा किसानों और मजदूरों में की गयी जागृति की अच्छी जानकारी होती है।

४—कांग्रेस का इतिहास। ले०—श्री सूर्यनारायण बी० ए०। मूल्य ॥=), पृष्ठ १२८, सन् १६१८। प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग। भारतवर्ष की सर्वोच्च राष्ट्रीय संस्था सम्बन्धी इस पुस्तक की उपयोगिता स्पष्ट है। लेकिन इसमें उसका सिर्फ सन् १६१६ तक का ही संक्षिप्त इतिहास है।

५—कांग्रेस के प्रस्ताव। सम्पादक—श्री कन्हैयालाल; प्र०—नवयुग प्रकाशन मन्दिर, बनारस छावनी; पृष्ठ ६४५ (सजिल्द), मूल्य ४)। आचार्य नरेन्द्रदेव-लिखित 'भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास, तथा सन् १८८५ से १६३१ तक भारतीय कांग्रेस द्वारा पास किये गये प्रस्तावों का हिंदी अनुवाद। पुस्तक की उपयोगिता स्पष्ट है।

६—नागपुर की कांग्रेस। प्र०—हिन्दी साहित्य-मन्दिर, इन्दौर। पृष्ठ १५६, मूल्य ॥।) । दिसम्बर सन् १९२० में श्री विजयराघवाचार्य चक्रवर्ती की अध्यक्षता में, अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा का जो अधिवेशन नागपुर में हुआ था, उसका विवरण।

७—करांची की कांग्रेस। ले०—श्री० जीतमल लूनिया; प्र०—हिन्दी साहित्य मन्दिर, अजमेर। सन् १९२९। मूल्य बारह आने।

८—लाहौर कांग्रेस का इतिहास। ले०—श्री० गिरिधर शुक्ल; प्र०—रामचन्द्र शुक्ल, चित्तरञ्जन एवन्यू, साउथ कलकत्ता। सन् १९३९ ई०। मूल्य आठ आने। यह उस अधिवेशन का विवरण है, जो पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में, दिसम्बर १९२९ में हुआ था।

९—मुस्लिम लीग और आजादी। ले०—श्री० सज्जादज़हीर, प्र०—जन-प्रकाशन गृह, सैंढर्स्ट रोड, बम्बई ४। पृष्ठ ६०, मूल्य बारह आने। मुसलमानों की राष्ट्रीय जागृति और मुस्लिम लीग का संक्षिप्त इतिहास।

राजनैतिक संस्थाएँ; (ख) अन्तर्राष्ट्रीय—

इस समय भिन्न-भिन्न राष्ट्रों का पारस्परिक सम्बन्ध बढ़ता जा रहा है। कितनी ही राजनैतिक संस्थाओं का सम्बन्ध कई-कई राष्ट्रों से है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सम्बन्ध में हमारे सामने दो ही पुस्तकें हैं—

१—राष्ट्र-संघ और विश्व-शान्ति। ले०-श्री रामनारायण यादवेन्दु बी० ए०, एल०-एल बी०। प्र०-मानसरोवर साहित्य निकेतन मुरादाबाद। पृष्ठ ३२२। सजिल्द और सचित्र; मूल्य ३॥); पहला संस्करण, सन् १९३६। अपने विषय की यह सर्व प्रथम और बहुत उपयोगी पुस्तक थी। पुस्तक का दूसरा संस्करण न होने और इस बीच में राष्ट्र-संघ का प्रायः अन्त हो जाने से अब इस पुस्तक का केवल ऐतिहासिक मूल्य ही रह गया है। विश्व के पुनर्निर्माण की योजनाओं की आलो-

चना करते हुए यदि नया संस्करण तैयार किया जाय तो बहुत उत्तम हो।

२—राष्ट्र-सङ्घ के उद्देश्य और संघटन। पृष्ठ ११२, सचित्र, मूल्य नौ आने। सन् १९३३। मिलने का पता—अपर इंडिया पबलिशिंग हाउस, लिटरेचर पेलेस, लखनऊ। पुस्तक अपने विषय की बहुत अच्छी है।

अन्तर्राष्ट्रीय विधान—जब कि देश पराधीन है, पाठकों को ऐसी सामग्री देना, जिसका पूरा उपयोग वे स्वतन्त्र होने पर, अन्य देशों से व्यवहार करते समय कर सकेंगे, लेखक तथा प्रकाशक के बड़े साहस और दूरदर्शिता का काम है। हिन्दी में इस विषय की एक ही पुस्तक है।

अन्ताराष्ट्रीय विधान। ले०—श्री० सम्पूर्णानन्द बी० एस-सी०, एल० टी०। प्र०—ज्ञान मंडल, काशी। सम्वत् १९८१। पृष्ठ संख्या ४५६+७० । मूल्य ३।), पुस्तक विचारपूर्ण है। सन्धिकालीन विधान, युद्धकालीन विधान, ताटस्थ सम्बन्धी विधान, अन्ताराष्ट्रीय सगटन, आदि विषयों पर खूब प्रकाश डाला गया है। पुस्तक उच्च श्रेणियों के विद्यार्थियों तथा जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी है।

साम्राज्य और साम्राज्यवाद— संसार में साम्राज्य बहुत समय से बनते आ रहे हैं। अनेक साम्राज्य समय-समय पर नष्ट भी होते गये। आरम्भ में उनका लक्ष्य यह होता था कि सामाजिक संगठन का दायरा बड़ा हो; दूर दूर के आदमियों में मेलजोल बढ़े और उनकी ज़रूरतें पूरी होने में सुविधा हो। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से साम्राज्यों में पूंजीवाद की भावना आ गयी। उनका उद्देश्य अपने अधीन देशों का शोषण करना हो गया। असल में इसी समय से आधुनिक साम्राज्यवाद का जन्म माना जाता है। साम्राज्यों और साम्राज्यवाद के सम्बन्ध में नीचे लिखा साहित्य हमारे सामने आया है—

१—**मौर्य साम्राज्य का इतिहास**। ले०—श्री० सत्यकेतु विद्यालंकार, प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य ५), पृष्ठ ७१६। यह अपने विषय की, इस समय तक सर्वोत्तम पुस्तक है। अन्यान्य बातों में चन्द्रगुप्त कालीन शासन, स्थानीय स्वशासन, और न्याय व्यवस्था, तथा आर्थिक व्यवस्था, एवं सम्राट अशोक के शासन का अच्छा परिचय है। प्रारम्भ में 'साम्राज्य का विकास' और अन्त में 'मौर्य साम्राज्य का पतन' दर्शाया गया है।

२—**मुग़ल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण**। ले०—श्री० इन्द्र विद्यावाचस्पति। प्र०—हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर, बंबई। पूर्वार्द्ध सन् १९२९। मूल्य ३), पृष्ठ ३९८। सचित्र। इसमें अकबर के राज्यारोहण से लेकर औरङ्गजेब के समय में राजपूत, जाट, सिक्ख और मराठों के उत्थान तक का विवेचन किया है; भाषा सजीव है। पुस्तक पढ़ने में खूब मन लगता है। प्रतिपादित विषय का चित्र सामने आ जाता है। अपने विषय की एकमात्र सुन्दर और बढ़िया कृति है। उत्तरार्द्ध भी छप गया है; उसका मूल्य सवा रुपया है और सम्पूर्ण सजिल्द पुस्तक का ४॥)।

३—**रोम साम्राज्य**। यह मराठी में प्रकाशित 'रोम साम्राज्य' की छाया है। छाया-लेखक हैं, श्री० शंकरराव जोशी। प्र०—ज्ञान मण्डल, काशी, मूल्य २॥), पृष्ठ ३२३। भाषा में प्रवाह और रोचकता है। पुस्तक में विशेषतया इस बात का विवेचन है कि प्रजातंत्र का उपभोग करनेवाले रोम के लोगों ने राजसत्ता को किस प्रकार अपनाया, रोम का राज्य कैसे फैला, और सामाजिक कुरीतियों, ऐशोआराम तथा दुराचार ने इस विशाल वृक्ष की जड़ में कैसे घुन लगा दिया।

४—**साम्राज्य और उनका पतन**। ले०—श्री० भगवानदास केला। इसमें संसार के प्राचीन और मध्य कालीन साम्राज्यों का निर्माण और भेद बतलाकर राम साम्राज्य, कृष्ण के समय के साम्राज्य, मौर्य,

मुगल, चीन, ईरान, मिस्र, यूनान, रोम, सेरेसन, और तुर्क, तथा पवित्र रोमन साम्राज्य के पतन के कारणों का विचार किया गया है। पृष्ठ २२८; मूल्य १।); प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग।

५—**भारत में ब्रिटिश साम्राज्य**। ले०—श्री० गंगाशंकर मिश्र एम० ए०। प्र०— हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी। मूल्य ४॥), पृष्ठ ५७८। प्रथम संस्करण, सन् १९३०। भारत में अंगरेज किस तरह आये, और फिर किस प्रकार उन्होंने यहाँ पैर जमाकर अपना साम्राज्य स्थापित किया, इसका विस्तृत विवेचन। इस काल की भारत की कला और साहित्य का भी सिंहावलोकन।

६—**ब्रिटिश राज रहस्य**। यह अंगरेज लेखक सिली की पुस्तक के भारतवर्ष सम्बन्धी अंश का अनुवाद है। अनुवादक हैं, ठाकुर राजकिशोरसिंह बी० ए०। प्र०—भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता। ब्रिटिश भारत का स्वरूप, अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तान कैसे लिया, ब्रिटिश शासन रहस्य, भारत विजय की प्रेरणा, भारतेतर ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार आदि विषयों का वर्णन है। मूल पुस्तक ६० वर्ष पहले लिखी गयी थी, पर इसकी अनेक बातें भारतीय पाठकों के लिए अब भी बहुत विचारणीय हैं। भूमिका और परिशिष्ट भी बड़े उपयोगी हैं।

७—**भारत और इंगलैंड**। यह पूर्वोक्त अंगरेज़ी पुस्तक के आधार पर हैं, और इसका विषय उपर्युक्त प्रकार का ही है। अनुवादक हैं, श्री० मातासेवक पाठक। प्र०—साहित्याश्रम, कछवा, मिर्ज़ापुर। मूल्य १॥), पृष्ठ २०७।

८—**हिन्दुस्तान गुलाम कैसे बना ?** यह 'एम्पायर इन एशिया' का अनुवाद है। अनु०—ठाकुर लक्ष्मणसिंह जी। प्र०—प्रताप प्रेस, कानपुर। सन् १९२५। मूल्य २॥), पृष्ठ ५५१। इसमें हिन्दुस्तान के गुलाम बनाये जाने की करुण कथा, और शासक और शासितों के पारस्परिक व्यवहार का चित्र है। लेखक की निर्भीकता तथा निष्पक्षता पढ़ते ही बनती है।

९—एशिया निवासियों के प्रति यूरोपियनों का बर्ताव। ले०—ठाकुर छेदीलाल एम० ए० । प्र०—प्रताप पुस्तकालय, कानपुर। मूल्य ।=), पृष्ठ ६२; सन् १९२१ । पुस्तक छोटी होने पर भी विचारपूर्ण है। पाँच व्यंग्य चित्र भी हैं। इसमें मिस्र, ईरान, रूस, चीन, और भारत आदि पर किये गये श्वेतांगों के अत्याचारों का वर्णन है।

१०—पूर्व की राष्ट्रीय जागृति। ले०—श्री० शंकरसहाय सकसेना एम० ए० । प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ २७०, मूल्य डेढ़ रुपया। इसके पूर्व में साम्राज्यवाद, मिस्र की राष्ट्रीय जागृति, और टर्की, अरब (सीरिया, पेलेस्टाइन, मेसोपोटेमिया, और मध्य अरब), ईरान, और अफगानिस्तान की राष्ट्रीय जागृति पर लिखा गया है, और काफी अच्छा लिखा गया है। लेखक ने चीन जापान आदि के बारे में लिख रखा है, अनुकूल परिस्थिति होने पर वह सामग्री एक अलग पुस्तक के रूप में प्रकाशित होगी, या इसी पुस्तक के दूसरे संस्करण में शामिल की जायगी।

११—साम्राज्यशाही के कर्णधार। मूल लेखक—साइमन हैक्सी; विक्रेता—मातृभाषा-मंदिर, दारागंज, प्रयाग; पृष्ठ १७१; मूल्य १॥); इसमें ब्रिटिश पार्लिमेंट के 'टोरी' (अनुदार) दल की कट्टर और स्वार्थपूर्ण नीति तथा साम्राज्य कायम रखने की प्रवृत्ति का वर्णन है। इससे मालूम होता है कि पार्लिमेंट में पूंजीवादियों का कितना प्रभाव होता है।

१२—गोरों का प्रभुत्व। ले०—श्री० रामचन्द्र वर्मा। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। मूल्य ॥।=); संसार की सवर्ण जातियाँ जागने और स्वतन्त्र होने लगी हैं, और वे अपने देशों से गोरों का प्रभुत्व हटाती जा रही हैं, इसी विषय का वर्णन है।

१३—गोरा चाम, काले काम। ले०—श्री० बालमुकन्द बाजपेयी, प्र०—प्रताप कार्यालय; कानपुर। मूल्य १), पृष्ठ २२६; सन्

१६२५। अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश भू-भाग पर योरप की गोरी जातियों का कैसे, किन-किन उपायों से अधिकार हुआ और वहाँ के काले मनुष्यों से गोरे देवों ने कैसा 'सुसभ्य' और 'ईसाई धर्म-संगत' व्यवहार किया, यह इस पुस्तक में अच्छी तरह दिखाया गया है। आरम्भ में गुलामी का संक्षिप्त वर्णन है। पुस्तक ज्ञान-वर्द्धक है।

१४—साम्राज्यवादी जापान। ले०—श्रीकृष्णदास; प्र०—किताबमहल, इलाहाबाद; पृष्ठ १४६; मूल्य १।)। कम्यूनिस्ट दृष्टिकोण से जापान का परिचय देते हुए, उसके साम्राज्यवादी तरीके और चीन तथा भारत के लिए उसका खतरा बताया गया है। सन् १९४४ में प्रकाशित।

१५—साम्राज्यवाद। ले०—श्री० मुकन्दीलाल श्रीवास्तव। प्र०-ज्ञानमण्डल, काशी। पृष्ठ ४४६, मू० २॥), सं० १९९३। इसके प्रथम खण्ड में साम्राज्यवाद के सम्बन्ध में दार्शनिकों, और ऐतिहासिको आदि का मत स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। दूसरे भाग में बताया गया है कि संसार के विविध हिस्सों में साम्राज्यवाद किस प्रकार फैला। वाणिज्य व्यवसाय पर बैंकों का प्रभाव, पूर्णाधिकारियों की स्थापना, पूँजीवादी राष्ट्रों की लूटखसोट, आदि अनेक बातों का वर्णन करके फ्रांस, ब्रिटेन, जापान आदि के राज्य-विस्तार के कारणों पर अच्छा विचार किया गया है।

१६—संसार की राजनीति में साम्राज्यवाद का नंगा नाच। ले०—श्री० गोविन्द सहाय; प्र०—साहित्य-मन्दिर, लखनऊ; पृष्ठ २६०, मूल्य १।।।)। साम्राज्यवाद, उसके विस्तार और वर्तमान रूप का विस्तृत परिचय दिया गया है और बताया गया है कि दुनिया की अशांति का मूल कारण यही है।

प्रवासी भारतीय—राष्ट्रीय जागृति से भारतीय जनता का ध्यान अपने प्रवासी बन्धुओं की ओर अधिकाधिक आकर्षित हुआ।

साथ ही, प्रवासी बंधुओं के कष्टों ने राष्ट्रीय जागृति को प्रगति प्रदान की। इस विषय का निम्नलिखित साहित्य हमारे सामने है :—

१—**बृहत्तर भारत**। ले०—श्री० चन्द्रगुप्त वेदालंकार; प्र०—गुरुकुल कांगड़ी। पृष्ठ ४७८, मूल्य चार रुपये बारह आने। इसमें यह विवरण देने का प्रयत्न किया गया है कि बौद्ध काल में, और उसके पश्चात् भारतेतर देशों में भारतीय संस्कृति किसी प्रकार फैली और इन देशों का भारत से किस प्रकार सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुआ।

२—**प्रवासी भारतवासी**। ले०—'एक भारतीय हृदय', प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य ४।), पृष्ठ ७२८, सन् १९१८। इसमें भारतीय प्रवास का ऐतिहासिक परिचय दिया गया है, दासत्व प्रथा और उसके पुनर्जन्म (प्रतिज्ञाबद्ध कुली प्रथा) पर विचार किया गया है। ब्रिटिश साम्राज्य के विविध स्थानों में भारतीयों के साथ होनेवाले दुर्व्यवहार का वर्णन किया गया है, तथा भारत सरकार, ब्रिटिश सरकार और भारतवासियों के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है। आवश्यक परिशिष्ट और तथ्यांक भी है।

३—**प्रवासी भारतीयों की वर्तमान समस्याएँ**। ले०—प्रेमनारायण अग्रवाल; प्र०—मानसरोवर साहित्य निकेतन, मुरादाबाद; पृष्ठ १६८, मूल्य १)। प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह पुस्तक लिखी गयी थी, और सन् १९३५ में प्रकाशित हुई थी। अब इसके नवीन संस्करण की आवश्यकता है।

४—**प्रवासी की कहानी**। ले०—श्री० भवानीदयाल जी संन्यासी; प्र०—बाल साहित्य प्रकाशक समिति, हरिसन रोड, कलकत्ता। मूल्य ढाई रुपये। दक्षिण अफ्रीका के प्रवासियों की मुसीबतों, उनके आन्दोलन, अधिकार-प्राप्ति के उद्योग आदि का अच्छा वर्णन है।

५—**दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव**। ले०—श्री० भवानीदयाल, प्र०—चाँद कार्यालय, प्रयाग; मूल्य २॥), पृष्ठ ४१४। सन्

१६२७। इसमें ३७ परिच्छेद हैं—कुछ के शीर्षक ये हैं—गौरांग नीति का पहला अनुभव, गौरांग नीति का नग्न नृत्य, डरबन में कुछ दिन, सत्याग्रह और उसके विरोधी, हड़ताल का मङ्गलाचरण, कारागार में आत्मबोध, बन्दी जीवन और अनशन व्रत, ट्रांसवाल और नेटाल में हिन्दी प्रचार आदि। लेखक अपने विषय के खूब अनुभवी हैं। पुस्तक प्रामाणिक और उपयोगी है।

६—दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास। ले०—श्री० भवानीदयाल जी संन्यासी। प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य, साढ़े तीन रुपये। यह उपयोगी पुस्तक, लेखक ने कई वर्ष पहले लिखी थी।

७—ट्रान्सवाल में भारतवासी। ले०-श्री० भवानीदयाल जी। प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य ।≋), पृष्ठ ७१। लेखक ने अपने अनुभव से इसमें ट्रांसवाल सरकार की अमानुषिकता के साथ, प्रवासी भारतीयों की निर्वलता का भी अच्छा परिचय कराया है; और ट्रांसवाल के भूत वर्तमान और भविष्य का चित्र अंकित किया है।

८—हमारा प्रधान उपनिवेश। ले०—सेठ गोविन्ददास, प्र०—सरस्वती पबलिशिंग हाउस, इलाहाबाद। पृष्ठ १०७, मूल्य डेढ़ रुपया। सेठ गोविन्ददास जी ने सन् १६३८ में पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका की यात्रा की थी; इस पुस्तक में उसी का वर्णन है। इसमें बताया गया है, कि हिन्दुस्तानियों के लिए यदि कोई देश प्रधान उपनिवेश बन सकता है, तो वह पूर्वी अफ्रीका है।

९—पुर्तगीज पूर्व अफ्रीका में हिन्दुस्तानी। ले०—श्री० ब्रह्मदत्त भवानीदयाल; प्र०—दयाल ब्रादर्स, ६१ विक्टोरिया स्ट्रीट, डरबन, नेटाल। मिलने का पता-प्रवासी भवन, आदर्श नगर, अजमेर। इसमें यह बताया गया है कि पुर्तगीज पूर्व अफ्रीका में स्वामी भवानीदयाल जी के प्रयत्नों से, कितनी कठिनाइयों के बाद, भारतीय समाज की नींव डाली गयी। भूमिका में उक्त प्रदेश का कुछ परिचय भी दिया गया है।

१०—केनिया में हिन्दुस्थानी। ले० और प्र०—श्री० बाबूराम मिश्र। मूल्य १।।), पृष्ठ २८८। सम्वत् १९८८। केनिया में ब्रिटेन का अधिकार होने में हिन्दुस्थानियों ने बड़ा योग दिया, तिस पर भी इसे गोरा उपनिवेश बनाने की नीति से यहाँ हिन्दुस्थानियों पर नाना प्रकार के अत्याचार किये गये। उसके प्रतिकार, तथा रंग-भेद की समस्या का हल करने के उपाय-स्वरूप इस पुस्तक में ब्रिटिश माल का बहिष्कार और सहयोग के अवलम्बन का आदेश किया गया है।

११—फिजी में भारतीय प्रतिज्ञाबद्ध कुली-प्रथा। मूल, अंगरेज़ी लेखक—सी० एफ० एण्ड्रूज़ और डबल्यू० डबल्यू० पियर्सन। हिन्दी लेखक—'एक भारतीय हृदय'। मूल्य ।।।), पृष्ठ २५०। सन् १९१९। हिन्दी लेखक ने प्रारम्भ में एक सविस्तर भूमिका देकर इन प्रश्नों का उत्तर दिया है कि क्या भारतवासियों की उपेक्षा-नीति से भविष्य में काम चल सकेगा, प्रवासी भारतवासियों का क्या कर्तव्य है, और कब किन उपायों से प्रवासी भारतीयों का उद्धार हो सकता है। पुस्तक में प्रामाणिकता और स्पष्टवादिता है।

१२—फ़ीजी की समस्या। ले० और प्र०—पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, सत्याग्रह आश्रम, साबरमति, अहमदाबाद। मूल्य १), पृष्ठ ३३९। लेखक ने बतलाया है कि फिजी प्रवासी भारतवासी किस प्रकार फिजी में आत्मसम्मान-पूर्वक रह सकते हैं, और फिजी की उन्नति और गौरव-वृद्धि के कारण हो सकते हैं। पुस्तक सम्भवतः सन् १९२१ में प्रकाशित हुई; दूसरा संस्करण देखने में नहीं आया।

१३—फ़िजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष। ले०—पं० तोताराम सनाढ्य। प्र०—भारती भवन, फ़िरोज़ाबाद। मू० ।=), पृष्ठ १५२। सं० १९७२। लेखक को फ़िजी प्रवासी भारतीयों के विषय की अनूठी लगन थी। उसने इसके लिये अनेक कष्ट सहे, त्याग किया और अपने अन्त समय तक उस धुन को न छोड़ा। पुस्तक का गुजराती, मराठी, उर्दू

और अंगरेज़ी आदि में भाषान्तर हो चुका है। इसकी उपयोगिता और सर्वप्रियता स्पष्ट है।

१४—मेरी फिजी यात्रा। मूल लेखक—श्री० गोविन्दसहाय शर्मा। अनु०—पं० बनारसीदास चतुर्वेदी। सन् १६२८। मू० ।~), पृष्ठ ६१। श्री० शर्माजी फ़िजी कमीशन के सदस्य नियुक्त हुए थे। सरकार ने उस कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की। पुस्तक में तत्सम्बन्धी यात्रा का वर्णन है। श्री० शर्माजी को प्रवासी बन्धुओं के कष्टों की बड़ी चिन्ता रहा करती थी; मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए भी आपको वही धुन थी। पुस्तक की उपयोगिता स्पष्ट है।

युद्ध—समाज की वर्तमान राजनैतिक और आर्थिक स्थिति में युद्ध का बड़ा भाग है। कभी युद्ध की तैयारी होती है, कभी युद्ध होता है, और कभी उससे पैदा होनेवाले सवाल हल करने होते है। ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर अभी साहित्य बहुत कम है। सेना की ही बात लीजिए। इस मद में गरीब भारतवर्ष का शान्ति के समय में पचास से सत्तर करोड़ रुपये तक हर साल खर्च होता रहा है, पर हिन्दी में उसके सम्बन्ध में एक भी पुस्तक नहीं है। युद्ध-निवारण के शान्तिमय उपायों का भी विचार बहुत कम हुआ है। आधुनिक सरकारें यह मानने को तैयार नहीं हैं कि युद्ध में अहिन्सा उपयोगी हो सकती है। युद्ध के सम्बन्ध में आगे लिखा साहित्य हमारे सामने है—

१—जीवन संग्राम। ले०—श्री० इन्द्र विद्यावाचस्पति; प्र०—विजय पुस्तक-भंडार। दिल्ली। मूल्य १), पृष्ठ १०६। इसमें बताया गया है कि व्यक्तियों तथा समूहों की प्रतिस्पर्द्धा से युद्ध होते रहते हैं; इनका क्रम मिटना स्वाभाविक नहीं है।

२—भारी भ्रम। यह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विचारक श्री० नार्मन एञ्जल की सुप्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद है। अनु०—श्री० रामदास गौड़। प्र०—व्यासाश्रम पुस्तकालय, मदरास। पृष्ठ ३२५,

मूल्य १।) । इसमें यह समझाया गया है कि युद्ध में भाग लेना प्रत्येक दृष्टि से हानिकर है ।

३—संसार संकट । ले०-श्री० कृष्णकांत मालवीय; प्र०-अभ्युदय प्रेस, प्रयाग; मूल्य १।।), पृष्ठ १४३ । सन् १९१४-१८ के महायुद्ध के समय पत्रों में अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर लिखे गये लेखों का संग्रह । राजनीति-प्रेमियों को इसमें बहुत सी जानने योग्य बातें मिलेंगी । लेखन-शैली प्रभावशाली है ।

४—आँखों देखा महायुद्ध । अनु०—बाबू रामचन्द्र वर्मा; प्र०—विद्याभास्कर बुकडिपो, काशी । पृष्ठ २६०, मूल्य ढाई रुपये । इसमें सन् १९१४-१८ के महायुद्ध का वर्णन है । युद्ध की भीषणता का अनुमान करने के लिए वह पुस्तक बहुत उपयोगी है ।

५—बीसवीं शताब्दी में महाभारत । मूल लेखक—श्री० विनयकुमार सरकार एम० ए० । अनु०—श्री० मुरारीदास अग्रवाल । मूल्य ।।।), पृष्ठ १३०, प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग । १९१४-१८ के योरपीय महायुद्ध के विविध कारणों, घटनाओं और परिणामों पर व्यापक विचार किया गया है ।

६—बेलजियन झगड़ा । ले०—श्री० हरिदास माणिक, काशी । मूल्य ।।), पृष्ठ १५१ । इसमें योरपीय महायुद्ध सम्बन्धी घटनाओं के आधार पर उत्साहवर्द्धक, मनोरञ्जक तथा शिक्षाप्रद बातों का समावेश है ।

७—संवत २००० अथवा भावी महाभारत । ले०—भारतीय योगी । प्र०—नवयुग पुस्तक भंडार, इलाहाबाद । मूल्य एक रुपया । इसमें जापान रूस, फ्रांस, जर्मनी, इंगलैंड आदि देशों की युद्ध सम्बन्धी तैयारियों का बड़े मनोरञ्जक वर्णन किया गया है । इसका उद्देश्य पाठकों को आधुनिक युद्ध की भयंकरता, उससे उत्पन्न होनेवाली संसार के नाश की संभावना और दूसरी बुराइयों का ज्ञान कराना है,

जिससे वे युद्ध के विरुद्ध होजायँ। यह पुस्तक बहुत लोकप्रिय रही, थोड़े ही दिनों में इसके दो संस्करण छप गये।

८—योरप में जंग की तैयारी। अंगरेजी से अनुवादित। अनु०—श्री चन्द्र अग्निहोत्री; प्र०—श्री० दुनीचन्द परवार, मालिक जवाहर प्रेस, १६१-१ हरीसन रोड, कलकत्ता। पृष्ठ २१२; मूल्य सवा रुपया। मूल पुस्तक के जो परिच्छेद ब्रिटिश दृष्टिकोण से लिखे गये है, उन्हें अनुवादक ने छोड़ दिया है। युद्ध सम्बन्धी यंत्रों के नाम अंगरेजी में ही दिये गये हैं, और उनकी व्याख्या के लिए विषय-परिचय नामक एक विशेष परिच्छेद जोड़ दिया है, जिससे साधारण पाठक भी उनका अभिप्राय अच्छी तरह समझ लें।

९—उन्नीस सौ चालीस। ले०—डा० सत्यनारायण जी और खानचन्द्र जी गौतम। प्र०—काशी विद्यापीठ, बनारस कैंट। पृष्ठ १५३, मानचित्र २४, मूल्य एक रुपया। इसमें वर्तमान योरपीय युद्ध के कारणों और उसके भावी परिणामों पर गहरा विचार किया गया है। विद्वान लेखक ने योरप के प्रत्येक देश की स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला है; और अरब, भारत, चीन, जापान, अफगानिस्तान आदि के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किये हैं।

१०—दूसरा विश्व युद्ध। ले०—श्री० जितेन्द्रनाथ सान्याल; प्र०—ओरियेण्टल पब्लिशिंग हाउस, बनारस, मूल्य ।।।), पृष्ठ १४५ (सजिल्द)। दूसरे महायुद्ध से पहले योरप की स्थिति तथा युद्ध की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए युद्ध की कुछ घटनाओं तथा तरीकों का परिचय दिया गया है। नये संस्करण की ज़रूरत है।

११—वर्तमान युद्ध में पोलेंड का बलिदान। ले० ठाकुर राजबहादुर सिंह; प्र०—वर्तमान साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, देहली। पृष्ठ १५३, मूल्य सवा रुपया। इसमें यह बतलाया गया है कि वर्तमान युद्ध के आरम्भ में पोलेंड का किस प्रकार बलिदान हुआ।

१२—जर्मनी का आक्रमण नार्वे पर। ले०—श्री० उमेशचन्द्र मिश्र। प्र०—इंडियन प्रेस प्रयाग। सन् १६४०; मूल्य आठ आने।

१३—भूमध्य सागर का रण-क्षेत्र। ले०-श्री० विश्वदर्शी; प्र०-विजय पुस्तक भंडार, देहली। इसमें सन् १९३६ में आरम्भ हुए महा-युद्ध के मध्य-पूर्व के रणक्षेत्र का वर्णन है। जिब्रालटर, स्वेज, और दर्रे दानियाल का इस में विशेष उल्लेख है। मूल्य, छः आने।

१४—लाल सेना। ले०—प्रो० आई० मिंज़; अनु—डा० रामविलास शर्मा; सोवियट रूस की लाल सेना क्या है, किस प्रकार वह संसार की इतनी प्रचण्ड और अग्रणी शक्ति बन सकी, और दुनिया की अन्य सेनाओं से उसमें क्या भिन्नता है, इसकी जानकारी दी गयी है। सचित्र; मूल्य सवा दो रुपये। प्रकाशक—जन प्रकाशन गृह, राज भवन, सेण्डर्स्ट रोड, बम्बई ४।

१५—स्तालिनग्राद का महायुद्ध। प्र०—उपर्युक्त; मूल्य १॥); सचित्र। विविध सोवियट लेखकों और लाल सेना के सैनिकों तथा अफसरों द्वारा लिखित उस ऐतिहासिक युद्ध का वर्णन है, जिसने महा-युद्ध की धारा ही बदल दी, और हिटलर के अरमानों को धूल में मिला दिया।

१६—जापान ब्रिटेन की छाती पर। अंगरेजी से अनुवादित। मूल पुस्तक एक जापानी की लिखी हुई है। हिन्दी अनुवादक—श्री० श्रीचन्द्र अग्निहोत्री। प्र०—श्री० एन. एल. सिंघई; देवरी (सागर)। पृष्ट २१४; मूल्य, सवा रुपया। इसमें जापान और ब्रिटेन के पारस्परिक सम्बन्ध, संघर्ष की तैयारियां, और जापान-ब्रिटेन युद्ध के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। उससे यह भी पता चलता है कि जापानी सारी वस्तु-स्थिति को किस दृष्टि से देखते थे।

१७—युद्ध-संकट और भारत। संपादक—श्री० यशपाल; सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली, मूल्य।), बड़े आकार के ६८ पृष्ट।

द्वितीय महायुद्ध के प्रारंभ-काल में गाँधी जी तथा अन्य नेताओं ने जो विचार युद्ध तथा भारत के रूख के सम्बन्ध में प्रकट किये थे, उनका, और कांग्रेस की कार्य समिति के प्रस्तावों का, संग्रह ।

१८—योरपीय युद्ध और भारत । प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली । मूल्य चार आने । म० गाँधी और पंडित जवाहरलाल के लेखों का संकलन ।

१९—हवाई छतरी । ले०—श्री०'अरुण' बी० ए० । प्र०—अवध पबलिशिंग हाउस, लाटूश रोड, लखनऊ । पृष्ठ १२५; मूल्य डेढ़ रुपया । इसमें हवाई छतरी (पेराशूट) का आविष्कार, उस की सेना और आधुनिक महायुद्ध में उसके उपयोगों की चर्चा है । अपने विषय की एकमात्र पुस्तक है ।

२०-२१—हवाई युद्ध, और, टैंक युद्ध । ये दोनों पुस्तकें डाक्टर सत्यनारायण की लिखी हुई हैं । इनका प्रकाशक है—पुस्तक मंदिर, हरिसन रोड, कलकत्ता । हमारे देखने में नहीं आयीं ।

२२—युद्ध और अहिंसा । प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; मूल्य ।।।), पृष्ठ २२० । युद्ध और युद्ध-काल में अहिंसा से किस हद तक काम चलता है, और अहिंसा-धर्मा का क्या कर्त्तव्य है, इसे स्पष्ट करनेवाले, महात्मा गाँधी के लेखों का तीन खण्डों में संकलन है । पहले खण्ड में वर्तमान योरपीय युद्ध और अहिंसा, दूसरे में म्यूनिक-संकट, अबीसिनिया-युद्ध और अहिंसा, तथा तीसरे खण्ड में पिछला महायुद्ध और अहिंसा विषय के लेख दिये गये हैं ।

२३—युद्ध और अहिंसा की शक्ति । प्र०—राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन मन्दिर, मालीवाड़ा, दिल्ली; मूल्य १।), पृष्ठ १०४, सजिल्द । युद्ध या हिंसात्मक प्रवृत्ति को रोकने के लिए किस प्रकार अहिंसा की उपयोगिता है, इस पर प्रकाश डालनेवाले गांधीजी के कई लेखों तथा विचारों का संकलन ।

१२—जर्मनी का आक्रमण नार्वे पर। ले०—श्री० उमेशचन्द्र मिश्र। प्र०—इंडियन प्रेस प्रयाग। सन् १६४०; मूल्य आठ आने।

१३—भूमध्य सागर का रण-क्षेत्र। ले०-श्री० विश्वदर्शी; प्र०-विजय पुस्तक भंडार, देहली। इसमें सन् १९३६ में आरम्भ हुए महा-युद्ध के मध्य-पूर्व के रणक्षेत्र का वर्णन है। जिब्रालटर, स्वेज, और दर्रे दानियाल का इस में विशेष उल्लेख है। मूल्य, छः आने।

१४—लाल सेना। ले०—प्रो० आई० मिंज़; अनु—डा० रामविलास शर्मा; सोवियट रूस की लाल सेना क्या है, किस प्रकार वह संसार की इतनी प्रचण्ड और अग्रणी शक्ति बन सकी, और दुनिया की अन्य सेनाओं से उसमें क्या भिन्नता है, इसकी जानकारी दी गयी है। सचित्र; मूल्य सवा दो रुपये। प्रकाशक—जन प्रकाशन गृह, राज भवन, सेण्डर्स्ट रोड, बम्बई ४।

१५—स्तालिनग्राद का महायुद्ध। प्र०—उपर्युक्त; मूल्य १॥); सचित्र। विविध सोवियट लेखकों और लाल सेना के सैनिकों तथा अफसरों द्वारा लिखित उस ऐतिहासिक युद्ध का वर्णन है, जिसने महा-युद्ध की धारा ही बदल दी, और हिटलर के अरमानों को धूल में मिला दिया।

१६—जापान ब्रिटेन की छाती पर। अंगरेजी से अनुवादित। मूल पुस्तक एक जापानी की लिखी हुई है। हिन्दी अनुवादक—श्री० श्रीचन्द्र अग्निहोत्री। प्र०—श्री० एन. एल. सिंघई; देवरी (सागर)। पृष्ट २१४; मूल्य, सवा रुपया। इसमें जापान और ब्रिटेन के पारस्प-रिक सम्बन्ध, संघर्ष की तैयारियाँ, और जापान-ब्रिटेन युद्ध के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। उससे यह भी पता चलता है कि जापानी सारी वस्तु-स्थिति को किस दृष्टि से देखते थे।

१७—युद्ध-संकट और भारत। संपादक—श्री० यशपाल; सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली, मूल्य ।), बड़े आकार के ६८ पृष्ट।

द्वितीय महायुद्ध के प्रारंभ-काल में गांधी जी तथा अन्य नेताओं ने जो विचार युद्ध तथा भारत के रुख के सम्बन्ध में प्रकट किये थे, उनका, और कांग्रेस की कार्य समिति के प्रस्तावों का, संग्रह।

१८—योरपीय युद्ध और भारत। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। मूल्य चार आने। म० गांधी और पंडित जवाहरलाल के लेखों का संकलन।

१९—हवाई छतरी। ले०—श्री० 'अरुण' बी० ए०। प्र०—अवध पबलिशिंग हाउस, लाटूश रोड, लखनऊ। पृष्ठ १२५; मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें हवाई छतरी (पेराशूट) का आविष्कार, उस की सेना और आधुनिक महायुद्ध में उसके उपयोगों की चर्चा है। अपने विषय की एकमात्र पुस्तक है।

२०-२१—हवाई युद्ध, और, टेंक युद्ध। ये दोनों पुस्तकें डाक्टर सत्यनारायण की लिखी हुई हैं। इनका प्रकाशक है—पुस्तक मंदिर, हरिसन रोड, कलकत्ता। हमारे देखने में नहीं आयीं।

२२—युद्ध और अहिंसा। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; मूल्य ॥।), पृष्ठ २२०। युद्ध और युद्ध-काल में अहिंसा से किस हद तक काम चलता है, और अहिंसा-धर्मी का क्या कर्त्तव्य है, इसे स्पष्ट करनेवाले, महात्मा गांधी के लेखों का तीन खण्डों में संकलन है। पहले खण्ड में वर्तमान योरपीय युद्ध और अहिंसा, दूसरे में म्यूनिक-संकट, अबीसिनिया-युद्ध और अहिंसा, तथा तीसरे खण्ड में पिछला महायुद्ध और अहिंसा विषय के लेख दिये गये हैं।

२३—युद्ध और अहिंसा की शक्ति। प्र०—राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन मन्दिर, मालीवाड़ा, दिल्ली; मूल्य १।), पृष्ठ १०४, सजिल्द। युद्ध या हिंसात्मक प्रवृत्ति को रोकने के लिए किस प्रकार अहिंसा की उपयोगिता है, इस पर प्रकाश डालनेवाले गांधीजी के कई लेखों तथा विचारों का संकलन।

२४—अहिंसात्मक युद्धकला। ले०—श्री० प्रद्युम्न कृष्ण गुलहरे; प्र०—उपयोगी प्रकाशनालय, फर्रुखाबाद। मूल्य।–), पृष्ठ ३५। इसमें यह सिद्ध करने की कोशिश की गयी है कि युद्ध तथा घरू मतभेदों को मिटाने के लिए अहिंसा का उपयोग किया जा सकता है तथा अहिंसा से शासन-संचालन किया जा सकता है।

राजनैतिक सन्धियाँ—संधियों का प्रश्न बड़े महत्व का है। अनेक बार संधियों में जनता के सावधान न रहने से देश को मुद्दत तक बड़ी हानि उठानी पड़ती है। हमें केवल यही जानने की आवश्यकता नहीं है कि भारतवर्ष के जुदा-जुदा हिस्सों की आपस में, अथवा इस देश की दूसरे देशों से, सन्धियाँ कैसी हैं, वरन् यह भी जानना चाहिए कि अन्य देशों की एक-दूसरे से कैसी संधियाँ हैं, या होती हैं। खेद है कि इस विषय में हमारा साहित्य इतना कम है कि खास इस विषय की एक भी उल्लेखनीय पुस्तक हमारे सामने नहीं है।

विश्व-शान्ति—संसार में चारों ओर शान्ति की पुकार है; तो भी शान्ति के लिए क्या व्यवस्था होनी चाहिए, जनता में किस प्रकार के विचारों का प्रचार होना चाहिए—ऐसे विषयों का साहित्य बहुत कम है। 'राष्ट्र-संघ और विश्व शान्ति' में दूसरे विषय के साथ-साथ इसकी भी चर्चा है; इस पुस्तक के विषय में पहले लिखा जा चुका है। खास इस विषय की पुस्तकें नीचे लिखी हैं—

१-२—आत्म निर्माण, और, चरित्र निर्माण। मूल अंगरेजी पुस्तक के लेखक हैं—सुप्रसिद्ध लाला हरदयाल एम० ए०। उसके आधार पर श्री० चन्द्रशेखर शास्त्री ने ये दो पुस्तकें लिखी हैं। दोनों सजिल्द। मूल्य हर एक का ३); पता–भारती साहित्य मन्दिर; दिल्ली। व्यक्तियों से ही समाज का निर्माण होता है; इस दृष्टि से पहले भाग में बुद्धि निर्माण, शरीर निर्माण, ललित कला निर्माण खंडों के अन्तर्गत बहुत से विषयों का गम्भीर विचार किया गया है। बुद्धिवादियों के

लिए इसमें बहुमूल्य सामग्री है। दूसरे भाग में नीति शास्त्र, व्यक्तिगत सेवा, मनुष्य जाति की एकता, राष्ट्र, विश्वराज्य, अर्थनीति, राजनीति, संस्कृति आदि का उदार दृष्टिकोण और विश्व शान्ति के लक्ष्य से विवेचन है। बहुत विचार करने योग्य रचना है।

३—विश्व-संघ की ओर। ले०—पंडित सुन्दरलाल और भगवानदास केला। पृष्ठ १०+-३१० । सन् १६४४ । मूल्य ढाई रुपये। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागञ्ज, प्रयाग। पुस्तक के तीन खंड हैं पहले खंड में बताया गया है कि मनुष्य जाति किस तरह छोटे-छोटे समूहों और दायरों को तोड़ कर आगे बड़े-बड़े समूहों और दायरों की तरफ बढ़ती रही है। दूसरे खंड में रास्ते की बाधाओं—परिवार का अनुचित मोह, वर्ण-भेद, जाति-भेद, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद आदि का विचार किया गया है। तीसरे खंड में यह समझाया गया है कि हमें कहाँ पहुँचना है; इसमें मानवजाति की एकता, विश्व-संघ की ज़रूरत, उसके आधार, उसकी संस्कृति, अर्थ नीति, शासन आदि पर प्रकाश डाला गया है। यह भी बताया गया है मनुष्य जाति के सुन्दर भविष्य के लिए हमें क्या करना चाहिए, कैसा बनना चाहिए। पुस्तक विश्व-शान्ति जैसे बहुत उपयोगी विषय की अच्छी रचना है।

४—जातियों को सन्देश। सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान पाल रिचर्ड की पुस्तक का अनुवाद। अनु०—ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। मूल्य ॥~), सम्वत् १६७६। पुस्तक में सब, और खासकर योरपीय जातियों को स्वार्थ-भाव छोड़कर भाईचारे की भावना से रहने का संदेश है। आरम्भ में श्री० रवीन्द्रनाथ टाकुर की, विश्व-शांति के विचारों वाली, भूमिका है।

५—धन-सत्ता का नाश और विश्व-शान्ति। प्र०—विश्व-धर्म प्रचारक संघ, गोराकुण्ड, इन्दौर; पृष्ठ ४१। बिना मूल्य वितरित।

इसमें बताया गया है कि चातुर्वर्ण्य व्यवस्था द्वारा किस प्रकार धन-सत्ता का अन्त होकर विश्व-शान्ति हो सकती है।

राजनैतिक शब्द कोष— राजनैतिक साहित्य की पूर्ति तथा वृद्धि करने में एक विशेष बाधा पारिभाषिक शब्दों की होती है। विविध साहित्यसेवियों और सम्पादकों तथा हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देनेवाली संस्थाओं ने नये-नये शब्द घड़ने और उन्हें प्रचलित करने में बहुत योग दिया है। यदि कहीं सरकार भी इस ओर उचित ध्यान देती, तो अब तक इस दिशा में बहुत प्रगति हो चुकी होती। परन्तु यहाँ सरकारी कार्य ज्यादहतर अंगरेजी में होते रहने के कारण, उससे राजनैतिक शब्द-भंडार की विशेष पूर्ति नहीं हुई। जो हो, इस समय नीचे लिखी पुस्तकें हमारे सामने हैं—

१—राजनीति शब्दावली। श्री० केला जी ने सन् १९२७ में इस नाम की एक छोटी सी पुस्तक तैयार की थी; उसमें प्रायः उनकी ही, राजनीति की पुस्तकों में आये हुए पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी से अंगरेजी, और अंगरेजी से हिन्दी पर्यायवाची शब्द दिये गये थे। पीछे, कई सज्जनों की सहायता से, और खासकर श्री० गदाधरप्रसाद जी अम्बष्ट के सहयोग से सन् १९३८ में उसका संशोधित और बड़ा संस्करण प्रकाशित हुआ। इसमें केवल अंगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय दिये गये हैं। कुछ ऐसे शब्दों की संक्षिप्त परिभाषा भी दे दी गयी है, जिनका हिन्दी के एक शब्द से साफ या पूरा अर्थ जाहिर नहीं होता। पृष्ठ १७४, मूल्य ।।।); प्रकाशक—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग।

२—श्री सयाजी शासन शब्द कल्पतरु। इसे बड़ौदा राज्य ने एक समिति द्वारा सम्पादित करा कर प्रकाशित किया है। सन् १९३१। मूल्य साढ़े बारह रुपये। मिलने का पता—सरकारी छापाखाना, बड़ौदा। इसमें बड़ौदा राज्य में काम में आनेवाले शासन

सम्बन्धी अंगरेजी के पारिभाषिक शब्दों के गुजराती, संस्कृत, बंगला, मराठी, उर्दू, फार्सी, अर्बी और हिन्दी पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं। इस कोश का कार्य बहुत प्रशंसा योग्य होते हुए भी इसका क्षेत्र परिमित रहना स्पष्ट है। फिर, हमें इसके खासकर हिन्दी भाग में बहुत सुधार और संशोधन होने की ज़रूरत मालूम होती है।

३—शासन शब्द संग्रह। संग्रहकर्ता श्री० हरिहरनिवास द्विवेदी एम० ए०, एल-एल०बी०। सम्पादक—श्री० मालाजीराव नृसिंहराव शितोले। प्र०—विद्यामंदिर प्रकाशन, मुरार (गवालियर)। पृष्ट ११ + २२३; मूल्य तीन रुपये। इस के तीन भाग हैं। पहले भाग में बताया गया है कि हिन्दी का पारिभाषिक शब्द अंगरेजी के किस शब्द की जगह काम में लाया जाता है। दूसरे भाग में अंगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय दिये गये हैं। तीसरे में उर्दू शब्दों के समान अर्थ वाले हिन्दी शब्द दिये गये हैं। संग्रह में यथा-सम्भव परिश्रम किया गया है। आरम्भ में, भूमिका विचारपूर्ण है। अगले संस्करण में इसे और भी अधिक उपयोगी बनाने का विचार है।

४—राजकीय कोश (अप्रकाशित)। नागरी प्रचारणी सभा, काशी, ऐसा कोष तैयार कर रही है, जिसमें राजकार्य में काम आने वाले सभी विषयों के शब्दों का समावेश होगा। राजनीति भी उसके अन्तर्गत रहेगी। कोश के पहले भाग में हिन्दी शब्द होंगें, और ऊनकी व्याख्या तथा अंगरेजी प्रतिशब्द। साथ ही मराठी, गुजराती, और बंगला में उनके प्रयोग की संभावना पर प्रकाश डाला जायगा। दूसरे भाग में अंगरेजी शब्दों की व्याख्या हिन्दी में देकर हिन्दी प्रतिशब्द दिये जायँगे। तीसरे भाग में राजकीय व्यवहार में आनेवाले सम्पूर्ण फार्म आदि दिये जायँगे। चौथे भाग में पांच परिशिष्ट होंगे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, ने एक उपसमिति नियुक्त करके राजनीति-शब्द-संचय सम्बन्धी कुछ कार्य किया था। बीच में वह कार्य स्थगित रहा। अब फिर उस ओर ध्यान दिया जा रहा है।

आशा है जनता के सामने जल्दी ही वह पुस्तक के रूप में आ जायगा। बेहतर तो यही है कि सम्मेलन और नागरी प्रचारणी सभा के सम्मिलित उद्योग से एक ही बहुत अच्छा कोश प्रकाशित हो।

छोटी पुस्तक मालाएँ—प्रचार कार्य के लिए छोटी और सस्ती पुस्तकें बहुत उपयोगी होती हैं। ज्यों ज्यों देश में राजनैतिक आन्दोलन बढ़ा, यहाँ इनका प्रकाशन बढ़ता रहा है। हम इनका अलग-अलग विचार न कर सिर्फ दो पुस्तक-मालाओं का ही परिचय देते हैं —

१—नवजीवन माला। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी देहली। ये पुस्तकें जेबी साइज की, और बहुत ही सस्ती है। इनके पढ़ने से भारतवर्ष की परिस्थिति, नेताओं के सन्देश, और विदेशी विद्वानों की विचार-धाराओं का ज्ञान होता है। मिसाल के तौर पर कुछ पुस्तकें ये हैं—सर्वोदय (गांधी जी) -); हिन्द स्वराज्य (गांधी जी) ≡); नवयुवकों से दो बातें (क्रोपाटकिन) =); खादी और गादी की लड़ाई (विनोबा) =); जब अंगरेज नहीं आये थे (दादा भाई नौरोजी) ≡); सोने की माया; (किशोरलाल मशरूवाला) -); इस माला की कुछ पुस्तकों का विशेष परिचय पहले दिया जा चुका है।

२—मानसरोवर पंफलेट। यह निबन्धमाला मानसरोवर साहित्य निकेतन, मुरादाबाद से प्रकाशित होती है। अभी तक इसमें चार पुस्तकें छपी हैं—(१) हिटलर की विचार-धारा, (२) पाँचवाँ कालम क्या है? (३) पाकिस्तान, और (४) भारत में साम्प्रदायिक समझौता। हर एक का मूल्य तीन-तीन आने हैं। इन सबके लेखक हैं—श्री० रामनारायण यादवेन्दु बी० ए०, एल एल०बी०। आशा है, भविष्य में दूसरे लेखक भी इसमें लिखेंगे। इस माला का उद्देश्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालना है। बहुत उपयोगी प्रयत्न है।

पत्र पत्रिकाएँ—खेद है कि अकेले राजनीति की कोई पत्रिका चिरकाल तक टिकने नहीं पायी। किसी को राज्य की ओर से संकट रहा, तो किसी को ग्राहकों की कमी ने ग्रस्त कर दिया। आवश्यकता है कि एकमात्र राजनीति की नहीं, तो उसके साथ अर्थ-शास्त्र, इतिहास और समाजशास्त्र को मिलाकर एक अच्छी बढ़िया पत्रिका निकाली जाय, जो आरम्भ में त्रैमासिक या द्विमासिक हो।

शिक्षा-संस्थाओं में राजनीति की शिक्षा—विदेशी सरकारों की अकसर यह इच्छा रहा करती है कि जनता को देश की असली राजनैतिक स्थिति मालूम न हो, और राजनीति की गम्भीर और सूक्ष्म बातों में दिलचस्पी न बढ़े। लोगों के सामने सरकार के कामों का सिर्फ उजला पहलू ही आवे, जिससे उनकी सरकार से पूर्ण सहानुभूति बनी रहे; उनमें कभी आलोचना करने का भाव जाग्रत न हो। भारत-सरकार भी इस विषय में कोई अपवाद नहीं रही है।

अस्तु, सन् १९३५ के विधान के अमल में आने पर इस विषय में कुछ सुधार हुआ। अब मेट्रिक तक नागरिक शास्त्र हरेक प्रान्त में हिन्दी में, या उस-उस प्रान्त की प्रान्तीय भाषा में ही पढ़ाया जाता है, और इंटर के विद्यार्थियों को इस विषय की परीक्षा में उत्तर हिन्दी आदि में लिखने की अनुमति है। इससे भारतीय भाषाओं में इस विषय के साहित्य की मांग बढ़ी है, और बहुत सी पुस्तकें निर्धारित पाठ्य क्रम के अनुसार लिखी गयीं, और लिखी जा रही हैं। एम० ए० तक शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो जाने पर इस दिशा में और प्रगति होगी।

गैर-सरकारी संस्थाओं में राष्ट्रीय विद्यालयों, विद्यापीठों और गुरुकुलों में राजनीति की शिक्षा दी जाती है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं में भी राजनीति का विषय लिया जा सकता है। इससे राजनीति के उच्च कोटि के गम्भीर साहित्य की मांग बढ़ने में सहायता मिली है। तो भी अभी बहुत काम होना शेष है।

तीसरा भाग

मिश्रित साहित्य

इस पुस्तक के पिछले दो भागों में अर्थशास्त्र और राजनीति के साहित्य का जुदा-जुदा परिचय दिया गया है। साहित्य के इन दो भागों का आपस में गहरा सम्बन्ध है। कभी-कभी लेखक इनमें से किसी एक पर ही विचार न करके दोनों का मिलाजुला या दूसरे विषयों के साथ विचार करता है। यहाँ हम ऐसे ही साहित्य का विचार करते हैं। सुभीते के लिए इसके ये भाग किये जा सकते हैं—

(१) समाज शास्त्र
(२) सभ्यता और संस्कृति
(३) वर्तमान स्थिति—
    (क) भारतीय
    (ख) अन्य देशीय
(४) अर्थशास्त्र और राजनीति के मिश्रित कोश।

समाजशास्त्र—हिन्दी में समाजशास्त्र सम्बन्धी साहित्य तैयार करने की ओर लेखकों का ध्यान थोड़े समय से ही गया है, और अभी तक इस विषय का गम्भीर साहित्य बहुत कम ही हैं। हमारे सामने ये पुस्तकें आयी हैं —

१—**समाज विज्ञान**। ले०—श्री० चन्द्रराज भंडारी, प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली। मूल्य १॥); पृष्ठ २०+५३४।

यह एक व्यापक विषय की पुस्तक है। एक खण्ड में सत्ता, राज्य, व्यक्तिवाद, अराजकवाद और बोलशेविज्म, न्याय और कानून, तथा दंड विधान का विचार है। एक दूसरे खण्ड में सम्पत्ति सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार किया गया है। राजनैतिक स्वाधीनता पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक बहुत अच्छी है। सन् १९२८ में छपी है। दूसरे संस्करण का हमें ज्ञान नहीं।

२—भारतीय समाजशास्त्र। ले०—श्री० धर्मदेव सिद्धान्तालंकार। प्र०—आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर। मूल्य १), पृष्ठ २५१। भारतीय समाजशास्त्र की आधार-शिला वर्ण-व्यवस्था है। लेखक ने इस विषय पर धार्मिक, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया है। भारतीय और योरपीय सभ्यता पर आलोचनात्मक दृष्टिपात भी किया है।

३—व्यवहार शास्त्र। ले०—पं० रामानुग्रह शर्मा, व्यास। प्र०—'राम' कार्यालय, लंका, काशी। मूल्य १), पृष्ठ २५६। इस में ग्राम-संगठन, समाज संगठन, धार्मिक संगठन, खेतीबारी, पशु-पालन, गोरक्षा आदि विविध लेखों का संग्रह है। भाषा सरल है, और विचार व्यवहारोपयोगी हैं।

४—संस्था-संचालन। ले०—श्री० हरिहरनाथ, प्र०—ज्ञान-मण्डल, काशी; सजिल्द, मूल्य ।=); पृष्ठ, छोटे आकार के, ५५। संस्था-स्थापना के सिद्धान्त, संगठन, कार्य-प्रणाली आदि पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। काफी पुराना प्रकाशन है।

५—सभा-विधान। ले०—श्री० विष्णुदत्त शुक्ल। प्र०—सस्ता साहित्य प्रकाशन मन्दिर, कलकत्ता; पृष्ठ २९१, मूल्य २॥)। सभाओं के संगठन, विधानादि की विस्तृत विवेचना है। संगठित, सार्वजनिक तथा कम्पनी-सभाओं के सम्बन्ध में आवश्यक ज्ञातव्य बातों का समावेश है।

६—प्रस्तुत प्रश्न। ले०—श्री जैनेन्द्रकुमार, प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई; पृष्ठ २२४, सजिल्द, मूल्य २)। मौजूदा समाज के सामने जो राजनैतिक और आध्यात्मिक प्रश्न या उलझनें उपस्थित हैं, उनके समाधान की चेष्टा की गयी है। कुछ विषय ये हैं-देश उसकी स्वाधीनता; विविध देश, उनका पारस्परिक सम्बन्ध; शासन-तन्त्र विचार, व्यक्ति और समाज; क्रांति; हिंसा-अहिंसा; जीवन-युद्ध और विकासवाद; धर्म-अधर्म, आदि।

७—आज का सवाल। ले०—श्री० चन्द्रनारायण शर्मा; प्र०—वाणी मन्दिर, छपरा, पृष्ठ ६६, मूल्य दस आने। इसमें देश की आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं का परिचय दिया गया है, और उन्हें हल करने के उपाय संक्षेप में बताये गये हैं।

८—स्वाधीन विचार। ले०—लाला हरदयाल; अनु० और प्र०—श्री० नारारायणप्रसाद अरोड़ा, पटकापुर, कानपुर। पृष्ठ २०३, मूल्य एक रुपया। राष्ट्र की सम्पति, भारतवर्ष और संसार के आन्दोलन, कार्लमार्क्स, तथा कई सामाजिक समस्याओं सम्बन्धी विचार।

९—विप्लव। ले०—श्री राधामोहन गोकल जी; प्र०—श्री० नारायणप्रसाद अरोड़ा, पटकापुर, कानपुर। मूल्य सवा रुपया। सामाजिक और आर्थिक समस्याओं सम्बन्धी लेख।

१०—मानव समाज। ले०—श्री० राहुल सांकृत्यायन; प्र०—ग्रन्थमाला कार्यालय, बांकीपुर, पटना। पृष्ठ ४५२; मूल्य सवा दो रुपये। मनुष्य समाज का आदि काल से किस तरह विकास होता आया, विविध देशों में उसकी प्रगति की क्या-क्या स्थिति रही, किस तरह पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, फासिज्म आदि का प्रचार हुआ, और तरह-तरह की समाजवादी धाराएँ फैलीं—इसका खुलासा विचार है।

११—भारत माता का सन्देश। ले०—श्री भाई परमानन्द एम० ए०। प्र०—सरस्वती आश्रम, लाहौर। मूल्य ॥), पृष्ठ ८८।

पुस्तक के कुछ लेख ये हैं—धर्म और राजनीति, ब्रिटिश पालिसी, सहयोग आदि।

१२—टाल्सटाय के सिद्धान्त। ले०—श्री० जनार्दन जी भट्ट एम० ए०; प्र०—प्रताप पुस्तकालय कानपुर। पृष्ठ २५६; मूल्य सवा रुपया। इस में महर्षि टाल्सटाय के सिद्धान्तों का निचोड़ उनके अनेक ग्रन्थों से इकट्ठा किया गया है। इसमें आगे लिखे विषयों का विचार है—किसान तथा मजदूर सम्बन्धी सिद्धान्त, राजा तथा प्रजा के आदर्श सम्बन्ध, नशे से बचने का परामर्श, अहिन्सा, और ब्रह्मचर्य-पालन।

१३—गुलामी से उद्धार। सम्पादक—श्री० मूलचन्द अग्रवाल, प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। मूल्य १), पृष्ट २०७। इस में, अहिन्सात्मक क्रांति तथा असहयोग के आचार्य महर्षि टाल्सटाय के प्रभावशाली विचार हैं। वे किसी भी सरकार की रचना को—चाहे वह प्रजातन्त्र ही क्यों न हो—अस्वाभाविक और शान्ति-नाशक मानते हैं; और भूमि को सरकारी न समझ कर उसको सार्वजनिक की जाने का आदेश करते हैं।

१४—गुलामी। यह भी महात्मा टाल्सटाय की पुस्तक का अनुवाद है। अनु०—श्री० कृष्णविहारी मिश्र, प्र०—हिन्दी ग्रन्थ भण्डार कार्यालय, काशी। मूल्य ॥।=), पृष्ट १०१। इसमें आधुनिक कल कारखानों से होनेवाली गुलामी का विवेचन है, साम्यवाद के प्रचार तथा सरकारों का अस्तित्व हटाने के सम्बन्ध में गम्भीर विचार है।

१५—हमारे ज़माने की गुलामी। मूल लेखक—म० टाल्सटाय; अनु०—श्री० सत्येन्द्र। पृष्ठ १००। मूल्य ।), प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली। इसके विषय ये हैं:—साम्यादर्श का दिवाला, गुलामी की जड़—क़ानून, यंत्रालय, सरकार क्या है? सरकारें कैसे उठाई जांय?

१६—खूनी शासन। इसमें संसार-प्रसिद्ध महर्षि टालसटाय के विचार हैं। लेखों में ठंडे कलेजे अत्याचार करना, जनता का चरित्र-नाश, शान्ति के नाम पर पाप, क्रान्तिकारी दल, जल्लाद का अन्तःकरण, आदि हैं, जिनमें रूसी जार के शैतानी शासन, और अहिन्सा के महत्व आदि का विवेचन है। मूल्य ।), पृष्ठ ४०, प्र०—ठाकुर लक्ष्मणसिंह, जबलपुर।

१७—गांधी विचार दोहन। ले०—श्री० किशोरलाल मश्रूवाला; अनु०—श्री० 'आनन्दवर्धक'; प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली। पृष्ठ १७६, मूल्य सवा रुपया। धर्म, समाज, सत्याग्रह, स्वराज्य, वाणिज्य, उद्योग, खादी, आदि जुदा-जुदा खंडों में म० गांधी के विचारों का परिचय।

१८—गांधीवाद की रूप रेखा। ले०—श्री० रामनाथ 'सुमन', प्र०—साधना सदन, इलाहाबाद, पृष्ठ २००, मूल्य डेढ़ रुपया। म० गांधी का राष्ट्रवाद, गांधीवाद और समाजवाद, आधुनिक भारतीय इतिहास में गांधीयुग, आदि अध्यायों में विविध पहलुओं से 'गांधीवाद' का अध्ययन। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मुरारका परितोषिक प्राप्त।

१६—पराजित गांधी। ले०—श्री० चतुरसेन शास्त्री; प्र०—संजीवनी इन्स्टीट्यूट, दिल्ली; पृष्ठ १३२, मूल्य १)। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की आलोचना की गयी है।

२०—डायरी के कुछ पन्ने। ले०—श्री० घनश्यामदास बिड़ला; प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; पृष्ठ १६०, मूल्य बारह आने। दूसरी गोलमेज परिषद में गांधी जी के साथ बिड़ला जी को, इङ्गलैंड की यात्रा में जिन अनेक राजनीतिज्ञों तथा अर्थशास्त्रियों (या ब्रिटिश पदाधिकारियों) के सम्पर्क में आने का मौका मिला, उनके साथ हुई महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख।

२१—मनुष्य विकास। ले०—श्री० रामेश्वर बी० एस-सी०; प्र०—नवलकिशोर प्रेस बुकडिपो, लखनऊ। प्रकृति में मनुष्य का स्थान

क्या है; उसने किस प्रकार, कहाँ तक उन्नति की है; इन बातों का वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया गया है। इसके कुछ अध्याय ये हैं—स्त्री-पुरुष, सामाजिक जीवन में स्त्रियों का स्थान, सामाजिक जीवन का मानव विकास पर प्रभाव, आदि। पुस्तक अच्छी विचारपूर्ण है। पृष्ठ सवा दो सौ से अधिक, सजिल्द, सचित्र, मूल्य केवल सवा रुपया।

२२—मानव जाति का संघर्ष और प्रगति। ले०—सर्वश्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, प्रकाशचन्द्र सूरी एम०ए०, और रामस्वरूप थापर एम० एस-सी०। प्र०—साहित्य भवन, हस्पताल रोड़, लाहौर। इसमें तीन खण्ड हैं—(१) अन्तर्राष्ट्रीय प्रवृत्तियाँ, (२) भारतवर्ष स्वराज्य की ओर, और (३) विज्ञान की प्रगति। एक-एक खंड क्रमशः एक-एक लेखक ने लिखा है। विद्यार्थियों के सुभीते के लिए प्रश्न भी दे दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या १६२+६६+४८; नया संस्करण, सन् १९४४। पुस्तक अच्छी है। छापे की अशुद्धियाँ और भाषा के प्रान्तीय प्रयोग खटकते हैं।

२३—मनुष्य जाति की प्रगति। ले०—श्री० भगवानदास केला; प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला दारागंज, प्रयाग। इस पुस्तक के नौ भाग हैं:—(१) विषय प्रवेश, (२) शारीरिक आवश्यकताएँ, (३) जीवन-निर्वाह, (४) सामाजिक जीवन, (५) राजनैतिक व्यवस्था, (६) मानसिक उन्नति, (७) आर्थिक व्यवस्था, (८) समाज-व्यवस्था, (९) उपसंहार। इन भागों में कुल मिला कर ४९ अध्याय हैं। पुस्तक छप रही है; ऐसा अनुमान है कि पृष्ठ संख्या साढ़े तीन सौ के लगभग होगी, और मूल्य ३॥)।

सभ्यता और संस्कृति—इस विषय का साहित्य धीरे-धीरे बढ़ रहा है। खेद है कि कुछ ओछी मनोवृत्ति वाले स्वार्थी लेखक दूसरे देशों की समाजों के दोष ढूंढ़ने में ही अपनी शक्ति लगाते रहते हैं। दोष किस सभ्यता में नहीं हैं? जरूरत है कि आदमी अपनी-

अपनी सभ्यता के गुण-दोषों का विचार करके उसके विकास में सहायक हों। इसके लिए यह भी अध्ययन करना होगा कि दूसरी सभ्यताओं से हमें क्या लेना उचित है। ऐसे आदान प्रदान से मेल-जोल बढ़ेगा, मानव प्रगति में सहायता मिलेगी, मनुष्य अधिक उदार, दयालु, और परोपकारी तथा समाज-सेवी होगा। इस विषय का हमारे सामने यह साहित्य है--

१—महान भारत। ले०—श्री० रामशंकर मिश्र; प्र०—दुर्गा-प्रसाद प्रेस पुस्तकालय, अमृतसर। पृष्ठ ५१६; मूल्य तीन रुपये। इसमें प्राचीन भारत सम्बन्धी बातों का इस ढङ्ग से सकलन किया गया है, कि भारतीय संस्कृति का सुन्दर चित्र सामने आ जाता है। इसमें सामाजिक संगठन, स्वदेश-प्रेम, शासन व्यवस्था, शिक्षा, भारतीय सभ्यता का विस्तार आदि बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया गया है।

२—भारतवर्ष का इतिवृत्त। प्र०—भारत धर्म महामंडल, काशी। पृष्ठ ३८०, मूल्य दो रुपये। इसमें प्राचीन भारत की राज्य-शासन व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली तथा रामायण और महाभारत कालीन संस्कृति आदि का दिग्दर्शन कराया गया है। भारतवर्ष को जगद्गुरु सिद्ध किया गया है।

३—भारतीय सभ्यता का विकास। ले०—श्री० कालीदास कपूर एम० ए०। प्र०—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ। पृष्ठ ८३, मूल्य आठ आने। भारतीय सभ्यता का निर्माण कैसे हुआ, और उसका पश्चिम और पूर्व के देशों में किस तरह प्रचार हुआ, इसका संक्षिप्त परिचय। अच्छी पुस्तक है।

४—हिन्दू सभ्यता। ले० और प्र०—श्री० महेशचन्द्र प्रसाद एम० ए०; कदमकुआं, पटना; पृष्ठ १५२; मूल्य एक रुपया। सन् १९२६। इसमें भारतवर्ष की महिमा, हिन्दुओं की सभ्यता, भारतीयों

की वीरता, शासन, विदेश-सम्बन्ध, उपनिवेशों की स्थापना आदि विषयों की अच्छी चर्चा की गयी है।

५—हिन्दुत्व। 'एक मराठा' की अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद। अनु० और प्र०—श्री० लक्ष्मणनारायण गर्दे। पृष्ठ १५१+१३। मूल्य बारह आने। सं० १९८२। 'हिन्दुत्व क्या है', इस प्रश्न का प्रामाणिक और तर्कपूर्ण उत्तर दिया गया है। पुस्तक राजनैतिक और राष्ट्रीय साहित्य-प्रेमियों के काम की है।

६—प्राचीन भारतवर्ष की सभ्यता का इतिहास। मूल लेखक श्री० रमेशचन्द्र दत्त; अनु०—श्री० गोपालदास। प्र०—इतिहास प्रकाशक समिति, काशी। सन् १९०६। चार भाग, पृष्ठ १९०+२१२+१३२+२९०। पुस्तक बड़ी योग्यता और परिश्रम का फल है। इसमें प्राचीन काल की राजनीति और कानून आदि के विषय में भी विचार किया गया है; हाँ, नूतन शोधों के आधार पर इसमें अब कई बातों में संशोधन होने की आवश्यकता है।

७—महाभारत मीमांसा। यह रायबहादुर श्री० चिन्तामणि विनायक वैद्य एम० ए० की 'श्रीमन्महाभारत के उपसंहार' नाम के मराठी ग्रन्थ का अनुवाद है। अनु०—पं० माधवराव सप्रे; प्र०—बालकृष्ण पांडुरंग ठकार, ग० वि० चिपलूणकर मंडलीक स्वामी, पूना। सन् १९२०। राजनीति और अर्थशास्त्र-प्रेमियों के लिए इसके राजकीय परिस्थिति, सेना और युद्ध, व्यवहार और उद्योग धन्धे, प्रकरण विशेष विचारणीय हैं। पुस्तक बड़े परिश्रम और अन्वेशन से लिखी गयी है; यह बात और है कि कुछ विचारकों का किन्हीं विषयों में मतभेद हो।

८—हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता। ले०—डाक्टर बेनीप्रसाद। प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, प्रयाग। आकार रायल अठपेजी; पृष्ठ कुल मिलाकर ६३२। पहला संस्करण; सन् १९३१। मूल्य ६)। रेशमी कपड़े की जिल्द। इसमें भारतवर्ष के बारहवीं सदी

तक के साहित्य, दर्शन, विज्ञान, शिल्प, कला, सामाजिक और राजनैतिक संगठन आदि का अच्छा विचार किया गया है। पुस्तक के अन्त में १४ पृष्ठ का शुद्धिपत्र होना एकेडेमी जैसी संस्था के लिए शोभा नहीं देता।

९—भारतीय लोकनीति और सभ्यता। ले०—प्रो० श्रीकृष्ण व्यंकटेश पुन्ताम्बेकर; प्र०—काशी हिन्दू विश्व विद्यालय। पृष्ठ २८८, मूल्य लिखा नहीं। भारतीय नागरिकता (लोकनीति) और सभ्यता के सम्बन्ध में बहुत अच्छी पुस्तक है। यह हिन्दू विश्वविद्यालय के पाठ्य-क्रम में भी है।

१०—आदि निवासियों की सभ्यता। ले०—श्री० चन्द्रिका-प्रसाद जिज्ञासु; प्र०—हिन्दू समाज सुधार कार्यालय, लखनऊ। मूल्य पांच आने। लेखक ने दलित जातियों को भारत का मूल निवासी बताया है; इन्हीं जातियों के प्राचीन इतिहास और सभ्यता का इस पुस्तक में वर्णन है।

११—मदर इंडिया। लेखिका—श्रीमति उमाशंकर नेहरू; प्र०—हिन्दुस्तान प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ सात सौ, मूल्य साढ़े तीन रुपये। इसमें अंगरेजी पुस्तक मदर इंडिया का अनुवाद है। आरम्भ में 'मिस मेयो से दो दो बातें' शीर्षक आलोचनात्मक प्रस्तावना है। पुस्तक के अन्त में भारतीय नेताओं के विचारों का भी संकलन है।

१२—'मदर इंडिया' का जवाब। लेखिका—श्रीमति चन्द्रावती लखनपाल, एम. ए.; प्र०—गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ। मूल्य १=), पृष्ठ १६३। इसमें मिस मेयो की घृणोत्पादक मिथ्या बातों का जवाब देकर, योरप अमरीका के सामाजिक अधःपतन का चित्र खींचा गया है। पाठकों से सुधार की अपील की गयी है।

१३—दुखी भारत। ले०—लाला लाजपतराय, प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य ५), पृष्ठ ४७७। यह भी मिस मेयो की 'मदर

इण्डिया' का जवाब है। पुस्तक विश्वस्त प्रमाणों के आधार पर लिखी गई है; अंगरेजी राज्य पर स्वय अंगरेज़ों को भी सम्मतियां दी गयी हैं। बहुत संयम और विवेक से लिखी गयी है।

१४--फ़ादर इंडिया। ले०—श्री० सी. एस. रङ्गा ऐयर। अनु०—बाबू सूर्यदेवसिंह, प्र०-श्री० नारायणदास वर्मन, सलकिया, हवड़ा। द्वितीय बार, सम्वत् १९८५। मूल्य २॥)। यह भी मिस मेयो की 'मदर इंडिया' का मुँहतोड़ जवाब है, युक्ति-पूर्ण खण्डन है।

१५-- पाश्चात्य संसार और भारतवर्ष। ले०—श्री० देवकी-नन्दन 'विभव'। प्र०—भारतीय महिला समिति, आगरा। पृष्ठ १९०; मूल्य एक रुपया। इसमें भी 'मदर इंडिया' पुस्तक के आक्षेपों का उत्तर देने का अच्छा प्रयत्न किया गया है।

१६--क्या भारत सभ्य है? ले०—श्री० योगी अरविन्द घोष। प्र०--सूर्यबलिसिंह, काशी पुस्तक भंडार, चौक बनारस। यह पुस्तक एक अंगरेज़ी पुस्तक के जवाब में लिखी गयी है, और इसमें अनेक युक्तियों से भारतवर्ष की सभ्यता सिद्ध की गयी है।

१७—सभ्यता का इतिहास। ले०—पंडित प्राणनाथ विद्यालंकार प्र०—के० सी० भल्ला, स्टार प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ १६४; मूल्य बारह आने। इसमें सुप्रसिद्ध लेखक बक्ल के सिद्धान्तों और विचारों की आलो-चना की गयी है।

१८—जो न भूल सका। ले०—श्री० आनन्द कौसल्यायन; प्र०-गयाप्रसाद तिवारी, हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, शाहगंज, प्रयाग। पृष्ठ २१४, सजिल्द, मूल्य तीन रुपये। इसमें लेखक के सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक संस्मरण है। भाषा रोचक और भाव हृदयग्राही हैं।

१९—योरपीय सभ्यता का दिवाला। ले०—ई० एस० स्टोक्स; अनु०—जीवनलाल वर्मा; प्र०—लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी, लाहौर। पृष्ठ ५३, मूल्य छः आने। भारतवर्ष में बसे हुए, और इस

देश से पूर्ण सहानुभूति रखनेवाले इस अंगरेज़ लेखक ने यह दिखाया हैं कि अगर योरपीय गोरी जातियों का इसी तरह आधिपत्य बना रहा तो मनुष्य-समाज में कलह, संघर्ष, और अशान्ति रहेगी।

श्री० जगदीशनारायण तिवारी ने भी इस पुस्तक का अनुवाद किया है। वह हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता, से प्रकाशित हुआ है। उस अनुवाद का नाम है, पश्चिमी सभ्यता का दिवाला। पृष्ठ ४५, मूल्य छः आने।

२०—मध्यकालीन भारतीय संस्कृति। ले०—महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द जी ओझा। प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग। पृष्ठ २२२; मूल्य मालूम नहीं। इसमें लेखक के तीन व्याख्यानों का संग्रह है, जो हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने प्रयाग में कराये थे—(१) धर्म और समाज, (२) साहित्य, (३) शासन, शिल्प और कला। इसमें सन् ६०० ई० से १२०० ई० तक की भारतीय संस्कृति पर गम्भीर और मार्मिक विवेचन है।

२१—भारतीय संस्कृति और नागरिक जीवन। ले०—श्री० रामनारायण यादवेन्दु बी० ए०, एल-एल० बी०। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या ३१४, मूल्य सवा रुपया। पुस्तक में १६ अध्याय हैं; कुछ विषय ये हैं—मानव समाज, साम्राज्य-वादी प्रवृत्तियाँ, अन्तर्राष्ट्रीयता, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक जीवन, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन आदि। लेखक भारत में सांस्कृतिक एकता का समर्थक है, पुस्तक समयानुकूल और उपयोगी है।

२२—चीन की संस्कृति। अनु०—श्री० शान्तिप्रिय आत्माराम पंडित। प्र०—जयदेव ब्रादर्स, बड़ौदा। पृष्ठ २१४; मूल्य सवा रुपया। इसमें चीन वासियों के रस्म-रिवाज, रहन सहन, राजकीय प्रबन्ध आदि का समावेश है।

२३—विश्व संस्कृति का विकास। ले०—श्री० कालीदास कपूर; प्र०—विद्यामंदिर, लखनऊ। पृष्ठ १०७, मूल्य सवा रुपया। इसमें सात अध्याय हैं; जिनमें से कुछ के विषय ये हैं—मानव जीवन की पहली झलक, मानवता के प्रथम उपदेशक, योरपीय सभ्यता की दिग्विजय, नवीन युग। संसार के इतिहास पर नजर डालते हुए समाज की भावी उन्नति के वास्ते भारतवर्ष की स्वतन्त्रता की आवश्यकता दिखायी गयी है। पुस्तक छोटी होने पर भी बहुत उपयोगी बातों से भरी हुई है।

२४--मानव संस्कृति। (अप्रकाशित); ले०—श्री० भगवान-दास केला, दारागञ्ज, प्रयाग। यह पुस्तक दो साल हुए लिखनी शुरू की गयी थी; बीच में दूसरे काम आ जाने तथा लेखक की बीमारी और कागज मिलने की कठिनाई के कारण काम रुका रहा। आशा है, अब जल्दी पूरा होगा।

२५-३३—हज़रत ईसा और ईसाई धर्म; यहूदी संस्कृति, आदि। 'भारत में अंगरेजी राज्य' आदि पुस्तकों के सुप्रसिद्ध लेखक श्री० पंडित सुन्दरलाल जी ने कई वर्षों के परिश्रम और गम्भीर खोज से संस्कृति सम्बन्धी एक बड़ा ग्रन्थ लिखा था; पर कई बाधाओं के कारण वह छप न सका। अब पंडित जी की कुछ जुदा-जुदा पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था हो रही है। हज़रत ईसा और ईसाई धर्म छप चुकी है। पृष्ठ १६८। मूल्य डेढ़ रुपया। प्र०—'विश्ववाणी' कार्यालय प्रयाग। पंडित जी की 'गीता और कुरान' पुस्तक में छपी सूचना से मालूम होता है कि संस्कृति सम्बन्धी उनकी ये पुस्तकें छपने को हैं—(१) यहूदी धर्म और यहूदी संस्कृति, (२) मिश्री धर्म और प्राचीन मिश्री संस्कृति, (४) यूनानी धर्म और प्राचीन यूनानी संस्कृति, (३) रोमन साम्राज्य का सांस्कृतिक रूप, (५) सुमेर, बाबुल, और असुरिया का सांस्कृतिक इतिहास, (६) जरथुस्त्री धर्म और ईरानी संस्कृति, (७) इसलामी संस्कृति के चार सौ वर्ष, और, (८) चीनी धर्म और चीनी संस्कृति।

हम इन पुस्तकों को शीघ्र ही छपी हुई देखने के अभिलाषी हैं, जिससे हिन्दी में इस विषय की कमी पूरी होने में खासी मदद मिले।

वर्तमान परिस्थिति; (क) भारतीय—विविध देशों की आर्थिक और राजनैतिक परिस्थिति का परिचय देनेवाला साहित्य कितना उपयोगी होता है, यह बताने की कुछ आवश्यकता नहीं। हिन्दी में इस विषय की पुस्तकें विशेषतया भारतवर्ष सम्बन्धी ही हैं। अन्य देशों की वर्तमान परिस्थिति को दर्शाने वाले ग्रन्थ कम हैं। जब कि संसार भर से हमारा सम्बन्ध है, और आगे और भी बढ़नेवाला है, ऐसे साहित्य की आवश्यकता स्पष्ट ही है। भारतीय परिस्थिति सम्बन्धी वर्तमान साहित्य यह है:—

१—हिन्दू जाति का स्वातन्त्र्य प्रेम। ले०—श्री०देशव्रत; मिलने का पता—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग। मूल्य ।।।≶); पृष्ठ १३६। इसमें प्राचीन युग से लेकर पठान साम्राज्य, मुग़ल साम्राज्य और नव-युग तक हिन्दू जाति के त्याग और स्वाधीनता-प्रेम का रोचक और उत्साह-वर्द्धक वर्णन है। भाषा सजीव है।

२—भारतीय इतिहास में स्वराज्य की गूँज। यह भारतीय स्वराज्य (होमरूल) की सुप्रसिद्ध आन्दोलिका स्व० श्रीमति एनीबिसेन्ट की पुस्तक की प्रस्तावना का अनुवाद है। इसमें भारतवर्ष के, आरम्भ से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास पर सूक्ष्म दृष्टि डालते हुए साफ-साफ बताया गया है कि भारतवर्ष स्वराज्य क्यों चाहता है। सन् १९१८। मूल्य ६ आने। पृष्ठ ७८। प्र०—अभ्यूदय प्रेस, प्रयाग।

३—देश-पूजा में आत्म बलिदान। ले०—श्री० भाई परमानन्द प्र०—सरस्वती आश्रम, लाहौर। मूल्य १।), पृष्ठ १७५। हिन्दू वीराङ्ग-नाओं के वृत्तान्त के अतिरिक्त, इस्लाम से संघर्ष, आर्य जातीय जीवन, महाराष्ट्र राज्य स्थापन, अंगरेज़ों का अभ्युदय, सिक्खों और अंगरेज़ों का संघर्ष, आदि विषय अच्छी प्रभावशाली भाषा में लिखे गये हैं।

४—राष्ट्रीय आन्दोलन और वैदिक धर्म। ले० और प्र०—श्री० महता रामचन्द्र शास्त्री। मूल्य ।=)। इसमें बतलाया गया है कि वेद या धर्म वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन के विविध प्रश्नों पर क्या कहता है। दृष्टिकोण राष्ट्रीय है, स्थान-स्थान पर संस्कृत उद्धरण दिये गये हैं।

५—तरुण भारत। यह स्व० लाजपतराय जी की अंगरेज़ी पुस्तक का संक्षिप्त अनुवाद है। प्र०—हिन्दी साहित्य मन्दिर, बनारस। मूल्य १।), सन् १९२३। अनुवादक हैं, बाबू रामचन्द्र वर्मा, और कन्हैयालाल खन्ना। इसमें सम्राट् चन्द्रगुप्त के समय से आधुनिक काल तक की भारत की राजनैतिक अवस्था का चित्र खींचा गया है, और राष्ट्रीय आन्दोलन का वास्तविक इतिहास और स्वरूप बताया गया है। इसमें ये परिच्छेद भी हैं:—भारतीय राष्ट्रीयता और संसार की शक्तियां, भारतीय राष्ट्रीयता में धार्मिक और साम्प्रदायिक भाव; भविष्य। [यह पुस्तक चौधरी एण्ड सन्स, बनारस, से भी प्रकाशित हुई है।]

६—भारत दर्शन। ले०—श्री० सुखसम्पतिराय भण्डारी, इसका कुछ विषय राजनैतिक तथा ऐतिहासिक है। उसके अतिरिक्त, इसमें भारतवर्ष के प्राचीन वैभव और ऐश्वर्य का दिग्दर्शन कराते हुए बतलाया गया है कि मुग़ल शासन के अन्त तक भी यह देश कितना सुखी था, और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल के आरम्भ से किस प्रकार यहाँ की आर्थिक दशा क्रमशः शोचनीय होती गयी। मूल्य ढाई रुपये। प्र०—हिन्दी साहित्य मंदिर, इन्दौर, सन् १९२१।

७—पूर्व मध्य कालीन भारत। ले०—श्री० रघुवीरसिंह; प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। बड़े आकार के २९६ पृष्ठ; सजिल्द, मूल्य ढाई रुपये, (युद्ध-काल में चार रुपये)। पूर्व मध्य काल में भारत की साम्राज्य नीति, मुसलमानी बादशाहत और उस समय की तरह-तरह की परिस्थितियों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

८—अरब और भारत के सम्बन्ध। अनु०—श्री० रामचन्द्र

वर्मा। प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग। बड़े आकार के पृष्ठ ३३४, सजिल्द, मूल्य चार रुपये। मौलाना सैयद सुलेमान नदवी के पाँच व्याख्यानों का अनुवाद। इसमें प्रमाण देकर यह अच्छी तरह सिद्ध किया गया है कि प्राचीन काल में अरब और भारत में व्यापारिक और धार्मिक आदि सम्बन्ध बहुत अच्छा और गहरा था।

९—मध्य कालीन भारत की सामाजिक और आर्थिक अवस्था। ले०—श्री० युसुफअली, एम० ए०; प्र०—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद। पृष्ठ १०२, मूल्य सवा रुपया। इस ग्रन्थ में सन् ६४७ ई० से सन् १५२६ तक के भारत की सामाजिक और आर्थिक अवस्था का रोचक तथा खोज-पूर्ण वर्णन है।

१०—मराठों का उत्थान और पतन। ले०—श्री० गोपाल दामोदर तामस्कर; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। पृष्ठ ६३४, मूल्य २॥); यह इतिहास की एक बहुत उत्तम कृति है। शासन व्यवस्था के पाठकों के लिए इसके, शिवाजी की शासन-व्यवस्था, मराठा राज्य का पुनः संगठन, पेशवा की शासन व्यवस्था, आदि अध्याय विशेष उपयोगी हैं।

११—मराठों का उत्कर्ष। मूल लेखक—न्यायमूर्ति रानाडे; अनु०—श्री० भास्कर रामचन्द्र भालेराव। प्र०—तरुण भारत ग्रन्था-वली, दारागंज। मूल्य १॥), पृष्ठ ३२६। मुख्य विषय ऐतिहासिक है, राजनीति-पाठकों के लिए इसमें शिवाजी का राज-प्रबन्ध, चौथ और सरदेसमुखी, पेशवाओं के रोजनामचों के कुछ वृत्तान्त, आदि पठनीय हैं।

१२—हिन्दू पाद बादशाही। मूल लेखक—विनायक दामोदर सावरकर। अनु०-श्री० पलटूसिंह मास्टर। मूल्य १॥।); पृष्ठ ३००, सन् १९२६। मूल लेखक अपनी योग्यता के लिए सुप्रसिद्ध हैं। इस पुस्तक से मराठों की नीति, सैन्य संचालन, शासनपद्धति और राज्य-व्यवस्था आदि का अच्छा ज्ञान होता है।

१३—सिखों का परिवर्तन। मूल लेखक डाक्टर गोकुलचन्द्र एम० ए०; अनु०—श्री० स्वामी सोमेश्वरदास बी० ए०। प्र०—पुस्तक भण्डार, लाहौर। मूल्य १॥), पृष्ठ २६४+३३+१२। पुस्तक का मुख्य विषय यह है कि सिक्ख किस प्रकार धार्मिक सम्प्रदाय से राजनैतिक संगठन में आ गये। इससे सिक्खों की शासन-प्रणाली और न्याय-पद्धति का ज्ञान प्राप्त करने में भी अच्छी सहायता मिलती है। मूल पुस्तक खूब अध्ययन और मनन पूर्वक लिखी गयी है।

१४—नवीन भारत। सर हेनरी काटन की पुस्तक का अनुवाद; प्रकाशित सन् १९०५। लेखक ने अपने जाति-भाइयों (अंगरेजों) को यह समझाने का उद्योग किया है कि भारतवासी अब बहुत योग्य हो गये हैं, उन्हें उचित स्वत्व दिये जाने चाहिएँ। अनु०—गणेश-नारायण सोमाणी बी० ए०, जयपुर। मूल्य १॥); पृष्ठ, बड़े आकार के २७८।

१५—देश का दुखी अंग। ले०—श्री० रामनरेश जी त्रिपाठी। प्र०—सस्ती हिन्दी पुस्तकमाला, कानपुर। मूल्य तीन आने। पृष्ठ ८०। इस पुस्तक में किसानों के दुख दूर करने के उपायों पर विचार करते हुए सरकार, जमींदार, पुलिस, पटवारी, अदालत और वकीलों के सम्बन्ध में छोटे-छोटे लेख दिये गये हैं। अन्त में बताया गया है कि किसान बेजा हकूमत को न मानें, और सत्याग्रह और असहयोग से काम लें।

१६—भारत में ब्रिटिश राज्य (इक्कीस बनाम तीस)। ले०—आचार्य चतुर्सेन शास्त्री। प्र०—बलिदान बुकडिपो, देहली। पृष्ठ ३२३; मूल्य १॥)। पुस्तक में विषय-सूची नहीं दी गयी है। कुछ अध्यायों के शीर्षक ये हैं:—भारत का ध्येय, जवाहरलाल नेहरू, गांधी का बल, देश का वातावरण; अपने और पराये, भविष्य भारत, भारत से ब्रिटिश गवर्नमेंट को आमदनी, अंगरेजों की शासनपद्धति के दोष,

एशिया की बेचैनी, भावी महायुद्ध, आदि। भाषा जोरदार है। नया संस्करण देखने में नहीं आया।

१७—देवता इन्द्र और नमक की खान। ले०—बाबू मोहनलाल भटनागर, नवजीवन पुस्तकालय, लाहौर। मूल्य ।।=), पृष्ठ ६१। इसका दूसरा नाम है, 'भारतवर्ष पर ब्रिटिश शासन का चित्र'। पुस्तक रोचक है, और दृष्टान्त तथा लोकोक्तियों एवं अलंकारों से भरी हुई है।

१८—हमारा देश। ले०—श्री० किशनचन्द 'ज़ेबा'; अनु०—ठाकुर राजबहादुरसिंह; प्र०—लाजपतराय साहनी, लाहौर। मूल्य ।।।), पृष्ठ संख्या १३६। इसमें प्रो० टी. एल. वासवानी के लेखों का संग्रह है। लेखों में देश-भक्ति, स्वदेश प्रेम, सत्याग्रह, अहिंसा, सभ्यता स्वराज्य, स्वदेशी, अस्पृश्यता आदि का विचार है। उन में धार्मिक या आध्यात्मिक पुट है। स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय कविताएं भी हैं।

१९—स्वदेश। मूल लेखक—श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; अनु०—श्री० महावीरप्रसाद गहमरी; हिन्दीग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई; मूल्य दस आने; पृष्ठ १२१। सन् १९२२। देश की उस समय की स्थिति से सम्बन्ध रखनेवाले कुछ लेखों का संग्रह; जैसे, नया और पुराना, पूर्वी और पश्चिमी, देशी रजवाड़े आदि। पुस्तक विचारपूर्ण है।

२०—आधुनिक भारत। ले—श्री० प्यारेलाल गांगराडे। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मूल्य ।।=)। सं० १९८०। पृष्ठ ११४। इसमें बताया गया है कि ईष्ट इंडिया कम्पनी के शासनकाल में तथा उसके बाद भारत की, व्यापार व्यवसाय आदि में, घोर अवनति हुई, और अब हम ब्रिटिश सरकार के हृदय में, एवं उसकी शासन-प्रणाली में परिवर्तन चाहते हैं।

२१—आधुनिक भारत। अनु०—श्री० हरिभाऊ उपाध्याय; प्र०—हिन्दी मन्दिर, प्रयाग। पृष्ठ ३३२, मूल्य चार रुपये। यह

आचार्य जावडेकर की मराठी पुस्तक का रूपान्तर है। भारतवर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन की आधार-भूमि आध्यात्मिक है, इस दृष्टि से आन्दोलन को समझाया गया है। बहुत विचार-पूर्ण है।

२२—वर्तमान भारत। श्री० पामीदत्त की अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—'यश'। प्र०—नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स, लाहौर। मूल्य १॥, पृष्ठ २०७। साम्राज्यवाद की नींव, भूमि पर अनुचित दबाव, उद्योग धन्धों के मार्ग में असुविधा, भारत का औद्योगिक विकास, साम्प्रदायिक समस्या, मजदूर दल का संगठन, भारत और अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर दल, भारत और ब्रिटिश मजदूर आदि विषयों का वर्णन है।

२३—नवभारत। ले०—श्री० रामकृष्ण; प्र०—प्रकाशन मंदिर, काशी। मूल्य आठ आने। इसमें भारतीय जीवन सम्बन्धी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर गांधीवादी दृष्टिकोण से विचार गया है। पुस्तक हमने देखी नहीं है।

२४—हिन्दुस्तान। ले—श्री० दयाचन्द्र गोपलीय बी० ए०। प्र०—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। दो खण्ड, प्रत्येक का मूल्य १।), पृष्ठ २७+२१२। पहले खण्ड में वर्णन और इतिहास है। दूसरे में शासन और आर्थिक स्थिति का परिचय है। पुस्तक सरल और सुन्दर ढङ्ग से लिखी गयी है। सन् १९१७ ई० में प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ था, पीछे नया संस्करण हुआ हो तो हमें मालूम नहीं।

२५—देश की बात। सम्पादक देवनारायण द्विवेदी; प्र०—आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, कलकत्ता। पृष्ठ ४००, मूल्य ढाई रुपये। यह पुस्तक स्व० पंडित सखाराम गणेश देउस्कर की, बङ्गला भाषा में लिखित, 'देशेर कथा' के आधार पर लिखा गयी है। इसमें भारत की राजनैतिक और आर्थिक दशा का चित्र बहुत अच्छे प्रामाणिक ढङ्ग से खींचा गया है।

२६—कांग्रेस राज्य में। ले०—श्री० गोपीनाथ श्रीवास्तव, एम० एल० ए० (भूतपूर्व पार्लिमेंटरी सेक्रेटरी, यू० पी०)। प्र०—गङ्गा पुस्तकमाला कार्यालय, ३६ लाटूश रोड, लखनऊ। पृष्ठ संख्या १६१; मूल्य ।||), सजिल्द १|)। इसमें कांग्रेस के उन कार्यों का प्रामाणिक विवेचन है, जो उसने संयुक्तप्रान्त में, अपने शासन-काल के २८ महीनों में किया। कांग्रेस ने जुलाई १९३७ में शासन-कार्य सँभाला और नवम्बर १९४२ में इस्तीफा दिया। इस बीच उसने उत्साह और लगन के साथ अपने विविध उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयत्न किया। इस पुस्तक से कांग्रेस सम्बन्धी बहुत से भ्रम दूर हो जाते हैं।

२७—भारतीय स्वाधीनता संदेश। ले०—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक। मूल्य एक रुपया। मिलने का पता:—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। इसमें स्वराज्य सम्बन्धी विविध प्रश्नों पर प्रकाश डालते हुए कांग्रेस, हिन्दू महासभा, और मुसलिम लीग के अन्तर पर विचार किया गया है। पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी।

२८—भारतीय जागृति। श्री० भगवानदास केला, प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज प्रयाग। चौथा संस्करण, सन् १९४५। पृष्ठ दो सौ। मूल्य दो रुपये। इसमें जागृति के सिद्धांतों का विवेचन करके, भारतवर्ष की गत सौ वर्षों की धर्म, समाज, उद्योग धन्धे, कृषि शिक्षा, साहित्य, विज्ञान और राजनीति सम्बन्धी जागृति का अच्छा परिचय दिया गया है। आधुनिक व्यापक इतिहास के प्रेमियों के बड़े काम की चीज़ है।

२९—अंगरेज़ी राज में हमारी आर्थिक दशा। लेखक—डा० ज़ैनुल अहमद; प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली; पृष्ठ १५४, मूल्य ||)। अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है। इसमें ब्रिटिश साम्राज्य की भारत सम्बन्धी राजनैतिक और आर्थिक नीति पर विचार किया गया है, जिनके कारण आज भारत तबाह हो रहा है।

३०—भारतीय चिन्तन। ले०—श्री० भगवानदास केला। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन। मूल्य ॥|=), पृष्ठ १८८। इसमें विविध सामयिक लेखों का संग्रह है। इसके छः खण्डों में से एक आर्थिक, एक राजनैतिक, तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय है। अन्य खंडों में प्रेम का शासन, प्रेम की विजय, धर्मयुद्ध, खद्दर का पहिनाव, विजय दशमी का संदेश, आदि विचारणीय हैं। पहला संस्करण, समाप्त।

३१—भारतवर्ष में सरकारी नौकरियाँ। ले०—पं० हृदयनाथ कुँजरू बी० ए०; अनु०—पं० माधवराव सप्रे। मूल्य ॥|), पृष्ठ २००, बड़ा आकार। सन् १६१६। इसमें बताया गया है कि उच्च सरकारी पदों पर नियुक्त किये जाने के लिए भारतवासियों ने क्या-क्या प्रयत्न किये, और बड़ी बड़ी नौकरियों के सम्बन्ध में उनकी क्या स्थिति है; सरकार ने अपने वायदे किस प्रकार भङ्ग किये हैं।

३२—मातृभूमि अब्द कोष। ले० और प्र०—श्री० रघुनाथ विनायक धुलेकर, झांसी। यह अपने ढङ्ग की एकमात्र पुस्तक है। इसका प्रथम संस्करण १६२६ और दूसरा १६३० सम्बन्धी प्रकाशित हुआ था। इसके बाद भी एक दो संस्करण हुए हैं, पर वे हमने नहीं देखे। इसमें राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्य और शिक्षा सम्बन्धी परिस्थिति का अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। आर्थिक विषयों में आर्थिक कान्फ्रेंस, चेम्बर आफ कामर्स, किसान मजदूर कान्फ्रेंस, जमींदार ऐशोसियेशन, मजदूर आन्दोलन और भारत के उद्योग धन्धे आदि की उपयोगी चर्चा की गयी है। राजनैतिक संस्थाओं और आन्दोलन का भी परिचय है। ऐसी पुस्तक का प्रति वर्ष नया संस्करण होता रहना चाहिए।

३३—भारत के देशी राष्ट्र। ले०—श्री० सम्पूर्णानन्द बी० एस-सी०। प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर। सन् १६१८। मूल्य ॥|), पृष्ठ २३४, इसमें बताया गया है कि भारतवर्ष में अंगरेजों के साथ विविध लड़ाइयों के परिणाम-स्वरूप कैसी संधियां हुई और किस प्रकार

देशी राज्यों के अधिकार धीरे-धीरे कम होते गये। पुस्तक बहुत ज्ञान-पूर्ण है। हाँ, नये संस्करण की जरूरत है।

३४—**भारतीय नरेश**। ले०—श्री० जगदीशसिंह गहलौत, जोधपुर। पृष्ठ बड़े आकार के १३८, मूल्य १।), सं० १६८०। इसमें देशी नरेशों की वर्तमान स्थिति और अंगरेजी सरकार के साथ की हुई संधियों के परिचय के अतिरिक्त, देशी राज्यों की नामावली, राजविस्तार, जन-संख्या और आय आदि की प्रान्तवार तालिका है। अधिकांश भाग तालिका का ही है, जो इस विषय की अच्छी पुस्तक के लिए परिशिष्ट का काम दे सकती है। इस नाम के उपयुक्त एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ की आवश्यकता है।

३५—**राजस्थान और देशी राज्य दर्शन**। ले० और प्र०—कुँवर मदनसिंह करौली। मूल्य १), पृष्ठ २८७। राजस्थान और देशी रियासतों में प्रजा पर होनेवाले अत्याचारों का दिग्दर्शन कराया गया है, साथ ही उसके निवारण के लिए प्रजा का कर्तव्य बताया गया है। कुछ लेख सामाजिक और आर्थिक विषयों के हैं, दूसरे लेखों में से कुछ के शीर्षक ये हैं :—अमात्य, पार्टियाँ, नजराना, ठिकानेदार या जागीरदार, बेगार, गुलामी, कृपापात्र, आदि।

३६—**राजस्थान**। ले०—श्री० श्रीगोविन्द हयारण। प्र०—साहित्य मण्डल, दिल्ली। मूल्य ३)। लेखक को देशी राज्यों का अच्छा अनुभव था, और वे मरते दम तक इस पुस्तक के सम्पादन आदि में लगे रहे। पुस्तक में देशी राज्यों के सम्बन्ध में मोटी-मोटी बातों की जानकारी दी हुई है। अब पुरानी हो गयी है। नये संस्करण की आवश्यकता है।

३७—**देशी राज्यों का दर्जा**। ले०—श्री० प्यारेलाल; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली। डिमाई अठपेजी, पृष्ठ ४२। मूल्य चार आने। पुस्तक में देशी राज्यों सम्बन्धी कई सामयिक प्रश्नों पर

अच्छा प्रकाश डाला गया है। आरम्भ में म० गांधी की लिखी भूमिका है। पुस्तक छोटी होते हुए भी, बहुत उपयोगी है; प्रामाणिक भी।

३८—देशी राज्यों की समस्या। ले०—श्री० रघुनाथ प्रसाद परसाई। प्र०—देशी राज्य साहित्य मंडल; सोहागपुर। पृष्ठ ३२। लेखक देशी राज्यों के एक अनुभवी कार्यकर्ता है। इस पुस्तक में उनके नौ लेख हैं, जो समय-समय पर समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

३६—देशी राज्य। ले०—श्री० गङ्गाप्रसाद गुप्त। प्र०—भारत जीवन प्रेस, काशी। सन् १६०५। मूल्य ≈)।

४०—भारत के देशी राज्य। ले०—श्री० हरेकृष्ण जौहर; प्र०—बंगवासी प्रेस, कलकत्ता। सन् १६०६।

४१—भारत के देशी राज्य। (अप्रकाशित)। ले०—श्री० शंकरसहाय सकसेना एम० ए०; प्रोफेसर, बरेली कालिज, बरेली।

४२—रतलाम किधर। ले० और प्र०—श्री० सत्यदेव विद्यालंकार, मारवाड़ी प्रगति संघ, ४० ए० हनुमान रोड, नयी दिल्ली। सन् १६४४। मूल्य चार आने। छोटे आकार के ८८ पृष्ठ। लेखक को देशी राज्यों सम्बन्धी अच्छा अनुभव है। पुस्तक में रतलाम के 'स्वेच्छाचारी शासन का नंगा चित्र' है।

४३—रघुनाथसिंह का मुकदमा। सम्पादक और प्र०—कामरेड एस० एम० गोपा। जैसलमेर में श्री० रघुनाथसिंह जी को सन् १६३२ में बिना मुकदमा चलाये गिरफ़ार किया गया था, और जबानी हुक्म से सजा भी दे दी थी। उसका ही इस पुस्तक में वर्णन है। जैसलमेर राज्य सम्बन्धी दूसरी बातों के सम्बन्ध में भी लिखा गया है।

४४—श्री० पथिक जी का बयान। प्र०—राजस्थान सेवासंघ, अजमेर। पृष्ठ १२६, मूल्य आठ आने। सन् १६२४। यह वह बयान

है जो राजस्थान के प्रसिद्ध सेवक श्री० बिजयसिंह जी 'पथिक' ने अपने मुकदमे के सम्बन्ध में, उदयपुर की खास अदालत में दिया था। इससे राजपूताने और खासकर मेवाड़ की परिस्थिति का अच्छा परिचय मिलता है।

४५—बीकानेर का काला कानून। प्र०—मंत्री, राजस्थान शाखा, अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद, अजमेर। इसमें वह कानून दिया गया है, जो बीकानेर सरकार ने 'जनता की रक्षा' के लिए सन् १९३२ में जारी किया था। बीकानेर नरेश से इस कानून को हटाने का अनुरोध किया गया है।

४६—बीकानेर राजद्रोह और षड्यंत्र का मुकदमा। भारत प्रिंटिंग वर्क्स, बाजार सीताराम, देहली, में मुद्रित। सन् १६३२ में आठ नागरिक संदेह के आधार पर गिरफ़ार किये गये, उनका मुकदमा दो साल तक चला। उसके सिलसिले में अदालत में जो कागज पेश किये गये, उनसे कई रोमांचकारी बातें मालूम होती हैं। इसी मुकदमे का वर्णन इस पुस्तक में है।

४७—रीवा। ले०—श्रो० प्रकाश बी० ए०। प्र०—श्री० योगेन्द्र बी० ए०, इलाहाबाद। पृष्ठ २०५, मूल्य दो रुपये। सन् १६३१। प्रथम भाग; आर्थिक और राजनैतिक परिस्थिति। पुस्तक अच्छे ढङ्ग से लिखी गयी है। नये संस्करण की आवश्यकता है।

४८—प्रकाश पथ। ले०—हकीम अब्दुलवहीद मुजतर; प्र०—वहीद आलम दवाखाना, चितली कबर, देहली। पृष्ठ ६२, मूल्य छः आने। इसमें आर्यसमाज की उन मांगों को अनुचित बताया गया है, जिनके लिए सन् १६३८ में हैदराबाद-सत्याग्रह हुआ था। पुस्तक में हैदराबाद राज्य की आर्थिक तथा राजनैतिक परिस्थिति का खूबसूरत पहलू दिखाया गया है।

४९—कांग्रेस से। ले० और प्र०—श्री० कन्हैयालाल दौलतराम वैद्य, जूनी हनुमान गली, बम्बई २। श्री० वैद्य जी मध्य भारत

के एक प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं। आपने कई राज्यों के बारे में समय-समय पर अंगरेजी या हिन्दी में कई पुस्तिकाएँ लिखी और छपायी हैं। इस ट्रेक्ट में झाबुआ की परिस्थिति बतायी गयी है, और ब्रिटिश भारत के नेताओं से, खासकर कांग्रेस-सभापति से, अपील की है कि वे देशीराज्यों की जनता के प्रति सहानुभूति और सहयोग का परिचय दें।

वर्तमान परिस्थिति ; (ख) अन्यदेशीय—हमें इस विषय की नीचे लिखी पुस्तकों का पता लगा है:—

१—क्या करें। ले०—श्री० राहुल सांकृत्यायन; प्र०—साम्यवादी पुस्तक प्रकाशन मंदिर, दारागंज, प्रयाग। मूल्य एक रुपया। लेखक के, सामयिक समस्याओं पर लिखे हुए लेखों का संग्रह। इसमें भारत-वर्ष, चीन, जापान, तिब्बत की परिस्थिति पर विचार किया गया है, और रूस के सम्बन्ध में लोगों के भ्रमात्मक विचारों का खंडन किया गया है। अन्तिम लेख हिन्दी साहित्य के बारे में है।

२—लड़खड़ाती दुनिया। ले०-श्री० जवाहरलाल नेहरू। प्र०-सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली। पृष्ठ संख्या २१०, मूल्य चौदह आने। इसमें लेखक के समय-समय पर लिखे हुए लेखों का संग्रह है। लेख पुराने होने पर भी नये हैं। श्री० नेहरू जी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के एक बड़े विद्वान है, और भारतीय राजनीति के तो प्रमुख सूत्रधार ही हैं। उन्होंने हर रोज बदलती हुई दुनिया का अच्छा चित्र खींचा है, और बताया है कि भारतवासियों को अपने निजी छोटे झगड़ों को भूलकर वर्तमान क्रान्ति का किस तरह स्वागत करना चाहिए।

३—द्वितीय महायुद्ध के पूर्व का संसार। ले०—श्री० रामरत्न गुप्त, बिहारी निवास, कानपुर। प्रथम भाग, पृष्ठ ४३०, मूल्य ढाई रुपये। लेखक ने सन् १९३३ और सन् १९३८ में योरप-यात्रा की थी। उन्होंने योरप के प्रमुख देशों की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक प्रणालियों के अध्ययन करने के बाद यह ग्रन्थ लिखा है। लेखक का दृष्टिकोण राष्ट्रीय है।

दूसरा भाग; प्र०—सिटी बुक हाउस, कानपुर। मूल्य एक रुपया। यह पहले भाग से बिलकुल स्वतंत्र है। इसमें अमरीका, चीन और जापान का रोचक वर्णन है। इसके पढ़ने से वर्तमान युद्ध को समझने में सहायता मिलती है। लेखक ने जापान का महत्व भी बतलाया है।

४—वर्तमान जगत। ले०—डा० लक्ष्मीचन्द्र खुराना, तथा श्री कृष्णचन्द्र। प्र०—आत्माराम एण्ड संस, लाहौर; सजिल्द, पृष्ठ ३२६; मूल्य २।)। दुनिया का संक्षिप्त भौगोलिक परिचय, नागरिक-कर्त्तव्य, शासनपद्धतियाँ, आर्थिक और सामाजिक विचारधाराएँ, आजके युग-निर्माता, और दूसरे योरपीय महायुद्ध सम्बन्धी जानकारी इस पुस्तक के विषय हैं। प्रारम्भिक ज्ञान के लिए बहुत उपयोगी है।

५—वर्तमान एशिया। श्री० हर्बर्ट एडम्स गिवन्स की अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। पृष्ठ ३८२, मूल्य २); इसमें एशिया पर विभिन्न पाश्चात्य राष्ट्रों के आधिपत्य और अत्याचार का, तथा भारत, श्याम, टर्की, फारिस, जापान, कोरिया, चीन, आदि की जाग्रति का वर्णन है। भारतीय प्रश्न एशिया-व्यापी प्रश्न का अंग है, अतः यह पुस्तक भारतीय पाठकों के लिए बहुत विचारणीय है।

६—तिब्बत में सवा वर्ष। ले०-महापंडित श्री० राहुल सांकृत्यायन; प्र०—शारदा मंदिर, नयी दिल्ली। पृष्ठ ३८०, मूल्य तीन रुपये। इस पुस्तक में लेखक की तिब्बत-यात्रा का वृत्तान्त है। इसके पढ़ने से पाठकों को बुद्धकालीन सभ्यता, और तिब्बत के वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, और आर्थिक रूप का परिचय हो जाता है।

७—जापान रहस्य। मूल लेखक—श्री० चमनलाल। अनु०—श्री० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव; पृष्ठ २५०; मूल्य डेढ़ रुपया; प्र०—काशी विद्यापीठ, काशी। इसमें जापान की राजनैतिक, सामाजिक, व्यापारिक और सैनिक दशा का संक्षिप्त परिचय है। इससे जापान के सम्बन्ध में अनेक उपयोगी बातों का ज्ञान होता है।

८—जापान-दिग्दर्शन। ले०—श्री० पंडित सुरेन्द्रनाथ दुबे; प्र०—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ। पृष्ठ १३४, मूल्य बारह आने। सन् १६३७ में फर्रुखाबाद के पं० चिरंजीलाल वकील जापान गये थे, उन्होंने अपने मित्र द्वारा अपने अनुभव लिखाये हैं। इसमें जापान सम्बन्धी ज्ञातव्य बातें समझायी गयी है।

६—आधुनिक जापान। ले०—श्री० सुरेन्द्र बालुपुरी; प्र०—इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग। मूल्य आठ आने।

१०—आज का जापान। सम्पादक—श्री रघुवीर सहाय, प्र०—साहित्य सदन, अबोहर (पंजाब) पृष्ठ १६२; मूल्य एक रुपया। पुस्तक हमारे सामने नहीं है

११—लाल चीन। ले०—श्री० रामवृक्ष बेणीपुरी; प्र०—ग्रन्थ-माला कार्यालय, बांकीपुर। मूल्य दो रुपये। इसमें यह बताया गया है कि चीन में किस प्रकार विचारों की क्रान्ति हुई, वहाँ के नवयुवक देश के लिए किस प्रकार मरने-मारने को तैयार हुए, और किस तरह वहाँ सोवियट सिद्धान्तों का प्रचार हुआ।

१२—अजेय चीन। ले०—श्रीकृष्णदास; प्र०—किताबमहल, इलाहाबाद; पृष्ठ ५४; मूल्य दस आने; सन् १९४३। इसमें बताया गया है कि चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी ने वहाँ के जन-जागरण में प्रमुख भाग लिया और जापानियों से खूब मोर्चा लिया।

१३—योरप के झकोरे में। ले०—डा० सत्यनारायण; प्र०—वर्तमान संसार, १२ चित्तरंजन एवन्यू, कलकत्ता; पृष्ठ ३१३; मूल्य ढाई रुपये। कई वर्ष हुए, लेखक की 'आवारे की योरप-यात्रा' पुस्तक छपी थी। यह पुस्तक उसी का परिवर्द्धित संस्करण है। योरप की इस समय की स्थिति का इससे अच्छा ज्ञान होता है।

१४—इंगलैंड का शासन और औद्योगिक क्रान्ति। ले०—श्री दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०, और भगवानदास केला बी० ए०, साहित्य-रत्न,। यह खासकर उन विद्यार्थियों के लिए लिखी

गयी है, जो संयुक्तप्रान्त में हाईस्कूल कक्षाओं में इतिहास का विषय लेते हैं। हरेक अध्याय के अन्त में उसका सारांश और आवश्यक प्रश्न भी दिये गये हैं। पृष्ठ १२४; मूल्य १); प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग।

१५—ब्रिटेन का वैधानिक इतिहास। ले०—श्री० गोरखनाथ चौबे एम० ए०; प्र०—रामनारायण लाल, प्रयाग। पृष्ठ १०६, मूल्य दस आने। पुस्तक संयुक्त प्रान्त के हाईस्कूलों में इतिहास का विषय लेनेवालों के लिए लिखी गयी है। एक अध्याय औद्योगिक क्रान्ति के सम्बन्ध में भी है। अन्त में नमूने के प्रश्न अंगरेजी में दिये गये हैं।

१६—जर्मनी का विकास। अनु०—श्री० सूर्यकुमार वर्मा; प्र०—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। पृष्ठ २०३, सजिल्द, मूल्य सवा रुपया। सन् १९१८। यह सन् १९०८ में छपी एक अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है। इसमें उस समय की जर्मनी की उन्नति पर प्रकाश डाला गया है, और अंगरेजों को जर्मनी के खासकर औद्योगिक विकास से प्रेरणा लेने की सिफारिश की गयी है। पुस्तक के अन्त में जर्मनी का नक्शा भी है।

१७—रूस का जागरण। ले०—श्री० डाक्टर धनीराम 'प्रेम'; प्र०—रत्न पब्लिशिंग हाउस, बम्बई; पृष्ठ १६३; मूल डेढ़ रुपया। इसमें रूस की जागृति का अच्छा वर्णन है, इससे बोलशेविक रूस की दशा का ज्ञान होता है।

१८—रूस में तीन महीने। ले०—श्री० तेन्दुलकर, प्र०—करनाटक पब्लिशिंग हाउस, बम्बई। पृष्ठ ११०; मूल्य डेढ़ रुपया। इसमें सोवियट राज्य का आँखों देखा विवरण दिया गया है। इससे रूसी सामाजिक जीवन का परिचय मिलता है।

१९—रूस पर रोशनी। अनु०—कामरेड रामन्ना शास्त्री, और रमेश वर्मा; पृष्ठ २०७, मूल्य १); प्र०—सोशलिस्ट लिटरेचर पबलिशिंग कम्पनी, गोकुलपुरा, आगरा। अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है।

इसमें प्रमाण देते हुए रूस की विदेश-नीति का परिचय दिया गया है, और इंगलैंड, फ्रांस, जेकोस्लेविया, फिनलैंड, इटली और जर्मनी आदि देशों से उसका व्यवहार उचित सिद्ध किया गया है। रूस के पक्ष का अच्छा समर्थन है।

२०—सोवियत्-भूमि। ले०—श्री० राहुल सांकृत्यायन। प्र०—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। सचित्र और सजिल्द। पृष्ठ संख्या आठ सौ से अधिक। मूल्य ५)। विद्वान लेखक ने रूस की यात्रा की, और अपने प्रत्यक्ष अनुभव और ज्ञान के आधार पर इस पुस्तक की रचना की; उसका उद्देश्य उस भ्रम को दूर करना है, जो बहुत से आदमी या संस्थाएँ जानबूझकर या अनजान में रूस के बारे में फैलाया करते हैं। पुस्तक रूस के सम्बन्ध में आवश्यक और उपयोगी जानकारी से भरी हुई है। कुछ अध्याय ये हैं—सोवियत् संघ की जातियाँ, लेनिन, स्टालिन, सोवियत् के कुछ नेता, नगरों की काया-पलट, सोवियत विधान, महासोवियत का चुनाव, निर्वाचन दिन, निर्वाचन का फल, औद्योगिक प्रगति, साम्यवादी होड़; कोल्खोज (पंचायती खेती); सोवखोज़ (सरकारी खेती), पुराना और नया गाँव; उन्नति का खुला मार्ग।

२१—रूस की सैर। ले०—श्री० जवाहरलाल नेहरू। यह पुस्तक लेखक ने अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर लिखी है। इसके कुछ परिच्छेदों के विषय ये हैं—सोवियट प्रणाली, साम्यवादी सोवियट-प्रजातंत्र संघ की शासन प्रणाली, केन्द्रवर्तीय कृषक भवन, शिक्षा तथा किसान, और भूमि। इसके नये संस्करण होने का पता नहीं।

२२—वर्तमान रूस। ले०—श्री० देवव्रत शास्त्री; प्र०—साहित्य मंदिर, दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ २७५। मूल्य सादी प्रति १॥); सजिल्द, दो रुपये। प्रथम संस्करण; सम्वत १९८७। इसमें इन विषयों का विचार किया गया है—शासन, शिक्षा, किसान मजदूर, स्त्रियाँ, सहयोग

समितियाँ, नौजवान, लाल सेना, अल्प संख्यक जातियाँ, न्याय और अदालत, जेलखाने, आर्थिक स्थिति, कम्युनिस्ट पार्टी।

२३—आधुनिक रूस। ले०—श्री० प्रभूदयाल महरोत्रा एम० ए०; पृष्ठ २१६, मूल्य १।); यह पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी। इसका प्रकाशक नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस, चुनार, है।

२४—मेरी रूस यात्रा। श्री० शौकत उसमानी ने असहयोग-काल में भारतवर्ष से 'हिजरत' करके विदेश-गमन किया था। इस पुस्तक में उस वीरोचित यात्रा के वर्णन के साथ, लेखक की आँखों-देखी काबुल, बुखारा, और रूस की आन्तरिक अवस्था का रोचक वर्णन है। प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर। मूल्य ।=),

२५—आज का रूस। मूल अंगरेजी लेखक—श्री० नित्यनारायण बेनर्जी; अनु०—श्री० ब्रजमोहन वर्मा प्र०—विशाल भारत बुकडिपो, कलकत्ता। मूल्य ३), पृष्ठ २४०। इसमें रूस में सन् १६१८ के बाद जो क्रान्तिकारी सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन हुए, उनका वर्णन है।

२६—रोमांचक रूस में। ले०—डा० सत्यनारायण। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। पृष्ठ २८३; मूल्य दो रुपये। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसका लेखक देहाती रूस के साथ घुल-मिल गया है। उसकी दृष्टि व्यापक है। पुस्तक में रूस की सामाजिक, वैयक्तिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और साहित्यिक सभी अवस्थाओं का परिचय, कहानी के रूप में, दिया गया है।

२७—अमरीका और अमरीकन। ले०—श्री० अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी; प्र०—उदयनारायण बाजपेयी, पत्थरगली, बनारस। मूल्य, सवा रुपया। इसमें संक्षेप में अमरीका के भौगोलिक, ऐतिहासिक और वैधानिक स्वरूप का अच्छा चित्र खींचा गया है। इससे अमरीका वालों के स्वाधीनता-प्रेम का भी ज्ञान होता है।

२८—आज का मानव संसार। ले०—श्री० अमरनाथ विद्यालंकार और श्री० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार। प्र०—श्री० चन्द्रगुप्त

विद्यालंकार, आशा निकेतन, १२ ए० टेप रोड़, लाहौर। पृष्ठ १४४+८२; मूल्य दो रुपये पौने ग्यारह आने। दूसरा संस्करण, सन् १६४३। इसके पांच भाग हैं:—(१) नागरिकता तथा भारतीय शासन, (२) संसार की विभिन्न प्रवृत्तियाँ और आन्दोलन. (३) वर्तमान महायुद्ध, (४) विज्ञान की दुनिया, (५) हमारा प्रान्त। लेखकों ने सन् १६३८ में 'आज की दुनिया' लिखी थी। पंजाब विश्वविद्यालय ने उसे 'हिन्दी भूषण' परीक्षा के लिए पाठ्य-पुस्तक नियत किया, साथ ही 'सामान्य ज्ञान' के रूप में पढ़ायी जाने वाली पुस्तकों का विषय भी निर्धारित कर दिया। यह पुस्तक सामान्य ज्ञान की उस परिभाषा के अनुसार, 'आज की दुनिया' का संशोधित संस्करण है।

अर्थशास्त्र और राजनीति के मिश्रित कोष—अकेले अर्थशास्त्र या अकेली राजनीति के कोषों का विचार पहले किया जा चुका है। यहाँ ऐसी पुस्तकों का परिचय देना है, जिनमें अन्य विषयों के कोष के साथ इनका भी कोष हो। हमारे सामने ये पुस्तकें हैं—

१—हिन्दी वैज्ञानिक कोष। प्र०—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। यह कोष कई भागों में विभक्त है, जिनमें से एक भाग अर्थ-शास्त्र शब्दावली का भी है। यह सन् १६०६ ई० में बहुत मेहनत से, और कई सज्जनों के सहयोग से तैयार हुआ था। अब इसका नया संशोधित संस्करण भिन्न-भिन्न भागों में प्रकाशित हो रहा है।

२—वैज्ञानिक विश्व कोष। ले०—श्री० मुखत्यार सिंह वकील, मेरठ। इसमें अंगरेजी वर्णमाला के क्रम के अनुसार एक-एक पदार्थ अथवा आर्थिक शब्द के विविध पर्यायवाची शब्द देने के अनन्तर उस पर सविस्तर नोट दिये हुए हैं; साथ में प्रत्येक पदार्थ को तैयार करने में काम आनेवाले विविध यन्त्रों आदि के चित्र भी दिये गये हैं। इसका एक-एक अंक सौ-सौ पृष्ठ का निकालना आरम्भ किया

गया था, परन्तु ग्राहकों और संरक्षकों की कमी के कारण उसे जल्दी ही बन्द कर देना पड़ा। इसके केवल दो अंक ही हमारे देखने में आये।

३—**टवेंटिएथ संचुरी इंगलिश-हिन्दी डिक्शनरी**। सम्पादक—श्री० सुखसम्पत्तिराय भंडारी। प्र०—डिक्शनरी पबलिशिंग हाउस, अजमेर। पहला भाग, मूल्य, सतरह रुपये। सन् १९३७। पृष्ठ संख्या एक हजार से अधिक। आकार डबल क्राउन अठ पेजी। हिन्दी भाषा में अपने ढङ्ग का यह पहला इतना बड़ा कोष है। इसमें हिन्दी, मराठी, गुजराती और बङ्गला आदि के कोषों से भी सहायता ली गयी है। अर्थशास्त्र के शब्द १२० पृष्ठों में और राजनीति के शब्द १०२ पृष्टों में दिये गये हैं। अँगरेजी के एक-एक शब्द के आगे उसका हिन्दी का पर्यायवाची शब्द तो दिया ही गया है, अनेक दशाओं में यौगिक शब्द के पर्याय भी दिये गये है। इसके अलावा कुछ खास-खास शब्दों के बारे में काफी विस्तार से—एक-शब्द के बारे में तीन पृष्ठ (छः कालम) तक—लिखा गया है।

अच्छा हो, यदि अर्थशास्त्र और राजनीति सम्बन्धी कोष अलग प्रकाशित किये जायँ। जिससे इन विषयों के प्रेमी जो पाठक १७) देने में असमर्थ हों, वे उन कोषों का उपयोग कर सकें। फिर, अब बहुत से नये शब्दों के पर्याय देने, तथा कुछ पुराने शब्दों के पर्यायों में संशोधन करने की भी आवश्यकता हैं।

पुस्तक का दूसरा भाग भी छप गया है। इसमें युद्ध, मनोविज्ञान, दर्शन, कानून, इतिहास, भूगोल, बैंकिंग, बीमा, मजदूरी, स्टाक और शेयर, अन्तराष्ट्रीयता, और खेती सम्बन्धी शब्द हैं। इसका मूल्य १५) है। तीसरा भाग छपना शेष है।

४—**समाचारपत्र शब्द कोष**। सम्पादक—डा० सत्यप्रकाश डी० एस-सी०, प्र०—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। पृष्ठ १२+१०६। डबल कालम। मूल्य १॥); सम्वत २०००। इसका उद्देश्य यह है कि हिन्दी, गुजराती, मराठी, और बंगाली भाषाओं के समाचार-

पत्रों में जो संवाद आदि छपते हैं, उनका स्वरूप एकसा रखने में सहायता मिले और वे भाषाएँ एक दूसरे के नजदीक आवें। इस कोष में अंगरेजी के लगभग १५०० शब्दों के इन भाषाओं के पर्याय-वाची शब्द संकलित किये गये हैं। इस महान उद्देश्य को पूरा करने के लिए और भी उद्योग किया जाना चाहिए।

अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य का प्रकाशन—पिछले चालीस वर्ष में हिन्दी साहित्य के दूसरे अंगों के साथ अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य की अच्छी वृद्धि हुई है। बहुत से बड़े प्रकाशकों ने समय-समय पर इस साहित्य की कुछ अच्छी-अच्छी रचनाएँ तैयार कराने और छपाने की व्यवस्था की है। कई ग्रन्थ-मालाओं का तो उद्देश्य ही खासकर इस साहित्य को बढ़ाना रहा है। इनमें से कितनी ही मालाएँ जल्दी ही बन्द हो गयीं, और जो इस समय हैं, उनमें से कई एक की कुछ अच्छी दशा नहीं। इसका बहुत कुछ उत्तरदायित्व हिन्दी पाठकों पर है। वे गंभीर, ठोस रचनाओं का यथेष्ट स्वागत नहीं करते। यही मुख्य कारण है कि प्रकाशकों को उपन्यास, नाटक, गल्प, कथा, कहानियाँ आदि प्रकाशित करने की प्रेरणा होती है। बहुत हुआ तो वे कभी कुछ जीवनचरित्र या इतिहास की पुस्तकें प्रकाशित कर देते हैं। राजनैतिक और आर्थिक साहित्य की उच्च कोटि की रचनाएँ लिखवाने और प्रकाशित करने में बहुत खर्च पड़ता है; बहुधा सरकारी कोप की भी चिन्ता रहती है। फिर, यदि उसके ग्राहक भी काफी न मिलें तो इस झंझट में, व्यापारिक दृष्टि रखने वाले प्रकाशक क्यों पड़ें!

ऐसी दशा में जो प्रकाशक राजनीति और अर्थशास्त्र साहित्य की चिन्ता करते हैं, वे धन्य हैं। अन्यान्य संस्थाओं में सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली; और ज्ञान मंडल, काशी; ने राष्ट्रीय साहित्य-प्रकाशन में काफी पूँजी लगाई और कितनी ही अच्छी पुस्तकें प्रकाशित कीं, और उनकी कीमत भी कम रक्खी। सस्ता साहित्य मंडल

को कई बार सरकारी प्रहार सहन करने पड़े तो भी वह अपने काम में डटा रहा। भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन (अब, दारागञ्ज प्रयाग) के संचालक भी अपनी धुन में लगे रहे। इस माला की ज्यादहतर पुस्तकें नागरिक शास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र की ही हैं। अभ्युदय प्रेस, प्रयाग, और प्रताप प्रेस, कानपुर, ने भी बड़ा काम किया है। इनकी प्रकाशित पुस्तकों में से अधिकतर राजनीति की रही हैं। जन-प्रकाशन गृह, बम्बई, तथा कुछ दूसरी संस्थाएँ समाजवाद सम्बन्धी साहित्य प्रकाशित करने में अच्छा योग दे रही हैं।

हमारे साहित्य के अभाव और उनकी पूर्ति—गत वर्षों की साहित्य-वृद्धि हर्ष-सूचक होने पर भी यथेष्ट सन्तोषप्रद कदापि नहीं है। हमें सोचना चाहिए कि आर्थिक और राजनैतिक साहित्य के कितने अंग अपूर्ण हैं, और उनकी पूर्ति के लिए क्या किया जाना चाहिए। उच्च परीक्षाओं के पाठ्य क्रम के योग्य, अच्छे-अच्छे ग्रन्थों की अभी कितनी कमी है। एम० ए० तथा इसके भी बाद की क्लासों के लिए हिन्दी में काफी ग्रन्थ होने चाहिएँ। अर्थशास्त्र और राजनीति के भिन्न भिन्न भागों में से किसके साहित्य की खास कमी है, यह हम पिछले सफों में प्रसंगानुसार बता चुके हैं। पाठ्यग्रन्थों के अलावा, दूसरे ग्रन्थों की भी बहुत आवश्यकता है। समाजवाद की चर्चा देश में बढ़ती जा रही है, लेकिन इस विषय के अच्छे ग्रन्थों की अभी बहुत कमी है। अराजवाद, प्रजातंत्र, स्थानीय शासन (पंचायत, जिला-बोर्ड, और म्युनिसपैलटियाँ) पर भी ऊँचे दर्जे के ग्रन्थ नाममात्र को हैं। देशी राज्यों का विषय हमारे भावी शासन विधान की एक खास समस्या है, पर इस विषय की महत्पूर्ण पुस्तकें हमारे यहाँ कितनी हैं! कुछ स्वार्थी लेखकों ने किसी राजा या राजवंश की प्रशंसा में, या उनके व्यक्तिगत गुण दोषों पर बहुत से सफे रंग डाले हैं, उनसे हमारे साहित्य की शोभा नहीं बढ़ी; उससे हमें संतोष नहीं हो सकता। हमें तो विचारपूर्ण अच्छा साहित्य चाहिए। इन दिनों शासनपद्धति सम्बन्धी कुछ अच्छी

पुस्तकें सामने आ रही हैं, पर वे प्रायः आधुनिक काल सम्बन्धी ही हैं। वैदिक कालीन, रामायण कालीन, या महाभारत कालीन शासन-पद्धतियों पर बहुत ही कम प्रकाश डाला गया है। हिन्दुओं मुगलों, मराठों, और सिक्खों की शासनपद्धति सम्बन्धी आलोचनात्मक साहित्य की भी बहुत जरूरत है। कुछ समय हुआ, एक सज्जन का पत्र हमारे पास आया था, वे इस तरह की पुस्तक लिखने वाले थे। पीछे मालूम नहीं, शायद सहृदय प्रकाशकों के न मिलने से वह काम बीच में ही अटक रहा हो।

अर्थशास्त्र और राजनीति के मौलिक ग्रन्थों के अलावा हमें अंगरेजी आदि दूसरी भाषाओं के अच्छे ग्रन्थों के अनुवाद-रूपान्तर या भावानुवाद आदि की भी बड़ी आवश्यकता है। उपन्यास और कहानी आदि के लिए हमने दूसरी भाषाओं के साहित्य की जितनी खोज की है, उसके मुकाबले अर्थशास्त्र और राजनीति के लिए हमने कितना कम काम किया है! किसी यूनिवर्सिटी की लायब्रेरी में घंटा दो घंटे पुस्तकों की अलमारियाँ देखने से हम यह सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि चालीस करोड़ भारतवासियों की राष्ट्र-भाषा का स्थान इस साहित्य में कितना नीचा है!

एक बात और भी। जाग्रति की लहर अब देश के भीतरी भागों में—ग्रामों में—पहुँच रही है।परन्तु उन अल्प शिक्षित ग्रामवासियों को देने के लिए हमारे पास क्या आर्थिक और राजनैतिक साहित्य है, जो हमारी पुस्तकों की 'पंडिताऊ' भाषा समझने में असमर्थ है, जटिल या पेचीदा बातों या गूढ़ वाद-विवादों में पड़ने की न क्षमता है, और न अवकाश ही। सरल सीधी भाषा में कुछ मोटी-मोटी बातों का ज्ञान देनेवाली अनेक छोटी-छोटी और सस्ती पुस्तकों की बहुत ही आवश्यता है। इन अभावों को पूर्ति के लिए सब हिन्दी-प्रेमियों को मिलकर जुट जाना चाहिए।

विशेष वक्तव्य—निर्धन और पराधीन जनता के लिए एक प्रधान आवश्यकता आर्थिक और राजनैतिक साहित्य की होती है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा अन्य साहित्यिक तथा शिक्षा सम्बन्धी संस्थाओं को चाहिए कि इनकी पूर्ति के लिए भरसक प्रयत्न करें। वे कुछ योग्य और धुन के पक्के, साहित्य-सेवा का व्रत लेनेवाले लेखकों को उनके निर्वाहार्थ ८०) से लेकर १००) रु० तक की आवश्यक मासिक वृत्ति देकर अच्छी-अच्छी पुस्तकें लिखाएँ, और समर्थ सुयोग्य लेखकों से इन विषयों की रचनाएं, प्रस्तुत करने के लिए आग्रह करें। भारतवर्ष के विविध प्रान्तों में, और विदेशी भाषाओं में इन विषयों का जो उपयोगी साहित्य प्रकाशित हो, उसकी सूची तैयार करते हुए, उसके हिन्दी भाषान्तर का, या भावानुवाद कराने का, प्रबन्ध करें। अस्तु, जब कि देश में चारों ओर स्वराज्य प्राप्ति का आन्दोलन चल रहा है, हमें साहित्य के इन विषयों में स्वावलम्बी होने की भरसक कोशिश करनी चाहिए।

परिशिष्ट

इस पुस्तक का बहुत कुछ हिस्सा छप चुकने पर अर्थशास्त्र और राजनीति की कुछ और भी पुस्तकें हमारे सामने आयीं, और कुछ की सिर्फ सूचना ही मिली। उनकी जो-कुछ जानकारी हमें हो सकी हैं, वह नीचे दी जाती हैं। इन पुस्तकों को हम तीन भागों में तो बांट रहे है, पर हरेक भाग की पुस्तकों में खास क्रम नहीं है।

(क) अर्थ-शास्त्र

१—भारत के कारखाने। ले०—श्री० चतुर्भुज औदीच्य। सन् १६०५।

२—दरिद्र कथा। ले०—श्री० चन्द्रशेखर।

३—भारतीय गोशालाएँ। ले०—श्री० उत्तमचन्द मोहता; प्र०—युवक समिति, सिरसा (पंजाब); सन् १६३५।

४—भारतीय व्यापारियों का परिचय। प्र०—कामर्शल बुक पब्लिशिंग हाउस, भानपुरा, इन्दौर। सन् १६२६। पुस्तक बहुत विशाल आकार की है। अपने ढङ्ग का अनूठा प्रयत्न है।

५—भारतीय वाणिज्य की डायरेक्टरी। ले० और प्र०—श्री० हरिनारायण टंडन, लखनऊ। सन् १९१०।

६—भारत की दरिद्रता। ले०—श्री० फिंडलेशिराज; प्र०—नेशनल जर्नल्स प्रेस, दिल्ली। सन् १६३५।

७—भारत की कारीगरी। ले०—श्री० लज्जाराम शर्मा, प्र०—श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई। सन् १६०२।

८—ढोरों के गोबर और पेशाब का कारबार। ले०—श्री० शिवनारायण देराश्री, प्र०—दृष्टि प्रबोधक कार्यालय, बनेड़ा, मारवाड़। सन् १९२१।

९—स्काउटिंग और ग्राम-सेवा (स्काउटों) द्वारा ग्रामोत्थान के उपाय। ले०—पं० श्रीराम बाजपेयी। प्र०—भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद। मूल्य १)। लेखक अपने विषय के बहुत अनुभवी हैं।

१०—समाजवाद: वैज्ञानिक और काल्पनिक। ले०—फ्रेडरिक एंगल्स; प्र०–जन प्रकाशन गृह, राजभवन, बम्बई ४। मूल्य दस आने।

११—आर्थिक सफलता। अनु०—पं० शिवसहाय चतुर्वेदी। प्र०—हिन्दी साहित्य प्रचारक कार्यालय, नरसिंहपुर। पृष्ठ ८८; मूल्य छः आने, सन् १९१७। पैसा अच्छे कामों में लगाने का विचार किया गया है।

१२—कार्ल मार्क्स के आर्थिक सिद्धान्त। (अप्रकाशित)। ले०--श्री० शंकरसहाय सकसेना, एम० ए०, बरेली कालिज, बरेली। प्रसिद्ध रूसी लेखक कार्ल काट्स्की की पुस्तक का अनुवाद।

१३—भारत की आर्थिक समस्याएँ (अप्रकाशित)। ले०–श्री० शंकरसहाय सकसेना एम० ए०, बरेली कालिज, बरेली।

१४—भारतीय राजस्व व्यवस्था (अप्रकाशित)। पं० जगत-नारायण लाल, पटना, भूतपूर्व राजस्व-मन्त्री, बिहार, ने यह पुस्तक कई प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर लिखी है।

(ख) राजनीति

१—राजनैतिक इतिहास। ले०—श्री० वासुदेव।

२—हिन्दुस्तान गुलाम कैसे बना? प्र०–प्रताप प्रेस, कानपुर।

३—स्वराज्य के समालोचक। ले०—श्रीनिवास शास्त्री।

४—युद्ध के बाद सुधार। प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग।

५—राज्य शास्त्र। ले०—श्री० नृसिंह चिन्तामणि केलकर।

६—फैसीज्म और जर्मनी। ले०—एस० पी० त्रिपाठी।

७—विद्यार्थी और राजनीति। ले०—श्री० रामकिशोर अग्रवाल।

८—रूस का पुनर्जन्म। ले०—श्री० सोम विद्यालंकार।

९—फ्रांस जर्मनी युद्ध। ले०—श्री० गोकुलप्रसाद।

१०—स्वराज्य संवाद। ले०—श्री० चंडीप्रसाद बी० ए०।

११—आर्य समाज और कांग्रेस। ले०—श्री० भाई परमानन्द।

१२—राष्ट्रीय जागृति की मीमांसा। ले०—श्री० माधवराव सप्रे।

१३—कांग्रेस पुकार मंजरी। ले०—श्री० आलाराम सागर; प्र०—धार्मिक प्रेस, इलाहाबाद। सन् १८९२।

१४—राजनीति। ले०—श्रीनिवास दास; प्र०—अकमल उल-मतविया प्रेस; दिल्ली, सन् १८६९।

१५—राजनीति। ले०—श्री० देवीदास; प्र०—बालशंकर उल्लासराम; नाडियाद। सन् १८७३।

१६—राजनीति संग्रह। ले०—श्री० जसुराम और देवीदास कवि; प्र०—हरिजी सामजी, बम्बई। सन् १८७२।

१७—भारत और संघ शासन। ले०—डा० बी. एम. शर्म्मा प्र०—अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ। सन् १९३९।

१८—रणमत्त संसार। ले०—श्री० वेंकटेशनारायण तिवारी; प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग सन् १९४०।

१९—तरुण भारत के स्वप्न। ले०—श्री० सुभासचन्द्र बोस; प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। सन् १९३८।

२०—हवाई हमले और आप। प्र०—सुषमा साहित्य मंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर। मूल्य आठ आने। हवाई संकट के अवसर पर आत्म रक्षा, कुटुम्ब-रक्षा और समाज-रक्षा के उपाय बताती है।

२१—रूस की क्रान्ति। ले०—श्री० शंकरदयालु श्रीवास्तव एम० ए०। प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ १५० मूल्य ||=)।

२२—स्वराज्य (अप्रकाशित)। ले०—श्री० गोरखनाथ चौबे एम० ए०। प्र०—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग। पृष्ठ संख्या, अन्दाजन सौ। मूल्य चौदह आने। आवश्यक ऐतिहासिक जानकारी।

२३—ओरछा राज्य धारा सभा विधान। पृष्ठ २८, मूल्य आठ आने। वीरसिंह देव प्रिंटिंग प्रेस, टीकमगढ़ में मुद्रित। इस विधानके अनुसार सन् १९३९ में, ओरछा राज्य में धारा सभा की स्थापना और अन्य शासन कार्य करने का निश्चय किया गया।

२४—ओरछा राज्य टप्पा प्रजामंडल विधान। पृष्ठ २४ तथा परिशिष्ट आदि। मूल्य आठ आने। वीरसिंह देव प्रिंटिंग प्रेस, टीकमगढ़, में मुद्रित। 'टप्पा' ग्राम-समूह को कहते हैं। यह विधान एक तरह से ओरछा-राज्य का ग्राम-पंचायत विधान है।

२६—व्यवहारिक शब्द कोष। संग्रहकर्ता—श्री०रज्जनलाल एम० ए०। प्र०—गवालियर राज्य हिन्दी साहित्य सभा, लश्कर (गवालियर)। इसमें फौजदारी अदालतों में काम में आने वाले अंगरेजी, अरबी, फार्सी आदि के शब्दों के लिए हिन्दी के पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं। अच्छा प्रयत्न है। पृष्ठ २१; मूल्य छपा नहीं।

(ग) मिश्रित

१—कम्पनी के कारनामे। ले०—श्री० बी० डी० बसु; अनु०—टी० पी० भटनागर, इलाहाबाद। सन् १९३९।